डॉ॰ भोलानाथ तिवारी हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक, विद्वान, भाषाविद् और कोशकार हैं। हिन्दी संदर्भ साहित्य में प्रस्तुत पुस्तक उनकी देन है। हिन्दी-जगत् में इसके प्रथम संस्करण का हार्दिक स्वागत हुआ था। इस दूसरे संस्करण में लेखक ने बहुत-सी नई कथाएँ जोड़ कर और बहुत-सी पुरानी कथाओं को नए सिरे से लिख कर पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ा दी है।

यह पुस्तक हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रेमियों, विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के लिए बड़े काम की है। प्रत्येक पुस्तकालय में इसकी एक प्रति रहना आवश्यक है।

हिन्दी साहित्य की अंतर्कथाएँ

डॉ० भोलानाथ तिवारी

किताब महल (होलसेल डिविज़न) प्राइवेट लिमिटेड

रजिस्टर्ड आफ़िस : ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद

बम्बई • कलकत्ता • दिल्ली • हैदराबाद • जयपुर • पटना

दो शब्द

यह पुस्तक का दूसरा संस्करण है। इसमें बहुत-सी नई कथाएँ जोड़ दी गई हैं, तथा कुछ पुरानी कथाओं को फिर से लिखा गया है। इस रूप में आशा है कि पहले संस्करण की तुलना में यह अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। कुछ लोगों ने इसके नाम के संबंध में भ्रान्ति की थी। 'अंतर्कथा' शब्द व्याकरण के नियमों के अनुसार अशुद्ध है। किंतु जब शब्द एक बार हिंदी में चल पड़ा है तो फिर शुद्ध-अशुद्ध का प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार यदि प्रश्न उठाए जायें तो हिंदी के सारे तद्भव शब्दों को निकालना पड़ेगा। क्या इसके लिए हमारे बुद्धिवादी तैयार हैं? शायद नहीं।

प्रूफ मैंने स्वयं नहीं देखा है, अशुद्धियाँ अवश्य रह गई होंगी। आशा है कि विज्ञ पाठक उन्हें सुधार लेंगे।

लेखक

हिन्दी साहित्य की अंतर्कथाएँ

अंग—एक प्रजापति। एक बार इन्द्र के वैभव को देखकर वैसे ही वैभव की प्राप्ति के लिए इनके हृदय में इन्द्र के समान पुत्र पाने की इच्छा उत्पन्न हुई। इसके लिए इन्होंने विष्णु की उपासना की। विष्णु ने प्रसन्न होकर इन्हें कुलीन कन्या से विवाह करने की आज्ञा दी। किंतु संयोग से ये एक अत्यन्त रूपवती सुनीथा नाम की यमकन्या की ओर आकृष्ट हो गये और उससे गान्धर्व विवाह कर लिया। इन्हें सुनीथा से बेन नाम का एक अत्यन्त अत्याचारी पुत्र उत्पन्न हुआ। इससे इनके हृदय में अत्यन्त क्षोभ उत्पन्न हुआ और ये सर्वस्व त्याग कर वन में चले गये।

अंगद—(१) अंगद किष्किंधा के राजा बालि के पुत्र तथा सुग्रीव के भतीजे थे। इनकी माता तारा पंच देवकन्याओं में से थीं। बालि को मार कर राम ने किष्किंधा का राज्य अङ्गद को ही दिया था। राम-रावण-युद्ध से पूर्व अङ्गद रावण को समझाने गये और बहुत समझाया पर रावण ने एक न सुनी। अन्त में रावण की सभा में इन्होंने अपना पैर जमाकर यह घोषणा की कि यदि रावण-दरबार का कोई भी मेरे पैर को स्थान से हटा देने में सफल होगा तो राम लौट जायँगे और हम लोग सीता को हार जायँगे—

जौं मम चरन सकसि सठ टारी।
फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥

(मानस)

रावण के सभी वीरों ने उठाने का बहुतेरा प्रयास किया पर अङ्गद

का चरण टस से मस न हुआ। अन्त में स्वयं रावण क्रोधित होकर उठा। उसे उठते देख अङ्गद ने हँस कर कहा—

....
मम पद गहे न तोर उबारा।
गहसि न राम चरन सठ जाई॥
....

यह सुनकर रावण लज्जित होकर पुनः अपने सिंहासन पर बैठ गया और अङ्गद लौट आये। युद्ध में अङ्गद ने खूब वीरता दिखाई और एक बार तो प्रसिद्ध राक्षस वीर इन्द्रजीत को भी हरा दिया था। अन्त में विजयी होकर राम के साथ अयोध्या गये। वहाँ कुछ दिन रहकर और राम का राज्याभिषेक देखकर ये अपने घर लौटे।

(२) एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त—ये जगन्नाथ (पुरी) की उपासना करते थे। इनके पास एक अत्यन्त मूल्यवान रत्न था। बहुत से धन-लोलुप राजा इस रत्न को इनसे प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहते थे। अपने को इसकी रक्षा करने में असमर्थ पाकर इन्होंने इसे जगन्नाथ जी को समर्पित कर दिया। ये जाति के क्षत्रिय तथा रायसिंह गढ़ के निवासी हल्दीसिंह के चाचा थे। एक अनुश्रुति के अनुसार पहले ये अत्यन्त कामुक और विलासी प्रकृति के पुरुष थे तथा इनकी अपनी पत्नी के प्रति अत्यधिक आसक्ति थी। किंतु कुछ समय के पश्चात् पत्नी से ही प्रेरणा पाकर ये भगवद्भक्ति की ओर उन्मुख हुए तथा उसी के गुरु द्वारा दीक्षा भी ली।

अंगिरा—एक प्रसिद्ध ऋषि जो ऋग्वेद के बहुत से मंत्रों के द्रष्टा थे। सप्तर्षि में भी इनकी गणना होती है। इनका नाम दस प्रजापतिओं में भी आता है। इनकी बनाई एक स्मृति भी मिलती है। अथर्ववेद के

प्रादुर्भावक होने के कारण इनका एक दूसरा नाम अथर्वा भी है। ये देवताओं के पुरोहित भी कहे गए हैं।

इनके जन्म के विषय में कई कथाएँ हैं। कुछ के अनुसार इनके माता-पिता का नाम आग्नेयी और उरु था। आग्नेयी अग्नि की कन्या थीं, अतः इसके अनुसार अंगिरा अग्नि के नाती होते हैं। कुछ अन्य आधारों पर ये अग्नि के अवतार या स्वयं अग्नि कहे जाते हैं।

महाभारत (बन पर्व) के अनुसार एक बार अंगिरा ने घोर तपस्या आरम्भ की। उस समय अग्नि भी तपस्या कर रहे थे। अंगिरा के शरीर की प्रभा से विश्व ढँक गया। इससे अग्नि बहुत घबराए क्योंकि उनका अधिकार उनके हाथ से जाता-सा दिखाई पड़ा। उनकी यह दशा देखकर अंगिरा ने उन्हें सांत्वना दी और कहा कि आप अग्नि रहिए और अपना अधिकार अपने हाथ में रखिये। मैं आपका पुत्र होना चाहता हूँ। अग्नि ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और अंगिरा बृहस्पति नाम से अग्नि के पुत्र हुए।[1]

कहीं-कहीं इनके ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न होने की कथा भी मिलती है। दक्ष की कन्या 'स्मृति', 'स्वधा' तथा 'सती' एवं कर्दम की कन्या 'श्रद्धा' ये चार इनकी पत्नियाँ थीं, जिनसे ऋचस् नाम की कन्या और मनस् नामक पुत्र इन्हें हुए। इनके अतिरिक्त इनकी और सन्तानें थीं जिनमें मारकंडेय तथा बृहस्पति अधिक प्रसिद्ध हैं। भागवत के अनुसार, एक निःसन्तान क्षत्रीय 'रथीतर' की स्त्री से इन्हें कुछ और भी लड़के हुए जो बहुत विद्वान् थे। इन लड़कों से इनके वंश की दो शाखाएँ चलीं जो ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ही कही जाती हैं।

अंजनि—हनुमान की माता। केशरी नामक एक बड़ा वीर बन्दर

---

[1] गोल्डस्टकर के अनुसार ये अग्नि के पिता थे। ऐसा ज्ञात होता है कि इनके चरित्र में कई चरित्रों का मिश्रण हो गया है।

था। सूर्य के वरदान से वह एक पर्वत पर राज्य करता था। उसी की स्त्री अंजनि थी। यह बड़ी वीर थी। हनुमान का जन्म इसी के गर्भ से हुआ था। एक मत के अनुसार शिव का वीर्य किसी कारण से एक बार स्खलित हो गया जिसे वायु ने उड़ाकर अंजनि के कान में डाल दिया और उसी से हनुमान पैदा हुए। दूसरे मत से अंजनि के अपूर्व सौंदर्य को देख एक बार पवनदेव उस पर मोहित हो गए और उन्होंने अदृश्य रूप में उससे रमण किया, जिससे हनुमान पैदा हुए इसी से उनका नाम पवन-कुमार पड़ा।

अंजनि की वीरता के विषय में प्रसिद्ध है कि जब हनुमान लंका विजय के बाद लौटे तो इसने उन्हें बहुत धिक्कारा कि तुम्हारे रहते राम को इतना कष्ट करना पड़ा और तुम पहले ही रावण को मारकर अशोक वन से सीता को न ला सके। अंजनि ने आगे यह भी कहा कि क्या तुम अपने शरीर को ही इतना लम्बा-चौड़ा नहीं बना सकते थे कि ससैन्य राम उस पर चले जाते और समुद्र में पुल बनवाने की झंझट से बच जाते।

अंजनि एक मत से कुंजर नाम के बन्दर की और दूसरे मत से गौतम की पुत्री थी। इसे अंजनी, अंजना आदि भी कहते हैं।

अंध—एक अंधे वैश्य संन्यासी जो अपनी पत्नी तथा पुत्र के साथ जंगल में रहते थे। इनके इकलौते पुत्र श्रवणकुमार को महाराज दशरथ ने शिकार के भ्रम में मार दिया था और उसी शोक में अंध ऋषि ने अग्नि में जलकर (कुछ मतों से यों ही) अपना प्राण दे दिया। साथ ही उन्होंने दशरथ को एक शाप भी दिया कि 'तुम्हें भी पुत्र शोक में ही मरना पड़ेगा।' दे० 'श्रवणकुमार' तथा 'दशरथ'।

अंधक—(१) एक बहुत बड़ा राक्षस जिसके एक हजार हाथ तथा सर और दो हज़ार आँखें एवं पैर थे। यह घमंड में चूर होकर अंधों की भाँति लोगों से टकराता चलता था इसी कारण दो हज़ार आँखें होने

पर भी अंधक (अंधा) के नाम से प्रसिद्ध था। इसके जन्म के विषय में कई मत हैं। देवों ने जब दिति के समस्त पुत्रों (दैत्यों) को मार डाला तो दिति ने भगवान से एक ऐसे पुत्र के लिए प्रार्थना की जिसे कोई न मार सके। भगवान ने प्रार्थना सुन ली और अंधक की उत्पत्ति हुई। एक अन्य मत से पार्वती के पसीने से इसका जन्म माना जाता है। इसे विष्णु और शिव के अतिरिक्त किसी और से न मारे जाने का वर प्राप्त था।

बड़े होने पर यह बड़ा अत्याचारी निकला। देवराज इन्द्र भी इससे भयभीत रहने लगे। इसने इन्द्रपुरी की उर्वशी आदि अप्सराओं को तो ले ही लिया, चंदन वन के पारिजात पर भी हाथ साफ करना चाहा। पारिजात ले जाते समय ही शिव द्वारा इसका वध किया गया। एक अन्य मत से पार्वती का अनादर करने के कारण शिव ने मंदर पर्वत पर इसका वध किया।

अंधक के वध की कथा भी इसके शरीर आदि की भाँति बड़ी विचित्र है। (हरिवंश) इसको वर मिला था कि इसके खून की हर एक बूँद से इसी के समान भयंकर दैत्य उत्पन्न होंगे। युद्ध में यही हुआ और बेचारे शिव परेशान हो गए। अन्त में उन्होंने एक मातृका उत्पन्न की जो रक्त की बूँदों को दैत्य बनने के पूर्व ही पी लेती थी। थोड़ी देर में यह युक्ति भी बेकार हो गई। अंधक के शरीर से इतना खून गिरा कि मातृका पीने में असमर्थ हो गई और फिर दैत्य उत्पन्न होने लगे। अन्त में विष्णु ने शिव की सहायता की और शिव इसे मारने में सफल हुए। इन्हें मारने के ही कारण शिव के 'अंधकरिपु' तथा 'अंधकारि' आदि नाम हैं।

(२) एक यदुवंशी राजा, जिसके पिता का नाम युधाजित तथा पितामह का नाम क्रोष्ट्रि था। यादवों की अंधक शाखा का प्रथम पुरुष

यही था। इसके एक भाई का नाम वृष्णि था, जिससे यादवों की वृष्णि-वंशी शाखा चली। कृष्ण इसी वृष्णिवंशी शाखा में पैदा हुए थे।

विष्णु पुराण के अनुसार अंधक सत्वत का पुत्र था और इसके कुकुर, भजमान, शुचिकंबल एवं वर्हिष नाम के चार पुत्र थे।

(३) महाभारत के अनुसार वृहस्पति के ज्येष्ठ भ्राता का नाम अंधक था। इनके माता का नाम ममता तथा पिता का नाम उतथ्य था। वृहस्पति ने इन्हें अंधे होने का शाप दिया था, इसी कारण इनका नाम अंधक था।

अम्बरीष—अयोध्या का एक सूर्यवंशी राजा जो इक्ष्वाकु से २८ वीं पीढ़ी में हुआ था। रामायण में इसे प्रशुश्रक का पुत्र कहा गया है पर हरिवंश, भागवत और महाभारत में नाभाग का। अंबरीष की अगाध भक्ति से प्रसन्न होकर विष्णु ने इसकी और इसके राज्य की रक्षा के लिए अपने चक्र को आज्ञा दे रक्खी थी।

एक बार अंबरीष एकादशी व्रत रहने के पश्चात् द्वादशी को पारण करने जा रहे थे पर बीच में ही दुर्वासा ऋषि ८८ हजार ऋषियों के साथ वहाँ आ पहुँचे। अंबरीष ने भोजन के लिए प्रार्थना की पर दुर्वासा अपने साथियों के साथ यह कहकर चले गए कि हम लोग स्नान करने जा रहे हैं और वहाँ से लौटकर भोजन करेंगे। संयोग से उस दिन द्वादसी की तिथि बहुत थोड़ी देर के लिए थी। दुर्वासा की प्रतीक्षा करते-करते समय समाप्त हो चला और केवल एक क्षण द्वादसी शेष रह गई। अंबरीष बहुत घबराया क्योंकि द्वादशी तिथि में पारण न करने पर दोष लगता है। उधर ब्राह्मण को खिलाने का वादा कर चुका था अतः खाने की हिम्मत भी न पड़ती थी। अन्त में ब्राह्मणों की राय से उसने थोड़ा सा चरणामृत पान किया। ज्यों ही द्वादशी तिथि समाप्त हुई दुर्वासा ऋषि आ पहुँचे। आते ही उन्होंने पूछा कि तिथि तो बीत गई और आपने पारण नहीं किया, अतः पाप के भागी हुए। अंबरीष ने चरणामृत पी लेने की बात

बतलाई। सुनते ही दुर्वासा बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने भोजन करने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी जटा का एक बाल तोड़कर पृथ्वी पर पटका जो कृत्या बनी और वह राजा को मारने दौड़ी। राजा की रक्षा के लिए तो विष्णु का चक्र था ही उसने कृत्या को नष्ट कर दिया और दुर्वासा को मारने चला। इस पर दुर्वासा बहुत भयभीत हुए। वे अपनी रक्षा के लिए क्रम से ब्रह्मा, महेश और विष्णु के यहाँ गए, पर कोई उनकी सहायता न कर सका। अन्त में विष्णु के कहने से अंबरीष के यहाँ आए और अंबरीष ही ने चक्र से उनका पीछा छुड़ाया। दुर्वासा ने प्रसन्न होकर भोजन किया और अंबरीष की प्रशंसा करते अपने आश्रम पर चले गए। अंबरीष बड़ा पराक्रमी था और इसने १० लाख राजाओं को हराया था। दुर्वासा के अतिरिक्त नारद के साथ भी इसकी एक कथा बड़ी मनोरंजक है। अंबरीष की एक सुन्दरी नाम की अत्यन्त सुन्दरी पुत्री थी। एक बार नारद और पर्वत ऋषि अंबरीष के घर पधारे और सुन्दरी के सौन्दर्य पर मोहित हो गए। सुन्दरी के स्वयंवर के समय दोनों ऋषि बारी-बारी से विष्णु के यहाँ गए और एक दूसरे को बन्दर के मुँह का कर देने के लिए प्रार्थना की। विष्णु ने दोनों की प्रार्थनाएँ मान लीं और स्वयंवर के समय स्वयं भी गए। सुन्दरी ने दोनों ऋषियों की ओर बन्दर-सा मुँह होने के कारण देखा भी नहीं और विष्णु के गले में माला डाल दी। इस पर दोनों ऋषि अंबरीष पर बहुत क्रुद्ध हुए और उन लोगों ने उसे अंधकार से ढँक जाने का शाप दिया। यहाँ भी विष्णु के चक्र ने अंबरीष की रक्षा की तथा दुर्वासा की भाँति ही नारद तथा पर्वत मुनि को ब्रह्मा, महेश और विष्णु के यहाँ से होते हुए अंबरीष के पास आना पड़ा। अंबरीष ने दयाकर चक्र से उन दोनों का पीछा छुड़ाया।

अम्बा—काशिराज इंद्रद्युम्न की सबसे बड़ी पुत्री, जिसे भीष्म हर लाए थे। यह भीष्म से ब्याह करना चाहती थी परन्तु उन्होंने स्वीकार

नहीं किया इस पर उसे क्रोध आया और वह जंगल में चली गई। वह उसने शिव को भक्ति द्वारा प्रसन्न किया और शिव की कृपा से ही दूसरे जन्म में शिखंडी का रूप धारण करके उसने भीष्म का बध किया था। एक अन्य मत से अंबा को भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए लाये थे पर इसने शाल्व से विवाह करना चाहा। यह जान भीष्म ने इसे शाल्व के पास भेज दिया पर शाल्व ने यह कहकर कि तुम्हारा हरण हो चुका है विवाह नहीं किया। इस पर अंबा भीष्म पर रुष्ट हुई और शिव को प्रसन्न कर इसने बदला लिया। दे० 'भीष्म' 'शिखंडी'।

अम्बालिका—काशिराज इंद्रद्युम्न की कनिष्ठ पुत्री और विचित्र-वीर्य की पत्नी। पाण्डु का जन्म इसी के गर्भ से विचित्रवीर्य के मरने पर व्यास के नियोग द्वारा हुआ था। नियोग के समय में भय से यह पीली हो गई थीं, इसी कारण पाण्डु पीले पैदा हुए। वन में कठोर तपस्या करके इसने अपना प्राण त्यागा। दे० 'विचित्रवीर्य' 'पांडु' 'व्यास'।

अम्बिका—काशिराज इंद्रद्युम्न की मझली कन्या और विचित्र-वीर्य की पत्नी। पति के मरने के बाद व्यास के नियोग द्वारा इनके गर्भ से धृतराष्ट्र पैदा हुए। कहते हैं, लज्जा के कारण नियोग के समय इसकी आँखें बन्द हो गई थीं। इसी कारण धृतराष्ट्र जन्मांध पैदा हुए। दे० 'धृतराष्ट्र' 'व्यास' 'विचित्रवीर्य'।

अंशुमान—अयोध्या का एक सूर्यवंशी राजा। यह महाराज सगर का पौत्र और असमंजस का पुत्र था। असमंजस बड़ा होने पर नालायक निकला और सगर ने उसे अपने राज्य से निकल जाने की आज्ञा दी। उनकी आज्ञा से असमंजस राज्य के बाहर चला गया। उस समय असमंजस की स्त्री गर्भवती थी। असमंजस के जाने के बाद उसी गर्भ से अंशुमान का जन्म हुआ।

अंशुमान बड़ा योग्य और शक्तिवान था। महाराज सगर के अश्व-मेध यज्ञ का घोड़ा जब इन्द्र ने चुरा लिया और उसकी खोज में सगर के

६० हजार पुत्र महर्षि कपिल के कोप-भाजन बनकर भस्म हो गए तो सगर ने अंशुमान को पता लगाने के लिए भेजा। अंशुमान पाताल में पहुँचा और वहाँ कपिल को प्रसन्नकर घोड़े को पाया। जब अंशुमान को सगर के ६० हजार पुत्रों के भस्म होने का समाचार मिला तो वह बहुत दुःखी हुआ और उसने महर्षि कपिल से पुनः प्रार्थना करनी शुरू की। अन्त में कपिल ने अत्यन्त प्रसन्न होकर वर दिया कि सगर के पुत्रों की तीसरी पीढ़ी में महाराज भगीरथ अपने भगीरथ प्रयास से गंगा को पृथ्वी पर ले जायँगे और पवित्र जल के स्पर्श से सगर के साठों हजार पुत्र मुक्त होंगे। यह सुनकर अंशुमान बहुत प्रसन्न हुआ और घोड़े को घर लाकर महाराज सगर के अश्वमेध को पूरा किया। इसके अन्य नाम अंशुमत, अंसुमान तथा अंसुमत आदि भी हैं। महाराज दिलीप अंशुमान के पुत्र थे।

अकंपन—(सं०) एक राक्षस जिसका यह नाम किसी से भी न डरने (काँपने) के कारण था। यह रावण का अनुचर तथा सेनापति था। इसके पिता का नाम सुमाली तथा माता का नाम केतुमाली था। अकंपन रिश्ते में रावण का मामा लगता था। रावण की माता 'केकसी' एक मत के अनुसार इसकी बहिन थी। इसकी दूसरी बहिन का नाम कुंभीनसी था। प्रहस्त और धूम्राक्ष इसके दो भाई थे। खर-दूषण तथा उनके साथ १४ हजार राक्षसों के राम-लक्ष्मण द्वारा मारे जाने का समाचार इसी ने सर्वप्रथम रावण को दिया था। राम-रावण युद्ध में अकंपन हनुमान के द्वारा मारा गया।

अक्रूर—एक प्रसिद्ध यादव जो श्वफल्क और गांदिनी के पुत्र तथा वसुदेव के भाई अर्थात् कृष्ण के चचा थे। दे० 'श्वफल्क'।

अक्रूर कंस के दरबार में रहते थे। धनुर्यज्ञ का ढोंग रचकर कंस ने इन्हीं को बलराम और कृष्ण को बुलाने के लिए भेजा था। कृष्ण और शतधन्वा में जब शत्रुता हो गई तो शतधन्वा ने स्यमंतक मणि (दे०

'स्यमंतक') अक्रूर को दे दी। अक्रूर को इस मणि से बहुत धन मिलता था, जिसे वे यज्ञ-याग में लगाते थे। जब कृष्ण द्वारका गए तो अक्रूर भी उनके साथ थे। वहाँ कुछ दिन रहने के बाद लड़ाई-झगड़े से अक्रूर अपने ननिहाल काशी चले आए। उनके आते ही द्वारिका में अकाल पड़ा। लोग बहुत घबराए और अन्त में प्रार्थना करके फिर अक्रूर को वापस ले गए। अक्रूर के पहुँचते ही अकाल दूर हो गया। कहा जाता है कि स्यमंतक मणि जहाँ रहती थी वहाँ अकाल आदि का भय नहीं रहता था।

कृष्ण को पहले से ही सन्देह था कि वह मणि अक्रूर के पास है, पर इस बार जब उनके आने से अकाल दूर हो गया तो उन्हें पूरा विश्वास हो गया। कृष्ण ने एक दिन अक्रूर से मणि के बारे में पूछा, और अक्रूर ने निस्संकोच भाव से उन्हें मणि दे दी। कृष्ण ने पुनः मणि लौटा दी और अक्रूर इसे आजन्म गले में पहने रहे।

कंस की राज-सभा में असम्मानित होकर रहने वाले व्यक्तियों में अक्रूर का नाम लिया जाता है। ये बड़े दयालु, धर्मपरायण तथा पुण्यात्मा थे। लोगों का विश्वास था कि अपने पिता श्वफल्क की तरह इनकी उपस्थिति भी शुभ थी और ये जिस देश में रहते थे वहाँ अकाल, बीमारी आदि का भय नहीं रहता था। श्वफल्क सुत तथा सुफलक सुत आदि इनके नामांतर हैं।

अक्षपाद—(सं०) इन्हीं का दूसरा नाम गौतम था। इनके पैर में आँखें थीं। इसी कारण इन्हें 'अक्षपाद' कहते थे। कहा जाता है कि व्यास ने इनके न्यायशास्त्र का खंडन किया। इस पर गौतम ऋषि ने व्यास का मुख आजन्म न देखने की प्रतिज्ञा की। बाद में व्यास ने इन्हें प्रसन्न किया तो अपने प्रण पर अटल रहने के लिए गौतम ने अपने चरणों में नेत्र उत्पन्न कर उन्हें देखा। अक्षपाद या गौतम ही न्याय-

शास्त्र के प्रवर्तक हैं। इनके ही नाम पर 'न्यायदर्शन' का दूसरा नाम 'अक्षपाद दर्शन' है।

अक्षय कुमार—रावण का एक पुत्र। सीता की खोज में जाने पर हनुमान ने अशोक वाटिका का संहार करते समय इसका वध किया था।

अगस्त्य—मित्रावरुण के पुत्र एक प्रसिद्ध ऋषि। इन्होंने विंध्याचल के मद का नाश किया था। इनका जन्म उर्वशी को देखने पर मित्रावरुण के वीर्यस्खलन-स्वरूप एक घड़े से हुआ था। इसी कारण इनका नाम 'कुंभज' आदि भी है। पितृपक्ष से वशिष्ठ इनके भाई थे। असुरों के संहार के लिए इन्होंने देवों की प्रार्थना पर समुद्र का पान किया था, जहाँ असुर युद्ध में हार कर छिपे हुए थे। एक बार इनके पिता बड़े कष्ट में थे और उन्होंने इन्हें आज्ञा दी कि विवाह करो जिससे पुत्र उत्पन्न होकर हमारे कष्टों का निवारण करे। पितरों की आज्ञा मान अगस्त्य ने विवाह के लिए उचित कन्या न पाकर स्वयं एक कन्या की सृष्टि की जिसे विदर्भराज ने पाला-पोसा और उसका नाम लोपा-मुद्रा रक्खा। वयस्क होने पर उससे अगस्त्य ने विवाह किया और प्रह्लाद के वंशज इल्वल से धन प्राप्त कर उसके लिए आभूषण आदि बनवाए। वनवास के समय रामचन्द्र इनके आश्रम में गए थे। महर्षि नहुष ने इन्द्रत्व पाकर अगस्त्य को अपनी पालकी ढोने के लिए लगाया था और इन्हें एक लात भी मारी, जिससे क्रोधित होकर अगस्त्य ने उन्हें शाप दिया। दे० 'नहुष' 'लोपामुद्रा', 'विंध्याचल'।

अग्नि—एक प्रधान वैदिक देवता। इनकी उत्पत्ति कहीं तो परमात्मा के मुख से, कहीं धर्म के औरस पुत्र रूप में और कहीं बसुभार्या के गर्भ से होनी लिखी है। दस दिग्पालों में ये भी एक हैं और इनका स्थान दक्षिण-पूर्व का कोण है। अग्नि की शादी कश्यप की कन्या स्वाहा से हुई थी। इनके तीन पुत्र और ४५ पौत्र हैं। इन सबको मिलाकर ४९ अग्नि कहे गए हैं। इनका वाहन छाग या मेढ़ा है और अस्त्र शक्ति एवं अक्ष सूत्र। दे० 'शिवि' 'शिव'।

अग्निबाहु—राजा प्रियव्रत के दस पुत्रों में से प्रमुख। इनके बारे में यह प्रसिद्ध है कि इन्हें अपने पुराने जन्म की सभी बातें याद थीं। शायद इसी कारण संसार की नश्वरता को पहचान कर इन्होंने राज्य को त्याग दिया और जीवन भर भक्ति में लीन रहे।

अग्रदास—वैष्णव भक्त तथा कृष्णदास पयहारी के प्रधान शिष्यों में एक। भक्त माल के रचयिता नाभादास इनके प्रधान शिष्य थे और इन्हीं की आज्ञा से उन्होंने भक्त-माल की रचना की। ये रामानन्द की परम्परा में चौथी पीढ़ी में पड़ते हैं।

अघासुर—प्रसिद्ध असुर बकासुर का अनुज तथा कंस का सेनापति। पूतना राक्षसी, जिसने छद्म वेष में कृष्ण को अपने स्तनों का दूध पिला कर मारने का असफल प्रयास किया था इनकी ज्येष्ठ बहन थी। कृष्ण को मारने के लिए कंस ने जिन दुष्टों और दानवों को गोकुल भेजा था, उनमें इनका नाम भी उल्लेख्य है। कृष्ण का वध करने के लिए जब यह वहाँ पहुँचा तो कृष्ण अपने गोप बालकों के साथ गायों को चरा रहे थे। उन्हें देखकर यह एक दीर्घकाय अजगर का रूप धारण कर मार्ग में पड़ रहा। गोप-बालक इसे देखकर भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनाएँ करने लगे। अजगर के श्वास से वातावरण में एक घुटन-सी उत्पन्न हो गई। कुतूहलवश सभी गोप-बालकों ने कृष्ण सहित गुहा के समान प्रतीत होने वाले उस अजगर के मुँह में प्रवेश किया। अजगर ने अपना मुँह बन्द कर उन सबको मार डालना चाहा किन्तु कृष्ण अपना विराट् रूप धारण कर उसके मुँह में सीधे खड़े हो गये, जिसके फलस्वरूप अजगर का श्वास अवरुद्ध हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। कृष्ण ने अपने मृत सखाओं को अमृत का पान करा कर पुनः जीवित कर दिया। इस प्रकार अघासुर का अन्त हुआ।

अज—एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो रामचंद्र के पितामह तथा दशरथ के पिता थे। रघुवंश आदि में अज को रघु का पुत्र माना गया है,

पर कुछ अन्य स्थलों पर रघु के पुत्र दिलीप का इन्हें पुत्र कहा गया है। बाल्मीकि रामायण में ये नाभाग के पुत्र माने गए हैं। इनकी स्त्री इंदुमती विदर्भराज की कन्या थीं, जिसने इन्हें स्वयंबर में चुना था। रघुवंश के अनुसार जब अज इंदुमती के स्वयंवर में जा रहे थे रास्ते में एक पागल हाथी मिला। उससे परेशान होकर अज ने उसे मार डालने की आज्ञा दी। जब हाथी मारा गया तो उसके शरीर से एक सुन्दर गंधर्व निकला। गंधर्व ने बतलाया कि किसी मुनि के श्राप से वह पागल हाथी हो गया था। बाद में गंधर्व ने अज को कुछ वाण दिए जिनसे अज स्वयंवर में विजयी हुए।

अजगव—भगवान शिव का धनुष, जो महाराज पृथु के जन्म के समय आकाश से गिरा था। इसके साथ एक राजछत्र तथा दैवी वाण भी थे। इसके अन्य नाम पिनाक या आजगव भी हैं।

अजामिल—यह जाति का ब्राह्मण था परन्तु स्वभाव का बड़ा बुरा था। इसने अपनी स्त्री का परित्याग कर पर स्त्री से सम्बन्ध स्थापित किया था। यह मद्यप भी था। एक बार किसी ने परिहास के लिए इसके यहाँ कुछ साधु भेज दिए जिनके कहने से इसने अपनी रखेली से उत्पन्न पुत्र का नाम 'नारायण' रक्खा। जब वह मृत्युशैया पर पड़ा तथा यमदूतों का भय उसे सताने लगा तो उसने अपने पुत्र 'नारायण' को पुकारा। इस पुकार को सुन स्वय नारायण भगवान प्रसन्न होकर वहाँ आ गए और यमदूतों को उनके दूतों ने मार भगाया। इस प्रकार अजामिल नरक जाने से बच गया। भागवत के अनुसार मरते समय विष्णु के दूतों और यम के दूतों की बातें सुनकर इसे ज्ञान हो गया था।

अजीगर्त—ऐतरेय ब्राह्मण में इसका नाम एक लोभी ब्राह्मण के रूप में मिलता है। इसके शुनःपुच्छ, शुनःशेप और शुनोलांगूल नाम के तीन पुत्र थे। इसने रुपये के लोभ से न केवल शुनःशेप को बलिदान

के लिए बेचा था अपितु १०० गायों के लोभ से बलिदानकर्त्ता के भाग जाने पर उसे अपने हाथ से मारने को भी तैयार हो गया था। दे० 'हरिश्चंद', 'शुनःशेप'।

अतिकाय—बाल्मीकि रामायण के अनुसार एक राक्षस जो रावण का पुत्र था। इसका जन्म धान्यमालिनी नामक स्त्री से हुआ था। शरीर की स्थूलता के कारण इसका नाम अतिकाय था। इसने ब्रह्मा की तपस्या करके दिव्यास्त्र, कवच, दिव्य रथ तथा देवों और राक्षसों से अवध्य होने का वरदान प्राप्त किया था। इसी कारण किसी को कुछ नहीं समझता था। इसने इंद्र को हराया था तथा वरुण से उनका पाश छीन लिया था। राम-रावण युद्ध में कुंभकरण के मारे जाने के बाद यह लक्ष्मण के हाथ से मारा गया जो न तो देव थे और न राक्षस।

अत्रि—एक ऋषि जो बहुत सी वैदिक ऋचाओं के द्रष्टा हैं। अग्नि, इंद्र, तथा विश्वेदेव की प्रार्थनाओं में विशेषतः इनका नाम मिलता है। महाकाव्यों के काल में अत्रि दस प्रजापतिओं में माने जाते रहे हैं, जिन्होंने सृष्टि रचना की। बाद में ये ब्रह्मा के मानसपुत्र के रूप में भी प्रसिद्ध रहे। अत्रि के जन्म के विषय में कहा जाता है कि ये ब्रह्मा की आँख से उत्पन्न हुए थे। शंकर ने एक बार क्रुद्ध होकर इन्हें भस्म कर दिया तो ब्रह्मा ने फिर इनको अग्निद्वारा उत्पन्न किया। दूसरे मत से सृष्टिकर्त्ता के शरीर के दो खंड हुए जिससे मनु का जन्म हुआ और मनु से दस प्रजापति हुए जिनमें अत्रि भी थे। तीसरे मत के अनुसार ब्रह्मा ने आरम्भ में सप्तर्षियों को उत्पन्न किया जिनमें अत्रि भी थे। चौथे मत से अत्रि ब्रह्मा के मानसपुत्र थे और ठीक उन्हीं की तरह थे। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार ये ब्रह्मा के तीसरे पुत्र थे, इसी कारण इनका नाम अत्रि था। अत्रि ने ब्रह्मा की आज्ञा से अनेक ऋषियों की सृष्टि की। एक बार राहु के आक्रमण से सूर्य पृथ्वी पर गिर रहे थे तो अत्रि ने अपनी तपस्या के प्रभाव से पतनोन्मुख सूर्य को आकाश में रोका। तभी

से इनका एक नाम 'प्रभाकर' पड़ा। इनका विवाह अनसूया से हुआ था। इनकी शतवर्षी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश इनके यहाँ पुत्ररूप में पैदा हुए थे, जिनके क्रम से नाम चन्द्रमा (सोम), दत्तात्रेय तथा दुर्वासा थे। इनके दो और पुत्र बतलाए जाते हैं। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार अत्रि की भद्रा, शुद्रा, मद्रा, शलदा, मलदा, वेला आदि १० स्त्रियाँ थीं जिनसे अबला नाम की कन्या तथा अकल्मष नामक पुत्र का उल्लेख मिलता है। इनके शांखायन आदि और पुत्रों के भी नाम मिलते हैं। अत्रि का आश्रम चित्रकूट के समीप बतलाया जाता है। राम बनवास के समय, इनके आश्रम में गए थे जहाँ अनसूया ने सीता को उपदेश दिया था। दे० 'अनसूया'।

अथर्वन्—एक प्रसिद्ध ऋषि। मुंडकोपनिषद् के अनुसार ये ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र थे। ब्रह्मा ने इन्हें ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया था और इन्होंने उसे अंगिरा को सिखाया था। उसके बाद ब्रह्म विद्या का और लोगों में प्रचार हुआ। अथर्वन् ऋषि ही प्रथम यज्ञकर्ता थे तथा विश्व में सर्वप्रथम अग्नि लाने का भी श्रेय इन्हीं को है। प्रजापतियों में भी इनकी गणना होती है। अथर्ववेद का प्रणयन इन्हीं के द्वारा हुआ था। पुराण काल में अथर्वन् और अंगिरस् एक माने जाने लगे इसी कारण इनके वंश वालों का अंगिरस के वंशजों के साथ नाम लिया जाता है। अथर्ववेद में अथर्वन् का वरुण के साथ एक उपाख्यान मिलता है, जिससे कुछ लोग वशिष्ठ और अथर्वन् को भी एक ही ऋषि मानते हैं, किन्तु यथार्थतः बात ऐसी नहीं है। अथर्वन् वैदिक पुरोहित कहे जाते हैं। इनके वंशजों का दान लेने का वर्णन प्रायः मिलता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार जो गाय असमय गर्भपात करे उसे अथर्वनों को दे देना चाहिए। अग्नि, भिषज्, कबंध तथा दध्यंच आदि अथर्वन् ऋषि के पुत्र कहे जाते हैं। इनका एक नाम अथर्वा भी मिलता है।

अदिति—देवताओं की माता। ये दक्ष प्रजापति की कन्या थीं और

इनका विवाह कश्यप ऋषि से हुआ था। कहीं-कहीं दक्ष प्रजापति की माता के रूप में भी इनका उल्लेख मिलता है। दिति (दैत्यों की माँ) इनकी बड़ी बहिन थीं। विभिन्न ग्रन्थों में इनके बारे में विभिन्न और कभी-कभी विरोधी बातें मिलती हैं। भागवत, हरिवंश तथा विष्णु पुराण के अनुसार विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शुक्र, अंश तथा उपक्रम इनके पुत्र थे। वामन पुराण के अनुसार वामनावतार में विष्णु स्वयं इनके गर्भ से पैदा हुए थे। शायद इनके पति कश्यप को भगवान द्वारा वरदान मिलने के कारण ऐसा हुआ था। और केवल वामन अवतार में ही नहीं, रामावतार में कौशल्या तथा कृष्णावतार में देवकी अदिति ही थीं। ३३ या ३३ कोटि देवताओं की भी माँ ये ही कही जाती हैं। एक अन्य मत से अदिति को ८ पुत्र पैदा हुए जिसमें से एक 'मार्तंड' को तो इन्होंने फेंक दिया पर शेष सात आदित्य जिनकी संख्या बाद में बारह हो गई थी। मत्स्य पुराण के अनुसार समुद्र मंथन से एक जोड़ा कर्णाभरण निकला था जिसे इन्द्र ने अदिति को दिया। कुछ अन्य पुराणों के अनुसार नरकासुर ने कर्णाभरणों को चुरा लिया पर फिर कृष्ण ने उसे मारकर अदिति को लौटा दिया। एक बार कृष्ण और इन्द्र में पारिजात के लिए झगड़ा हुआ जिसका फैसला अदिति ने किया था। ऊपर हम लोग अदिति को तीन अवतारों में विष्णु की माँ के रूप में देख चुके हैं। कुछ ब्राह्मणों और यजुर्वेद की तैत्तिरीय संहिता में अदिति विष्णु की पत्नी बतलाई गई हैं। ऐसी ही और भी बहुत-सी विचित्र बातें अदिति के सम्बन्ध में हैं। सभी बातों पर विचार करने पर यही पता चलता है कि अदिति नाम की कोई स्त्री नहीं थी। राथ मैक्समूलर तथा रेगनियर आदि विद्वानों के अनुसार यह एक रूपक मात्र है, जिसका अर्थ अनन्त शक्ति या प्रकृति है, प्रायः यही बात ठीक भी ज्ञात होती है। 'अदिति' शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि इसका पुराना अर्थ 'अंतरिक्ष' था, जिससे सभी पैदा

हुए कहे जा सकते हैं। कालांतर में यही भावना रूपक रूप में व्यक्ति हो गई। अदिति के जो माता, पिता, पृथ्वी, प्रकृति, पुत्र, रक्षा, पत्नी, दूध, असीम, वाणी आदि बहुत से अर्थ मिलते हैं, शायद वे भी कुछ इसी ओर संकेत करते हैं। सम्भव है इन अनेकानेक भावनाओं से होता हुआ अदिति का अर्थ देवमाता हुआ हो। इस सम्बन्ध में पूर्ण अनुसंधान के बिना कुछ कहना कठिन है।

अधिरथ—(सं०) महाभारत तथा विष्णु पुराण आदि में इनकी कथा मिलती है। कहीं इनके अंग देश के राजा होने का वर्णन मिलता है, और कहीं महाराज धृतराष्ट्र के सारथी होने का। डाउसन का अनुमान है कि अधिरथ दोनों ही थे। इन्हें धृतराष्ट्र का मित्र भी कहा जाता है। ये जन्म से क्षत्रिय और वृत्ति से सूत थे। कुन्ती को सूर्य के अंश से जब पुत्र हुआ तो उसने समाज-भय से पुत्र को एक सन्दूक में बन्द कर गंगा में प्रवाहित कर दिया। सन्दूक बहते-बहते वहाँ पहुँची जहाँ अधिरथ अपनी पत्नी राधा के साथ जलक्रीड़ा कर रहे थे। दोनों ने सन्दूक लेकर खोला तो उसमें एक बच्चा दिखाई पड़ा। उस समय तक अधिरथ को कोई सन्तान न थी। दोनों ने उस लड़के को भगवान का दिया समझ कर अपने पुत्र की तरह प्यार से पाला। बड़ा होने पर यही लड़का 'कर्ण' हुआ। अधिरथ को कर्ण का सौतेला पिता कहते हैं, और अधिरथ के कारण ही कर्ण को सूतसुत या अधिरथ सुत आदि कहते हैं। दे० 'कर्ण'।

अनरण्य—इनकी कथा बाल्मीकि रामायण के उत्तर कांड में मिलती है। विष्णु, लिंग तथा मत्स्य आदि पुराणों के अनुसार ये सूर्यवंशी राजा सम्भूत के पुत्र थे, पर भागवत के अनुसार त्रसदस्य के। जिस समय अनरण्य अयोध्या में राजा थे, रावण इनसे युद्ध करने गया और इनको बुरी तरह से हराया। मरते समय अनरण्य ने रावण को यह

शाप दिया कि मेरे ही कुल में उत्पन्न राजा 'राम' मेरा बदला लेंगे और तुम्हारा गर्व चूर कर तुम्हें दूसरे लोक भेजेंगे।

अनसूया—दक्ष की २४ कन्याओं में से एक मतांतर से महर्षि कर्दम और देवहूति की कन्या। इनका विवाह महर्षि अत्रि से हुआ था। दे० 'अत्रि'। अनसूया अपने पातिव्रत धर्म के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी आराधना से प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश क्रम से चन्द्रमा, दत्तात्रेय और दुर्वासा रूप में इनके पुत्र बने। रामावतार में भगवान जानकी आदि से साथ इनके आश्रम पर गये थे और अनसूया ने सीता को उपदेश तथा नाना प्रकार के उपहार दिये थे। अनसूया की शक्ति के विषय में कई कथाएँ प्रसिद्ध हैं, जिनमें से तीन इस प्रकार हैं। एक बार अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ा था और सारा संसार दुखी था। अनसूया ने जल, फल-फूल आदि उत्पन्न कर संसार की रक्षा की। एक बार नारद से अनसूया के पातिव्रत की प्रशंसा सुनकर उमा, रमा और ब्रह्माणी ने शिव, विष्णु और ब्रह्मा को अनसूया की परीक्षा लेने के लिए भेजा। ये लोग जब पहुँचे तो अत्रि आश्रम पर नहीं थे। इन लोगों ने नग्न होकर अतिथि सत्कार करने को कहा। अनसूया ने अपने प्रभाव से तीनों को बालक बना लिया और पालने में लिटा कर उनका सत्कार किया। अंत में उमा, रमा आदि की प्रार्थना पर उन्होंने पुनः ब्रह्मा, विष्णु और शिव को पूर्ववत् कर दिया।

इसी प्रकार एक बार मांडव्य ऋषि अपने पूर्व जन्म के कर्मों के कारण शूली पर चढ़ाए जा रहे थे। किसी पतिव्रता स्त्री से धक्का लगने पर उन्होंने उसे विधवा होने का शाप दे दिया। अनसूया ने उसके मरे पति को फिर से जिला दिया। इनके अत्रिप्रिया आदि कुछ और नाम भी मिलते हैं। अत्रि-अनसूया का आश्रम प्रयाग में कहा जाता है। इन्हीं के नाम पर वहाँ 'अतर सुइया' नाम का मुहल्ला है।

अनिरुद्ध—कृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र। विष्णु तथा ब्रह्म

पुराण आदि में इनकी कथा वर्णित है। इनकी माँ रुक्मितनया थीं। इन्होंने अपनी चचेरी बहन सुभद्रा से शादी की थी। अनिरुद्ध बड़े वीर और विषयी थे। दैत्यराज बाणासुर की एक रूपवती पुत्री उषा थी। उषा ने एक दिन शिव और पार्वती को कैलाश पर्वत पर क्रीड़ा करते देखा। देख कर उसका भी मन विचलित हो गया। इस पर पार्वती ने उषा से कहा—कि बेटी, शांत रहो। कुछ दिन में तुम भी इस सुख का अनुभव करोगी। पार्वती ने यह भी कहा कि वैसाख की शुक्ला द्वादशी को तुम जिसका स्वप्न देखोगी वही तुम्हारा पति होगा। उषा ने उस दिन स्वप्न में अनिरुद्ध को देखा और अपनी माया से उन्हें अपने महल में बुला लिया। बाणासुर को यह समाचार मिला तो पहले तो उसने अपने दूतों को भेजा, पर जब अनिरुद्ध ने दूतों को मार डाला तो स्वयं बाणासुर ने आकर उन्हें पकड़ लिया। नारद ने यह समाचार द्वारका में सुनाया तो कृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न आदि इन्हें छुड़ाने आए। बाणासुर की ओर से शिव, कार्तिकेय आदि लड़ने लगे। इसी अवसर पर शिव और कृष्ण में घमासान युद्ध हुआ। अंत में कृष्णादि विजयी हुए। शिव के कहने पर कृष्ण ने बाणासुर को जान से नहीं मारा। अनिरुद्ध उषा को पत्नी रूप में लेकर सबके साथ द्वारका वापस आए। अनिरुद्ध ने धनुष की शिक्षा अर्जुन से ली थी। अनिरुद्ध के पुत्र का नाम वज्र था। ये इतने वीर थे कि युद्ध में इन्हें कोई रुद्ध नहीं कर सकता था इसी कारण इनका नाम अनिरुद्ध था। इनके अन्य नाम उषापति, अशांक आदि मिलते हैं।

अप्सरा—स्वर्ग की प्रसिद्ध सुन्दरी वेश्याएँ जो एक मत से कश्यप मुनि की कन्याएँ हैं। इनके दो भेद हैं: १—लौकिक तथा २—दैविक, जो क्रमशः तीन तथा दस है। एक मत से इनका उद्भव समुद्र-मंथन में जल से हुआ था, अतः अप्सरा कही जाती हैं। जब इनको सुर या असुर कोई भी वर्ग अपनी पत्नी न बना सका तो ये सभी के लिए

प्रयोगनीय हो गई। इनका स्थान इन्द्रलोक कहा गया है। प्रसिद्ध अप्सराएँ उलूपी, रंभा, मेनका तथा तिलोत्तमा आदि हैं। दे० 'समुद्र मंथन'।

अनु— इनकी माता शर्मिष्टा तथा इनके पिता ययाति थे। इन्होंने अपने पिता को अपना यौवन देना अस्वीकार किया, इस पर इनके पिता ने रुष्ट होकर शाप दिया कि तुम्हारे पुत्रादि राज्य के मालिक न हो सकेंगे। शाप व्यर्थ गया क्योंकि अंग, बंग, कलिंग आदि इन्हीं के वंशज थे जिन्होंने अपने राज्यों का नाम अंग, बंग और कलिंग रक्खा। म्लेच्छ जाति की उत्पत्ति इन्हीं से मानी जाती है। अनु के वंश का उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है।

अपाला— यह अत्रिमुनि की कन्या थी। इसे कुष्टरोग हो गया था, जिसे दूर करने के लिए इसने बड़ा तप कर इंद्र से सोम प्राप्त किया। अपाला बड़ी विदुषी और ब्रह्मज्ञानी थी। इसने वैदिक ऋचाओं की रचना भी की थीं। ऋग्वेद में इसका नाम मिलता है।

अबूजेह्ल— पैगंबर मुहम्मद के चाचा। ये इस्लाम धर्म के ख़िलाफ़ थे और मुहम्मद साहब से अक्सर लड़ा करते थे। इन्हीं के साथियों के कारण मुहम्मद साहब को मक्का छोड़ना पड़ा था।

अबूबक्र—इसलाम धर्म के प्रथम खलीफ़ा। ये अबकोहाफ़ा के पुत्र थे। इन्होंने मुहम्मद साहब की पैगंबरियत सर्वप्रथम स्वीकार की। ये मुहम्मद साहब के साथ एक गढ़े में रहे थे, जहाँ इन्हें साँप ने काट लिया था, पर मुहम्मद साहब के थूक लगाने पर ठीक हो गए थे। गढ़े में साथ देने से इन्हें 'यारग़ार' भी कहते हैं। अबूबक्र की लड़की आयशा मुहम्मद साहब की स्त्री थीं। मुहम्मद साहब का इन्हें प्रथम मित्र (यार) भी कहा जाता है।

अभिजित—महाराज जनक और दमयन्ती का पुत्र।

अभिमन्यु—अर्जुन तथा सुभद्रा के पुत्र तथा कृष्ण के भांजे। अभिमन्यु जब गर्भ में तो एक दिन अर्जुन सुभद्रा को चक्रव्यूह की रचना तथा प्रवेश आदि के विषय में बतला रहे थे। चक्रव्यूह से निकलना बतलाना ही चाहते थे कि किसी काम से कहीं चला जाना पड़ा और इसी बीच में अभिमन्यु पैदा हो गए। इस प्रकार गर्भ से ही अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में प्रवेश करना सीख लिया था, यद्यपि निकलना नहीं। महाभारत के युद्ध के समय अभिमन्यु की अवस्था केवल १६ वर्ष की थी। एक दिन नारायणी सेना के साथ लड़ते अर्जुन दूर चले गए थे और इधर द्रोणाचार्य ने व्यूह-रचना कर दी। अपने पक्ष की अप्रतिष्ठा होते देख भीम के साथ अभिमन्यु चले। प्रवेश करना तो ये जानते थे अतः भीतर चले गए पर भीम न जा सके। भीतर पहुँच कर अभिमन्यु ने दुर्योधन के भ्राता वृन्दारक, कोशल के राजा बृहद्बल, दुःशासन-पुत्र उलूक तथा मगध-राजकुमार श्वेतकेतु आदि को मारा। निकलना न जानने पर भी इन्होंने व्यूह तोड़ डाला पर अन्याय से सात-सात महारथी एक साथ इनसे युद्ध करने लगे और अंत में ये जयद्रथ के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुए। अभिमन्यु का विवाह विराट-कन्या उत्तरा से हुआ था। इनकी मृत्यु के समय उत्तरा गर्भवती थी। उसी गर्भ से बाद में महाराज परीक्षित उत्पन्न हुए जो राज्य के अधिकारी हुए। कहा जाता है कि किसी शाप के कारण अभिमन्यु पैदा हुए थे और मरने के बाद शाप-मुक्त होकर चन्द्रलोक में चले गए।

अमरावती—इन्द्र के स्वर्ग की राजधानी जिसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था। यह अपनी भव्यता तथा महानता के लिए प्रसिद्ध है। इसका स्थान सुमेरु पर्वत पर है। इसके चारों ओर आकर्षक उपवन तथा जल प्रपात आदि हैं। देवता यहीं निवास करते हैं।

अमृत—एक पेय जिसके पीने से पीने वाला अमर हो जाता है। जब पृथु के भय से पृथ्वी गो बनी थी तो देवों ने इन्द्र को बछड़ा बनाकर

पृथ्वी को दूहकर अमृत निकाला था पर फिर दुर्वासा के शाप से यह अमृत समुद्र में जा गिरा था। बाद में देवों और दैत्यों ने समुद्र को मथ कर (दे० 'समुद्र मंथन') इसे फिर निकाला और देवताओं ने इसका पान किया। दैत्यों में केवल राहु ही इसे पा सके।

अमोघा—(१) पद्मपुराण के अनुसार अमोघा शतनुमुनि की पत्नी थीं। ये अत्यन्त सुन्दरी थीं। एक बार ब्रह्मदेव ऋषि को इनके देखने से वीर्यपात हो गया जिससे लोहित नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। (२) अमोघा महर्षि कश्यप की एक पत्नी थीं, जिनसे पक्षियों की उत्पत्ति मानी जाती है।

अरिष्ट—एक राक्षस, जिसके पिता का नाम बलि था। कंस के कहने से इसने बैल (वृषभ) का भयंकर वेष धारण कर कृष्ण पर आक्रमण किया था और उन्हें मार डालना चाहता था, पर कृष्ण ने इसके पूर्व ही इसका काम तमाम कर दिया। वृषभ का वेष धारण करने के कारण इसका नाम वृषभासुर भी है।

अरुधन्ती—(१) एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि मंडल में वसिष्ठ के पास दिखलाई देता है। सुश्रुत के अनुसार जिस व्यक्ति की मृत्यु समीप होती है वह इसे नहीं देख सकता। विवाह के अवसर पर सप्तपदी के बाद वर-वधू को इस नक्षत्र का दर्शन कराने का विधान है। (२) दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम। दक्ष की ५० पुत्रियाँ थीं, जिनमें से १० धर्म से, १३ कश्यप से और २७ चन्द्र से विवाही गईं थीं। अरुन्धती धर्म की पत्नियों में से थी। (३) वशिष्ठ मुनि की पत्नी। इनके पिता कर्दम ऋषि थे। महाभारत आदि पर्व के अनुसार वशिष्ठ बड़े चरित्रवान व्यक्ति थे पर अरुन्धती को उनके चरित्र के विषय में सन्देह था, इसी कारण वे उनकी अवज्ञा किया करती थीं। इसी पाप से उनकी श्री चली गई जिसके फलस्वरूप वे आकाश में वशिष्ठ के पास अत्यन्त धूमिल दिखाई पड़ती हैं। वशिष्ट की एक पत्नी का नाम अक्ष-

माला भी मिलता है। हिन्दी विश्वकोषकार के अनुसार अरुन्धती और अक्षमाला एक ही स्त्री के नाम हैं। वशिष्ठ और अरुन्धती आकाश में भी साथ रहने के कारण दाम्पत्य प्रेम के आदर्श समझे जाते हैं।

अरुण—(१) बारह सूर्यों में से एक जो माघ के महीने में उदय होते हैं। 'अरुणो माघमासे वै' (२) सूर्य के सारथी का नाम जो कश्यप और कद्रु के पुत्र कहे जाते हैं। एक मत के अनुसार इनकी माँ कद्रु न होकर विनता थीं। गरुड़ इनके बड़े भाई थे। अरुण की स्त्री का नाम 'श्येनी' था। 'जटायु' तथा 'संपाती' इन्हीं के पुत्र थे। दे० 'जटायु', 'संपाती'। इनके अन्य नाम रुम्र (=पीला), आश्मन (=पत्थर का बना हुआ) तथा अनुरु (=बिना जंघे का) हैं। ये प्रातःकाल के देवता कहे जाते हैं। (३) ऋषियों का एक वर्ग। तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार इनकी उत्पत्ति प्रजापति के माँस से हुई थी। (४) एक राक्षस का नाम।

अर्जुन—पांडु और कुन्ती के तीसरे पुत्र। अर्जुन पहले के एक इंद्र थे। बाद में हीन बल होकर ये हिमालय में तप करने लगे। अन्त में महादेव की आज्ञानुसार संसार में इन्होंने जन्म ग्रहण किया। पाँचों पांडव देवताओं के अंश से उत्पन्न थे। अर्जुन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि दुर्वासा द्वारा रचे गए किसी मन्त्र से कुन्ती ने इंद्र का आह्वान किया था और उसी से इनकी उत्पत्ति हुई। इंद्र-पुत्र होने के कारण इन्हें 'ऐंद्रि' कहते हैं। अर्जुन बहुत सुन्दर, दयालु और वीर थे। इन्होंने द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्त की और उनके सबसे प्रिय शिष्य थे। इन्हीं के लिए द्रोण ने एकलव्य से अंगूठा ले लिया था। धनुर्विद्या में प्रवीणता के कारण अर्जुन ने चलते चक्र के बीच मछली की आँख में बाण मार कर द्रौपदी को जीता, जो पाँचो पांडवों की पत्नी थी पर जिनका अर्जुन पर विशेष स्नेह था। अर्जुन एक बार अपनी इच्छा से देश छोड़ कर १२ वर्ष के लिए चले गए थे। इसी यात्रा में इन्होंने परशुराम से

अस्त्र चलाना सीखा। नागकन्या उलूपी से भी इसी समय इनका प्रेम हो गया, जिससे इरावत् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अर्जुन ने मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा से भी शादी की, जिससे वीर पुत्र बभ्रुवाहन उत्पन्न हुआ और जो अपने नाना के मरने के बाद राज्य का अधिकारी हुआ। महाभारत युद्ध के बाद अश्वमेध यज्ञ की दिग्विजय में अर्जुन ने अपने पुत्र बभ्रुवाहन को घोड़ा रोकने के लिए मारा था, पर फिर बाद में बभ्रुवाहन जीवित हो गया। इन तीन के अतिरिक्त अर्जुन ने कृष्ण की बहन सुभद्रा से भी विवाह किया था, जिससे अभिमन्यु की उत्पत्ति हुई थी। एक बार खांडव बन जलाने में अग्निदेव की अर्जुन ने सहायता की थी, जिससे प्रसन्न होकर अग्नि ने इन्हें 'गांडीव' धनुष दिया था। जब राजा युधिष्ठिर जुए में हार गए और अपने भाइयों के साथ १२ वर्ष के लिए बन में गए तो अर्जुन अपने भाइयों से अलग हिमालय पर तप करने चले गए। वहाँ इन्हें किरातवेश में शिव मिले और दोनों में घोर संग्राम हुआ। बाद में ज्ञात होने पर अर्जुन ने शिव से क्षमा माँगी और शिव भी इनकी वीरता से प्रसन्न हुए तथा उन्होंने इन्हें 'पाशुपत' अस्त्र दिया। वरुण, कुबेर तथा यम ने भी इन्हें अपने-अपने अस्त्र दिए। इंद्र ने भी इन्हें अस्त्र दिया और अपने साथ अमरावती ले गए। वहाँ समुद्र के असुरों को अर्जुन ने हराया, जिसके उपहार में इंद्र ने एक सोने की जंजीर, शंख, मुकुट आदि दिए। अमरावती से चलते-चलाते उर्वशी इन पर मोहित हो गई और उसने इनसे सहवास की इच्छा प्रकट की। अर्जुन ने उसकी प्रार्थना ठुकरा दी और इस पर रुष्ट होकर उर्वशी ने इन्हें नपुंसक होने का शाप दिया। इसी शाप से बनवास के तेरहवें वर्ष में जो एक वर्ष गुप्त बनवास था, अर्जुन 'बृहन्नला' बनकर राजा विराट की पुत्री उत्तरा को नृत्य तथा गान विद्या सिखाने लगे। वहाँ उत्तरा भी इन पर मोहित हुई पर उसे इन्होंने पुत्री माना और स्वयं उससे विवाह न करके, अपने पुत्र अभिमन्यु से विवाह करवा

दिया। बनवास के अंत में विराट की इन्होंने सहायता की तथा कौरवों एवं त्रिगर्तराज को मार भगाया। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी कृष्ण थे। जब ये अक्षय तुणीर तथा गांडीव धनुष के साथ अपने कपिध्वज रथ पर बैठे हुए रण स्थल में पधारे तो इन्हें अपने लोगों को लड़ने के लिए तत्पर देख मोह होने लगा, जिसे दूर करने के लिए कृष्ण को गीता की शिक्षा देनी पड़ी। अर्जुन युद्ध में बड़ी वीरता से लड़े। यों तो इन्होंने युद्ध में भीष्म, जयद्रथ आदि अनेक वीरों को मारा, पर युद्ध के १७ वें दिन इनकी महारथी कर्ण से लड़ाई बड़ी घमासान रही, जिसमें अंत में कर्ण मारे गए। युद्ध के बाद युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया जिसमें दिग्विजय के लिए अर्जुन घोड़े के साथ गए थे। इन्होंने चारों दिशाओं की विजय की और यज्ञ पूरा हुआ। बुढ़ापे में अर्जुन अपने मित्र कृष्ण के यहाँ द्वारिका गए। कहा जाता है कि एक बार कृष्ण के आदेश से ये गोपिकाओं को लेकर प्रभास तीर्थ की यात्रा करने जा रहे थे। रास्ते में भीलों ने चढ़ाई कर दी। अर्जुन ने उन्हें रोकने के लिए अपने गांडीव पर हाथ रक्खा पर गांडीव न उठा सके और भीलों ने इनको बुरी तरह मारा तथा गोपिकाओं को लूट लिया।

कृष्ण के मरने पर उनकी अंतिम क्रिया अर्जुन ने की और उसके बाद ये हिमालय पर्वत पर गलने चले गए। फाल्गुन, जिष्णु, किरीटी, श्वेतवाहन, बीभत्सु, विजय, कृष्ण, सव्यसाची, धनंजय, पार्थ, शत्रुनंदन, गांडीवी, माध्यम पांडव, श्वेतबाजी, कपिध्वज, राधाभेदी, सुभद्रेश, गुडाकेश, बृहन्नला, पाकशाशनि, बृहन्नल, गांडीवधन्वा, पांडुनंदन आदि इनके कुछ नाम हैं।

महाभारत के विराट पर्व में अर्जुन ने स्वयं अपने दस नामों का रहस्य बतलाया है जिसे संक्षेप में यों रखा जा सकता है।

१. संसार में उनके रंग का कोई नहीं था अतः अर्जुन (=सफेद)।

२. समस्त देश जीतकर धन ग्रहण करने के कारण—धनंजय।

३. युद्ध में जाकर बिना जीते न लौटने के कारण—विजय।

४. इनके घोड़े सफेद थे अतः श्वेत वाहन श्वेतबाजी।

५. उत्तर फाल्गुनी तथा पूर्व फाल्गुनी नक्षत्रों की संधि पर पैदा हुए थे अतः फाल्गुन।

६. दानव युद्ध के समय इंद्र ने इन्हें उज्वल रत्न-किरीट पहना दिया था अतः किरीटी।

७. युद्ध में कभी घृणित कर्म नहीं किया अतः वीभत्सु।

८. दाएँ हाथ की तरह बाएँ से भी बाण छोड़ सकते थे अतः सव्यसाची।

९. इन्हें कोई हरा नहीं सकता था अतः जिष्णु।

१०. उज्वल कृष्णवर्ण होने के कारण पांडु बचपन में इन्हें प्यार से कृष्ण कहते थे अतः कृष्ण।

इसके अतिरिक्त अपने बालों के गुच्छे में होने के कारण गुडाकेश, पृथा (=कुन्ती) का पुत्र होने के कारण पार्थ, सुभद्रा-पति होने के कारण सुभद्रेश, गांडीवधारी होने के कारण गांडीवधन्वा या गांडीवी, रथ हनुमान चित्रधारिणी ध्वजा के कारण कपिध्वज, तथा इंद्र पुत्र होने के कारण ऐंद्रि तथा पाक शासनि आदि नामों से भी पुकारे जाते थे। दे० 'उत्तरा', 'उलूपी', द्रौपदी'।

अर्द्धनारीश्वर—शिव का एक रूप जिसमें दायीं ओर का अर्द्धाङ्ग पुरुष का तथा बायीं ओर का अर्द्धाङ्ग स्त्री का है। तंत्रशास्त्र के अनुसार मन्त्र से आह्वान कर इसका ध्यान धरना चाहिए। शरीर में इसका निवास कंठस्थित विशुद्ध पद्म माना गया है। पुराणों के अनुसार सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा ने घोर तपस्या की, और उसके फलस्वरूप शिव ने यह अर्धनारीश्वर का रूप धारण किया जिसमें दायीं ओर पुरुष शक्ति के प्रतीक शिव तथा बायीं ओर स्त्री शक्ति की प्रतीक पार्वती—

दोनों ही थे। अर्द्धनारीश्वर के अन्य पर्याय अर्द्धनारीश तथा परांगद आदि हैं।

अर्यमा—(१) एक वैदिक देवता। (२) सर्वश्रेष्ठ पित्र जो अदिति और कश्यप के पुत्र कहे जाते हैं। (३) बारह सूर्यों में से एक जिनका समय वैशाख का महीना माना गया है और जिनकी किरणें संख्या में ३०० कही जाती हैं। इनका आवाहन वरुण और मित्र के साथ होता है।

अलंबल—एक राक्षस। पर्याप्त बल होने के कारण इसका यह नाम था। यह जटासुर का पुत्र था। महाभारत के युद्ध में अलंबल कौरवों की ओर था। यह भीम के पुत्र घटोत्कच के हाथ से मारा गया।

अलंबुध—(१) रावण के एक मंत्री का नाम। (२) ऋष्यशृङ्ग का पुत्र एक राक्षस जो महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर था। इसे सात्यकि ने बुरी तरह से हराया था और अंत में भीम के पुत्र घटोत्कच द्वारा यह मारा गया।

अलंबुषा—एक अप्सरा जो अत्यधिक सुन्दरी तथा संगीत एवं नृत्य में बहुत ही पटु थी। एक बार ब्रह्मा के समक्ष उसका नृत्य हो रहा था। अनेक गंधर्वों के अतिरिक्त वहाँ इंद्र आदि भी उपस्थित थे। नाचते समय हवा का झोंका लगने से अलंबुषा का घाघरा एक बार ऊपर उठा और वहाँ उपस्थित विधूम नामक गंधर्व ने उसका गुप्तांग देख लिया। देखते ही वह कामातुर और मोहित हो गया। अलंबुषा को भी यह बात ज्ञात हो गई और वह भी विधूम पर मोहित हो गई। इंद्र ब्रह्मा आदि की उपस्थिति का ख्याल किए बिना ही काम पीड़ित होकर दोनों एक दूसरे के प्रति अपनी कामुकता का प्रदर्शन करने लगे। ब्रह्मा को यह बात बहुत बुरी लगी और उन्होंने दोनों ही को मनुष्य होने का शाप दिया। शाप को शिरोधार्य कर अलंबुषा राजा कृतवर्मा के यहाँ मृगावती नाम से पैदा हुई तथा विधूम पांडव-वंश में सहस्रानीक नाम से उत्पन्न

हुआ। बड़े होने पर दोनों का विवाह हुआ और शीघ्र ही अलंबुषा गर्भवती हुई। एक दिन उसे आदमी के रक्त में स्नान करने की इच्छा हुई। गर्भवती की इच्छा अवश्य पूर्ण की जानी चाहिए, अतः कृतवर्मा ने व्यवस्था कर दी। संयोग से जब मृगावती नहा रही थी, कोई पक्षी उसे मांसपिंड समझकर उठा ले गया। बाद में किसी ने उसे पक्षी से छुड़ाया और जमदग्नि ऋषि के आश्रम में रख दिया। वहीं मृगावती के गर्भ से उदयन पैदा हुआ।

उदयन बड़ा दयालु था। उसने एक दिन एक मदारी के पंजे से एक साँप को छुड़ाने के लिए मदारी को अपनी माँ के हाथ का कंकण दे डाला। मदारी जब कंकण के लिए सहस्रानीक के राज्य में पहुँचा तो पकड़ा गया और इस प्रकार मृगावती का पता चला, और वह जाकर पुत्र और पत्नी को सादर ले आया। वृद्धावस्था में उदयन को राज्य का भार दे दोनों जंगल में चले गए। कहा जाता है कि वहाँ चक्रतीर्थ में स्नान कर दोनों शापमुक्त हो, पुनः पूर्ववत् गंधर्व तथा अप्सरा हो गए। अलंबुषा, का एक नामांतर मृगावती भी मिलता है।

अलकनंदा—एक नदी जो धौली तथा सरस्वती नदी के मिलने से बनती है और जो देव प्रयाग के पास भागीरथी से मिल गंगा कहलाने लगती है। कभी-कभी अलकनंदा को गंगा का पर्याय भी मानते हैं। इस रूप में अलकनंदा महाराज भगीरथ के भगीरथ प्रयास से विष्णुपद से चली थीं, और ब्रह्मा के कमंडल, शिव की जटा आदि में होती भू-मंडल पर आई थीं। दे० 'गंगा'। वैष्णवों के अनुसार अलकनंदा ही विशुद्ध गंगा हैं जिनको शंकर ने अपने सर पर लिया था और जो १०० वर्ष तक उनकी जटा में रही थीं।

अलक्ष्मी—पद्मपुराण के अनुसार एक बार समुद्र मंथन हो गया तो फिर महादेव को प्रणाम कर देवगण क्षीर सागर को मथने लगे। इस बार समुद्र से ज्येष्ठ-देवी निकलीं। ये ही अलक्ष्मी थीं। इन्होंने

निकलते ही देवताओं से अपने लिए पूछा। देवताओं ने कहा कि जिस घर में बुराइयाँ, कलह, गन्दगी आदि हों उसमें जाकर बास करो। दीपान्विता अमावस्या की रात में अलक्ष्मी देवी की पूजा होती है। लिंग पुराण के अनुसार समुद्र मंथन में अलक्ष्मी लक्ष्मी से पहले निकली थीं अतः वे लक्ष्मी की बड़ी बहिन कही जाती हैं। 'ज्येष्ठ-देवी' नाम में भी यही संकेत मिलता है। इनके अन्य पर्याय हैं नरक देवता, कालकर्णी तथा कालकर्णिका आदि।

अलर्क—(१) एक असुर। एक बार यह भृगु की पत्नी को बलात उठा ले गया। इस पर क्रुद्ध होकर भृगु ने इसे मूत्रश्लेष्मभोजी कीट होकर भूतल में जन्म धारण करने का शाप दिया साथ ही यह भी कहा कि परशुराम के दर्शन से तुम शाप-मुक्त होगे। महाभारत शान्तिपर्व के अनुसार महाभारत काल में यह कीट-रूप में पैदा हुआ। एक दिन कर्ण की जाँघ पर परशुराम सर रख कर सो रहे थे उसी समय इस कीट ने कर्ण की जाँघ में काटा, पर गुरु की निद्रा टूट जाने के भय से कर्ण शांत रहे और खून बहने लगा। खून लगने से परशुराम की नींद खुली और उन्हें देखते ही अलर्क शापमुक्त हो गया। (२) मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सती मदालसा का चौथा पुत्र जो बहुत धर्मात्मा था। इसकी परीक्षा लेने के लिए एक बार बिष्णु और शिव राक्षस बन कर इसके पास एक शव के लिए लड़ने लगे। दोनों बल में बराबर निकले। अतः कोई विजयी न हुआ और झगड़ा ज्यों का त्यों चलता रहा। अलर्क ने एक को अपना शरीर दे दिया और इस प्रकार झगड़ा तै हो गया। इस पर विष्णु और शिव इस पर बहुत प्रसन्न हुए और इसे साक्षात दर्शन दिया। कहा जाता है कि इसके पास जो जिस इच्छा से जाता था, वह पूरी हो जाती थी। (३) एक प्राचीन राजा का नाम जिसने किसी ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निकाल कर दे दी थीं।

अलायुध—एक राक्षस जो महाभारत की लड़ाई में कौरवों की ओर था। इससे और भीम के पुत्र घटोत्कच से बड़ा घमासान युद्ध हुआ और अन्त में अलायुध मारा गया। अलायुध के कुल के बहुत से लोगों को भीम ने मारा।

अली—इन्हें हज़रत अली भी कहते हैं। ये इसलाम धर्म के चौथे खलीफा, मुहम्मद साहब के मित्र और उनके दामाद थे। इनकी स्त्री का नाम फ़ातमा था जो मुहम्मद साहब की पुत्री थीं। दे० 'हसन' 'हुसेन'।

अल्ह—स्वामी अनंतानंद के सात शिष्यों में से एक। ये रामानंद की गुरु परंपरा में माने जाते हैं। कहा जाता है कि ये इतने सिद्ध महात्मा थे कि एक बार इनके लिए आम की डाल झुक आई थी।

अवतार—विष्णु समय-समय पर विभिन्न रूपों में संसार में अवतरित होते रहे हैं। उनके पृथ्वी पर अवतरित रूपों को अवतार की संज्ञा दी गई है। प्रधान अवतार १० हैं—

१. मत्स्यावतार—प्रथम अवतार मछली के रूप में हुआ था। दे० 'मत्स्य' 'मनु'। यह अवतार सतयुग में हुआ था।

२. कच्छपावतार—दूसरा अवतार कछुवे के रूप में हुआ था। दे० 'कच्छप' यह अवतार सतयुग में हुआ था।

३. वाराहावतार—तीसरा अवतार वाराह या शूकर का था। दे० 'वाराह'। इस अवतार का समय सतयुग है।

४. नृसिंहावतार—चौथे अवतार में भगवान आधे मनुष्य और आधे सिंह थे। दे० 'नृसिंह'। इस अवतार का समय सतयुग है।

५. वामन—पाँचवाँ अवतार जो बलि को पृथ्वी से हटा कर पाताल में भेजने के लिए त्रेता में हुआ। इसमें भगवान् ५२ अंगुल के बौने थे। दे० 'वामन'।

६. परशुराम—छठा अवतार जो क्षत्रियों का अत्याचार कम करने के लिए त्रेता में हुआ। दे० 'परशुराम'।

७. राम—सातवाँ अवतार जो रावण को मारने के लिए त्रेता में हुआ। दे० 'राम'।

८. कृष्ण—८ वाँ अवतार जो कंस को मारने के लिए द्वापर में हुआ। दे० 'कृष्ण'।

९. बुद्ध—९ वाँ अवतार बुद्ध भगवान का था। कुछ लोगों के अनुसार गौतम बुद्ध से बुद्धावतार भिन्न था पर अधिक लोग उन्हीं बुद्ध को बुद्धावतार मानते हैं। दे० 'बुद्ध'।

१०. कल्कि—१० वाँ अवतार कलयुग में भविष्य में होगा। दे० 'कल्कि'।

इन दस प्रधान अवतारों के अतिरिक्त कुछ अवतार और हैं। सामान्यतः इनकी संख्या २४ कही जाती है और इनमें उपर्युक्त दस के अतिरिक्ति ब्रह्मा, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, धन्वंतरि, मोहनी, बलराम, वेदव्यास; हंस और हयग्रीव ये १४ और हैं। भागवत के अनुसार अवतार २१ हुए हैं। इनमें प्रधान दस के अतिरिक्त पुरुष, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, धन्वंतरि, व्यास तथा बलराम ये ११ और हैं।

अवधूतेश्वर—शिव का एक रूप। कहा जाता है कि एक बार इंद्र और बृहस्पति शिव के दर्शन के लिए उनके यहाँ गए। उनके धर्मभाव की परीक्षा के लिए शिव ने बड़ा विकराल रूप धारण किया और सामने खड़े हो गए। बृहस्पति तो चुप रहे पर इंद्र ने अपना वज्र उन पर चला दिया और इस प्रकार वे धर्मच्युत हो गए।

अशोक—महाराज रामचन्द्र के एक मंत्री जो बड़े न्यायी, भक्त और नीति-विशारद थे।

अश्वकेतु—महाभारत के समय का एक राजा जो कौरवों की ओर से लड़ते हुए अभिमन्यु के हाथ से मारा गया।

अश्वत्थामा—(१) पांडव पक्ष के मालवराज इंद्रवर्मा के हाथी का नाम। इसी हाथी के मरने का समाचार द्रोणाचार्य को इस तरह सुनाया गया था कि उन्होंने अपने पुत्र अश्वत्थामा को मरा जाना और अपना शरीर त्याग दिया। दे० 'द्रोणाचार्य'। (२) द्रोणाचार्य तथा कृपा के पुत्र। भूमिष्ठ होते ही उच्चैःश्रवा अश्व की तरह इन्होंने शब्द किया जिससे इनका नाम अश्वत्थामा पड़ा। महाभारत युद्ध में अश्वत्थामा कौरवों की ओर थे। दुर्योधन के घायल होने के बाद, कृप, कृतवर्मा तथा अश्वत्थामा ये तीन ही आदमी उस पक्ष में शेष थे। तीनों ही रात को पांडवों के शिविर में घुस गए। भीतर जाकर अश्वत्थामा ने अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए उनके हत्यारे धृष्टद्युम्न को सोते हुए देख कर मार डाला। उसके बाद शिखंडी मिला और वह भी मार डाला गया। चलते-चलाते अश्वत्थामा ने द्रौपदी के पाँच पुत्रों को जो सो रहे थे मारा और दुर्योधन को दिखाने के लिए उन पाँचों का सर काट कर ले लिया। साथ ही उन्होंने गर्भस्थ राजा परीक्षित को भी मारा पर कृष्ण ने बचा लिया। दूसरे दिन द्रौपदी के रोने पर अर्जुन उसे मारने चले पर ब्रह्महत्या के भय से सभी लोगों ने प्राण लेना अनुचित कहा। अंत में भीम, कृष्ण और अर्जुन ने उसका पीछा कर उसकी सिर की मणि छीन ली और यह मणि द्रौपदी को दी गई। इससे द्रौपदी को कुछ सान्त्वना मिली। द्रौपदी ने बाद में मणि युधिष्ठिर को दी जिन्होंने अश्वत्थामा की तरह उसे शीश पर धारण किया। अश्वत्थामा अमर कहे जाते हैं। दे० 'द्रोणाचार्य' 'दुर्योधन' 'परीक्षित'।

अश्वपति—(१) केकय देश के राजकुमार। केकय के प्रसिद्ध राजा जो भरत के मामा और कैकेयी के भाई लगते थे। (२) भरत के नाना और कैकेयी के पिता।

अश्वसेन--(१) सनत्कुमार के पिता जो एक राजा थे । (२) साँपों के राजा तक्षक का पुत्र एक सर्प । यह अपने पिता तथा माता के साथ खांडव बन में रहता था । अर्जुन ने जब उस जंगल में आग लगाई तो तक्षक कहीं चला गया था । अश्वसेन आग में जलने लगा । यह देख उसकी माँ बहुत घबराई और उसने अपने को जलाकर अश्वसेन को बँचाया । इंद्र ने पानी वर्षाकर भी इसके आसपास की अग्नि बुझाने में सहायता दी । माता के मरने का अश्वसेन को बहुत दुःख था और वह अर्जुन से बदला लेने के लिए कर्ण के तुणीर में घुस गया । वहाँ से एक तीर में लिपट कर बड़े जोर से अर्जुन की ओर गया पर अर्जुन ने सिर नीचा कर अपने को बचा लिया । इस पर अश्वसेन ने कर्ण से अपनी इच्छा कह सुनाई पर कर्ण ने इसे अन्याय समझ फिर उसे ऐसा करने का अवसर न दिया । इस पर अश्वसेन ने स्वयं अर्जुन पर हमला किया और अर्जुन के बाण से मारा गया ।

अश्विनी--२७ नक्षत्रों में से प्रथम नक्षत्र जिसका मुख घोड़े के आकार का (तीन नक्षत्रों के एक में मिले होने से) माना जाता है । यह दक्ष प्रजापति की कन्या तथा चन्द्रमा की स्त्री है । आश्विन (क्वार) की पूर्णिमा को इस नक्षत्र में चन्द्रमा वास करते हैं, अतः यही 'शरत पूनो' है । आजकल कार्तिक की पूर्णिमा को 'शरत पूनो' कहा जाता है । इसके अन्य नाम अश्वयुक् तथा दाक्षायणी E हैं ।

अश्विनी कुमार--दो वैदिक देवता । इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा गया है कि त्वष्टा की पुत्री त्वाष्ट्री (दूसरा नाम प्रभा) सूर्य की पत्नी थीं । एक बार सूर्य के तेज को न सह सकने के कारण वे अपनी दो संतानें यम और यमुना तथा अपनी छाया को छोड़ जंगल में चली गईं और वहाँ घोड़ी का रूप धारण कर तपस्या करने लगीं । उनकी छाया से जो वे जाते समय छोड़ गई थीं सूर्य को दो सन्तानें शनि और ताप्ती हुईं । उस समय तक यम और यमुना बड़े हो चुके थे । प्रभा की छाया अपनी

सन्तान के लिए इनका (प्रभा की सन्तान यम-यमुना का) तिरस्कार करने लगी तब सूर्य को इस भेद का पता चला। वे प्रभा (जो घोड़ी बनी थी) के यहाँ घोड़ा बनकर पहुँचे और उन दोनों के संयोग से अश्विनी कुमारों की उत्पत्ति हुई।

ये दोनों चिर युवा, अति सुन्दर तथा देवताओं के वैद्य हैं। नकुल और सहदेव (पांडव) की उत्पत्ति भी इन्हीं दोनों से मानी जाती है। वैद्य होने के कारण पहले इन लोगों को यज्ञ-भाग नहीं मिलता था, पर जब इन्होंने च्यवन ऋषि को वृद्ध से युवा बना दिया, च्यवन के कहने से इंद्र ने इनको भी यज्ञ-भाग का अधिकारी मान लिया। अश्विनी कुमार स्वर्णरथ पर चलते हैं, जिसे घोड़े या चिड़ियाँ खींचती हैं। निरुक्त के अनुसार ये स्वर्ग और पृथ्वी या दिन और रात के प्रतीक हैं, या पवित्र काम करने वाले दो प्राचीन राजा हैं। गोल्ड् सटकर के अनुसार अश्विनीकुमारों की कथा में दो इतिहास एक में मिला दिए गए हैं। अंतरिक्ष के देवताओं में इनका स्थान प्रथम है। इन्हें अश्विनी पुत्र, अश्विनीसुत, स्ववैंद्य, दस्र, नासत्य, आश्विनेय, नासिक्य, गदागद तथा, पुष्करस्रज् भी कहते हैं।

अश्विनीकुमार रूप छद्म की कला में पटु माने जाते हैं और सर्वदा विभिन्न रूपों में विचरते कहे जाते हैं। इनकी चाल बड़ी तेज कही गई है। ऋग्वेद के सायण भाष्यानुसार त्वष्टा की दो सन्तानें सरण्यु (कन्या) तथा (त्रिशिरा) हुई। सरण्यु का विवाह विवस्वान् से हुआ जिनसे यम और यमी की उत्पत्ति हुई। सरण्यु ने अपनी ही जैसी एक स्त्री उत्पन्न कर उसी को अपनी संतान सौंप, घोड़ी का रूप धर भाग गई। विवस्वान् ने बिना पहचाने काल्पनिक सरण्यु के साथ भोग किया जिससे मनु का जन्म हुआ। बाद में विवस्वान को जब पता चला तो वे घोड़ा बनकर सरण्यु के पास गए। उनको पहचान कामेच्छा से सरण्यु उनके पास आई और उसी समय अश्व बने विवस्वान् का

वीर्य पात हुआ। सरण्यु ने वीर्य को सूँघा और सूँघते ही दो पुत्र जन्मे जिनका नाम क्रम से नासत्य और दस्र हुआ। बाद में यही दोनों अश्विनीकुमारों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

अष्टावक्र—एक ऋषि, जिनका शरीर आठ जगह टेढ़ा होने के कारण यह नाम पड़ा था। महाभारत के अनुसार इनके पिता कहोड नामक ब्राह्मण थे। वे उद्दालक ऋषि के प्रिय शिष्य थे। उनकी सेवा आदि से प्रसन्न होकर उद्दालक ने अपनी पुत्री सुजाता (सुजाता का दूसरा नाम सुमति भी है) से इनकी शादी कर दी। ये ही अष्टावक्र की माता थीं।

अष्टावक्र के वक्र होने के विषय में दो मत हैं। कुछ के अनुसार सुजाता का गर्भ धीरे-धीरे बढ़ता गया पर कहोड ने कुछ प्रबन्ध न किया और वे दिन रात पढ़ने में ही व्यस्त रहते थे। इस पर गर्भ के भीतर से ही अष्टावक्र ने अपने पिता को फटकारा जिसके कारण रुष्ट होकर कहोड ने उन्हें आठ स्थान पर टेढ़ा होने का शाप दिया। अन्य मत से एक दिन कहोड अपनी पत्नी के पास बैठ कर वेद पाठ कर रहे थे। उनके मुँह से कोई मंत्र अशुद्ध निकला और गर्भ के भीतर से ही अष्टावक्र ने टोक दिया। इस पर कहोड ने रुष्ट होकर शाप दिया। अष्टावक्र जब पैदा होने को हुए तो कहोड के पास कुछ भी नहीं था। सुजाता ने उनसे राजा जनक के पास जाकर कुछ माँगने को कहा। कहोड वहाँ पहुँचे तो मिथिला के राजपंडित से शास्त्रार्थ होने लगा। तै यह रहा कि जो हारेगा समुद्र में डाल दिया जायगा। कहोड ही हारे और समुद्र में डाल दिए गए। इधर अष्टावक्र पैदा हुए और धीरे-धीरे बड़े हुए। उनकी प्रतिभा आरम्भ से ही असाधारण थी। १२ वर्ष की अवस्था में उन्हें अपने पिता की दुःखद घटना का पता चला और वे जनक के दरबार में पहुँचे। वहाँ उस राजपंडित को, जिसका नाम एक मत से 'वन्दी' था इन्होंने परास्त किया और उसे समुद्र में फेंकने की इच्छा प्रकट की। इस पर वन्दी ने क्षमा माँगी और उसने अपने को वरुण का पुत्र घोषित करते

हुए कहोड को समुद्र से निकाल कर लौटाया। कहोड ने अष्टावक्र से प्रसन्न होकर उन्हें समंगा नदी में स्नान करने का आदेश दिया जिससे उनकी वक्रता ठीक हो गई। विष्णु पुराण में अष्टावक्र के विषय में एक और कथा मिलती है। एक बार कहीं पानी में खड़े होकर ये पूजा कर रहे थे। वहाँ वरुण की अप्सराओं ने इनकी पूजा की, जिससे प्रसन्न होकर इन्होंने उनसे वर माँगने को कहा। अप्सराओं ने श्रेष्ठ पति पाने का वर माँगा, इस पर ये स्वयं पानी में से निकल पति बनने को तैयार हो गए। इनके शरीर की वक्रता देखकर वे हँसने लगीं। अष्टावक्र उन पर रुष्ट हुए और उन्हें शाप दिया कि तुम्हें श्रेष्ठतम पति मिलेगा तो अवश्य पर मिलने के बाद तुम लोगों को डाकू छीन ले जायँगे। कहा जाता है कि वे अप्सराएँ ही कृष्णावतार में गोपियाँ बनीं जिन्हें कृष्ण पति मिले पर अष्टावक्र के शाप से डाकू या कोल-भील उन्हें छीन ले गये।

असमंजस—इक्ष्वाकुवंशीय महाराज सगर के ज्येष्ठ पुत्र। इनकी माता का नाम केशी या केशिनी तथा इनके पुत्र का नाम अंशुमान था। ये बड़े उपद्रवी थे। अपने ६० हजार भाइयों को पानी में डुबोया करते थे तथा प्रजा को बहुत परेशान करते थे, जिससे तंग आकर सगर ने इन्हें देश-निकाला की सजा दे दी।

अस्ति—जरासंध की ज्येष्ठ कन्या जिसका विवाह कंस से हुआ था।

अहल्या—गौतम ऋषि की पत्नी। इनकी उत्पत्ति के विषय में तीन मत हैं। भागवत पुराण के अनुसार मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण भार्म्य मुद्गल से यमज पुत्र तथा कन्या दिवोदास अहल्या की उत्पत्ति हुई थी। विष्णु पुराण के अनुसार मुद्गल के पुत्र का नाम वृद्धाश्व था और वृद्धाश्व की ये दोनों सन्तानें थीं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार अहल्या ब्रह्मा की मानस पुत्री थीं। विश्व के सारे सौंदर्य को इकट्ठा कर ब्रह्मा ने इनको विश्व की श्रेष्ठ सुन्दरी के रूप में रचा था। रचना के बाद इंद्र अहल्या को माँगने आए पर ब्रह्मा ने नहीं दिया। अन्त में स्वयं ब्रह्मा ने

गौतम ऋषि को एक वर्ष के लिए सौंप दिया। गौतम जितेन्द्रिय थे और इसीलिए वे पूरे वर्ष भर तक निरपेक्ष भाव से उन्हें रक्खे रहे। वर्ष के अन्त में ब्रह्मा को जब गौतम के संयम का पता चला तो वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने अहल्या गौतम को दे दी। अब गौतम ने इन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया। विष्णु पुराण तथा भागवत के अनुसार अहल्या से गौतम को शतानन्द नामक पुत्र पैदा हुआ था। इंद्र ने पहले ही इन्हें देखा था, अतः इन्हें पाने को लालायित थे और अवसर देख रहे थे। एक दिन रात्रि की अंतिम घड़ी में जब गौतम गंगा स्नान करने चले गए वे इनके साथ सहवास करने में सफल हुए। इस सम्बन्ध में तीन मत हैं। एक मत से इंद्र अपने ही रूप में अहल्या के पास गए और देवों के साथ सहवास के सुख की प्राप्ति के लिए अहल्या ने उनके साथ सम्भोग किया। दूसरे मत से इंद्र ने गौतम का रूप धारण किया था अतः अनजान में अहल्या ने समर्पण किया था। तीसरे मत से चन्द्रमा ने मुर्गा बनकर इंद्र को सहायता पहुँचाई, इसी कारण नदी से लौटकर गौतम ने इंद्र को कापुरुष तथा सहस्र भग वाला होने का तथा अहल्या को पत्थर होने का शाप दिया। साथ ही अपने शूल से चन्द्रमा पर प्रहार किया, जिससे उन पर निशान हो गया जो आज भी दिखाई देता है। अहल्या के पत्थर होने के विषय में एक मत यह है कि वे पत्थर नहीं हुई थीं, बल्कि अदृश्य हो गई थीं। यों पत्थर वाला मत अधिक मान्य है।

बाद में अनुनय विनय करने पर गौतम ने यह भी कहा कि त्रेता में भगवान राम के दर्शन से, या उनके चरण के छू जाने से अहल्या पूर्ववत हो जायेंगी तथा सीता स्वयंवर के समय राम के दर्शन से इंद्र के सहस्र भग के स्थान पर आँखें हो जायेंगी। अन्त में ऐसा ही हुआ और रामावतार में अहल्या पत्थर या अदृश्यावस्था से पुनः अहल्या बन गई।

इनकी गणना देवकन्याओं में भी होती है, ये पाँचों देव कन्याओं में ज्येष्ठ कही जाती हैं।

कुमारिल भट्ट के अनुसार अहिल्या और इंद्र का आख्यान एक रूपक मात्र है और अहिल्या रात्रि तथा इंद्र सूर्य के प्रतीक हैं, इन्हें अहिल्या या गौतमी आदि भी कहते हैं।

अहिरावण—पाताल लोक का एक राजा और रावण का एक मित्र। यह अत्यन्त पराक्रमी होते हुए भी क्रूर और कपटी था। रावण के कहने पर एक रात, निद्रा की अवस्था में यह राम-लक्ष्मण को चुराकर पाताल लोक ले गया। वहाँ उन्हें अनेक कष्ट देने के पश्चात् देवी की प्रतिमा के सम्मुख उनकी बलि देने को उद्यत हुआ। किन्तु इसी समय हनुमान ने वहाँ पहुँच कर इसका बध कर डाला और राम लक्ष्मण को छुड़ा लाये।

आकूति--भागवत के तृतीय स्कंध के अनुसार ब्रह्मा का शरीर पहले दो भागों में विभक्त हुआ था। उसका एक भाग स्वायंभुव नामक पुरुष तथा दूसरा शतरूपा नाम की स्त्री बना। दोनों का विवाह हुआ, जिससे प्रियव्रत और उत्तानपाद नाम के दो पुत्र तथा आकूति, देवहूति और प्रसूति नाम की तीन कन्याएँ उत्पन्न हुईं।

आकूति का विवाह प्रजापति रुचि से हुआ, जिससे यज्ञ और दक्षिणा नाम की जुड़वा सन्तान पैदा हुई। बड़े होने पर यज्ञ और दक्षिणा ने आपस में विवाह कर लिया। इन्हीं दोनों से १२ यमों का जन्म हुआ।

आज्यपा—एक पितृदेव। ये ब्रह्मा के मानस पुत्र कहे जाते हैं। महाभारत आदि पर्व के अनुसार ये पुलस्त्य के पुत्र थे तथा वैश्यों के आदि पितृदेव थे। यज्ञ का आज्य (घी) पीने के कारण इनका नाम आज्यपा पड़ा। सात प्रधान पितरों में इनकी गणना होती है। मनु भी इन्हें वैश्यों का पितर कहते हैं। इन्हें आज्यप भी कहते हैं।

आडि—दैत्य अंधकासुर का पुत्र। इसने घोर तपस्या की, जिसके फलस्वरूप ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर इसे वर माँगने को कहा। आडि ने अमरत्व प्राप्ति का वरदान माँगा किन्तु ऐसा वर देना ब्रह्मा के लिए भी असम्भव कार्य था। इसलिए उन्होंने इसे अपनी इच्छानुसार रूप परिवर्तन करने का वर दे दिया। इस प्रकार का वर पाकर इसने अनेक प्रकार के अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिये। शिव पर विजय प्राप्त करने के लिए यह कैलाश गया, वहाँ वीरभद्र के साथ इसका युद्ध हुआ। मृत्यु के भय से इसने अपने को सर्प के रूप में परिवर्तित कर लिया किन्तु इस पर भी प्राणों को सुरक्षित न पाकर इसने पार्वती का रूप धारण कर लिया। अन्त में शिव को उसके इस प्रकार के कपटपूर्ण रूप परिवर्तन का पता लग गया और उन्होंने इसका बध कर डाला।

आत्मदेव—एक ब्राह्मण। ये तुंगभद्रा के किनारे रहते थे। इनको कोई संतान न थी। इसी चिंता में एक दिन ये बैठे थे कि किसी सिद्ध ने इनकी पत्नी को एक फूल खाने को दिया। स्त्री ने प्रेमवश उसे स्वयं न खाया और अपनी बहिन को दे दिया। बहिन ने उसे एक गाय को खिला दिया। आत्मदेव की पत्नी तथा गाय दोनों ही गर्भवती हुईं। आत्मदेव को धुंधकारी नाम का बड़ा उत्पाती पुत्र हुआ तथा गाय को गोकर्ण नामक शांत और ज्ञानी पुत्र। गोकर्ण के कान गाय की तरह थे अतः उनका यह नाम था तथा धुंधकारी को उसके स्वभाव के कारण यह नाम मिला था। गोकर्ण को धुंधकारी बहुत सताया करता था।

आदम—पहला आदमी। हिन्दुओं में जो स्थान 'मनु' का है, वही स्थान मुसलमान तथा ईसाइयों आदि में आदम का है। शैतान के बहकाने से इन्होंने मना किए गए पेड़ (ज्ञान वृक्ष, एक मत से गेहूँ) का फल खा लिया था, अतः स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिये गए। इनकी स्त्री 'हौवा' का जन्म इनकी पसली से हुआ था। इन दोनों से

हर घड़ी एक मर्द और एक औरत का जन्म होता था, जो तुरन्त बड़े हो जाते थे और उनका विवाह हो जाता था। इस प्रकार सृष्टि का विकास इन्हीं दोनों से हुआ। इन लोगों के प्रसिद्ध पुत्र हाबील और क़ाबील थे। काबील ने हाबील को क़त्ल कर डाला था। खुदा ने शैतान से आदम को सिजदा करने को कहा था पर उसने नहीं किया, जिस पर उसे स्वर्ग से निकाल कर नरक में कर दिया गया।

आदित्य—प्राचीन वैदिक देवता। तैत्तिरीय संहिता में आदित्य के जन्म के सम्बन्ध में लिखा है कि अदिति ने पुत्र की कामना से देवताओं के निमित्त ब्रह्मौदन पाक तैयार किया और देवों ने अदिति को अपना जूठा दिया। उसे खाने से अदिति को गर्भ रह गया और ४ आदित्यों का जन्म हुआ। अदिति ने फिर पाक बनाया और इस बार जूठा न लेकर अग्रभाग लिया। इस बार एक अपक्व अंड मात्र पैदा हुआ। तीसरी बार चरु चढ़ाने से आदित्य विवस्वान का जन्म हुआ। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार प्रथम बार धाता तथा अर्यमा, दूसरी बार मित्र एवं वरुण तथा तीसरी बार अंश एवं भग और चौथी बार इंद्र तथा विवस्वान् का जन्म हुआ।

ऋग्वेद के आरंभ के मंडलों में आदित्यों की संख्या केवल ६ है, जिनके नाम मित्र, अर्यमा, भग, वरुण, दक्ष और अंश हैं। आगे के मंडलों में संख्या बढ़कर ७ हो गई है। और आगे १०वें मंडल में संख्या ८ हो गई है। वैदिक काल के आदित्यों में वरुण का प्रधान स्थान था। कहा जाता है कि अदिति के आठ आदित्य पैदा हुए पर एक (मार्तंड) को उन्होंने फेंक दिया, इसी कारण उनकी संख्या सात रह गई। संस्कृति साहित्य में (लौकिक) यह संख्या बढ़ते-बढ़ते १२ हो गई और हर महीने के एक-एक आादत्य कहे जाने लगे। अदिति देवों की माता हैं, इस आधार पर अदिति के पुत्र आदित्य का अर्थ पूरा वर्ग भी लिया जाता है जिसमें विष्णु प्रधान हैं। प्रोफेसर रॉथ के

अनुसार आदित्य का मूल अर्थ सूर्य आदि नहीं है। यह नाम उस शक्ति का प्रतीक है जो सूर्य, चन्द्र, तारा आदि को प्रकाश देती है। आज आदित्य का सीधा और एक मात्र अर्थ सूर्य लिया है।

आदित्य केतु – धृतराष्ट्र के पुत्र और दुर्योधन के भाई। महाभारत युद्ध में अपने भाई सुनाभ के मारे जाने पर अपने छः भाइयों के साथ ये भीम से लड़ने गए और उन्हीं के हाथ से मारे गए।

आदिवराह—ये विष्णु के एक अवतार थे। हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष के अत्याचारों से पृथ्वी का उद्धार करने के लिये इन्होंने यह अवतार धारण किया था। इन्हें वाराह भी कहते हैं।

आनंद—महात्मा बुद्ध के प्रिय शिष्यों में से एक। तथागत का इनके प्रति अगाध विश्वास तथा असीम स्नेह था। यहाँ तक कि वे आनन्द को अपने ही समान समझते थे।

आनक दुन्दभि—कृष्ण के पिता वासुदेव का ही एक अन्य नाम। इनके जन्म होने का समाचार सुनकर देवताओं को अत्यधिक प्रसन्नता हुई। हर्षातिरेक के कारण उन्होंने आनन्द से दुदुंभी आदि बजाकर इनकी मंगल कामना की। इसी कारण इनका यह नाम पड़ा।

आयु—(१) चन्द्रवन्शी राजा पुरुरवा तथा उर्वशी के ज्येष्ठ लड़के। प्रसिद्ध राजा नहुष इन्हीं के पुत्र थे। इनका विवाह राजा बाहु की कन्या से हुआ था। जिससे नहुष के अतिरिक्त इनके क्षत्रवृद्ध तथा रंभ आदि ४ पुत्र और थे। (२) कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

आरुणि—(१) वैशंपायन मुनि के ६ शिष्यों में से एक। इन्हें उद्दालक गौतम मुनि भी कहते हैं। (२) आयोद धौम्य मुनि के प्रसिद्ध शिष्य जो एक वैदिक ऋषि भी हैं। इनकी गुरुभक्ति प्रसिद्ध है। एक बार इनके गुरु अयोधौम्य ने इन्हें एक नाली बाँधने की आज्ञा दी। प्रयास करने पर भी जब ये नाली न बाँध सके तो उसी में लेट कर अपने

शरीर से उसे बाँधा। गुरु यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। इनका एक नाम उद्दालक भी था।

अरुणि नाम के कई ऋषि मिलते हैं और प्रायः उनकी कथाओं में घोल-मेल हो गया है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार श्वेतकेतु के पिता भी आरुणि ऋषि थे, जिनके पिता का नाम गौतम था। संभवतः ऊपर दिये गए प्रथम आरुणि वही हैं। यद्यपि कुछ भेद भी मिलता है। सत्य यह है कि आज इस विषय में निश्चय के साथ कुछ कहना संभव नहीं है। प्रसिद्धि की दृष्टि से गुरुभक्त आरुणि ही प्रसिद्ध हैं जिनकी कथा (नं० २) आरुणि में दी गई है।

आर्यक—(१) एक सर्प जो कद्रू का पुत्र था। इसकी कन्या का नाम मारीषा था, जो यदुवन्शी राजा शूर से ब्याही गई थी। (२) एक राजा जो पहले गड़ेरिये थे।

आर्ष्टिषेण—सतयुग के एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा जो महाराज शल के पुत्र थे। ये पहले तो राजा थे पर बाद में तप के बल से ब्रह्मर्षि हो गये, और हिमालय पर नारायण आश्रम के पास अपना आश्रम बना कर रहने लगे। अब इनका आश्रम 'आर्ष्टिषेणाश्रम' एक तीर्थ हो गया है। कहा जाता है कि अंतिम अवस्था में पांडव जब गलने जा रहे थे तो इनके आश्रम पर भी गए थे। इन्हें अहिषेण भी कहते हैं।

आसुरि—(१) कपिल मुनि के प्रधान शिष्य तथा सांख्य मत के प्राचीनतम प्रवर्तकों में से एक। (२) भारद्वाज या याज्ञवल्क्य के एक शिष्य जो सायंहोम के पक्षपाती तथा प्रातः होम के विरोधी थे।

आस्तिक—वासुकि नाग की बहन मनसा के गर्भ से उत्पन्न जरत्कारु ऋषि के पुत्र एक ऋषि और सर्प। एक शाप से मुक्त होने के लिये वासुकि ने अपनी बहन जरत्कारु को दी थी। जरत्कारु ने इस शर्त पर उसे स्वीकार किया कि वे उसका भरण-पोषण नहीं करेंगे तथा यदि मनसा कोई बुरा कार्य करेगी तो त्याग दी जायगी। विवाह के बाद

मनसा गर्भवती हुई। एक दिन शाम को ऋषि सो रहे थे। मनसा ने संध्या आदि करने के लिये उन्हें उठा दिया। और वे नाराज हो कर चलते बने। जाते समय उन्होंने कहा था कि गर्भ है (अस्ति) अतः पुत्र का नाम आस्तीक पड़ा। आस्तीक ने च्यवन ऋषि से समस्त शास्त्र पढ़ा। जनमेजय के नाग यज्ञ में आस्तीक ने बासुकि तथा उसके परिवार की रक्षा की। एक मत के अनुसार आस्तीक ने जनमेजय से कह-कर इस यज्ञ को बन्द करवाया था। दे० 'जनमेजय'।

इंदुमती—विदर्भ के महाराज भोज की बहिन जिसने स्वयवर में अज को अपना वर चुना था। इंदुमती पूर्व जन्म में हरिणी नाम की इन्द्र के दरबार की अप्सरा थी। इन्द्र ने अपनी प्रकृति के अनुसार महर्षि तृणविंदु की तपस्या में विघ्न पहुँचाने के लिए हरिणी को भेजा। ऋषि ने रुष्ठ होकर उसे मनुष्य योनि में जाने का शाप दिया। हरिणी दुखी होकर उनसे प्रार्थना करने लगी तो फिर उन्होंने वर दिया कि स्वर्गीय पुष्प के दर्शन से पुनः तुम अप्सरा होकर इन्द्रलोक में आ जाओगी। इसी शाप के कारण इंदुमती नाम से इसका जन्म हुआ और अज से विवाह हुआ। एक दिन अपने पति अज के साथ यह बाटिका में विहार कर रही थी। उसी समय इसे नींद आ गई। इसी बीच नारद आकाशमार्ग से जा रहे थे। उनकी वीणा से स्वर्गीय पुष्प की माला इसके शरीर पर गिरी। स्वर्गीय पुष्प देखते ही शापमुक्त होकर इंदुमती पुनः इन्द्रलोक चली गई।

इन्द्र—प्रसिद्ध वैदिक देवता। इनके जन्म के विषय में कई मत हैं। पुराणों के अनुसार ये कश्यप और अदिति के पुत्र थे। ऋग्वेद के अनुसार ये सोम और निष्टिग्री के पुत्र थे। निष्टिग्री इन्हें अनेक वर्षों तक गर्भ में लिए रही और अंत में जब ये पैदा हुए तो इनकी माता पागल हो गई और इन्होंने अपने पिता को मार डाला। अथर्ववेद के अनुसार इनकी माता का नाम एकाष्टका था। शतपथ ब्राह्मण के

अनुसार असुरों से देवताओं की रक्षा करने के लिए उनकी प्रार्थना पर प्रजापति ने इन्द्र को उत्पन्न किया। इन्द्र सुनहरे रंग के कहे जाते हैं। इनके हाथ बहुत लम्बे हैं। ये जब जो रूप चाहें धारण कर सकते हैं। समुद्र मंथन के पश्चात् निकले १४ रत्नों में रंभा अप्सरा, ऐरावत हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ा, तथा कल्पद्रुम—ये चार रत्न इन्हें मिले। पुलोमा दैत्य को मार कर उसकी कन्या शची को इन्होंने पत्नी रूप में स्वीकार किया। अन्य मतों से विलिस्तेंगा नामक दानवी पर भी ये अनुरक्त हुए थे। सोमरस इनको बहुत प्रिय था।

वृत्र तथा उसके साथियों के वध के लिए ये दधीच से उनकी अस्थि माँग लाए तथा विश्वकर्मा से उसका वज्र बनवा कर अपने कार्य में सफल हुए। इन्द्र का चरित्र बड़ा भ्रष्ट कहा जाता है। अहिल्या के साथ इनका कृत्य तो प्रसिद्ध ही है जिसके कारण इनके शरीर में सहस्र भग हो गए थे और फिर रामावतार में स्वयंवर के समय वे नेत्रों में परिणत हो गए जिससे इन्हें सहस्राक्ष कहते हैं। इसके अतिरिक्त तपस्या में लीन ऋषियों को पथभ्रष्ट करने के लिए ये प्रायः अपनी अप्सराओं को भेजा करते थे। रावण के पुत्र मेघनाद ने एक बार इनको हराया था तथा इन्हें बाँधकर रावण के दरबार में ले गया था, तब से उसे 'इंद्रजीत' नाम मिला। कहा जाता है कि अहिल्या के साथ किए गए कुकर्म का यह फल था। इंद्र के अपने पुत्र-पुत्री का नाम जयंत और जयंती था। इसके अतिरिक्त अर्जुन भी इनके अंश से उत्पन्न बतलाए जाते हैं। इसी कारण अर्जुन के लिए इंद्र कर्ण के यहाँ दिव्य कवच माँगने गए थे जिस के बदले में कर्ण को एक अभूतपूर्व भाला दिया था। कृष्ण से भी इनका युद्ध हुआ था। कृष्ण ने ब्रज में इनकी पूजा बन्द करादी, जिससे रुष्ट होकर इन्होंने वृष्टि करनी शुरू की। कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर गोपों की रक्षा की और अंत में कृष्ण विजयी हुए।

इन्द्र ने गुप्त रूप में कई बार कई प्रसिद्ध भक्तों की परीक्षा भी ली है। एक बार दिति के गर्भस्थ पुत्रों के नाश के लिए इन्होंने उनको खंड-खंड किया जिससे मरुद्गण पैदा हुए।

ये वर्षा के देवता कहे जाते हैं। वैदिक काल में इनकी पूजा होती थी पर अब नहीं होती। इंद्र देवताओं के राजा होने के कारण 'देवराज' कहे जाते हैं।

इनके कुछ नाम कारणों के सहित इस प्रकार हैं—

वज्रपाणि—हाथ में वज्र धारण करने के कारण।

मेघवाहन—बादलों पर चलने के कारण।

शतक्रतु—एक हजार बलिदान के कारण।

देवपति—देवताओं के राजा होने के कारण।

मरुत्वान्—मरुतों के पति होने के कारण।

सहस्राक्ष—हजार आँखें होने के कारण।

सयोनि—सहस्रभग होने के कारण।

पाकशासन—पाक नामक दैत्य पर शासन करने के कारण।

इन्द्र की स्त्री—शची, पुत्र—जयंत, पुत्री—जयंती, राज्य—स्वर्ग, राजधानी—अमरावती, राज्य-प्रासाद—वैजयंत, तलवार—परंज, और अस्त्र—पाश, वज्र तथा अंकुश हैं, उपवन—नंदन, हाथी—ऐरावत, घोड़ा—उच्चैश्रवा, वाहन—विमान, सारथी—मातलि, धनुष—इन्द्र धनुष। दे० 'शिवि' 'अहल्या'

इन्द्रकील—मंदराचल पर्वत का एक नाम। अर्जुन ने इसी पर तप किया था और किरातवेशी शिव से इसी पर्वत पर युद्ध कर पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था।

इंद्रद्युम्न—(१) यह एक द्रविड़ देश का राजा था। एक बार यह पूजा कर रहा था और इसी बीच इसके गुरु अगस्त्य ऋषि आ गये। पूजा में भंग न होने देने के लिये इसने उठकर उनका अभिवादन नहीं

किया। इस पर ऋषि ने रुष्ट होकर शाप दिया—तुम मेरे आने पर भी हाथी की तरह मस्त बैठे रहे। अतः हाथी हो जाओ। इसी शाप से यह हाथी हो गया। प्रसिद्ध 'गज-ग्राह' कथा का गज यही है। दे० 'गज' तथा 'ग्राह'। (२) स्कंद पुराण के उत्कल खंड के अनुसार मालव देश के एक राजा। इन्होंने ही वह विष्णु -मंदिर बनवाया था, जिसमें आजकल जगन्नाथ की मूर्ति है। इसके विषय में कहा जाता है कि इंद्रद्युम्न एक मंदिर बनवा कर ब्रह्मा के पास मूर्ति स्थापन के लिय पहुँचे। ब्रह्मा ने कहा कि एक बार अपने राज्य में जाकर फिर वापस आओ तब मूर्ति मिलेगी। इंद्रद्युम्न अपने राज्य में आये तो उनका राज्य कहीं मिला ही नहीं। फिर दूसरे जन्म में इन्होंने वहीं मंदिर बनवाया। उसी समय किसी ने बतलाया कि समुद्र में एक काठ तैर रहा है। इंद्रद्युम्न ने ब्रह्मा से सुन रक्खा कि था कृष्ण एक नीम के वृक्ष पर प्राण छोड़ेंगे और वह वृक्ष बह कर यहाँ आयेगा। ध्यान आते ही इंद्रद्युम्न ने वह काठ मँगवाया और जगन्नाथ की मूर्ति बनवाई। पूरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर यही है।

इन्द्रवर्मन—मालवा के महाभारत कालीन राजा जो युद्ध में कौरवों की ओर थे। 'अश्वत्थामा' नामक हाथी इन्हीं का था जो लड़ाई में मारा गया और जिसके आधार पर द्रोणाचार्य की मृत्यु घटित हुई।

इन्द्रसेन—(१) युधिष्ठिर के सारथि का माम (२) राजा नल का पुत्र (३) ऋषभदेव तथा जन्यती के पुत्र का नाम (४) महाभारत-कालीन एक कौरव पक्षीय राजा।

इन्द्रसेना—राजा नल की पुत्री तथा इंद्रसेन की बहन।

इक्ष्वाकु—सूर्यवंश के प्रथम राजा। ये मनु वैवस्वत के पुत्र थे। मनु के छींकते समय उनकी नाक से इनका जन्म हुआ था, इसी कारण इनका नाम इक्ष्वाकु था। इनके पिता विवस्वत् (सूर्य) के पुत्र थे अतः इन्होंने सूर्यवंश की स्थापना की। इनके सौ पुत्र थे जिनमें विकुक्षि सबसे बड़ा था। निमि भी इन्हीं के पुत्र थे जिन्होंने मिथिलावंश को

नींव डाली'। ऋग्वेद में मैक्समूलर के अनुसार यह नाम केवल एक बार आया है। मैक्समूलर इस नाम को किसी एक व्यक्ति का नाम न मानकर एक समूह का नाम मानते हैं।

इड़ा—सायण के अनुसार इड़ा विश्व की शासिका देवी हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार एक समय एक महौघ में समस्त पृथ्वी जलमग्न हो गई। केवल मनु उसमें बचे। उन्होंने प्रजासृष्टि के अभिप्राय से एक यज्ञ का आयोजन किया उसीसे इड़ा का जन्म हुआ। पुराणों के अनुसार इड़ा का विवाह बुध के साथ हुआ जिससे उनके पुरुरवा नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। ऋगवेद में इड़ा को चेतना प्रदान करने वाली शक्ति माना गया है।

प्रसाद जी ने 'कामायनी' में इड़ा को सारस्वत प्रदेश की एक अत्यन्त सुन्दर रानी के रूप में चित्रित कर मनु को उसको ओर आकर्षित दिखाया है किन्तु बाद में मनु को अपनी भूल मालूम होती है और इड़ा का विवाह उनके पुत्र मानव के साथ सम्पन्न होता है। प्रसाद जी ने जहाँ श्रद्धा को हृदय की रागात्मिका वृत्ति का प्रतीक माना है वहाँ इड़ा को बुद्धि की व्यवसायात्मिका वृत्ति के रूप में चित्रित किया है।

इबलीस—शैतानों का प्रधान। यह फरिश्तों का गुरु और अफ़सर था तथा ख़ुदा का पारिषद था। खुदा ने इससे एक बार आदम को सिजदा करने को कहा पर इसने यह कहकर इनकार किया कि आदम मिट्टी का बना है अतः मैं आग का बना उसे सर नहीं झुका सकता। इस पर यह स्वर्ग से निकाल दिया गया। इसी के बहकाने में आकर आदम ने गेहूँ खा लिया था, जिससे वे स्वर्ग से निकाल दिए गए। इबलीस अब आदमियों को बहकाकर बुरे रास्ते पर ले जाता है। यह नरक या दोज़ख़ का राजा भी कहा गया है। वह ईसाई, यहूदी और इसलाम तीनों धर्मों में माना गया है।

इब्राहीम—एक प्रसिद्ध पैगंबर। ये एक बुत बनाने वाले आज़र नाम के संगतराश के लड़के थे। इन्हें 'परमात्मा के मित्र, के नाम से पुकारा जाता है। इब्राहीम एकेश्वरवाद पर बहुत ज़ोर देते थे।

इरावत--नागराज ऐरावत की कन्या उलूपी थी, जिसका विवाह किसी नाग से हुआ था। गरुड़ ने नाग को खा डाला और उलूपी विधवा हो गई। विधवा होने पर अर्जुन को इरावत नामक पुत्र हुआ। इसका लालन-पालन नागलोक में ही हुआ। महाभारत के युद्ध में आर्य-शृङ्ग नामक राक्षस द्वारा यह मारा गया दे० 'उलूपी'।

इलराज—वल्हीक देश के राजा। ये कर्दम प्रजापति के पुत्र कहे जाते हैं। एक बार ससैन्य आखेट खेलने गए। खेलते-खेलते जंबूद्वीप के इलावृत्त खंड में पहुँचे जहाँ पुरुष स्त्री हो जाते हैं। इनको पता नहीं था अतः जब ससैन्य स्त्री हो गए तो, इन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। बहुत दिन तक बेचारे शिव पार्वती की आराधना करते रहे। अंत में पार्वती के प्रसन्न होने पर इन्हें आजीवन एक मास पुरुष और एक मास स्त्री रहने का वरदान मिला।

इलविला—एक देवकन्या जिसका जन्म अलंबुषा नामक अप्सरा तथा तृणविंदु से माना जाता है। दूसरे मत के अनुसार यह विश्रवा की पत्नी तथा कुबेर की जननी है। एक अन्य मत के अनुसार इन्हें पुलस्त्य की पत्नी तथा विश्रवा की जननी कहा जाता है।

इला—वैवस्तव मनु तथा श्रद्धा की पुत्री का नाम। मनु ने पुत्रोत्पत्ति की कामना से एक यज्ञ का आयोजन किया किन्तु उनकी पत्नी श्रद्धा की यह हार्दिक अभिलाषा थी कि पुत्र की नहीं अपितु कन्या की उत्पत्ति हो। इसके लिए वे होता से प्रार्थना भी करवाती थीं। फल स्वरूप उनके 'इला' नाम की पुत्री उत्पन्न हुई। मनु को इससे बड़ी निराशा हुई और उन्होंने इसके विषय में वसिष्ठ से चर्चा की जिनकी

प्रार्थना से आदि पुरुष ने इला को ही पुरुष रूप में परिवर्तित कर दिया जो 'सुधुम्न' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इसराफ़ील—एक स्वर्ग दूत जो प्रलय (क़यामत) के समय तुरही बजाकर मरे लोगों को जगाएँगे। इन्हीं का बाजा सुनकर लोग कब्र से उठ कर फ़रियाद के लिए खुदा के पास जाएँगे।

ईसा—ईसाइयों के पैगम्बर। इन पर बाइबिल नाज़िल हुई थी। ईसा के बहुत से चमत्कार प्रसिद्ध हैं। इन्होंने कई बार मुर्दों को जिला दिया तथा बीमारों को अच्छा कर दिया। जीवन के अंत में इन्हें क्रास पर लटकना पड़ा।

उग्र—(१) धृतराष्ट्र के एक पुत्र तथा दुर्योधन के भाई। ये महाभारत युद्ध में भीम द्वारा मारे गये थे। (२) शिव की वायु-मूर्ति का नाम।

उग्रचंडा—कालिका पुराण के अनुसार दक्ष प्रजापति ने आसाढ़ पूर्णिमा को द्वादशवर्षीय यज्ञ का आरम्भ किया। यज्ञ में सभी देवता बुलाए गए, पर शिव और पार्वती को निमन्त्रण नहीं दिया गया। पार्वती पिता का घर समझ कर बिना निमंत्रण के ही आईं और यहाँ अपने पति का अपमान देखकर उन्होंने यज्ञ-कुंड में कूद कर अपना प्राण दे दिया। तुरन्त उनका १८ हाथों वाला रूप प्रकट हुआ और शिव के अनुचरों की सहायता से उस उग्ररूप ने यज्ञ विध्वंस किया। उसी रूप को 'उग्रचंडा' कहते हैं। शाक्त लोग आश्विन बदी ६ को दुर्गा के इसी रूप की पूजा करते हैं।

उग्रतप—एक ऋषि, जिन्होंने गोपिकाओं के साथ बिहार करते कृष्ण के रूप की उपासना की थी। अगले जन्म में ये गोकुल में सुनंद नामक गोप की पुत्री रूप में पैदा हुए और कृष्ण का साहचर्य प्राप्त किया।

उग्रतारा—भगवती दुर्गा का वह रूप जो भक्तों को उग्र भय से तार देता है। शुंभ और निशुंभ जब देवताओं को बहुत तंग करने लगे तो देवता लोग इन्द्र के पास गए। इन्द्र के साथ सभी देवता हिमालय पर्वत पर गए और वहाँ मातंग ऋषि की कुटी के समीप सब दुर्गा की प्रार्थना करने लगे। भगवती प्रसन्न होकर मातंग मुनि की पत्नी के रूप में प्रकट हुई। इन लोगों की प्रार्थना सुनकर उनका सुन्दर रूप बदल गया और वे चतुर्भुजा, मुंडमालिनी और कृष्णवर्णा हो गई। उनके शरीर पर काले वस्त्र हो गए और चारों हाथों में क्रम से खड्ग, चामर, कपालिका तथा खर्पर आ गए। मस्तक पर एक लम्बी जटा हो गई। आँखें लाल हो गईं। इसी रूप में देवी भगवती ने शुंभ और निशुंभ को मारा तथा उनके शव को अपनी जीभ से चाटने लगीं। उग्रतारा भगवती का सबसे भयंकर रूप है। इन्हें मातंगी भी कहते हैं।

उग्रपश्या—अथर्ववेद संहिता के अनुसार यह एक अप्सरा है जो मनुष्य को जुआ खेलने के पापों से छुड़ाती है।

उग्रसेन—(१) भागवत के अनुसार मथुरा के एक प्रसिद्ध यदुवंशी राजा। इनके पिता का नाम आहुक तथा माता का नाम काश्या था। इनकी पत्नी का नाम कर्णा था जिससे इन्हें ६ पुत्र और ५ पुत्रियाँ पैदा हुईं। पुत्रों में कंस सबसे बड़ा था। इसके एक पुत्र का नाम देवक भी था। एक मत से देवक उग्रसेन का भाई था। कंस ने अपने श्वसुर जरासंध की सहायता से इसे कारागार में डाल दिया और स्वयं राजा बन बैठा। बाद में कृष्ण ने कंस को मार कर राज इसे लौटा दिया। (२) धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक। (३) परीक्षित के एक पुत्र और जनमेजय के भ्राता।

उच्चैःश्रवा—इन्द्र के घोड़े का नाम। यह समुद्र से निकला था। इसका वर्ण श्वेत था और मुँह सात थे।

उतथ्य—अंगिरा कुल के एक ब्राह्मण जिसने सोम की पुत्री भद्रा से

विवाह किया था। भद्रा के रूप पर वरुण मोहित थे, अतः वे उसे अपने घर ले गए। इसपर उतथ्य बहुत बिगड़े और इन्होंने नारद को वरुण के पास भेजा। फिर भी वरुण ने भद्रा को न लौटाया। उतथ्य ने रोष में समुद्र सुखा डाला, वरुण की झील को जला दिया तथा सरस्वती नदी को अपनी प्रार्थना से रेगिस्तान बना दिया। अब डर कर वरुण ने भद्रा को लौटाया और बदले में उतथ्य ने प्रसन्न होकर फिर सब को पूर्ववत कर दिया। ऋग्वेद के अनुसार उतथ्य मुनि का जन्म अंगिरा और श्रद्धा से हुआ था। ये वृहस्पति के ज्येष्ठ भ्राता थे। उतथ्य का विवाह ममता से हुआ था। एक बार ममता गर्भवती थी और वृहस्पति ने उसके साथ सहवास करना चाहा। भीतर से गर्भ बोल उठा कि मैं भीतर हूँ अतः आप सहवास न करें। इस पर क्रुद्ध होकर देवगुरु वृहस्पति ने उसे अंधा होने का शाप दिया, जिससे फलस्वरूप समय पूरा होने पर ममता के गर्भ से दीर्घतमा नामक अंधा पुत्र हुआ। बाद में अग्नि की कृपा से उसकी आँखें ठीक हो गईं।

उत्तम—उत्तानपाद की दूसरी पत्नी सुरुचि से उत्पन्न उनका पुत्र। उतम बाल्यवस्था में ही एक दिन अहेर खेलने गए, जहाँ एक यक्ष ने उन्हें मार डाला। ये ध्रुव के वैमातेय थे।

उत्तमौजस—पंचाल के एक वीर राजकुमार जो महाभारत की लड़ाई में पांडवों की ओर थे। जिस दिन अर्जुन जयद्रथ को मारने के लिए घोर संग्राम कर रहे थे, उत्तमौजस उनके अंगरक्षक थे। इन्होंने इतना कौशल तथा वीरता दिखलाई कि सब लोग दंग रह गए।

उत्तर—राजा विराट का पुत्र और अभिमन्यु की स्त्री उत्तरा का भाई। पांडवों के अज्ञात वनवास की समाप्ति के समय कौरवों ने आक्रमण कर विराट की गायों को चुरा लिया तथा विराट को बन्दी बना लिया। उस समय उत्तर अर्जुन को अपना सारथी बनाकर लड़ने गया। अर्जुन की सहायता से इसने कौरवों को मार भगाया। महाभारत युद्ध

में यह पांडवों की ओर था और शल्य के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुआ।

उत्तरा—विराट की कन्या तथा उत्तर की बहन। अज्ञात वनवास में अर्जुन बृहन्नला के रूप में इसे नृत्य आदि की शिक्षा देते थे। गायों के लिए कौरवों से युद्ध में इनकी वीरता देख कर उत्तरा ने अर्जुन से विवाह का प्रस्ताव किया, पर अर्जुन ने शिष्या होने के कारण बेटी कहकर पुकारा और अपने पुत्र अभिमन्यु से इसका विवाह कर दिया। महाभारत युद्ध में अभिमन्यु की मृत्यु के समय उत्तरा गर्भवती थी। उसी के गर्भ से महाराज परीक्षित का जन्म हुआ।

उत्तानपाद—इनकी कथा हरिवंश, भागवत तथा विष्णु पुराण आदि में मिलती है। ये मनु और शतरूपा के पुत्र थे। सुनीति और सुरुचि इनकी दो रानियाँ थीं, जिनसे क्रम से ध्रुव और उत्तम का जन्म हुआ था। उत्तानपाद का सुरुचि और उत्तम पर अतुलित स्नेह था पर सुनीति और ध्रुव पर नहीं। एक दिन अपनी गोद से उन्होंने ध्रुव को उतार कर उत्तम को बिठला लिया, इसी की ठेस से ध्रुव ने जंगल में तपस्या आरम्भ की और अंत में भगवान का साक्षातकार किया। बाद में उत्तानपाद को भी ज्ञान हुआ और पश्चाताप करते हुए उन्होंने ध्रुव को फिर से अपनाया।

उदयन—वत्स के चन्द्रवंशी राजा थे। इनकी राजधानी कौशांबी थी। इनके पिता का नाम सहस्रानीक था। इनकी कथा नरसिंह पुराण में भी आती है, जिसके अनुसार ये शतानीक के पुत्र थे। मतांतर से ये शतानीक के पौत्र थे। उज्जयनी की राजकुमारी वासवदत्ता ने इन्हें स्वप्न में देखा और इन पर मोहित हो गई। चन्द्रसेन उदयन को बन्दी बनाकर ले गया पर अपने मंत्री की सहायता से उदयन मुक्त हो गए। अंत में वासवदत्ता को भी छीन लाए और उससे विवाह किया। उदयन की दूसरी स्त्री का नाम रत्नावली था। कुछ लोगों के अनुसार भगवान बुद्ध ने इनको धर्म की शिक्षा दी थी।

उदयनवसु—जनक के पुत्र और सीता के भाई।

उदयाचल—पुराणों के अनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जिसपर सूर्य का उदय होता है।

उद्धव—(सं०) श्री कृष्ण के मित्र और परामर्शदाता। कुछ लोगों के मत से ये वसुदेव के भाई देवनाग के पुत्र और इस प्रकार कृष्ण के चचेरे भाई थे। उद्धव बड़े विद्वान् तथा ब्रह्मज्ञानी थे। ये निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।

कृष्ण के मथुरा चले जाने के कारण गोपियाँ बहुत व्याकुल हुईं तो ये कृष्ण का सन्देश लेकर उन्हें समझाने तथा निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देने गए। भागवत के अनुसार उद्धव के उपदेश से गोपिकाएँ कृष्ण को भूल कर निर्गुण ब्रह्म को मानने लगी थीं, पर हिन्दी के सूर, नन्ददास तथा रत्नाकर आदि कवियों में उलटे यह दिखाया गया है कि उद्धव स्वयं अपना सब कुछ भूल कर गोपियों के रङ्ग में रङ्ग गये तथा निराकार की उपासन छोड़ साकार के प्रेमी बनकर कृष्ण के पास लौट गए। गोपियों ने इनका ख़ूब मज़ाक उड़ाया था। इनका और गोपियों का सम्वाद साहित्य में भ्रमरगीत नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उद्धव को अपने ज्ञान तथा निर्गुण भक्ति का गर्व था जिसे दूर करने के लिए कृष्ण ने इन्हें गोपियों के पास भेजा था।

उपमन्यु—(सं०) उपमन्यु अंशा और व्याघ्रपाद के पुत्र थे। ये अपनी गुरु-भक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। इन के गुरु आयोदधौम्य मुनि थे। उनके आदेश से उपमन्यु गाएँ चराते थे और भिक्षा से पेट भरते थे। इन्हें मोटा होते देख गुरु ने इनके भोजन के विषय में पूछा। इनके बतलाने पर गुरु ने कहा कि भिक्षा मुझे दे दिया करो। तब से उपमन्यु ने ऐसा ही किया और गाय के बच्चों के मुँह में लगे दुग्ध फेन को चाट कर रहने लगे। अब भी ये मोटे हो रहे थे अतः गुरु ने पुनः पूछा और उसे भी खाने को मना कर दिया। एक दिन भूख से

पीड़ित होकर उपमन्यु ने मन्दार के पत्ते खा लिए जिससे अंधे हो गए और गो चारण करते-करते एक कुएँ में जा गिरे। बहुत खोजने पर आयोदधौम्य ने इन्हें पाया और अश्विनी कुमारों ने एक औषधि खाने को दी। उपमन्यु ने बिना गुरु की आज्ञा के उसे खाने से इन्कार कर दिया। इस पर प्रसन्न होकर उन्होंने इन्हें दिव्य चक्षु दिया। गुरु ने भी इन्हें अत्यंत विद्वान् होने का आशीर्वाद दिया।

उपमन्यु के लिखे कई ग्रन्थ मिलते हैं।

उपसुंद—निकुंभ या निसुंद नामक राक्षस के दो पुत्र थे। बड़े का नाम सुंद और छोटे का उपसुंद था। दोनों ने विंध्याचल पर घोर तप किया जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने वर दिया कि तुम लोग आपस में लड़ कर मर सकते हो पर तुम्हें कोई मार नहीं सकता। बाद में जब वे बहुत अत्याचार करने लगे तो देवों के कहने से ब्रह्मा ने तिलोत्तमा नामक एक अतीव सुन्दरी अप्सरा उत्पन्न की। सुंद और उपसुंद दोनों उस पर मोहित हुए और आपस में लड़ कर मर गए। दे० 'तिलोत्तमा'।

उभयबाई—भक्तमाल के अनुसार ये दो राजकुमारियाँ थीं जो बहुत साधु प्रकृति की थीं तथा सन्तों के दर्शन के लिए लालायित रहती थीं। एक बार इन्होंने अपने लड़कों को ज़हर देकर इसलिए मार डाला कि रोना सुन कर सन्त लोग नहीं आएँगे। जब सन्त आए तो उन्होंने प्रसन्न होकर पुत्रों को पुनः जीवित कर दिया। उभय बाई इन लोगों का यथार्थ नाम न होकर भक्तों द्वारा दिया हुआ नाम (दो होने के कारण) है।

उमर फ़ारूक़—इसलाम धर्म के दूसरे ख़लीफा और मुहम्मद साहब के मित्र। ये ख़त्ताब के लड़के थे। इनकी लड़की हफ़सा का विवाह मुहम्मद साहब से हुआ था।

उर्मिला—विदेहराज सीरध्वज जनक की औरस कन्या तथा लक्ष्मण की स्त्री का नाम। इनके अंगद तथा चंद्रकेतु नाम के दो पुत्र

उत्पन्न हुए। काव्य में उपेक्षित देखकर मैथिली शरण गुप्त जी ने 'साकेत' में उर्मिला के चरित्र की मार्मिक अभिव्यंजना की है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'उर्मिला' महाकाव्य की रचना की है।

उर्वशी--(सं०) एक अप्सरा। इसका उल्लेख ऋग्वेद से ही मिलने लगता है। इसके जन्म के विषय में कई मत हैं। नारायण के उरु से निकलने के कारण इसका नाम उर्वशी पड़ा। पद्मपुराण के अनुसार एक बार विष्णु धर्म का पुत्र बन तप करने लगे। इंद्र के कहने से कामदेव ने उनका तप भंग करने के लिए अपने उरु से उर्वशी को निकाला। भागवत के अनुसार उर्वशी सभी अप्सराओं में सुन्दर है। नर और नारायण के तप से डर कर एक बार इंद्र ने कामदेव तथा अप्सराओं को उन्हें विचलित करने को भेजा। सभी अप्सराएँ हार गई केवल उर्वशी ही उनको विचलित कर सकी थी। उर्वशी के अत्यंत सुन्दरी होने के बारे में यह भी कहा जाता है कि उस पर मित्र, वरुण, इंद्र, आदि अनेक देवता और ऋषि मोहित हुए। मित्र और वरुण तो नग्नस्थिति में उसे देख कर स्खलित भी हो गए जिससे अगस्त्त और वशिष्ट ऋषि का जन्म हुआ।

उर्वशी को पृथ्वी पर आना पड़ा था। इसके सम्बन्ध में कई कथाएँ हैं। पद्मपुराण के अनुसार उर्वशी ने जब कामातुर मित्र और वरुण की इच्छा न पूरी की तो उन्होंने इसे पृथ्वी पर आने का शाप दिया। हरिवंश पुराण के अनुसार यह ब्रह्मा का शाप था। एक तीसरे मत के अनुसार एक बार उर्वशी इन्द्र के दरबार में जा रही थी। वहाँ पुरुरवा भी थे। उन्हें देख यह मुग्ध हो गई और मुग्धावस्था में संगीत में कुछ अशुद्धि हो गई। इस पर स्वयं इन्द्र ने ही बिगड़ कर इसे शाप देकर पृथ्वी पर भेज दिया। पुरुरवा को भी पृथ्वी पर आना पड़ा। यहाँ आकर दोनों को मनुष्य योनि मिली, पर पहले उर्वशी ने पुरुरवा से

विवाह करना स्वीकार न किया। अंत में निम्नांकित शर्तों पर वह राज़ी हुई। उसने कहा—

मैं विवाह कर आपके साथ भार्या रूप में तभी तक रहूँगी जब तक आप (१) मेरे साथ कभी मेरी इच्छा के विरुद्ध समागम न करें, (२) मुझे कभी नंगे न दिखाई दें, (३) मेरी चारपाई के दोनों ओर सर्वदा दो भेड़ें बँधवाए रहें, तथा (४) शाम को घृत मात्र भोजन करें।

साथ ही उसने यह भी कहा कि यदि इसके विरुद्ध हुआ तो मैं शापमुक्त होकर स्वर्ग को लौट जाऊँगी।

दोनों पति-पत्नी रूप में ६५ वत्सर तक रहे और इन्हें आयु, अमावसु, विश्वायु, श्रुतायु, दृढ़ायु एवं शतायु आदि सात पुत्र (एक मत से ६) हुए।

उधर गंधर्व लोग उर्वशी के बिना विकल थे। उन्होंने विश्वावसु नामक गंधर्व को भेड़ों को चुराने के लिए भेजा। जब वह चुरा कर चला तो संयोग से पुरुरवा नंगे थे और नंगे ही वे उसे रोकने चले। उर्वशी ने उन्हें देख लिया और तुरन्त स्वर्ग लोक को चली गई।

एक बार अर्जुन इन्द्र के साथ इन्द्र लोक गए वहाँ उर्वशी उनपर मोहित हो गई और उसने समागम की इच्छा प्रकट की। अर्जुन ने उसे इन्द्र की प्रेमिका रूप में अपनी माँ कह कर इनकार किया। इस पर उर्वशी बहुत रुष्ट हो गई और उसने उन्हें नपुंसक होने का शाप दिया। विराट के यहाँ अर्जुन उत्तरा की शिक्षिका बृहन्नला के रूप में इसी शाप के कारण थे।

उलूपी—ऐरावत की या ऐरावत-कुल के कौरव्य नामक नाग की पुत्री। इसका विवाह एक नाग से हुआ था पर उसे गरुड़ ने खा डाला, अतः वह विधवा हो गई। इधर अर्जुन ने प्रतिज्ञा भंग की और युधिष्ठिर की आज्ञा से १२ वर्ष के लिए वन में गए। वहाँ उलूपी ने इन्हें देखा और मोहित हो गई। वह उन्हें पाताल में ले गई और विवाह का

प्रस्ताव किया। पहले तो अर्जुन ने स्वीकार नहीं किया, पर फिर तैयार हो गए। उलूपी ने अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर अर्जुन को समस्त जलचरों पर विजयी होने का वर दिया। चित्रांगदा से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन उन दिनों अपने नाना मणिपूर के महाराज के उत्तराधिकारी के रूप में था। वह अर्जुन का स्वागत करने आया। अर्जुन ने उसे बिना हथियार के आते देख कुछ विरक्त भाव दिखलाया। उलूपी बभ्रुवाहन की देख रेख कर चुकी थी अतः उस पर उसका प्रभाव था। उसने उसकाया और बभ्रुवाहन और अर्जुन में लड़ाई होने लगी। उलूपी की माया से अर्जुन को बभ्रुवाहन ने मार डाला और अंत में दुखी होकर आत्महत्या करना चाहता था, पर उलूपी ने एक मणि से अर्जुन को जिला दिया। विष्णुपुराण के अनुसार अर्जुन से उलूपी को इरावान नामक पुत्र पैदा हुआ था। उलूपी ने अन्त तक अर्जुन का साथ दिया और उनके साथ स्वर्ग भी गई।

उसमान ग़नी—इसलाम धर्म के तीसरे ख़लीफ़ा और मुहम्मद साहब के दामाद तथा मित्र। इनकी स्त्री का नाम 'रुक़य्या' था।

ऊषा—यह बलि की पौत्री थी। एक बार स्वप्न में इसने किसी को देखा और उस पर मोहित हो गई। उसके बिना इसका खाना-पीना छूट गया। यह देख ऊषा की सखी चित्रलेखा ने राजकुमारी तथा देवताओं का चित्र बना-बना कर इसे दिखाना आरम्भ किया और अन्त में अनिरुद्ध का चित्र दिखलाने पर इसका मुख लज्जा से लाल हो गया और इस प्रकार चित्रलेखा ने यह जान लिया कि यह अनिरुद्ध से प्रेम करती है। अनिरुद्ध कृष्ण का पौत्र तथा प्रद्युम्न का पुत्र था। चित्रलेखा ने उसे अपनी माया से मँगा लिया तथा ऊषा के साथ छिपे स्थान पर रख दिया। कुछ दिन बाद बाणासुर को पता चला तो पहले तो उसने अनिरुद्ध को मारना चाहा पर जब यह सम्भव न हो सका तो उसने इसे एक साँप से बाँध कर रख छोड़ा। यह समाचार नारद

कृष्ण के पास ले गए और कृष्ण, प्रद्युम्न तथा बलराम आदि बड़ी भारी सेना लेकर लड़ने आए। बाणासुर शिव का भक्त था अतः उसकी ओर से शिव तथा स्वामिकार्तिकेय आदि लड़ने आए। घमासान युद्ध में कृष्ण ने बाण के हाथों को काट डाला। वे उसे मार भी डालते पर शिव के कहने से छोड़ दिया। बाद में बाण ने अपनी पुत्री ऊषा का विवाह अनिरुद्ध से कर उसे विदा किया।

ऋचीक—एक भृगुवंशीय ऋषि जो महर्षि जमदग्नि के पिता थे। इनके पिता का नाम उर्व था। विष्णु पुराण तथा महाभारत के अनुसार ऋचीक ने वृद्धावस्था में विवाह करना चाहा। उन्होंने कान्यकुब्ज राजा गाधि की पुत्री, विश्वामित्र की बहन सत्यवती को इसके लिए माँगा। गाधि ने उनकी अवस्था को देखते हुए अपनी पुत्री के लिए उन्हें पसन्द न किया और विवाह के लिए एक सहस्र श्वेत घोड़े माँगे जिनके एक कान काले हों। वरुण ने दया कर इन्हें ऐसे घोड़े दे दिए और इन्होंने गाधि का वचन पूरा कर सत्यवती से विवाह किया। बाल्मीकि रामायण के अनुसार शुनःशेप इन्हीं का पुत्र था, जिसे इन्होंने बलिदान के लिए बेच दिया था।

ऋतध्वज—शत्रुजित के पुत्र तथा राजा प्रतर्दन का एक अन्य नाम या उपाधि। एक बार ये गालव ऋषि की तपस्या में विघ्न डालने वाले राक्षसों का संहार करने के लिए बन में गये। एक दैत्य का पीछा करते हुए ये पाताल लोक में पहुँचे। वहाँ पाताल केतु दैत्य द्वारा अपहृत गन्धर्व कन्या मदालसा का उद्धार कर उससे विवाह कर लिया। एक बार फिर ये ऋषियों की सहायतार्थ तपोवन में गये। तालकेतु दैत्य ने अपने भाई का बदला लेने के लिए एक षड्यन्त्र रचा। किसी प्रकार उसने ऋतध्वज का मणिजटित हार ले लिया और उनके पिता शत्रुजित को यह कह सुनाया कि ऋतध्वज की मृत्यु हो गई। मदालसा ने इस असह्य शोक में प्राण त्याग दिये। ऋतध्वज को यह सुनकर बहुत दुःख

हुआ। किंतु नागपुत्रों की तपस्या के फलस्वरूप मदालसा का जन्म उसी रूप में हो गया और नागराज ने ऋतध्वज का विवाह अभिनव मदालसा से कर दिया। इनके विक्रांत, सुबाहु, शत्रुमर्दन, और अलर्क नाम के चार पुत्र उत्पन्न हुए।

ऋतुपर्ण—अयोध्या के विख्यात सूर्यवंशी राजा। राजा नल राज्य एवं दमयंती से अलग होने पर इन्हीं के यहाँ वाहुक नाम से अश्वाध्यक्ष और सारथी थे। नल अश्वविद्या का ज्ञाता था और ऋतुपर्ण द्यूत के, इस प्रकार परस्पर ज्ञान-विनिमय से दोनों ही दोनों विद्याओं के पंडित हो गए। एक बार दमयन्ती ने धोखे से स्वयम्वर के नाम पर राजा ऋतुपर्ण को अपने यहाँ बुलवाया। वहाँ जाने पर उसने नल को जो साथ में गए थे पहचाना और तब ऋतुपर्ण नल के वास्तविक रूप को जान सके। दे० 'दमयंती' 'नल'

ऋषभदेव—भागवत के अनुसार २४ अवतारों में में से ८ वें अवतार जो राजा नाभि के पुत्र थे। इनकी माता का नाम मरुदेवी था। ये ज्योंही राजा बने, इन्द्र ने इन्हें जयन्ती नाम की कन्या भेंट दी जिससे इन्हें १०० पुत्र हुए। भरत सबसे बड़े का नाम था। भरत को राज्य दे इन्होंने संसार छोड़ दिया और मौन रहने लगे। बहुत दिन तक तरह-तरह के कष्ट सहते दक्षिणी भारत में घूमते रहे और अंत में एक बन में दावाग्नि में जलकर मर गए। जैनी लोग इन को अपना तीर्थंकर मानते हैं। यद्यपि कुछ मतों से दोनों ऋषभ देव भिन्न-भिन्न हैं। जैनों के मतानुसार भी ये नाभि के पुत्र थे। विनीता नगरी में पैदा हुए। इनका रङ्ग सोने-सा था। ८४ लाख वर्ष जीवित रह कर ये मरे। इनकी कथा आदिनाथ पुराण तथा जैन हरिवंश आदि में मिलती है।

ऋष्यशृंग—एक त्रेता-कालीन ऋषि। विभांडक ऋषि ने एक बार उर्वशी को देखा और उनका वीर्यपात हो गया जिसे एक मृगी ने जल के साथ पी लिया और गर्भवती हो गई। उसी से ऋष्यशृङ्ग मुनि

की उत्पत्ति हुई। मृगी से उत्पन्न होने के कारण इन्हें सींग थी इसी कारण इनका नाम ऋष्यश्रृंग पड़ा। एक बार रोमपाद ऋषि के राज्य में पानी न बरसने से सूखा पड़ा, तो उन्होंने ऋष्यश्रृंग मुनि को अपने राज्य में बुलाया। इनके जाते ही वहाँ पानी बरसा। वहीं ऋष्यश्रृंग का विवाह दसरथ की पुत्री शांता से हुआ। दे० 'रोमपाद'।

एक चक्रा —(सं.) महाभारत के समय का एक प्राचीन नगर। कुन्ती अपने पंच पांडवों के साथ जतुगृहदाह के बाद गंगा पार करके एक भीषण बन में पहुँची। वहाँ भीम ने हिडिम्बा नामक राक्षस को मारा। उसके बाद व्यास की आज्ञा से ये लोग इसी एकचक्रा नगरी में आए और रहने लगे। यहीं रहते हुए भीमने बकासुर को मारा था जो इस नगर के समीप किसी जंगल में रहता था।

एकलव्य —(सं०)—हरिवंश पुराण के अनुसार यह श्रुत देव का पुत्र था। वासुदेव के भाई देवश्रवस इसके पितामह तथा शत्रुघ्न भाई थे। हिरण्यधनु या हिरण्यवान् नामक निषाद था व्याधा ने इसका पालन-पोषण किया था इसी कारण यह निषाद पुत्र कहा जाता था।

एक बार द्रोणाचार्य के यहाँ यह धनुर्विद्या सीखने गया। द्रोणाचार्य ने इसे निषाद समझकर लौटा दिया। एकलव्य निराश नहीं हुआ और उसने अपने घर लौटकर काष्ठ या मिट्टी की एक द्रोणाचार्य की प्रतिमा बनाई जिसके सामने वह स्वयं बिना किसी की सहायता के धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा। धीरे-धीरे वह धनुर्विद्या का बहुत बड़ा ज्ञाता हुआ। एक बार एकलव्य एक काला कंबल ओढ़कर कहीं जा रहा था। उसे देख एक कुत्ता भूँकने लगा। एकलव्य ने सात बाण उसके मुख में इस प्रकार मारे कि कुत्ते को तनिक भी चोट न लगी और कुत्ते के मुँह में सातों बाण इस प्रकार कस गए कि वह भूँखने में असमर्थ हो गया। अर्जुन ने इस कुत्ते को देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह कुत्ते के साथ-साथ एकलव्य की कुटी पर पहुँचा। अर्जुन के पूछने पर एकलव्य ने

बतलाया कि वह द्रोणाचार्य का शिष्य है। इस पर अर्जुन को बड़ा दुःख हुआ। वह द्रोणाचार्य के पास गये और बोले गुरुवर! आप तो कहते थे कि मैं आपका सबसे प्यारा शिष्य हूँ और आप ने धनुर्विद्या का सारा भेद मुझे बतला दिया है। पर यथार्थतः यह बात नहीं है। आपने एकलव्य को मुझसे अधिक बतलाया है। यह कहकर अर्जुन के साथ तुरंत एकलव्य के यहाँ गये। एकलव्य ने गुरु का स्वागत-सत्कार किया और अपनी शिक्षा की पूरी कहानी कह सुनाई। द्रोण ने उससे दायाँ अंगूठा गुरु दक्षिणा में माँगा। एकलव्य ने हँसते-हँसते अंगूठा दे दिया। दाहिने अंगूठे की सहायता से ही धनुष चलाते हैं, इसी लिए द्रोणने दायाँ अंगूठा माँगकर एकलव्य को इस विद्या से वंचित करने की कोशिश की थी किंतु अपने अभ्यास, सच्चाई और गुरु प्रेम के कारण बिना अंगूठे के भी वह फ़िर पूर्ववत् धनुष चलाने लगा। बाद में वह निषादों का राजा हुआ और महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से था।

एक बार बहुत से लोगों ने रात में,द्वारिका पर चढ़ाई की। वह भी उनमें से एक था। द्वारिकावासियों से इनका घमासान युद्ध हुआ और अंत में एकलव्य कृष्ण के हाथों मारा गया।

एक लोचना— अशोक वाटिका में वंदिनी सीता की परिचर्या के लिए रावण ने अनेक राक्षसियों को नियुक्त कर रखा था। उन्हीं में से एक का नाम एकलोचना था। उसके इस नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि उसके एक ही आँख थी।

ऐरावत— इरा अर्थात् जल से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम ऐरावत था। यह हाथी समुद्र-मन्थन के उपरांत निकले १४ रत्नों में से एक था। यह इंद्र को दिया गया था। ऐरावत उनका प्रधान वाहन है। इसका रंग श्वेत कहा गया है तथा इसके दाँत संख्या में चार कहे गए हैं। यह पूर्व दिशा का दिग्गज भी है। इससे अन्य पर्याय अभ्रमातंग, ऐरावण, अभ्रभूवल्लभ, श्वेतहस्ती, मल्लनाग, इन्द्रकुंजर, हस्तिमल्ल,

सदादान, सुदामा, श्वेतकुंजर, गजाग्रणी, नागमल्ल तथा इन्द्रहस्ती आदि हैं।

ओंकारनाथ—शिव पुराण के अनुसार शिव के १२ लिंगों में से एक का नाम। इनका मंदिर मध्य प्रदेश में नीमाड़ जिले के अंतर्गत नर्मदा नदी के एक द्वीप पर है। यह मान्धाता ग्राम में पड़ता है, अतः इस मन्दिर को ओंकार मान्धाता कहते हैं। ओंकारनाथ या ओंकार लिंग के विषय में बड़ी मनोरंजक कथा शिव पुराण में मिलती है। विंध्याचल की प्रार्थना पर शिव लिंग दो भागों में विभक्त हो गया था, उन्हीं दो में से एक यह था। इस ओंकार लिंग या ओंकारनाथ को सदाशिव भी कहते हैं।

और्व—(१) भृगुवंश में उत्पन्न एक ऋषि। एक बार क्षत्रियों और भृगुवंशियों में शत्रुता हुई। क्षत्रियों ने भृगुवंश के गर्भस्थ बच्चों को भी मार डाला और भृगु मुनि का बड़ा अपमान किया। उस समय भृगु मुनि की पत्नी गर्भवती थी। उनका भी क्षत्रियों ने पीछा किया और वे किसी कंदरा में जा छिपीं। क्षत्रिय वहाँ भी पहुँचे। उनका अत्याचार देख गर्भस्थ बालक क्रोधित होकर अपनी माता की जंघा से पैदा हुआ। इसी कारण उसका नाम 'और्व' पड़ा। इसने कुछ तप कर क्षत्रियों के नाश के लिए अपनी क्रोधाग्नि को प्रज्वलित किया पर फिर लोगों के कहने से इसने अग्नि समुद्र में फेंक दिया जो वहाँ 'बड़वाग्नि' बनी। इसी कारण 'बड़वाग्नि' का दूसरा नाम 'अर्वाग्नि' भी है। दूसरे मत से पैदा होने के बाद ये घोर तप करने लगे। उस उग्र तपस्या से विश्व के भस्म होने का अंदेशा होने लगा। अतः पितृलोक से पूर्व पुरुषों ने क्रोध छोड़ने का अनुरोध किया। पर क्षत्रियों के अत्याचार के कारण ये छोड़ने को तैयार न हुए। तब पितृ गण ने कहा कि सभी लोक जल में रहते हैं अतः जल में छोड़ दे। इस पर और्व सहमत हो गए और समुद्र में क्रोधाग्नि डाल दी।

(२) पुराणों में वर्णित भूगोल के अनुसार ब्रह्मांड के दक्षिणी भाग का नाम पौर्व है। यहीं सारे नरक हैं तथा राक्षसों एवं असुरों का निवास स्थान है।

कंदली—और्व मुनि की कन्या। एक बार प्रसिद्ध अप्सरा तिलोत्तमा को किसी के साथ विहार करते देख दुर्वासा कामातुर हुए। और्व अपनी पुत्री कंदली के लिए सुन्दर वर चाहते थे। यह अवसर अच्छा देख उन्होंने कंदली को वहाँ लाकर उन्हें समर्पित किया। कंदली अनिन्द्य सुन्दरी पर बड़ी कलहप्रिय थी। दुर्वासा ने इस शर्त पर उसे पत्नी रूप में स्वीकार किया कि उसके १०० अपराध क्षमा करेंगे पर १०१ वें अपराध पर शाप देंगे। अंत में हुआ भी यही। उस समय तो दोनों में विवाह हो गया और दोनों साथ रहने लगे। पर धीरे-धीरे १०० अपराध पूरे हुए और अंत में दुर्वासा ने उसे अपने शाप से भस्म कर दिया। कहा जाता है कि दूसरे जन्म में यही कंदली कदली या केले का वृक्ष हुई। कंदली ने भी दुर्वासा को अपमानित होने का शाप दिया। दुर्वासा और अंबरीष की कथा इसी शाप के फलस्वरूप हुई। दे० 'अंबरीष'

कंस—मथुरा का एक प्रसिद्ध अत्याचारी राजा जो उग्रसेन का पुत्र था। इसका विवाह मगधराज जरासंध की दो कन्याओं अस्ति तथा प्राप्ति से हुआ था। यह कृष्ण का मामा था। अपने श्वसुर की सहायता से इसने अपने पिता उग्रसेन को राजगद्दी से उतार दिया और स्वयं राजा बन बैठा, जिससे इसके संबंधी इससे रुष्ट रहा करते थे। देवकी (जो कंस के चाचा की पुत्री थी) के विवाह के समय एक आकाशवाणी हुई थी कि देवकी का आठवाँ पुत्र कंस का वध करेगा। इस भय से कंस ने देवकी तथा वसुदेव को कारागृह में रख छोड़ा था, तथा उनके पुत्रों को मरवा डालता था। कृष्ण बड़ी उपाय से बचे। दे० 'कृष्ण'। कंस ने कृष्ण को मारने के लिए कितने ही असुरों को भेजा, पर सभी

मारे गए और अंत में इसने स्वयं कृष्ण को अक्रूर द्वारा मथुरा बुलवाया जहाँ कृष्ण ने इसे मार डाला।

कंसवती—यह महाराज उग्रसेन की कन्या तथा अत्याचारी राजा कंस की छोटी बहन थी। कंसवती का विवाह कृष्ण के पिता वसुदेव के छोटे भाई अर्थात् उनके चाचा देवश्रव्य के साथ हुआ था। इनके दो पुत्र उत्पन्न हुए जिनका नाम सुवीर तथा इषुमत था।

कंसा—भागवत के अनुसार यह भी महाराज उग्रसेन की पुत्री तथा कंस की बहन थी जिसका पाणिग्रहण वसुदेव के भाई देवभाग ने किया था। इनके चित्रकेतु, बृहद्बल तथा उद्धव नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए।

ककुत्स्थ—सूर्यवंशीय सम्राट इक्ष्वाकु के पुत्र। इनका प्रचलित नाम पुरंजय था। देव और दानवों के युद्ध में देवों की ओर से पुरंजय की सहायता माँगी गई। इन्होंने इस शर्त पर देवों की प्रार्थना स्वीकार की कि इन्द्र उनके वाहन बनें। विष्णु के कहने पर इन्द्र बैल के रूप में आए जिस पर बैठकर पुरंजय ने विध्वंसात्मक संग्राम किया और देवों की जीत हुई। बैल के ककुद् पर बैठकर युद्ध करने के कारण ही इनका नाम ककुत्स्थ पड़ा। कहीं-कहीं ककुत्स्थ को भागीरथ या सोमदत्त का भी पुत्र कहा गया है।

कच—देवगुरु बृहस्पति के पुत्र। महाभारत के अनुसार एक बार देवासुर संग्राम छिड़ा। असुरों के गुरु शुक्राचार्य सञ्जीवनी विद्या जानते थे, अतः जब भी कोई असुर मरता था वे जिला देते थे। देवताओं की ओर किसी को यह विद्या ज्ञात नहीं थी, अतः उनकी हार होने लगी। अंत में सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि कच को शुक्राचार्य के पास विद्या पढ़ने के लिए भेजा जाय और वहीं से ये इस विद्या को भी प्राप्त कर लें। निर्णयानुसार कच चले गए। किन्तु इसी बीच यह बात असुरों को ज्ञात हो गई और उन्होंने कच को मार डाला। शुक्राचार्य की पुत्री

देवयानी (किसी-किसी के मत से यह दुर्वासा की पुत्री थी, कच पर मोहित थी अतः वह रोने लगी। उसके रुदन से दुखी हो शुक्राचार्य ने सञ्जीवनी विद्या से कच को जिला दिया। इसी प्रकार असुरों ने दो बार कच का वध किया और वे जिन्दा हो गए। अंत में रुष्ट होकर असुरों ने कच को मार कर उसे जला डाला तथा अवशेष राख को मदिरा में मिलाकर शुक्राचार्य को पिला दिया। बाद में उन्हें इस बात का पता चला और देवयानी के रुदन करने के कारण उसका जिलाना आवश्यक ज्ञात हुआ। इन्होंने उदरस्थ कच को संजीवनी विद्या सिखाई और वह शुक्राचार्य का पेट फाड़ कर बाहर आया। बाहर आकर उसने इस विद्या से शुक्राचार्य को जिलाया जो पेट फूटने के कारण मर चुके थे। इस प्रकार असुरों के कारण ही उन्हें वह विद्या प्राप्त करने का अवसर मिल गया। इसके बाद जब कच अपने घर जाने लगे तो देवयानी ने विवाह का प्रस्ताव किया पर कच ने गुरु की पुत्री से विवाह करना पाप बतला कर इनकार कर दिया। इस पर रुष्ट हो देवयानी ने श्राप दिया कि तुम्हें तुम्हारी विद्या न फलेगी। इस पर कच भी रुष्ट हुए और उन्होंने श्राप दिया कि तुम्हारी वासना कभी भी पूरी न होगी और न ब्राह्मण पति ही मिलेगा, क्षत्रिय से विवाह करना होगा। इसी श्राप के कारण देवयानी को राजा ययाति से विवाह करना पड़ा। कच ने यह भी कहा कि तुम्हारा श्राप ठीक नहीं अतः मेरी विद्या मुझे न भूलने पर भी जिसे मैं सिखाऊँगा, उसे अवश्य फलेगी। यह कह कच देवलोक चला गया और देवों को यह विद्या दे उनको विजयी बनाया।

कच्छप—विष्णु के २४ अवतारों में से दूसरा अवतार। कूर्म पुराण के अनुसार एक बार विष्णु ने कछुवे का रूप धर पृथ्वी के भीतर जा जीवन के रहस्य समझाये थे। वही रूप कूर्म वा कच्छप अवतार कहा गया। समुद्र-मंथन के समय कच्छप भगवान ही समुद्र में स्थित हुए थे। उस समय मंदराचल के भार से कच्छप भगवान

के शरीर से इतना खून गिरा कि सारा समुद्र लाल हो गया। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति ने कच्छप का रूप धारण कर सृष्टि की। ऐसा करने के कारण ही उनका नाम कूर्म पड़ा। इस प्रकार कूर्म विष्णु के साथ प्रजापति के भी अवतार माने जाते हैं। कूर्म के अन्य पर्याय कूर्म, कच्छ, कच्छप, कछुआ, कछ, पंचनख, जलगुल्म, गुह्य, कमठ, क्रोड़पाद, चतुर्गति, पञ्चांगगुप्त, दोलेय, जीवथ, पीवर तथा पंचगुप्त आदि हैं।

कण्व—एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मेनका के छोड़ देने पर शकुन्तला का पालन-पोषण किया था। इनकी गणना सप्तर्षियों में होती है। कण्व मुनि कश्यप गोत्रीय थे। इस नाम के और भी बहुत से ऋषि हुए हैं।

कद्रु—पुराणानुसार दक्ष प्रजापति की कन्या तथा कश्यप मुनि की १३ स्त्रियों में से एक। कद्रु सर्पों की माता कही गई हैं। इनसे एक से एक भयानक १००० सर्प पैदा हुए, जिनमें प्रधान शेषनाग तथा बासुकि आदि थे। इन १००० सर्पों या नागों से इनकी हज़ार जातियाँ बनीं। नागों का निवास पाताल माना गया है। कद्रु के नाम पर ही नागों को कभी-कभी काद्रवेयस् भी कहा गया है। किसी-किसी के अनुसार नागों की माँ प्रसिद्ध राक्षसी सुरसा थी जिससे त्रेता में हनुमान से लड़ाई हुई थी। कद्रू और सुरसा एक ही हैं या दो नहीं कहा जा सकता।

कनकध्वज—महाराज धृतराष्ट्र के पुत्रों में से एक का नाम। द्रौपदी के स्वयंवर के अवसर पर जिस मत्स्य-वेध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था उसमें अर्जुन आदि के साथ इसने भी भाग लिया था। महाभारत के युद्ध में यह भीम के हाथों वीरगति को प्राप्त हुआ।

कपालिका—एक देवी जिनके शरीर में भस्म लगा रहता है और जो घंटा बजा कर सर्वदा शंकर, शंभू चिल्लाया करती हैं।

कपिल—ये कर्दम मुनि के पुत्र थे। इनकी पत्नी देवहूति ने विष्णु के समान पुत्र प्राप्ति के लिए घोर तपस्या की। जिसके फलस्वरूप स्वयं विष्णु ने इनके गर्भ से जन्म लेना स्वीकार किया। इसी कारण कपिल, विष्णु के अवतार रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथ सांख्य दर्शन की रचना की। हरिवंश पुराण में इन्हें वितथ का पुत्र माना गया है। सांख्य दर्शन के अतिरिक्त ये सांख्य सूत्र, तत्व समास, कपिल-गीता, कपिल-संहिता, कपिल-स्तोत्र आदि प्रसिद्ध ग्रंथों के रचयिता हैं।

कबंध—एक राक्षस जो कश्यप और दनु का पुत्र था। एक बार इन्द्र ने इसे ऐसा मारा कि इसके पैर और सिर पेट में घुस गए। पूर्व जन्म का यह विश्वावसु गंधर्व था। स्थूलशिरा ऋषि के शाप से इसे विकृत बनना पड़ा था। ब्रह्मा ने इसे दीर्घायु होने का वर दिया था। यह दंडकारण्य में रहता था और ऋषियों को कष्ट देता था। राम जब वहाँ पहुँचे तो उनसे और इससे युद्ध हुआ। राम ने इसके हाथ काट जीते हो इसे भूमि में गाड़ दिया और यह शापमुक्त हो गया।

कबीर—एक प्रसिद्ध भक्त और हिंदी के कवि। इनका जन्म तथा मृत्यु संवत् १४४० और १५२० के लगभग है। यों इनका जन्म किसी ब्राह्मणी से माना जाता है पर कबीरपंथियों के अनुसार काशी के लहर-तारा तालाब में एक कमल के फूल से इनका जन्म हुआ था। कुछ लोगों का यह कहना है कि किसी विधवा ब्राह्मणी ने एक बार रामानंद को प्रणाम किया। रामानंद ने उसके वैधव्य की ओर ध्यान न देकर उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। इसी आशीर्वाद के फलस्वरूप उसे एक बालक पैदा हुआ, जिसे उसने लहरतारा तालाब के पास लोकलाज से फेंक दिया। बाद में इसे नीरू जुलाहे ने पाला और यही कबीर हुआ। कबीर के जीवन के संबंध में भी अन्य भक्तों की भाँति बड़ी विचित्र-विचित्र घटनाएँ प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ यहाँ दी जा रही हैं। एक बार जगन्नाथपुरी के मंदिर में आग लगी और वहाँ का रसोइयाँदार जलने

लगा। कबीर उस समय काशी में थे। यहाँ उन्होंने पानी गिराया, जिसके फलस्वरूप जगन्नाथपुरी की आग बुझ गई। गुरुद्रोही राजा त्रिशंकु की छाया मगहर भूमि पर पड़ी और तभी से वह अपवित्र मानी जाने लगी। लोगों का विश्वास था और है कि मगहर में मरने वाला नरक में जाता है। कबीरदास को यह मान्य न था। इसीलिए सारा जीवन काशी में बिताकर मृत्यु के समय मगहर चले गये। वहाँ मरने के बाद हिंदू-मुसलमानों में उनके शव के लिए झगड़ा हुआ। हिंदू फूँकना चाहते थे और मुसलमान दफ़नाना। अन्त में किसी साधु ने वहाँ आकर कहा कि क्या लड़ते हो? कपड़ा उठाकर देखो भी तो। लोगों ने देखा तो कबीर के शरीर के स्थान पर वहाँ फूल था। हिंदू और मुसलमानों ने आधा-आधा उस फूल को बाँटकर अपने-अपने धर्मानुसार उनकी अन्त्येष्टि क्रिया की। कबीर जुलाहे का काम करते थे। एक दिन वे अपना बुना थान बाज़ार में बेचने गए। वहाँ किसी साधु ने जो वस्त्रहीन था इनसे इनका थान माँगा और इन्होंने दे दिया। कबीर जब बाजार से लौटे तो इनके पास पैसे नहीं थे, अतः अपने घरवालों के डर से ये रास्ते में छिप रहे। कहा जाता है कि भगवान् स्वयं इनके घर बैल पर लाद कर खाद्य-सामग्री पहुँचा आए और कुछ दिन बाद जब कबीर खोज-कर लाए गए तो यह रहस्य स्पष्ट हुआ। दे० 'सम्मन'।

कयाधू— प्रसिद्ध अत्याचारी दैत्य हिरण्यकशिपु की स्त्री तथा तारका-सुर के सेनापति जंभासुर की कन्या।

कर्कोटक—कद्रु के गर्भ से उत्पन्न एक सहस्र सर्पों में एक प्रधान सर्प। एक बार इसने नारद के साथ छल किया था, जिससे उन्होंने शाप दिया कि तुम बन में स्थावर होकर रहो और तुम्हारा उद्धार राजा नल के द्वारा होगा। शाप पड़ा और यह स्थावर हो गया। कलि के कोप से जब राजा नल राज्यच्युत होकर भटकते-भूलते उस बन में पहुँचे तो कर्कोटक ने उन्हें काटा। काटते ही उसकी मुक्ति हो गई और नल

विरूप हो गए। कर्कोटक ने राजा से पूरी बात बतलाई और यह भी बतलाया कि मेरे काटने से आपको दो लाभ होंगे—एक तो आपके विरूप होने से आपके शत्रु आप को पहचान न सकेंगे और दूसरे मेरे ज़हर से कलि का प्रभाव धीरे-धीरे कम होगा। इसे 'कर्कोट' भी कहा गया है।

कर्ण—कुमारी कुंती के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र दे० 'कुन्ती'। इस प्रकार कर्ण पांडवों के भाई थे। दुर्योधन तथा कर्ण में दाँत-काटी रोटी का व्यवहार था, इसीलिए उसने कर्ण को अंग देश का राजा बना उन्हें अंगराज की उपाधि दी थी। दान देने में कर्ण अग्रणी माने जाते रहे हैं और इनका नाम आदर से 'दानवीर कर्ण' के रूप में लिया जाता है। कुन्ती ने पैदा होते ही लोक-लज्जा के कारण इस नवजात शिशु को जमुना में बहा दिया था जिसे राधा नाम की एक स्त्री (दे० अधिरथ) ने पाया। उसने ही इनका पालन-पोषण किया जिसके नाम पर कर्ण को 'राधेय' कहते हैं। कर्ण ने भी अर्जुन आदि की तरह द्रोणाचार्य से ही अस्त्र-विद्या सीखी थी। कर्ण तथा अर्जुन के बीच सदा प्रतिद्वन्द्विता रहती थी। अर्जुन के यथार्थ पिता इंद्र ने अर्जुन की तुलना में इन्हें कमज़ोर बनाने के लिए, इनकी दानशीलता का लाभ उठाते हुए, इनको सहजात कवच तथा कुंडल जो इनके शरीर से लगे थे, माँगे। कर्ण ने इन्हें प्रसन्नतापूर्वक दे दिया। कहते हैं कि इन्हें शरीर से अलग करते समय खून निकलने लगा था। कर्ण का विवाह पद्मावती नामक कन्या से हुआ था। कर्ण अपनी माता कुन्ती से अर्जुन के अतिरिक्त किसी भी पांडव को न मारने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके थे। इसका इन्होंने मरते दम तक पालन किया। महाभारत युद्ध के सोलहवें दिन कौरवों के कहने पर कर्ण ने सेनापतित्व स्वीकार किया और संयोगवश दूसरे ही दिन अर्जुन के हाथ से मारे गए। घटोत्कच की मृत्यु कर्ण के हाथ से हुई थी। कृष्ण कर्ण को अर्जुन से भी बड़ा वीर मानते थे।

कर्दम—एक ऋषि जिनकी गणना स्वायंभुव मन्वंतर के प्रजापतियों में होती है। इनके जन्म के विषय में कई मत हैं। महाभारत के अनुसार ये ब्रह्मा की छाया से उत्पन्न हुए थे। कोई-कोई इन्हें किसी कीर्तिमान का कोई दक्ष का तथा कोई पुलह का पुत्र बतलाते हैं। एक अन्य मत से ये छाया के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र थे।

कर्दम ने सरस्वती के किनारे १० हजार वर्ष तक तप किया। स्वायंभुव मनु की कन्या देवहूति से इनका विवाह हुआ था जिनसे सांख्यकार कपिल मुनि का जन्म हुआ। इसके लिए इन्हें घोर तप करना पड़ा था। कला आदि नौ कन्याएँ भी इनके थीं।

कर्माबाई—इनकी कथा भक्तमाल में मिलती है। ये एक भक्त महिला थीं और जगन्नाथपुरी में रहती थीं। कर्मा प्रतिदिन खिचड़ी बनाकर जगन्नाथ को भोग लगाती थीं। इनकी गंदगी देखकर वहाँ के पुजारी लोग एक दिन बिगड़े कि नहा-धोकर खिचड़ी बनाया करो। दूसरे दिन कर्माबाई नहाने-धोने लगीं। इस देर के कारण जगन्नाथ को बड़ा दुःख हुआ। जब पुजारियों ने फाटक खोला तो आश्चर्य से देखा कि जगन्नाथ के मुँह में खिचड़ी लगी है। जगन्नाथ ने उन लोगों से कर्माबाई को न रोकने की आकाशवाणी द्वारा आज्ञा दी। उन्होंने बतलाया कि मैं शुद्धता से कहीं अधिक प्रेम का भूखा हूँ, और वह प्रेम कर्माबाई में सबसे अधिक है। तभी से फिर कर्माबाई उसी प्रकार भोग लगाने लगीं।

कलहा—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह एक अत्यंत कलहप्रिय स्त्री थी। इसके पति धर्मदत्त नाम के एक दीन ब्राह्मण थे। कलहा इतनी कर्कशा थी कि एक बार श्राद्ध का पिंड ऐसे स्थान पर फेंका जहाँ लोग मल मूत्र करते थे। इस का फल यह हुआ कि वह पिशाच योनि में गई। धर्मदत्त को अपनी पत्नी की अवस्था पर दया आई और उन्होंने प्रसिद्ध द्वादशाक्षरी मंत्र ओं नमो भगवते वासुदेवाय के जप द्वारा उसका उद्धार कराया। पद्मपुराण के अनुसार ये ही धर्मदत्त और कलहा अगले जन्म

में दशरथ और कौशल्या हुए जिन्हें भगवान ने प्रसन्न हो अपना माता-पिता बनाया।

कला—१. विभीषण की सबसे बड़ी कन्या जो विभीषण की ही भाँति साधु प्रकृति की थी। अशोक वाटिका में यह सीता की सुख-सुविधा का सर्वदा ध्यान रखती थी तथा उनकी सेवा किया करती थी। किसी-किसी के मत से इसका विवाह मरीचि ऋषि से हुआ था। वाल्मीकि रामायण में इसका नाम आता है।

१. स्वायंभुव मनु की तीन कन्यायों में से एक का नाम देवहूति था जो कर्दम ऋषि को ब्याही गई थी। इनसे कपिलमुनि नामक एक पुत्र तथा ९ कन्याएँ पैदा हुईं। कला इन ९ में सबसे बड़ी थी। इसका विवाह ब्रह्माके मानस पुत्र मरीचि से हुआ था। कुछ पुराणों के अनुसार मरीचि की पत्नी का नाम संभूति था। नहीं कहा जा सकता कि संभूति कोई और पत्नी थी या कला का ही दूसरा नाम था। कला के पूर्णिमास तथा कश्यप नाम के दो पुत्र थे। इसकी कथा भागवत में मिलती है।

कलि—चौथे युग, कलियुग के प्रवर्तक या स्वामी। दमयंती-स्वयंवर में कलि भी गए थे तथा दमयंती को नल के साथ जाते देख नल पर बहुत क्रुद्ध हुए थे। इसका बदला लेने के लिए नल पर इन्होंने अपना प्रभाव दिखलाया और उनकी बुरी दशा की। कर्कोटक नाम के सर्प ने नल को काट कर कलि का प्रभाव कम किया था। पुराणों के अनुसार कलि के पिता का नाम क्रोध और माता का नाम हिंसा है। दे० परीक्षित' 'नल'।

कल्कि—कल्किपुराण ने एक ऐसी कल्पना की है जिसके अनुसार कलियुग के अंत में विष्णु का १० वाँ अवतार इसी नाम से होगा। कलियुग का संहार कर भगवान सतयुग की प्रवृत्तियों का प्रचार करेंगे। लक्ष्मी भी पद्मा के रूप में जन्म लेंगी और उनका विवाह कल्कि से होगा। यह अवतार उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के सम्भल स्थान पर एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।

कल्पद्रुम—पुराणों के अनुसार यह एक वृक्ष है जो समुद्र मन्थन में निकला था और इन्द्र को दिया गया था। इसकी स्थिति देवलोक में मानी गई है। कहा जाता है कि इससे जिस चीज की प्रार्थना की जाय यह दे देता है। इसकी आयु बहुत बड़ी कही गई है। यह कल्पांत (एक कल्प ब्रह्मा का एक दिन और रात= ४,३२०,०००,००० मानवीय वर्ष) तक बना रहता है। मुसलमानों के स्वर्ग (बहिश्त) में इसी प्रकार का तूबा पेड़ माना गया है।

कल्पबल्ली, कल्प विटपी, कल्पशाखी, कल्पद्रुम, कल्पवृक्ष, कल्पतरु, कल्प, कल्पपादप, सुरतरु, देवतरु, कल्पलता, कल्पद्रु, कल्पलतिका, देव-लता, सुरलता, कल्पकतरु, आदि इसी के नाम हैं।

कश्यप—एक ऋषि। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ये ब्रह्मा के मानस पुत्र मरीचि के पुत्र थे। इनकी माता का नाम कला था। संसार के सारे जीव इनके ही पुत्र हैं। भागवत के अनुसार इनकी अदिति, दिति, दनु, काष्ठा, अरिष्ठा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, सम्य, तिमि, विनता, कद्रू, पतङ्गी और यामिनी—ये १७ पत्नियाँ थीं और इन्हीं से संसार के विभिन्न जीव पैदा हुए थे। कुछ मतों से इनकी ७ या १३ पत्नियाँ थीं। इनकी सभी पत्नियाँ दक्ष प्रजापति की पुत्रियाँ थीं। विष्णु का वामन अवतार भी अदिति से आदित्य के गर्भ से कश्यप के पुत्ररूप में हुआ था। अदिति से आदित्य तथा देवता भी पैदा हुए थे। दिति से दैत्यों की उत्पत्ति हुई थी। कश्यप का नाम सप्तर्षियों में भी लिया जाता है। इनके जन्म, जीवन, विवाह आदि के सम्बन्ध में विभिन्न मतों की संख्या बहुत अधिक है।

कहोड—एक ऋषि। जव आदि के नवान्न करने की प्रथा इनकी ही चलाई कही जाती है। ये उद्दालक के शिष्य तथा अष्टावक्र के पिता थे। इन्हें कहोल या कहोल कौषी ताकि भी कहते हैं।

काकभुशुन्डि—ये ब्राह्मण थे। एक बार लोमश ऋषि के यहाँ ये ज्ञान प्राप्त करने गए। वहाँ बात ही बात में दोनों आदमियों में वाद-विवाद होने लगा। इस पर लोमश ऋषि बहुत रुष्ट हुए और उन्होंने शाप दिया। तुलसी के शब्दों में—

सठ स्वपच्छ तव हृदयँ बिलासा।
सपदि होहि पच्छी चंडाला॥

शाप के फलस्वरूप ब्राह्मण कौआ हो गए और उनका नाम काक-भुशुंडि पड़ा। बाद में क्रोध शांत होने पर मुनि ने फिर इन्हें ज्ञान कराया और ये बहुत बड़े राम-भक्त हुए। काकभुशुंडि से एक बार गरुड़ से लड़ाई हो गई। काकभुशुंडि राम के शिशुरूप के भक्त थे। एक बार बालक राम अपने आँगन में खा रहे थे। काकभुशुंडि उनके हाथ से पूए का टुकड़ा लेकर भागे। राम की प्रेरणा से गरुण ने उनका पीछा किया। युद्ध में भुशुण्डि बुरी तरह घायल हुए और तीनों लोक में भागे पर कहीं उन्हें गरुड़ से त्राण न मिला। अन्त में वे राम के पास आए और राम ने उनकी रक्षा की। कहा जाता है कि मोह उत्पन्न होने के कारण भुशुण्डि पूआ लेकर भागे थे। गरुड़ से हारने पर तथा पुनः राम की शरण में आने पर उनका मोह दूर हो गया। रामकथा को सर्वप्रथम कहने वाले काकभुशुण्डि ही हैं। शङ्कर ने हंस का रूप धारण कर यह कथा उनसे सुनी थी। कहा जाता है कि भुशुण्डि ने एक भुशुण्डि रामायण की रचना की थी। काकभुशुंडि अमर हैं इनका कभी भी नाश नहीं होता।

कात्यायनी—(१) कात्यायन ऋषि की पत्नी। (२) याज्ञवल्क्य की दो पत्नियों में से एक। पहली पत्नी मैत्रेयी बड़ी विदुषी तथा अध्यात्मशास्त्र में प्रवीण थीं। इसके विरुद्ध कात्यायनी सांसारिक ज्ञानों में कुशल थीं। ये अपनी व्यावहारिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। (३) दुर्गा के एक रूप का भी नाम कात्यायनी है। डाउसन के अनुसार तपस्या के

कारण यह नाम पड़ा था, पर अन्य मतों से, इस रूप की सर्व प्रथम कात्यायन ने पूजा की अतः कात्यायनी नाम पड़ा। एक तीसरा मत यह भी है कि कत गोत्र में पैदा होने के कारण दुर्गा का नाम कात्यायनी पड़ा था। इनके रूप की विशिष्टता यह है कि ये सिंहवाहिनी हैं तथा १० हाथ वाली हैं।

कहा जाता है कि कात्यायन ऋषि के एक शिष्य को मोहित करने के लिए एक बार महिषासुर एक सुन्दरी का रूप धारण करके आया। कात्यायन इस बात को जान गये और उन्होंने शाप दिया कि तुम्हारा बध किसी स्त्री के हाथ से होगा। बाद में महिषासुर के अत्याचारों से पीड़ित होकर देवगण त्रिदेवों के पास गए। त्रिदेवों ने कात्यायन के शाप को सत्य करने के लिए तथा देवताओं के कष्ट को दूर करने के लिये कात्यायनी नाम्नी देवी को जन्म दिया। कत्यायनी ने १०० वर्ष तक युद्ध करने के बाद महिषासुर को मारा। देः 'महिषासुर'।

कामदेव—ये सौंदर्य एवं प्रेम के प्रतीक हैं। इनके माता-पिता क्रमशः लक्ष्मी तथा विष्णु थे। ये सर्वदा जवान रहते हैं और मलिनता इनके चेहरे पर कभी नहीं आती। इनकी सवारी तोता है। इनके झंडे पर मछली का चिह्न है। इनका जन्म सबसे पहले हुआ था। कहीं कहीं इनको धर्म का पुत्र तथा न्याय का देवता भी कहा गया है। काम ने ही शिव को पार्वती से पाणि ग्रहण के लिए विवश किया जिस पर क्रोधित होकर शिव ने अपने तृतीय नेत्र से कामदेव को भस्म कर दिया। परन्तु पुनः काम की पत्नी रति के रोने से शिव ने वरदान दिया और इनका जन्म कृष्ण तथा रुक्मिणी से प्रद्युम्न रूप में होगा। एक अन्य मत से प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध कामदेव का अवतार था। कामदेव का साथी बसंत, वाहन कोकिल तथा धनुषबाण फूलों का है। कामदेव के पाँच बाण मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण या लाल-कमल, अशोक, आम, चमेली और नील कमल हैं।

कामकला—एक गोप बाला तथा राधा की सखी।

कामधेनु—एक गाय, जो समुद्र-मंथन के समय निकले चौदह रत्नों में थी। इससे जो कुछ भी माँगा जाय देती है। यह गाय वसिष्ठ के पास थी।[1] एक बार कार्तवीर्य ने वसिष्ठ पर आक्रमण किया। कामधेनु ने तुरन्त बहुत से सैनिक ला खड़े किये। इसी गाय के लिए वसिष्ठ और विश्वामित्र में घोर युद्ध हुआ था। शवला, नंदिनी, कामदुहा तथा सुरभि आदि दूसरे और भी इसके नाम हैं।

कामध्वज—इनकी कथा भक्तमाल में मिलती है। ये एक प्रसिद्ध भक्त थे और जंगल में रहकर भजन किया करते थे। मरने पर भगवान राम की आज्ञा से हनुमान ने अपने हाथ से इनका अंतिम संस्कार किया।

कामरूप—(सं०) आसाम का एक ज़िला। यहाँ कामाद्या नाम्नी देवी का स्थान है। यह एक तीर्थ है। कालिका पुराण में इसका माहात्म विस्तार से वर्णित है। लोक प्रचलित कथाओं के अनुसार यहाँ जादूगर बहुत रहते हैं तथा बाहर से जो भी पुरुष जाते हैं, वहाँ की जादूगरनियाँ उसे जादू के बल से कोई जानवर बनाकर रख लेती हैं।

यह स्थान तांत्रिक साधना का प्रधान केन्द्र है तथा देवी के प्रसिद्ध पूर पीठों में से एक है। रामायण के अनुसार कभी यहाँ नरकासुर रहता था जिसने यहाँ की देवी का कामाद्या से विवाह करने की इच्छा प्रकट की थी। इसे 'कामाख्या' भी कहते हैं। दे० 'कामाद्या'।

कामाद्या—कामरूप की देवी। नरकासुर इनसे विवाह करना चाहता था। देवी ने उसकी बात इस शर्त पर मान ली कि यदि वह रात भर में उनका मन्दिर बनवा दे तो वे शादी कर लेंगी। नरकासुर ने

---

[1] *एक मत से वसिष्ठ के पास जो नंदिनी गाय थी वह कामधेनु न होकर कामधेनु की पुत्री थी।*

शिव के महत्व को न स्वीकार करने वाले ब्रह्मा का पंचम सर काटने के लिए ये पैदा हुए थे। ब्रह्मा भी उसी समय कन्यागमन का पाप कर काशी पहुँचे। शिव की आज्ञा पा काल भैरव ने ब्रह्मा का पंचम मस्तक काट दिया और वे चतुरानन रह गए।

कहा जाता है कि काशी में रहने वाले दुष्कर्मी को दंड देना ही इनका प्रधान कार्य है। भारत में कई स्थानों पर इनकी मूर्तियाँ हैं, जिनकी लोग पूजा, करते हैं।

कालयवन—शब्द का शाब्दिक अर्थ 'काले रङ्ग कर यवन (ग्रीक) है। लड़कपन में उसका पालन पोषण एक ग्रीक ने किया था तथा यह काले रङ्ग का था अतः इस नाम से पुकारा, गया। हरिवंश पुराण महाभारत तथा विष्णु पुराण आदि में इसकी कथा मिलती हैं। एक मत से यह गर्ग के पुत्र गार्ग्य का पुत्र था। इसकी माता गोपाली नाम की अप्सरा थी। एक बार यादवों ने गार्ग्य को नपुंसक कह कर अपमानित किया, उसी से रुष्ट होकर शिव की १२ वत्सर तक केवल लौहचूर्ण खाकर तपस्या कर उस अप्सरा से गार्ग्य ने कालयवन नामक पुत्र पैदा किया। अन्य मत से यह गार्ग्य का पुत्र था पर इसकी माँ कोई यवन स्त्री या यवन राजा की स्त्री थी। गार्ग्य का यादवों से विरोध था अतः बदले के लिए उसका पुत्र कालयवन ने यादवों पर आक्रमण कर दिया। सभी यादव भगे। कृष्ण यह जानकर कि इसे मारना कठिन है, उसे दूसरे ढंग से मरवाने की नियत से एक गुफा में भगे और स्वयं कालयवन ने उनका पीछा किया। भीतर जाकर कृष्ण कहीं छिप गए और सामने, सोते मुचकुंद को कालयवन ने कृष्ण जान कर लात मारा जिससे मुचकुंद की मुचकुंदी निद्रा टूट गई और उसने ज्योंही कालयवन को देखा, कालयवन भस्म हो गया। एक मत से इसने जरासंध के साथ यादवों पर हमला किया था। डाउसन के अनुसार यह एक यवन राजा था जिसने हिमालय की जंगली जातियों के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी।

इससे तो ऐसा लगता है कि कालयवन उसका नाम नहीं था, अपितु वह काला था और यवन था अतः यहाँ के पंडितों ने उसे कालयवन नाम से पुकारा। क्या उस आख्यान से यह अर्थ निकाला जाय कि कृष्ण के समय से ही ग्रीकों का यहाँ आना जाना आरम्भ हो गया था ?

काला—(१) दक्ष प्रजापति और असिक्नी की पुत्री जिसका विवाह कश्यप ऋषि से हुआ था।

(२) देवी भागवत के अनुसार पार्वती की एक शक्ति या रूप जो निशुम्भ, शुम्भ आदि दैत्यों को मारने के लिये देवताओं की प्रार्थना पर अवतरित हुई थीं। नाम के प्रयोग से लगता है कि यह नाम देवी या चंडी का ही एक पर्याय है।

कालिंदी—(१) भागवतानुसार एक स्त्री जो पूर्व जन्म में सूर्य की कन्या थी और जिसने भगवान को पतिरूप में पाने के लिए तपश्चर्या की थी। कृष्णावतार में कृष्ण ने इसे अपनाया। कृष्ण को इससे वीर, वृष, साबाहु, भद्र, शांति, दर्श आदि दस पुत्र थे।

(२) यमुना का पर्याय। दे० यमुना।

कालिय—(सं०) एक मत के अनुसार गरुड़ के भय से यह जल में छिपा था अतः इसका 'कालिय' नाम पड़ा। यह कद्रू का पुत्र एक प्रसिद्ध सर्प था। पहले यह रमणक द्वीप में रहता था। एक बार गरुड़ की कोई चीज खा लेने से गरुड़ से उससे युद्ध हुआ और हार कर यह मथुरा के पास यमुना में छिप गया। सौभरि के शाप से गरुड़ वहाँ नहीं जा सकता था अतः कालिय अपनी स्त्रियों और सेवकों के साथ वहाँ रहने लगा। इसके मुहँ में विष का आधिक्य था जिसके कारण इसके आस-पास का जमुना-जल विषैला हो गया और ग्वालों की गायें आदि पी पी कर मरने लगीं। इस दुख को दूर करने के लिए एक दिन कृष्ण वहाँ जल में कदम्ब के पेड़ पर चढ़कर कूद पड़े। एक अन्य मत से कंश की आज्ञा से वे वहाँ पैदा किए जाने वाले किसी विशिष्ट फूल को तोड़ने के लिए

कूदे थे। थोड़ी देर तक कालिय नाग में और उनमें युद्ध होता रहा था अन्त में उसे नाथ कर तथा उस पर सवार होकर कृष्ण बाहर निकले। कालिय के प्रार्थना करने पर कृष्ण ने उसका प्राण नहीं लिया पर अपने दल बल के साथ उसे समुद्र में चले जाने की आज्ञा दे दी। जाते समय उसके शीश पर अपना चरण चिन्ह छोड़ दिया जिससे कालिय गरुड़ से भी निश्चिंत हो गया। एक मत के अनुसार कालनेमि राक्षस का यह अवतार था। कालिय के पाँच फन थे।

काली—(१) एक देवी जिनके चार हाथ हैं। व्याघ्र चर्म ही इनका परिधान है तथा गले में सदैव नरमुंडों की माला पहनती हैं। इनका रङ्ग गहरा सांवला होने के कारण ही सम्भवतः इन्हें 'काली' नाम से अभिहित किया जाता है।

(२) भीम की दूसरी स्त्री का नाम जिसके गर्भ से सर्वगत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

कालीदह—ब्रज भूमि में यमुना नदी की धार में एक दह। गरुड़ के भय से त्राण पाने के लिये कालिय नाग यहीं रहता था, क्योंकि सौभरि मुनि के शाप के कारण वह इस दह में नहीं आ सकता था।

काशीराज—(१) काशी के एक प्राचीन राजा जिनकी पुत्रियाँ अंबा, अंबिका और अंबालिका थी।

(२) काशी के सभी राजा काशीराज कहे जाते हैं।

(३) महाभारत काल का एक राजा जो युद्ध में पांडवों की ओर था।

(४) दे 'दिवोदास'। उनको भी काशीराज कहा जाता है।

काश्यप—१, महाभारत कालीन एक प्रसिद्ध विष-चिकित्सा-विशारद। जब परीक्षित को सर्प काटने वाला था तो ये उन्हें बचाने के लिए राजधानी की ओर चले। रास्ते में इनकी परीक्षा के लिए तक्षक ने इनसे भेंट की। उसने एक हरे पेड़ को काट कर सुखा दिया पर इन्होंने तुरन्त उसे पहले से भी हरा कर दिया। इस पर तक्षक चिंतित हुआ।

उसका परीक्षित को काटना बेकार हो जाता क्योंकि काश्यप उन्हें ठीक कर देता। काश्यप लोभी थे, अतः तक्षक ने और कोई युक्ति चलते न देख उन्हें बहुत धन दिया जिसके कारण वे लौट गये।

२. राम की सभा में काश्यप नाम का एक सभासद था। कुछ मतों से वह विदूषक था।

काश्या—भीम की एक स्त्री का नाम।

किंकर—(१) राक्षसों की एक जाति जिनको प्रमदा बन का संहार करते समय हनुमान ने मारा था।

(२) एक राक्षस। वशिष्ट या वशिष्ट के ज्येष्ठ पुत्र सक्तृ की प्रेरणा से यह राजा कल्माषपाद के शरीर में प्रवेश कर गया था जिसके कारण वे मनुष्यों का मांस खाने लगे थे।

किंदभ—एक ऋषि। इनकी कथा महाभारत में मिलती है। ये प्रायः मृग का रूप धारण कर मृगियों के साथ सहवास किया करते थे। एक बार ये ऐसा कर रहे थे तब तक पांडु ने इन्हें मार दिया जिससे इन्होंने पांडु को शाप किया कि यदि तुम अपनी पत्नियों के साथ सहवास करोगे तो मर जाओगे। दे० 'पांडु'।

किन्नर—एक देव जाति। ये कैलाश पर स्थित कुबेरपुरी में रहते हैं। इनका सारा शरीर तो मनुष्यों सा होता है पर मुँह घोड़े सा। संगीत-शास्त्र में ये प्रवीण कहे जाते हैं। इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगूठे से मानी जाती है। ये लोग यक्षों के भाई भी कहे जाते हैं।

किरात—(१) एक प्राचीन जाति जिसके सम्बन्ध में तरह-तरह के अनुमान लगाए जाते हैं। कुछ लोग इन्हें पर्वतीय, कुछ चीन के तथा कुछ समुद्र के किनारे के बतलाते हैं। खुछ भी हो, यह प्रायः निश्चित है कि यह एक जङ्गली जाति थी।

२. शिव का भी यह एक नाम है। यही रूप धारण कर शिव ने अर्जुन से युद्ध किया था तथा प्रसन्न हो उन्हें पाशुपत अस्त्र दिया था।

प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ 'किरातार्जुनीय' में इसका वर्णन है। इसी रूप में शंकर ने मूक नामक किसी राक्षस का बध भी किया था।

कीचक—मत्स्यराज विराट का साला तथा प्रधान सेनानायक। इसकी वीरता का आतंक सब के ऊपर था। जिस समय पाण्डव अज्ञात-वास में विराट के यहाँ नौकर-रूप में रहते थे, द्रौपदी भी वहाँ दासी थी। कीचक द्रौपदी पर मोहित हो गया और उसने अपने विचार इससे प्रकट किए। द्रौपदी ने भीमसेन से कहकर कीचक को रात में मरवा डाला।

कीर्ति—वृषभानु की स्त्री और राधा की माता। इन्हीं के आधार पर सूर आदि ने राधा को 'कीरति कुमारी' कहा है।

कुन्तिभोज—महाभारत के वीर योद्धा तथा पाण्डों के सहायक। इनके कोई सन्तान न थी, इसीलिए इन्होंने शूरसेन की पुत्री पृथा को गोद लिया। इनके नाम पर पृथा का बाद में नाम कुन्ती पड़ा। दे० 'कुन्ती'।

कुंती—शूरसेन की कन्या और वसुदेव की बहन। इसके चचा कुन्तिभोज के कोई संतान न थी अतः उन्होंने इसे गोद लिया। इसका आरंभिक नाम पृथा था। कुन्तिभोज के नाम पर यह कुन्ती नाम से प्रसिद्ध हुई। एक बार कुन्ती ने दुर्वासा ऋषि की सेवा की। ऋषि ने प्रसन्न हो एक ऐसा मंत्र बतलाया कि जिससे पाँच देवताओं में किसी भी देवता को बुलाया जा सकता था। एक दिन देखने के लिए कुन्ती ने सूर्य को बुलाया। वे सचमुच आ गए और कुमारी कुन्ती को उनसे गर्भ रह गया। कर्ण का जन्म इसी गर्भ से हुआ जिसे कुन्ती ने नदी में छोड़ दिया (दे० 'कर्ण') कुन्ती का विवाह पांडु से हुआ पर उन्हें शाप था कि वे अपनी पत्नियों से भोग न कर सकेंगे। इसी कारण धर्मराज, वायु और इंद्र के साथ संयोग कर कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन ये तीन पुत्र पैदा किए। महाभारत युद्ध के बाद गांधारी और धृतराष्ट्र के साथ यह जंगल में चली गई जहाँ तीनों आग में जल गए।

कुंभकर्ण—यह विश्रवा का पुत्र तथा रावण का सहोदर भाई था। इसका जन्म सुमाली की कन्या केकसी के गर्भ से हुआ। इसने ब्रह्मा की घोर तपस्या की किंतु वर प्राप्ति के समय देवताओं की प्रार्थना पर सरस्वती इसकी जिह्वा पर बैठ गई जिससे इसने गलती से ६ महीने सोने तथा एक दिन जागने का वर माँग लिया। वस्तुतः यह एक दिन सोने और छः महीने जागने का वर माँगना चाहता था। राम-रावण युद्ध के समय रावण के अनेक प्रयत्न करने के उपरान्त किसी प्रकार इसकी निद्रा टूटी। उठने पर जब रावण ने इसे सब परिस्थिति के अवगत कराया तो इसने सीता को चुराना अनुचित कहकर उसे राम को लौटा देने का परामर्श दिया किन्तु रावण ने उसकी सम्मति पर कोई ध्यान न देकर उसे युद्ध करने को प्रेरित किया। २००० घड़े शराब पीने के पश्चात् इसने युद्धस्थल की ओर प्रस्थान किया। राम की सेना इसके पराक्रम और युद्ध-कौशल के सम्मुख टिक न सकी। इसने सुग्रीव को पत्थर से मारकर बंदी बना लिया था। अंत में राम से लड़ता हुआ यह वीरगति को प्राप्त हुआ।

कुंभीनसी—(१) बलि की पुत्री तथा बाणासुर की भगिनी का नाम।

(२) रावण की माता कैकसी की बहन अर्थात् रावण की मौसी का नाम।

(३) चित्ररथ नामक गंधर्व की स्त्री। एक बार बनवास की अवधि में पांडव वन में गंगा के किनारे पहुँचे। वहीं गंगा में चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ जलक्रीड़ा में मग्न था। अपने मनोरंजन में व्याघात डालने वाले पांडवों को इसने युद्ध के लिए ललकारा। अर्जुन ने इसे बन्दी बना लिया। किन्तु कुम्भीनसी ने युधिष्ठिर से अनुनय-विनय कर इसे छुड़ा लिया।

कुंभीपाक—एक नरक का नाम। भागवत के अनुसार जो मनुष्य

निरीह पशु-पक्षियों का अकारण बध करता है उसे मृत्यु के उपरांत इस नरक में कष्ट भोगना पड़ता है।

कुचैल—सुदामा का दूसरा नाम। दे० 'सुदामा'।

कुबेर—यक्षों के अध्यक्ष तथा शिव के मित्र। ये रावण के वैमातेय, तथा विश्रवा और इलविला के पुत्र थे। रावण के पहले लंका में यही राज्य करते थे। बाद में इनकी राजधानी कुबेरपुरी या अलकापुरी में हो गई। कुबेर बहुत कुरूप थे। इनके तीन पैर, एक आँख और केवल आठ दाँत थे। ये इंद्र की नवनिधियों के भंडारी हैं। विश्वकर्मा से इन्होंने लंका बनवाई थी। एक मत से कुबेर शिव के भंडारी हैं।

कुब्जा—एक कुबड़ी जो कंस के यहाँ अनुलेपन कार्य करने वाली दासी थी। कंस के धनुषयज्ञ में जाते समय कृष्ण ने मार्ग में इससे सुगन्ध अनुलेपन माँगा, जिसे यह कंस के यहाँ ले जा रही थी। कुब्जा ने वह प्रसन्नतापूर्वक दे दिया। कृष्ण ने प्रसन्न होकर इसका कुबड़ापन दूर कर इसे एक सुन्दरी बना दी। कहा जाता है कि बाद में इससे कृष्ण से प्रेम हो गया। भ्रमर गीतों में गोपियों ने कृष्ण के साथ कुब्जा को भी खरी-खोटी सुनायी है।

कुमुद—(१) विष्णु के पार्षदों में से एक का नाम।

(२) कश्यप ऋषि के पुत्र।

(३) नाभादास के अनुसार राम की बानरी सेना के एक सेनापति।

कुमुद्वती—यह कुश की दूसरी पत्नी तथा कुमुद नामक नाग की भगिनी थी। एक समय कुश सरयू में स्नान कर रहे थे। संयोग से उनके हाथ के कड़े नदी में गिर पड़े।

नाग कन्या कुमुद्वती उन्हें नागलोक ले गई। क्रुद्ध होकर कुश ने सरयू को शुष्क करने के लिए धनुष पर तीर चढ़ाया। किंतु कुमुद नाग ने उन कड़ों को लौटाकर अपनी बहन का विवाह भी कुश के साथ कर दिया जिससे उनके 'अतिथि' नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ।

कुरु—चन्द्रवंशी राजा संवरण के पुत्र। इनके शुभांगी तथा वाहिनी नाम की दो पत्नियाँ थीं। वाहिनी के कनिष्ट पुत्र जनमेजय की वंश परंपरा में धृतराष्ट्र और पांडु उत्पन्न हुए। कुरु के सभी वंशजों को कौरव कहा जा सकता था किन्तु यह नाम धृतराष्ट्र के पुत्रों के लिए ही रूढ़ हो गया था।

कुरु के अन्य पुत्रों में विदूरथ चैत्ररथ तथा मुनि आदि का नाम भी प्रसिद्ध है।

कुश—राम के दो पुत्रों में से एक। लव के बड़े भाई। लंकाविजय के पश्चात् अग्निपरीक्षा लेकर राम ने सीता को पत्नीरूप में स्वीकार कर लिया। किंतु कुछ समय के पश्चात् लोकापवाद के कारण उन्हें गर्भवती सीता को फिर वन में भेजना पड़ा। बाल्मीकि ऋषि के आश्रम में लव और कुश का जन्म हुआ। ऋषि ने इन्हें विद्याध्यन के साथ-साथ अस्त्र-शास्त्रों की भी पूर्ण शिक्षा दी। राम के अश्वमेघ यज्ञ के घोड़े को इन्होंने पकड़ लिया था इस कारण इनको लक्ष्मण शत्रुघ्न तथा भरत के साथ युद्ध करना पड़ा किन्तु कोई भी इनके सामने न टिक सका। अंत में राम युद्ध क्षेत्र में आये। लव-कुश को देखकर अनायास ही उनके हृदय में वात्सल्य भाव उमड़ आया तथा उन्होंने इस वीर युगल का परिचय पूछा। उन्होंने अपनी जननी सीता का नाम बतला दिया। अंत में सीता ने इन्हें बतलाया कि राम ही तुम्हारे पिता हैं। इस प्रकार सब का मिलन हो गया। कुश का जन्म कुश से हुआ था इसलिए ये कुश कहलाए। राम की मृत्यु के पश्चात् ये दोनों पुत्र दक्षिणी तथा उत्तरी कौशल के राजा हुए। कुश ने अपने नाम पर विंध्यप्रदेश में कुशावती या कुश-स्थली नामक नगरी भी बसाई।

कुशध्वज—ये ह्रस्वरोमा जनक के कनिष्ट पुत्र तथा सीरध्वज जनक के छोटे भाई थे। इनके मांडवी तथा श्रुतकीर्ति नामक दो कन्याएँ थीं जिनका विवाह क्रमशः भरत तथा शत्रुदन के साथ हुआ था।

कुशिक—ये विश्वामित्र के पितामह तथा गाधिराज के पिता थे।

इनकी कन्या का विवाह ऋचीक मुनि के साथ हुआ जिससे महर्षि जमदग्नि का जन्म हुआ। जिनके पुत्र परशुराम थे। कुशिक का नाम वैदिक ग्रंथों में भी आता है।

कृतवर्मन—ये महाराजा हृदीक के पुत्र थे। महाभारत युद्ध में इन्होंने दुर्योधन का साथ दिया। कौरव पक्ष के अवशेष तीन वीरों में से कृतवर्मन भी एक थे। युधिष्ठिर के अश्वमेध-यज्ञ करने पर यज्ञाश्व की रक्षा के लिए ये अर्जुन के साथ गये थे। यादव वीर सात्यकी के हाथों इनकी मृत्यु हुई।

कृतवीर्य—धनक राजा के पुत्र तथा सहस्रबाहु के पिता। कृतवीर्य ने संकष्टी चतुर्थी का व्रत किया था, जिसके पुण्य से इन्हें सहस्रार्जुन जैसे वीर एवं प्रतापी पुत्र की प्राप्ति हुई।

कृति—(१) राजा नहुष के कनिष्ट पुत्र का नाम।

(२) बहुलाश्व जनक के पुत्र जो राजा निमि के वंशज थे।

(३) भागवत में कृति, च्यवन ऋषि के पुत्र रूप में प्रसिद्ध हैं जिनके पुत्र का नाम उपरिचर था।

कृत्या—तंत्रशास्त्र की एक राक्षसी, जिसे अपने शत्रु आदि को विनष्ट करने के लिए भेजा जाता है। ऋषि लोग प्राय: क्रोध में अपने बाल आदि से कृत्या उत्पन्न करते रहे हैं।

कृपाचार्य—गौतम ऋषि के वीर्य से उत्पन्न, जो सरकंडे पर पड़ गया था। अन्यत्र ये गौतम के पौत्र कहे गए हैं और इनका जन्म तपस्वी शारद्वत से होना लिखा है। शारद्वत अपने शिशु तथा कन्या को जंगल में छोड़ आए। राजा शान्तनु ने शिकार खेलते समय इन्हें देखा और उठाकर घर ले आए। उनकी कृपा से पालन होने के कारण पुत्र का नाम कृप तथा पुत्री का कृपी रखा गया। कृपाचार्य ही कृप था। यह धनुर्विद्या का कुशल जानकार था और महाभारत के युद्ध में इसने कौरवों का पक्ष लिया था।

कृपी—यह कृपाचार्य की बहन थी। दे० 'कृपाचार्य'। द्रोणाचार्य का विवाह इसी से हुआ था। अश्वत्थामा कृपी के गर्भ से द्रोणाचार्य का औरस पुत्र था।

कृष्ण—ययाति के पुत्र यदु के वंश में उत्पन्न वसुदेव के पुत्र। इनकी माता का नाम देवकी था जो कंस के पिता उग्रसेन के भाई देवक की पुत्री थी। इस प्रकार कृष्ण कंस के भांजे थे। कृष्ण के जन्म के समय कंस अपने पिता उग्रसेन को कैदकर स्वयं राज्य कर रहा था। देवकी के विवाह के समय ही कंस को आकाशवाणी से ज्ञात हो गया था कि उसकी मृत्यु देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न बालक से होगी। इसी भय से उसने वसुदेव और देवकी को बन्दीगृह में डाल रक्खा था और उनकी प्रत्येक संतान को मार डालता था। कृष्ण के जन्म[1] के समय वसुदेव पहले से होशियार थे और पैदा होते ही इन्हें गोकुल में नन्द के घर रख आए और वहाँ से यशोदा की नवजात पुत्री को लाकर उनके स्थान पर सुला दिया। दूसरे दिन कंस ने उस पुत्री को देवकी के आठवें गर्भ का समझ हाथ से ऊपर उठा भूमि पर पटकना चाहा, पर वह ऊपर उठते ही उड़ गई और जाते समय कहती गई कि तुम्हें मारने वाला पैदा हो चुका है और वह गोकुल में है। तब से कंस शंकित रहने लगा। उसने कृष्ण को मारने के बहुत से उपाय किए। पूतना तथा इस प्रकार के और भी कई असुर और असुर-स्त्रियाँ उन्हें मारने के प्रयास में उनके द्वारा मारी गईं। कृष्ण ने हयासुर, प्रलंबासुर, नरकासुर,

[1] कृष्ण विष्णु के ८ वें अवतार थे। इन्हें पूर्ण अवतार कहा जाता है। महाभारतादि में इनके जन्म के सम्बन्ध में लिखा है कि विष्णु ने अपने सर से एक सफेद और एक श्याम दो बाल तोड़े और उन्हें रोहिणी और देवकी के गर्भ में डाल दिया। श्याम बाल से कृष्ण पैदा हुए और सफेद से बलराम।

जृम्भासुर तथा मुरु आदि और भी कई असुरों का बध किया। जमुना के एक कुण्ड में रहने वाले कालियानाग को नाथकर उसे वश में किया। अपनी कोई चाल सफल न होते देखकर कंस ने अक्रूर द्वारा इन्हें मथुरा बुलवाया जहाँ अक्रूर की प्रार्थना पर कृष्ण ने कंस का बध कर धरती का संकट दूर किया। बाद में कृष्ण ने द्वारिका में यादवों का राज्य स्थापित किया और वहाँ रहने लगे। विदर्भकुमारी रुक्मिणी इनकी रानी थी, जिससे प्रद्युम्न नामक पुत्र और चारुमती नाम की पुत्री उत्पन्न थी। स्यमंतक मणि के लिए जांबवंत को कृष्ण ने मारा और उसकी पुत्री जांबवती से विवाह किया। इनकी अन्य स्त्रियों में सत्यभामा भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि कृष्ण के कुल १६००० रानियाँ थीं जिनसे १८०,००० संतानें हुईं। राधा' भी इनकी एक प्रेमिका कही जाती हैं। दे० 'राधा'। महाभारत युद्ध में कृष्ण ने पांडवों का पक्ष लिया था। ये अर्जुन के सारथी थे। कृष्ण की मृत्यु एक बहेलिया के तीर से हुई। दे० 'पूतना' 'जांबवान' 'जांबवती' 'स्यमंतक' 'कालिय, 'अघासुर'।

कृष्णदास पयहारी—एक प्रसिद्ध वैष्णवभक्त तथा अग्रदास के गुरु। ये अतिथि-सत्कार तथा परोपकार को बहुत महत्त्व देते थे। कहा जाता है कि एक बार अपने निवास स्थान पर आए हुए एक भूखे बाघ को इन्होंने अपने शरीर का माँस काट-काट कर खिलाया था।

केकय—एक प्राचीन राज्य (वर्तमान काश्मीर) तथा उसके राजा का नाम। केकय के राजा का यथार्थ नाम एक मतानुसार धृष्टकेतु था और ये कृष्ण के श्वसुर थे। महाभरत युद्ध में केकय के पुत्रों ने भी भाग लिया था। त्रेता में भी यहाँ के राजा 'केकय' ही कहे जाते थे। कैकेयी उन्हीं की लड़की थी, और उसका यह नाम भी उन्हीं के कारण पड़ा था।

केतु—एक राक्षस जिसकी माता का नाम सिंहिका था। जिस समय समुद्र से अमृत निकला यह भी देवता का रूप धारण कर देवताओं की

पंक्ति में बैठ गया, परन्तु सूर्य तथा चन्द्रमा इस बात को जानते थे, अतः उन्होंने इस रहस्य को अन्य देवताओं से खोल दिया। विष्णु ने क्रोध में अपना सुदर्शन चक्र चलाया और इसके शरीर के दो भाग हो गये। पर, उस समय तक अमृत उसके मुँह में चला गया था अतः यह मरा नहीं और इसके दोनों भाग जीवित रहे। धड़ 'केतु' नाम से पुकारा गया तथा मस्तक 'राहु'। कहा जाता है कि उसी के प्रतिशोध के लिए राहु आज भी सूर्य और चन्द्रमा को ग्रसता है। लोगों ने जिसकी संज्ञा 'ग्रहण' दी है।

केशी—कृष्ण का पता चलने पर कंस ने अनेक दैत्यों और राक्षसों को उनका बध करने के लिए भेजा था। उनमें से यह भी एक था। एक विशालकाय अश्व को रूप धारण कर इसने ब्रज की गायों का बध करना प्रारम्भ किया किन्तु कृष्ण ने इसका बध कर डाला।

केसरी—एक बन्दर जिसकी स्त्री का नाम अंजनी था। हनुमान इसके क्षेत्रज पुत्र थे।

कैकेयी—केकय देश की राजकुमारी, अयोध्या नरेश दशरथ की कनिष्ठ पत्नी तथा भरत की माता। इसके अपूर्व रूप पर मोहित होकर दशरथ ने इससे विवाह किया था। वृत्रासुर संग्राम में कैकेयी ने दशरथ के रथ को गिरने से बचाया था और दशरथ ने प्रसन्न हो दो वर देने का वचन दिया था। राम के राज्याभिषेक के समय दासी मन्थरा के उसकाने पर इसने दोनों वर माँगे। एक के अनुसार भरत को राज्य-तिलक तथा दूसरे के अनुसार राम को १४ वर्ष का वनवास। उस समय भरत ननिहाल में थे। राम सुनते ही पिता के कहे बिना ही वन के लिए प्रस्तुत हो गये। सीता व लक्ष्मण भी साथ में गए। भरत ननिहाल से लौटे तो कैकेयी पर बहुत बिगड़े और राजगद्दी पर बैठना अस्वीकार कर दिया।

कैटभ—कल्पांत में एक बार जब भगवान विष्णु योगनिद्रा में सो

रहे थे तो उनके कान के मैल से मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस उत्पन्न हुए। उस समय भगवान की नाभि से कमल निकला हुआ था और उस पर ब्रह्मा विराजमान थे। ये असुर ब्रह्मा को मारने की तैयारी करने लगे। यह देख ब्रह्मा बहुत डरे और योगनिद्रा से प्रार्थना करने लगे। योग निद्रा ने असुरों से युद्ध किया पर पाँच सहस्र वर्ष बीत जाने पर भी उन्हें न मार सकी। तब विष्णु उनसे लड़ने लगे। विष्णु का लड़ना उन्हें इतना अच्छा लगा कि विष्णु से उन्होंने वर माँगने को कहा। इस पर विष्णु ने उनसे वर माँगा कि तुम दोनों मेरे हाथ से मरो। उन्होंने वर स्वीकार किया, अतः विष्णु ने अपने जंघों पर रखकर दोनों के सिर चक्र से काट डाले। कैटभ की कथा एक और प्रकार से भी प्रचलित है। ब्रह्मा ने एक बार विष्णु के कर्णमूल से दो राक्षसों को उत्पन्न किया। जन्म के समय ये दोनों अचेत थे। प्राण-संचार होने पर एक का शरीर कोमल तथा दूसरे का कड़ा निकला। अतः ये दोनों क्रमशः मधु एवं कैटभ कहलाए। अपने बल के कारण एकार्णव सागर पर इनका एकच्छत्र अधिकार हो गया। ब्रह्मा भी डर कर विष्णु के कमल-नाभ में जा बैठे। परन्तु बाद में ब्रह्मा विष्णु तथा इन दोनों से युद्ध हुआ। विष्णु की युद्ध-कला से ये प्रसन्न हुए और वर माँगने को कहा। विष्णु ने वर माँगा कि तुम दोनों मेरे हाथ से मरो। इन्होंने वर स्वीकार किया और विष्णु के हाथ मारे गये।

कोटरा—पार्वती का एक अवतार तथा बाणासुर की जननी। अनिरुद्ध का उद्धार करने के लिए कृष्ण ने बाणासुर के साथ युद्ध करते हुए अपना चक्र उठाया उस समय यह अपने पुत्र के प्राण बचाने के लिए नग्नावस्था में कृष्ण के सम्मुख दौड़ी थी। दे० कोटवी।

कोटवी—एक राक्षसी जो बाद में देवी मान ली गई और कोटमाई या कोटामाई नाम से जिनकी उत्तरी भारत में पूजा होती है। ये बाणासुर की माता थीं। इनका ऊपर का आधा शरीर कवच से ढका तथा शेष नीचे

का आधा नंगा माना जाता है। बाणासुर और विष्णु के युद्ध के समय देवों के प्रयत्न से महाकाली ने जन्म लेकर कोटवी का बध किया। इनका कोट्टवी का कोटरा नाम भी मिलता है। अल्मोड़ा में कोटलगढ़ स्थान है जिसका अर्थ है नंगी स्त्री का स्थान। बनारस में भी कोटामाई का मंदिर मिला है।

बाण के हर्षचरित में अपशकुनों की सूची में नग्न कोटवी के घूमने का उल्लेख है। विद्वानों ने कोटवी को दक्षिण भारत की राक्षसी देवी 'कोट्टवै' का विकसित रूप माना है। बाद में अंबिका या दुर्गा के रूप में यह पूजी जाने लगी। छठवीं सातवीं सती में यह दुर्भाग्य की सूचिका मानी जाती थी। इसका अर्थ यह है कि इसकी पूजा का आरंभ और बाद में हुआ। दे० कोटरा।

कौरव—कुरु धृतराष्ट्र तथा पाण्डु दोनों ही के पूर्वज थे परन्तु बाद में कौरव नाम केवल धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों के लिए ही प्रयोग किया गया। कौरवों में दुर्योधन तथा दुःशासन आदि प्रधान थे।

कौशल्या—कोशल की राजकन्या और दशरथ की महारानी। ये राम की माता थीं। इन्हें अदिति का अवतार भी कहते हैं।

कौशिक—(१) प्रतिष्ठान नगरी के एक कुष्टरोगी ब्राह्मण। ये एक वेश्या के यहाँ जाते थे। एक बार अपनी पतिव्रता स्त्री के कंधों पर आरूढ होकर ये उसके यहाँ जा रहे थे कि मार्ग में भूल से मांडव्य ऋषि को इनसे धक्का लग गया। क्रुद्ध होकर ऋषि ने प्रातः काल होते ही इनको मरने का शाप दिया। किंतु इनकी पत्नी के पतिव्रत धर्म के प्रभाव से सूर्य उदय न हो सका। इस पर देवताओं ने प्रसन्न होकर इनका रोग दूर कर दिया।

(२) विश्वामित्र का एक नाम।

(३) राजा गाधि जो कुशिक के पुत्र थे।

क्रतु—(१) सप्तर्षियों में से एक का नाम। इनका विवाह दक्ष प्रजापति की कन्या संतति से हुआ, जिससे इनके बालखिल्य नाम से साठ हजार पुत्र उत्पन्न हुए।

भागवत के अनुसार कर्दम प्रजापति की कन्या क्रिया इनकी पत्नी थी जिससे इनके साठ हजार पुत्र उत्पन्न हुए।

(२) कृष्ण का एक पुत्र जो जांबवती से उत्पन्न हुआ था।

क्रोध—इसका जन्म ब्रह्मा की भृकुटी से हुआ था। एक बार जदग्नि ऋषि अपने पितरों का श्राद्ध कर रहे थे। यह सर्प के रूप में उनके आश्रम में पहुँचा और कामधेनु के दूध से बनी खीर को पी गया। ऋषि ने यह देखकर भी क्रोध न किया। इस पर लज्जित होकर इसने क्षमा याचना की। ऋषि के क्षमा कर देने पर भी पितरों की खीर का कुछ अंश पी जाने पर इसे शाप मिला, जिसके कारण इसे नकुल की योनि मिली तथा धर्म सभा में अंधवृत्ति नामक ब्राह्मण के कृष्ण के पास जाने पर इसकी मुक्ति हुई।

खर—रावण का एक भाई। यह १४ हजार राक्षसों को लेकर रावण के स्थान की रक्षा करता था। शूर्पणखा को जब लक्ष्मण ने नाक-कान विहीन कर दिया तो उसके कहने पर खर, दूषण, त्रिशिरा तथा अपनी पूरी सेना को लेकर लड़ने गया और राम के हाथ से वहीं पंच-वटी में मारा गया। इसके मरने की खबर रावण को अकंपन ने दी थी।

खिज्र—एक मुसलमानी पैगम्बर। इनके बारे में प्रसिद्ध है कि इन्होंने जीवन (अमृत) का झरना पा लिया है और उसे पीते रहते हैं। इसी कारण ये अमर हैं। खिज्र मूसा के साथी और सूफियों के सहा-यक कहे जाते हैं। पथ-प्रदर्शन करना इनका प्रधान कार्य है।

खोजी—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त का नाम। एक जनश्रुति के अनुसार इन्होंने अपनी कुटिया में एक घण्टा लटका रखा था। इनका कहना था कि जब हम ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करेंगे तब यह घंटा स्वयंमेव बज

उठेगा। सुना जाता है कि इनके देहावसान के समय घण्टा स्वयं बज उठा था।

गङ्गा—(१) शांतनु की एक पत्नी जिन्होंने इस शर्त पर विवाह किया था कि जो भी उनके दिल में आएगा करेंगी और यदि जरा भी शांतनु रोक टोक करेंगे तो चली जायँगी। गंगा से शांतनु को सात संतानें हुईं। सातों को गंगा ने फेंक दिया। आठवीं बार भीष्म पैदा हुये तो शांतनु ने फेंकने से रोका। गङ्गा मान तो गईं पर तुरन्त उनके यहाँ से शर्त के अनुसार चली गईं। गङ्गा के ये आठों पुत्र आठ वसु थे। दे० 'वसु'।

२. उत्तरी भारत की पवित्र नदी। पुराणों के अनुसार यह हिमालय की पुत्री तथा पार्वती की बहिन है। पहले इसका स्थान स्वर्ग था। परन्तु जब सगर के साठ हजार पुत्रों को तारने का प्रश्न आया, जो कपिल ऋषि के शाप से गङ्गासागर में मरे थे, तो गङ्गा के लाने का प्रयत्न किया गया। तीन पीढ़ियों के अनवरत परिश्रम के पश्चात् भगीरथ अपनी तपस्या के बल से गङ्गा को विष्णु के पैर से पृथ्वी पर लाने में सफल हुये। यहाँ पहले ये शिव की जटा में आईं और वहाँ से आगे बढ़ीं तो जह्नु ऋषि ने पी लिया। फिर बहुत कहने पर उन्होंने अपने जाँघ से इसे निकाला। गङ्गा सागर में पहुँच कर इन्होंने सगर पुत्रों को तारा।

गंधर्व—देवताओं का एक भेद जो गाने बजाने और नाचने का काम करते हैं। अप्सराएँ भी इसी योनि की हैं। दे० 'अप्सरा'। प्रधान गंधर्वों में विश्वावसु, चित्ररथ, हाहा, हूहू तथा तुम्बुरु आदि का नाम लिया जाता है। इनके नाम पर आजकल एक जाति भी प्रचलित है। कुछ वेश्याएँ अपने को गंधर्व जाति की बतलाती हैं।

गद—(१) वसुदेव की पत्नियाँ देवकी तथा देवरक्षिता से जो बच्चे

उत्पन्न हुए उन्हें गद कहा गया। महाभारत में गद नामक कृष्ण के सौतेले भाई का वर्णन आता है जो पांडवों के पक्ष से लड़े थे।

(२) एक असुर। विष्णु ने इसे मारकर इसकी हड्डियों के एक गदा बनाई थी जिसके धारण करने से उनका नाम गदाधर पड़ा।

गज—गज या गजेन्द्र की कथा के दो रूप मिलते हैं। एक रूप के अनुसार हाहा और हूहू नाम के दो गंधर्व थे। दोनों ही गान-विद्या में दक्ष थे। एक बार दोनों में इस बात पर विचार होने लगा कि दोनों में अच्छा गायक कौन है। इसके निर्णय के लिये वे देवल ऋषि के पास गए। ऋषि अपनी साधना में व्यस्त थे अतः उन्होंने इनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। इस अवहेलना के कारण दोनों गंधर्व देवल मुनि को गाली देने लगे। परिणाम-स्वरूप मुनि ने उन्हें शाप दिया और एक गज हो गया तथा दूसरा ग्राह।

गज एक दिन अपनी हथिनियों के साथ क्षीर सागर के किनारे त्रिकूट पर्वत पर स्थित एक तालाब में जल क्रीड़ा कर रहा था। हूहू गंधर्व जो शाप से ग्राह हो गया था उसी तालाब में था। उसने गज को पकड़ लिया। दोनों में सहस्रों वर्ष (कहीं-कहीं १२ हजार वर्ष) तक युद्ध होता रहा। अन्त में पानी का जानवर न होने के कारण गज थक गया। उसने एक कमल का फूल तोड़ कर भगवान के नाम पर अर्पित किया और करुण स्वर में प्रार्थना की। भगवान इससे इतने द्रवित हुए कि उसके मुँह से अभी पूरा नाम भी नहीं निकल पाया था और वे अपना गरुड़ छोड़कर पैदल ही वहाँ दौड़े आए। भगवान ने गजेन्द्र की रक्षा की और ग्राह को मार डाला। दोनों मुक्त हो गए। गज तो मुक्त होकर भगवान का पार्षद हो गया और हूहू गंधर्व लोक में चला गया।

"सच्चे हृदय से पुकारने पर भगवान एक क्षण में आ जाते हैं।" इसके प्रमाण के लिए प्रायः इस कथा का उल्लेख साहित्य में मिलता है।

कथा का दूसरा रूप यह है कि ऋषि के शाप से मगर होने वाला तो हूहू गंधर्व ही था, पर गज हाहा नामक गंधर्व न होकर कोई इन्द्र-द्युम्न नामक राजा था, जिसे किसी अपराध के कारण किसी ऋषि ने शाप दे दिया था। शेष कथा पूर्ववत है।

गणिका--गणिका के नाम पर दो कथाएँ मिलती हैं।

(१) पिंगला--पिंगला नाम की एक वेश्या थी। एक दिन वह शृङ्गार कर आधी रात तक किसी धनी-मानी की प्रतीक्षा करती रही, पर कोई न आया। अन्त में वह चारपाई पर लेटकर सोचने लगी कि जितनी देर मैंने किसी व्यभिचारी की प्रतीक्षा में व्यर्थ के लिए बिताया, यदि भगवान के नाम लेने में बिताती तो कितना भला होता? यह विचार आते ही उसने अपनी वह वृत्ति छोड़ दी और भक्त हो गई। साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि आशा दुखों का मूल है। दे० 'पिंगला'।

(२) जीवन्ती---प्राचीन काल में जीवन्ती नाम की एक सुन्दरी थी। इसका पति एक वैश्य था जिसका नाम परशु था। जीवन्ती के पिता का नाम रघु था। पति के मरने पर जीवन्ती वेश्या हो गई और आजीवन इसने अपना जीवन व्यभिचार में बिताया। इसे कोई सन्तान न थी अतः कुछ मन-बहलाव के लिये इसने एक तोता पाल रक्खा था। एक बार एक साधु इसके घर भिक्षा माँगने आए। उन्हें इसका जीवन देखकर बड़ी तरस आई। चलते-चलाते साधु ने इससे अपने तोते को 'राम-राम' पढ़ाने के लिये कहा। तभी से जब भी इसे अवकाश मिलता यह तोते को 'राम-राम' पढ़ाया करती थी।

जीवन्ती राम का नाम केवल तोते को पढ़ाने के लिए लेती थी, किन्तु राम के उच्चारण मात्र का इतना प्रभाव हुआ कि मरने के बाद उसको स्वर्ग प्राप्त हुआ।

गणेश—एक देवता जिनका सारा शरीर तो मनुष्य का है पर सर

हाथी का। इसके अतिरिक्त भी इनकी कुछ विशेषताएँ हैं। हाथियों की भाँति इनके दो दाँत न होकर केवल एक है और मनुष्यों की भाँति दो हाथ न होकर चार हैं। ये पार्वती के गर्भ से शिव के पुत्र हैं और इनकी सवारी चूहा है। इनके जन्म के विषय में कहा जाता है कि पार्वती को पहले पुत्र नहीं हो रहा था जिसके निवारण के लिए शिव ने पुण्यक व्रत रहने की आज्ञा दी। इससे उन्हें गर्भ रह गया और गणेश का जन्म हुआ। इस अवसर पर सभी देवता उपस्थित हुए। पार्वती के कहने पर शनि भी आए। परन्तु उनको उनकी पत्नी का शाप था कि जिसको तुम देखोगे वह मर जायगा। फलस्वरूप उनके देखते ही गणेश का सर कट गया। पार्वती रोने लगीं और विष्णु को बुलाया गया। रास्ते में पड़े हाथी का मस्तक काटकर विष्णु ले आए और गणेश के धड़ में लगाकर उन्हें जीवित किया। इसी कारण इनका सर हाथी का हो गया। एक बार इस बात के लिए देवताओं में वादाविवाद हो रहा था कि सर्वप्रथम किस देव की पूजा हो। अन्त में तय यह हुआ कि जो सबसे पहले ब्रह्मांड घूमकर आ जायगा वही पूजा जायगा। सभी देवता अपने-अपने वाहन पर चले। गणेश चुपचाप बैठे रहे और राम शब्द लिखकर उसकी परिक्रमा कर ली। जब देव ब्रह्मांड घूमकर लौटे तो लोगों ने इनको वहाँ उपस्थित पाया। पूछने पर लोगों को जब इनकी बुद्धिमता का पता चला तो सभी ने इनकी सराहना की और इनको विजयी घोषित किया गया। तभी से सभी शुभ कार्यों में ये पहले पूजे जाते हैं। इनके एक रदन होने के विषय में कई मत हैं। एक मत से परशुराम से युद्ध में यह टूटा, दूसरे मत से रावण ने इसे तोड़ा था और तीसरे मत से व्यास का महाभारत लिखते समय लेखनी टूट गई अतः ये अपना दाँत तोड़कर उससे लिखने लगे। एक चौथा मत भी है कि कार्तिकेय ने यह दाँत तोड़ा था।

गरुड़—कश्यप तथा विनता के संयोग से उत्पन्न पक्षियों के राजा

जो विष्णु के वाहन कहे जाते हैं। सूर्य के सारथी अरुण इन्हीं के भाई थे। अपनी माता को सौतेली माता के चंगुल से छुड़ाने के लिए अमृत लाने जब ये स्वर्ग जा रहे थे तो मार्ग में भूख लगी। ये कश्यप के पास गए और कुछ खाने को माँगा। उन्होंने लड़ते हुए एक हाथी तथा कच्छप को दिखलाया। ये उन्हें लेकर एक वटवृक्ष पर चले गये पर ज्यों ही बैठे पेड़ की डाल टूट गई। इन्होंने देखा कि उस पर अनेक ऋषि लटके हुये थे। ऋषियों की मृत्यु के भय से वे पुनः अपने पिता के पास गये। कश्यप के कहने पर ऋषिगण चले गये और गरुड़ ने भी मेरुपर्वत पर जाकर अपनी भूख बुझाई, फिर ये स्वर्ग पहुँचे। वहाँ अमृत के लिये इनसे देवताओं से युद्ध हुआ और ये देवों को हराकर अमृत लाये। गरुड़ को नागों का शत्रु कहा जाता है। कालिय नाग इन्हीं के भय से यमुना में रहने लगा था।

गांगेय—(१) भीष्म का एक मातृक नाम।

(२) एक बार पार्वती ने अपने शरीर के मैल से एक मूर्ति बनाकर उसे गङ्गा में डाल दी। मूर्ति सजीव हो गई। देवताओं ने उसका नाम गांगेय रख कर उसे गणों का प्रधान बना दिया।

गांडीव—अर्जुन का प्रिय धनुष। एक बार अर्जुन ने अग्नि का अजीर्ण रोग मिटाया था जिस पर प्रसन्न होकर अग्नि ने गांडीव नामक धनुष इनको वरुण से दिलाया था। इस धनुष को ब्रह्मा ने बनाकर सोम को दिया था और सोम ने वरुण को। अर्जुन जब वृद्धावस्था के कारण इतने निर्बल हो गए कि इस धनुष को चढ़ा भी न सकते थे तो उन्होंने मरने के पूर्व इसे वरुण को लौटा दिया था। दे० 'अर्जुन'

गांदेनी—यदुवंशी श्वफल्क की पत्नी तथा अक्रूर की जननी। ये १२ वर्ष तक अपनी माता के गर्भ में रहीं। जन्म धारण करने की प्रार्थना पर इन्होंने तीन वर्ष तक प्रतिदिन ब्राह्मणों को गोदान देने को

कहा। ऐसा करने के उपरांत ये उत्पन्न हुईं। ये आयुपर्यन्त प्रतिदिन एक गाय का दान देती रहीं।

गांधारी—गांधार देश के राजा सुबल की कन्या जो धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधनादि की माता थीं। शिव के वरदान से इनके सौ पुत्र उत्पन्न हुये जिनकी कथा इस प्रकार है—शिव से १०० पुत्रों का वरदान पाकर गांधारी दो वर्ष तक गर्भवती रही। अन्त में शिशु के स्थान पर एक मांस पिंड का जन्म हुआ। व्यास ने उसके सौ टुकड़े कर उन्हें अलग-अलग घी से भरे घड़ों में रख दिया। उनसे इन सौ पुत्रों की उत्पत्ति हुई। पतिव्रता गांधारी ने अपने पति धृतराष्ट्र के अंधा होने के कारण, विवाह के बाद ही तो आँखों पर पट्टी बाँध ली थी और आजन्म उसे नहीं खोला। ये आदर्श पत्नी तथा आदर्श मा थीं। अपने सभी पुत्रों के युद्ध में मरने पर इन्हें बहुत दुख हुआ और युद्ध का सारा उत्तरदायित्व कृष्ण पर डालकर उनको इन्होंने फटकारा और शाप दिया कि वह भी परिवार रहित होकर वन में मारे जायेंगे। यह शाप आगे चल कर सत्य सिद्ध हुआ क्योंकि कृष्ण परिवार रहित होकर एक व्याध के द्वारा वन में दिवङ्गत हुए थे। युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के बाद ये अपने पति के साथ वन में चली गईं। अन्त में वन में भयानक आग लगने के कारण धृतराष्ट्र, कुन्ती आदि सहित इनकी मृत्यु हो गई।

गाधि—कान्यकुब्ज देश के राजा तथा विश्वामित्र के पिता। पुराणों के अनुसार इनके पिता का नाम कुशिक था। ये इंद्र के अंश से उत्पन्न थे। नाभा जी के मतानुसार जगदग्नि ऋषि इनके दौहित्र थे, जिनके पुत्र परशुराम हुए। इनकी कन्या सत्यवती का विवाह भृगु से हुआ था।

गायत्री—ब्रह्मा की दूसरी पत्नी। यों तो ब्रह्मा की बहुत सी पत्नियाँ थीं पर वास्तविक पत्नी सावित्री थीं। एक यज्ञ के अनुष्ठान के समय जब इंद्र सावित्री को बुलाने आये तो सखियों की अनुपस्थिति में जाना

इन्होंने उचित नहीं समझा। परन्तु यज्ञ के समय पत्नी का होना अनिवार्य था अतः इंद्र मर्त्यलोक से जाकर एक ग्वालिन ले आये जिसका नाम गायत्री था। इससे गांधर्व विवाह कर ब्रह्मा ने यज्ञ किया। ये वेद-माता हैं और गायकों की पालिका हैं। हिन्दू धर्म में इनका बड़ा महत्व है। इनके हाथों में कमल तथा मृगशृङ्ग हैं।

गायत्री नाम का एक वैदिक छंद तथा एक मंत्र भी है।

गार्गी—गर्ग गोत्रीय एक स्त्री जो अत्यंत विदुषी तथा ब्रह्मज्ञानी थी। राजा जनक की सभा में इसने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया था। बृहदारण्यक उपनिषद् में इसकी कथा आती है।

गालव—एक ऋषि जो विश्वामित्र के शिष्य थे। हरिवंश पुराण इन्हें विश्वामित्र का पुत्र मानता है। अपना अध्ययन समाप्त कर चुकने पर गालव ने गुरु विश्वामित्र से गुरु-दक्षिणा माँगने के लिए हठ किया। विश्वामित्र ने उनके हठ से चिढ़ कर गुरु-दक्षिणा में ८०० श्यामकर्ण घोड़े माँगे। गालव इधर-उधर बहुत घूमे पर कहीं प्राप्ति न हुई। अंत में गरुड़ के साथ राजा ययाति के पास गये परन्तु उन्होंने भी असमर्थता प्रकट की। बाद में ययाति ने अपनी पुत्री माधवी को देकर कहा कि तुम इससे घोड़े पा जाओगे क्योंकि यह सुन्दर है और अनेक लोग इसे चाहेंगे। गालव माधवी के साथ सर्व प्रथम राजा हर्यश्व के पास गया जो पुत्र के इच्छुक थे। माधवी को लेकर राजा ने दो सौ घोड़े दिये और एक पुत्र लाभ के बाद माधवी को लौटा दिया। इसी प्रकार माधवी काशिराज दिवोदास तथा राजा उशीनर के पास क्रमशः गई और एक-एक पुत्र उत्पन्न होने पर पुनः गालव के पास आ गई। इस प्रकार गालव को ६ सौ श्यामकर्ण घोड़े मिल गये। अधिक घोड़ों की आशा न देख कर गालव ने इन ६ सौ घोड़ों के साथ माधवी को ही २०० घोड़े के बराबर मान गुरु-दक्षिणा में दे दिया और इस प्रकार गुरु-वचन को पूरा किया। माधवी से विश्वामित्र को भी एक पुत्र हुआ

जो अष्टक कहलाया। तदोपरान्त विश्वामित्र ने भी माधवी को लौटा दिया। माधवी अब भी कुमारी थी। गालव ने इसे इसके पिता के पास पहुँचाया और स्वयं जङ्गल में चले गये। अपने हठ के कारण गालव को इतनी परेशानी उठानी पड़ी।

गुलाम चिश्ती—एक प्रसिद्ध सूफी विद्वान जो हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु कहे जाते हैं।

गुह—शृङ्गवेरपुर के राजा तथा राम के अनन्य भक्त। बनवास के समय इन्होंने राम को लक्ष्मण और सीता सहित गङ्गा पार कराया था। राम के प्रति इनकी इतनी श्रद्धा थी कि जब भरत चित्रकूट में राम से मिलने जा रहे थे, उन्हें राम का शत्रु समझ कर ये युद्ध करने को प्रस्तुत हो गये थे।

गृध—कृष्ण का [उनकी पत्नी मित्रवदा से उत्पन्न] एक पुत्र।

गोपा—महात्मा गौतम बुद्ध की पत्नी थीं। राहुल नामक पुत्र उत्पन्न होने पर गौतम इन्हें त्यागकर बीतराग हो गये थे। इनका एक दूसरा नाम यशोधरा भी है।

गोबर्धन लीला—यह कृष्ण की एक लीला है। कृष्ण के पूर्व ब्रज के लोग इंद्र की पूजा करते थे। जब कृष्ण बड़े हुए तो उन्होंने इन्द्र की पूजा रोकवा दी और ब्रजवासियों को गोबर्धन पर्वत की पूजा करने की आज्ञा दी। अपनी पूजा न होते देख इन्द्र को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने ब्रज पर मूसलाधार पानी बरसाना आरम्भ किया। पानी न रुकते देख कृष्ण इंद्र का कोप समझ गये और उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अपनी उङ्गली पर छाते की तरह उठा लिया। उसके नीचे आकर सारे ब्रजवासियों ने अपनी रक्षा की। अन्त में ब्रजवासियों तथा कृष्ण को झुकते न देख इन्द्र बहुत लज्जित हुए और भागवत के अनुसार उन्होंने कृष्ण से क्षमा-याचना की।

गोरख नाथ—नाथ संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक महान योगी। ये मत्स्येन्द्र (मछिंदर नाथ) के शिष्य थे। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने 'काव्य धारा' में ८४ सिद्धों के अन्तर्गत 'गोरक्षा पा' नाम से इनका उल्लेख किया है। इनके जन्म काल, जाति आदि के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ये जाति के ब्राह्मण थे। इनका आविर्भाव विक्रम सं० की दसवीं सदी से हुआ। कबीर पंथियों के अनुसार मगहर में आमी नदी के किनारे कबीर और गोरख से विवाद हुआ था जिसमें कबीर जीत गये थे। कहना न होगा कि यह कपोल कल्पना है क्योंकि दोनों समकालीन नहीं थे। इनके नाम से २८ संस्कृत ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। जिनमें अमनस्क अमरौघ शासनम् गोरक्ष पद्धति तथा सिद्ध सिद्धांत पद्धति बहुत प्रसिद्ध हैं। इनकी हिंदी रचनाओं में 'गोरख बोध' विशेष प्रसिद्ध है। डा० बड़थ्वाल ने 'सबदी' को सबसे अधिक प्रामाणिक रचना माना है। आजकल भी कहीं-कहीं गोरखनाथ की परम्परा के साधु देखने में आते हैं।

गौतम—एक ऋषि जिनका विवाह अहल्या से हुआ था। एक बार इन्द्र ने चन्द्रमा की सहायता से गौतम को रात में उनके घर से बाहर कर दिया और उनका स्वरूप धारण कर उनकी स्त्री के साथ संभोग किया। संभोग करके इंद्र जाने हो वाले थे कि गौतम आ गये। उन्होंने चन्द्रमा को तो त्रिशूल से मारा जिसके कारण आज भी चन्द्रमा के अङ्क में काला निशान है और इन्द्र को सहस्र भगवाला होने का शाप दिया। अपनी पत्नी अहल्या को शाप से उन्होंने पत्थर बना दिया। राम ने अपने चरणस्पर्श से जनकपुर जाते समय अहल्या का उद्धार किया। इंद्र भी धनुष-भङ्ग के समय उनका दर्शन कर सहस्र भगवाले शाप से मुक्त हो गए। दे० 'अहल्या' 'इन्द्र' 'चन्द्रमा'। इन्हें 'गोतम' भी कहा गया है।

ग्राह—दे० 'राज'।

घंटाकर्ण—शिव के एक गण का नाम। शाप के कारण इसने उज्जयिनी नगरी में मनुष्य योनि में जन्म लिया। इसने विक्रमादित्य के सभी पंडितों को परास्त करने का वरदान प्राप्त करने के लिये शिव की घोर तपस्या की। प्रसन्न होकर शिव ने इसे यह वरदान दिया कि कालिदास को छोड़कर तू सब पंडितों को हरा सकेगा। इसने कालिदास को परास्त करने का भी वर चाहा किन्तु शिव ने अस्वीकार कर दिया। इस पर क्रुद्ध होकर इसने कभी भी शिव का नाम न लेने की शपथ खाई। सभी पंडितों के परास्त करने के पश्चात् इसने कालिदास को भी चुनौती दी। कालिदास ने इस शर्त पर हार मानना स्वीकार किया कि वह एक बड़े छंद में शिव की स्तुति करे। उन्हें यह मालूम था कि यह 'शिव' नाम उच्चारण नहीं करेगा। किन्तु घंटाकर्ण ने अपनी प्रतिभा के बल पर एक ऐसे श्लोक की रचना की जिसमें शिव का नाम न आने पर भी उनकी स्तुति थी। इस पर प्रसन्न होकर शिव ने इसे अपने गणों में स्थान दिया। हरिवंश पुराण में इसकी कथा कुछ भिन्न प्रकार से है। कहा जाता है कि विष्णु के नाम से इसे बड़ी चिढ़ थी उनका नाम कानों में न पड़े इसके लिए इसने अपने कानों में बड़े-बड़े घंटे लटका रखे थे जिसके कारण इसका नाम घंटाकर्ण पड़ा।

घटोत्कच—इसका जन्म भीम की पत्नी हिडिंबा नामक राक्षसी से हुआ था। यह अत्यन्त पराक्रमी योद्धा था और इसकी आकृति बड़ी विकराल और डरावनी थी। यह रात्रि-युद्ध तथा माया-युद्ध में विशेष पारंगत था। महाभारत युद्ध में इसने पांडवों का साथ दिया। इसने युद्ध भूमि में कौरवों की सेना में कुहराम मचा दिया था। अन्त में कर्ण ने जो शक्ति अर्जुन को मारने के लिए इन्द्र से प्राप्त की थी उसे चलाकर इसका बध किया। इसका मस्तक घड़े के समान था और सिर पर बाल नहीं थे। इसी कारण यह घटोत्कच कहलाया। 'दे० 'हिडिंबा'।

घृताची—स्वर्ग की एक अप्सरा। यह अद्वितीय सुन्दरी थी। वेद-

व्यास इसे देखकर आसक्त हो गए थे और इससे उनको शुकदेव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। च्यवन ऋषि के पुत्र प्रमिति ने भी घृताची से सहवास किया था। जिसके फलस्वरूप उनको कुरु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक बार घृताची को गंगा में स्नान करती हुई देखकर भारद्वाज मुनि इस पर मोहित हो गये और उनका वीर्यपात हो गया, जिसे उन्होंने एक द्रोणि (मिट्टी का एक बरतन) में रख दिया। धनुर्विद्या के प्रसिद्ध आचार्य द्रोणाचार्य का इसी से जन्म हुआ। इससे रुद्राश्व की पत्नी रूप में १० पुत्र तथा कुशानाम की पत्नी रूप में १०० पुत्रियाँ भी उत्पन्न हुई थीं।

चंड—१. एक प्रसिद्ध राक्षस जो मुंड का साथी और शुंभ-निशुंभ का दुर्गा से युद्ध में सहायक या सेनापति था। यह मुन्ड के साथ ही नर्वदा नदी से निकला था और उसके साथ ही दुर्गा से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

२. कुबेर के ८ पुत्रों में एक। यह एक बार पिता के शिवपूजन के लिए सूँघ कर फूल ले आया था, जिसके लिए कुबेर ने इसे शाप दे दिया, जिसके फलस्वरूप त्रेता में यह कंस का भाई हुआ। कृष्ण के हाथ से मारा जाकर यह शापमुक्त हुआ।

चंडी—चंड नामक राक्षस के बध के कारण दुर्गा का नाम चंडी पड़ा। दे० 'दुर्गा'।

चंद्रमा—एक देवता। इनकी उत्पत्ति समुद्र-मंथन के समय समुद्र से हुई थी इसी कारण इन्हें लक्ष्मी का भाई या समुद्र का पुत्र कहते हैं। अमृत-पान के समय एक राक्षस चंद्रमा के पास बैठकर अमृत पीने लगा। चन्द्रमा और सूर्य ने मिलकर और देवों से यह भेद खोल दिया। विष्णु ने उस पर अपना चक्र चला दिया। वह अमृत पी चुका था अतः मरा नहीं पर उसके शरीर के दो टुकड़े हो गए जो राहु और केतु कहलाए। उसी क्रोध से आज भी राहु चंद्रमा और सूर्य को ग्रसता है जो ग्रहण के

नाम से प्रसिद्ध है। चंद्रमा के कलंक या धब्बे के विषय में कई मत हैं। एक के अनुसार चंद्रमा की सहायता से जब इंद्र ने गौतम-पत्नी अहल्या के साथ सम्भोग किया तो गौतम ने अपना त्रिशूल (एक मत से कमंडल) चंद्रमा पर चला दिया था और उसी का यह निशान है। एक अन्य मत से दक्ष प्रजापति के शाप से इन्हें राजयक्ष्मा रोग हो गया जिसकी शान्ति के लिए उन्होंने अपनी गोद में यह हिरण ले रक्खा है। समुद्र-मंथन से निकला विष शंकर ने पान किया अतः उसकी गर्मी की शांति के लिए उन्हें चंद्रमा दिए गए। उन्होंने अपने सर पर तभी से चंद्रमा को रख रक्खा है। पुराणों में चंद्रमा को अत्रि और अनुसूया का पुत्र कहा गया है। एक मत से एक हजार वर्षों की घोर तपस्या के कारण अत्रि का वीर्य ही सोम में परिवर्तित हो गया था। चंद्रमा ने ब्रह्मा के रथ पर बैठकर २१ बार पृथ्वी की परिक्रमा की। इस परिक्रमा में उनका जो तेज पृथ्वी पर गिरा वही औषधियों के रूप में उत्पन्न हुआ। चंद्रमा का विवाह नव नक्षत्रों से हुआ है जो दक्ष की कंयाएँ हैं। चंद्रमा की एक और स्त्री रोहिणी भी है। कालिका पुराण के अनुसार रोहिणी पर चंद्रमा का विशेष प्रेम था अतः दक्ष की पुत्रियों को बुरा लगा और दक्ष क्रुद्ध हुए जिससे उनके नासिकाग्र से यक्ष्मा रोग निकला और चंद्रमा के शरीर में घुस गया तभी से वे क्षीण होने लगे। फिर उन्होंने अपनी भूल का अनुभव कर सब स्त्रियों के साथ बराबरा प्रेम करना शुरू किया और तब से महीने में १५ दिन क्षीण होते हैं और १५ दिन बढ़ते हैं।

कुछ अन्य मतों से चंद्रमा धर्म या प्रभाकर के भी पुत्र कहे जाते हैं। चंद्रमा देवगुरु बृहस्पति की स्त्री तारा को हर लाए थे। इन्हें उनसे बुध नामक पुत्र भी हुआ। दे० 'तारा'।

चामुंडा—दुर्गा का एक रूप जिनके हाथ से शुंभ और निशुंभ के चंड और मुंड नाम के दो सेनापतियों का संहार हुआ था। दे० 'दुर्गा'।

चार्वाक—प्राचीन काल का एक अनीश्वरवादी संप्रदाय। इसको

महर्षि बृहस्पति ने आरम्भ किया था परन्तु उनके शिष्य चार्वाक के कारण ही इसका प्रचार हुआ अतः इसे चार्वाक मत कहते हैं। इसकी उत्पत्ति के विषय में मिलता है कि बृहस्पति ने दैत्यगुरु शुक्राचार्य का रूप धारणकर दैत्यों की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए इसको चलाया था। इसमें परलोक तथा ईश्वर का विधान नहीं है। इसके अनुसार शरीर से पृथक् आत्मा का अस्तित्व नहीं है और इस संसार में सुखप्राप्ति ही परमपुरुषार्थ है। इस मत के प्रवर्तक 'चार्वाक' की बोली मीठी थी अतः उनका नाम चारुवाक या चार्वाक पड़ा। चार्वाक शब्द का प्रयोग व्यक्ति और संप्रदाय दोनों ही रूप में होता है।

चित्रकेतु—एक प्राचीन राजा का नाम। इनके लाखों स्त्रियाँ थीं। कृतदूती नामक रानी से इनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसे सपत्नी रानियों ने विष देकर मार डाला। पुत्र से अत्यधिक स्नेह के कारण, राजा ने उसके शव का दाह कर्म नहीं किया। अन्त में मृत बालक के उपदेश देने पर इन्हें ज्ञान हुआ और इन्होंने उसका अंत्येष्टि संस्कार किया। एक बार ये कैलाश गये। वहाँ शिव को, पार्वती को अपने अंक में बैठाए देखकर ये उपदेश देने लगे। इस पर पार्वती ने रुष्ट होकर इनको शाप दिया जिसके फलस्वरूप इन्हें वृत्रासुर के रूप में राक्षस योनि में जन्म लेना पड़ा था।

(२) लक्ष्मण के दूसरे पुत्र का नाम।

(३) पांचाल नरेश द्रुपद के पुत्र का नाम।

चित्रगुप्त—चौदह यमराजों में से एक जो जीवों के पाप-पुण्य का हिसाब रखते हैं। जिस समय ब्रह्मा सृष्टि के पश्चात् ध्यानमग्न थे उनके शरीर से एक पुरुष कलम-दावात लिये उत्पन्न हुआ। उसने अपना कार्य पूछा तो ब्रह्मा ने कहा कि तुम यमराज के पास जाकर मनुष्यों के कार्य का लेखा-जोखा रखो। ब्रह्मा के कार्य से इनका जन्म हुआ इसलिए ये कायस्थ कहे गए। कहा जाता है कि कायस्थों के ये ही आदि पुरुष

हैं। चित्रगुप्त के नागर, भट्ट, सेनक, गौड़, श्रीवास्तव, अधिष्ठान, माथुर, अंबष्ठ तथा शैकसेन आदि कई पुत्र कहे जाते हैं। कायस्थ लोग यम-द्वितीया को कलम-दावात तथा चित्रगुप्त की पूजा करते हैं।

चित्रसेन—(१) धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो महाभारत के युद्ध में भीम द्वारा मारा गया।

(२) गंधर्वराज विश्वावसु के पुत्र। इन्होंने देवलोक में अर्जुन को नृत्य और संगीत की शिक्षा दी थी, जिसका प्रयोग उन्होंने विराट के यहाँ बृहन्नला के रूप में किया था। एक बार दुर्योधनादि कौरवों के साथ इनका घोर युद्ध हुआ जिसमें इन्होंने उनकी स्त्रियों को बन्दी बना लिया किंतु युधिष्ठिर के कहने पर सम्मानपूर्वक उन्हें मुक्त कर दिया।

(३) द्रुपद के पुत्र का नाम, जिसे भारत युद्ध में कर्ण ने मारा था।

(४) कर्ण के पुत्र का नाम, जो भारत युद्ध में नकुल के हाथों वीर गति को प्राप्त हुआ।

(५) महाराजा परीक्षित के पुत्र का नाम।

चित्रांगद—भीष्म के सौतेले भाई तथा महाराज शान्तनु के पुत्र। शान्तनु की मृत्यु के बाद इन्होंने ही राजगद्दी ली क्योंकि भीष्म ने पहले से राजा न बनने का प्रण कर लिया था। चित्रांगद नाम के गंधर्व के साथ युद्ध करते समय इनकी मृत्यु हुई थी। इनके बड़े भाई का नाम विचित्रवीर्य था। दे० 'सत्यवती'।

चित्रांगदा—अर्जुन की एक पत्नी जो मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या थी। इसके गर्भ से बभ्रुवाहन नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ था जो अपने ननिहाल में राजा बनाया गया। दे० 'बभ्रुवाहन' 'उलूपी'।

चैतन्य—बङ्गाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य तथा प्रचारक। इनका जन्म काल १४८५ ई० में माना जाता है। युवा अवस्था में ही इनके हृदय में कृष्ण के प्रति भक्ति-भावना का उदय हुआ। कृष्ण का नाम

जपते हुए कभी-कभी भावावेश में ये मूर्छित हो जाते थे। इनकी भक्ति-पद्धति माधुर्यभाव की थी। भारतवर्ष के विभिन्न भागों में भ्रमण कर इन्होंने वैष्णव मत का बहुत प्रचार किया। सप गोस्वामी इनके ही शिष्य थे। इनकी स्त्री का नाम विष्णुप्रिया था।

च्यवन--भास्कर के सोलह शिष्यों में से एक। ये एक प्राचीन वैद्य हैं। इनका एक ग्रन्थ 'जीवदान' नाम का है। इनके पिता का नाम भृगु तथा माता का नाम पुलोमा था। जब ये गर्भ में थे तो एक दिन एक राक्षस इनकी माता को हरण करने आये। ये तुरन्त गर्भ से निकल आए और अपनी माता की रक्षा की। अपने आप गर्भ से निकल आने के कारण ही इनका नाम च्यवन पड़ा। इनका विवाह शर्याति की पुत्री सुकन्या से हुआ था। उस समय ये वृद्ध थे पर अश्विनीकुमारों के आशीर्वाद से नवजवान हो गए।

छाया---सूर्य की पत्नी का नाम संज्ञा था, जिसके गर्भ से यमुना तथा यम की उत्पत्ति हुई थी। सूर्य के प्रचंड तेज को न सह सकने के कारण संज्ञा अपनी छाया सूर्य के पास रखकर स्वयं अपने पिता विश्वकर्मा के पास चली गई। विश्वकर्मा ने संज्ञा को बहुत फटकारा और लौट जाने को कहा परन्तु वह सूर्य के पास न जाकर उत्तरापथ में घोड़ी का रूप धारण कर तपस्या करने लगी। सूर्य ने संज्ञा की छाया को संज्ञा समझ उसके साथ संभोग कर सावर्णि और शनैश्चर नाम की दो संतानें उत्पन्न कीं। अब छाया अपनी संतानों के प्रति प्रेम तो रखने लगी और यमुना तथा यम आदि के प्रति उपेक्षा भाव। यह देख सूर्य को रहस्य का पता चला और वे घोड़ा का रूप धारण कर घोड़ी रूप में तपस्या करती अपनी स्त्री संज्ञा के पास गए और उसके साथ संभोग कर अश्विनीकुमारों को उत्पन्न किया। छाया के यथार्थ रूप संज्ञा का कहीं-कहीं 'प्रभा' या त्वष्टा नाम भी मिलता है।

छिन्नमस्ता--एक देवी। इनका स्वरूप विचित्र है। इन्होंने अपना

सर काटकर अपने बाएँ हाथ में ले रक्खा है और गले से निकलते रुधिर को अपने कटे सर की जीभ से चाट रही हैं। इनके दाएँ हाथ में कृपाण है। स्त्री और पुरुष का मैथुनरत युग्म ही इनका वाहन है।

जंभ—(१) महिषासुर का पिता तथा बलि का एक मित्र। इसका पूरा नाम जंभासुर था। इन्द्र से युद्ध करते समय इसने बड़ी वीरता दिखलाई किंतु वज्र के प्रहार से जब मूर्छित हो गया तो इन्द्र ने उस मूर्च्छावस्था में ही इसे मार डाला।

(२) राम की वानरी सेना का एक वीर।

जटायु—गरुड़ का भतीजा, अरुण का पुत्र और संपाती का भाई। एक गृद्धपक्षी जो राम का भक्त कहा जाता है। इसकी माता का नाम श्येनी था। दशरथ से इसकी मित्रता थी। जिस समय रावण सीता का हरण कर ले जा रहा था जटायु ने उसे रोका, परन्तु रावण ने इसके पंखों को काट कर इसे घायल कर दिया और सीता को ले गया। राम जब सीता को ढूँढ़ते हुए इसके पास पहुँचे तो इसने सारी कथा कह सुनाई और सुनाते ही इसके प्राण निकल गए। राम ने इसकी अंत्येष्टि क्रिया अपने हाथ से की।

जटासुर—महाभारतकालीन एक राक्षस। पाण्डव एक बार बद्रिकाश्रम में ठहरे थे। वहाँ जटासुर ने द्रौपदी को देखा और उस पर मोहित हो गया। यह भीम से डरता था। अतः एक बार उनकी अनुपस्थिति में ब्राह्मण का वेष धर द्रौपदी को हरने आया और युधिष्ठिर आदि को कैद कर द्रौपदी को लेकर चला। संयोग से रास्ते में ही भीम मिल गए। उन्होंने इसे मार डाला।

जड़भरत—एक ब्राह्मण जो बहुत ज्ञानी थे और जड़वत रहते थे। पुराणों के अनुसार राजा भरत जब गृहस्थाश्रम त्याग वानप्रस्थी हुए तो उन्होंने एक हिरन के बच्चे को पाल लिया। उससे इनसे इतना प्रेम हो गया कि मरते समय भी इनका चित्त उससे लगा रहा और मरने पर

फिर उनका एक ब्राह्मण के घर में हिरण योनि में जन्म हुआ। ज्ञान के कारण उन्हें पूर्व जन्म की बातें याद थीं। सांसारिकता से बचने के लिए वे जड़वत रहते थे, इसीलिए उन्हें जड़भरत की संज्ञा मिली। एक बार लोगों ने इन्हें पागल समझ कर सौवीर राज की पालकी में लगा दिया; रास्ते में इन्होंने ऐसी ज्ञानपूर्ण बातें कीं कि सौवीर राज ने पालकी से उतर कर इनसे क्षमायाचना की।

जनक—मिथिला के एक सूर्यवंशीय राजा। ये अपने पूर्वज निमि, विदेह के नाम पर विदेह भी कहे जाते हैं। वसिष्ठ के शाप से राजा निमि भस्म हो गए थे और उनके राज्य का कोई उत्तराधिकारी न था इसलिए उनके मृत शरीर से एक कुमार उत्पन्न किया गया जो स्वयं पैदा होने के कारण जनक कहलाया। इन्होंने मिथिलापुरी बसायी। इन्हीं की बीस पीढ़ी बाद दूसरे राजा जनक पैदा हुए जो बड़े ज्ञानी तथा गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी विरक्त थे। इसी कारण राजर्षि कहलाते थे। सीता इन्हीं की पुत्री थीं। इन्हें इनके पूर्वज जनक से अलग करने के लिए सीरध्वज जनक भी कहते हैं। इनके कई भाई थे।

जनमेजय—अर्जुन के पौत्र तथा परीक्षित के पुत्र। परीक्षित की मृत्यु साँप के काटने से हुई थी इसलिए जनमेजय ने सर्पों के नाश के लिए एक नागयज्ञ किया। तक्षक, जिसने परीक्षित को काटा था, भय से इन्द्रलोक चला गया। सर्पराज वासुकि ने आस्तीक को यज्ञ बंद कराने के लिए भेजा। जनमेजय ने आस्तीक से कहा कि यदि इंद्र तक्षक को नहीं छोड़ते तो इंद्र सहित वह भस्म होगा। इस भय से इंद्र ने उसे छोड़ दिया। जब बहुत से सर्प आकर उस सर्प कुंड में गिर-गिर कर भस्म होने लगे तो आस्तीक ने जो स्वयं भी सर्प था, अपने कुल की रक्षा के लिए परीक्षित से बहुत प्रार्थना की और अंत में उसके कहने से इन्होंने सर्प-यज्ञ बंद कर दिया।

जमदग्नि—एक प्राचीन ब्रह्मर्षि। ये भृगु के पुत्र ऋचीक के पुत्र

थे। कहा जाता है कि एक बार कुशिक पर प्रसन्न होकर इंद्र ने उनके यहाँ गाधि नाम से उत्पन्न होना स्वीकार किया। गाधि जब बड़े हुए तो उन्हें सत्यवती नाम की एक कन्या हुई, जिसका विवाह भृगुमुनि के पुत्र ऋचीक से हुआ। एक बार ऋचीक बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी सास तथा स्त्री के लिए दो चरु तैयार किए। उन्हें खाने से सास को वीर, क्रूर प्रचंड और राजों को जीतने वाला पुत्र होता तथा उनकी स्त्री को शांत और गम्भीर। भूल से ऋचीक की स्त्री सत्यवती ने अपनी माँ का भाग खा लिया और उसकी माँ ने सत्यवती का। जब सत्यवती को अपनी भूल ज्ञात हुई तो उसने ऋचीक से प्रार्थना की कि मेरा पुत्र क्रूर, प्रचंड आदि न हो बल्कि पौत्र हो। ऋचीक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसके गर्भ से जमदग्नि की उत्पत्ति हुई। जमदग्नि बड़े ज्ञानी और विद्वान् थे। इनका विवाह प्रसेनजित की पुत्री रेणुका से हुआ जिससे इन्हें समन्वान्, सुषेण, वसु, विश्वासु तथा परशुराम ये पाँच पुत्र हुए। सत्यवती की प्रार्थना के अनुसार वीर, तेजस्वी, क्रोधी और क्रूर परशुराम था। जमदग्नि की आज्ञा पाकर परशुराम ने रेणुका को मार डाला था पर फिर परशुराम के वरदान माँगने पर उन्हें जमदग्नि ने जीवित किया। परशुराम ने जब सहस्रार्जुन की सहस्र भुजाओं को काट डाला तो उनके कुटुम्बियों ने एक दिन प्रतिशोध स्वरूप जमदग्नि को मार डाला।

जयंत—इंद्र और शची का पुत्र। कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से इसका युद्ध हुआ था। जयंत ने ही कौवे का वेष बनाकर सीता को चोंच से मारा था, जिसके फलस्वरूप रामचंद्र ने उसे मारना चाहा परंतु वह उन्हीं की शरण में आ गया। राम ने प्राण-भिक्षा तो दे दी परंतु उसकी एक आँख निकाल ली और जयंत काना हो गया। जयंत को उपेन्द्र भी कहते हैं।

जय—विष्णु के दो द्वारपालों में से एक। एक बार इसने सनकादि

ऋषियों को विष्णु से मिलने से रोका था जिससे रुष्ट हो ऋषियों ने इसे शाप दे दिया। पीछे से उन्होंने जय को मुक्ति का मार्ग भी बतलाया कि विष्णु से शत्रुता या मित्रता करने से तुम्हारी मुक्ति होगी। ऋषि के शाप से जय सत्ययुग, त्रेता तथा द्वापर में क्रमशः हिरण्याक्ष, रावण तथा शिशुपाल हुआ था और शत्रुता कर विष्णु के हाथ मारे जाने पर इसकी मुक्ति हुई। इसके साथी या भाई, दूसरे द्वारपाल का नाम विजय था। दे० 'विजय'।

जयद्रथ—सिंधु देश का राजा और दुर्योधन का जीजा। पांडवों के काम्यक वन में वास के समय जयद्रथ ने धोखे से द्रौपदी को हर लिया था। इस पर भीम तथा अर्जुन ने उसकी बड़ी दुर्दशा की और द्रौपदी को मुक्त किया। इसका बदला लेने के लिए जयद्रथ ने तपस्या द्वारा शिव को प्रसन्न किया। शिव ने वर दिया कि तुम अर्जुन को छोड़कर सभी पांडवों को हरा सकोगे। इस वर के फलस्वरूप उसने चक्रव्यूह में पड़े अभिमन्यु का बध किया जिसके बदले के लिए अर्जुन ने जयद्रथ को सूर्यास्त के पूर्व मारने की प्रतिज्ञा की। यह सुन कौरवों ने उसे छिपा दिया, परंतु कृष्ण ने छल से सूर्य को रोक दिया और सूर्यास्त जान जयद्रथ बाहर निकल आया। कृष्ण ने जयद्रथ को सामने देख सूर्य को फिर प्रकट कर दिया और अर्जुन ने जयद्रथ का बध कर अपना प्रण पूरा किया। दे० 'दुःशला'

जरत्कारु—एक ऋषी जो सर्पराज बासुकी के जीजा और जनमेजय का नागयज्ञ बंद कराने वाले आस्तीक के पिता थे। एक दिन इनकी स्त्री मनसा ने इन्हें शाम को सोते समय उठा दिया जिससे क्रोधित होकर ये कहीं चले गए। उस समय आस्तीक गर्भ में था।

जरासन्ध—मगधराज वृहद्रथ का पुत्र और कंस का ससुर। जरासंध का जन्म चंडकौशिक ऋषि के आशीर्वाद से हुआ था। ऋषि ने वृहद्रथ को एक फल दिया था जिसको उन्होंने अपनी दो रानियों में आधा-आधा

बाँट दिया जिसके फलस्वरूप दोनों रानियों से आधे-आधे पुत्र हुए परंतु श्मशानवासिनी जरा नाम की एक राक्षसी ने उन दो आधों को जोड़ कर पूर्ण पुत्र बना दिया और बालक का नाम जरासंध पड़ा। जरासंध ने अपनी दो पुत्रियों अस्ति तथा प्राप्ति का विवाह कंस से किया था। इसकी सहायता से कंस ने अपने पिता को गद्दी से उतार दिया और स्वयं राजा बन बैठा। जरासंध को यह वर मिला था कि उसकी मृत्यु यों न होकर जोड़ी गई संधियों के टूटने से होगी। कंस को जब कृष्ण ने मार डाला तो बदला लेने के लिए जरासंध ने उन पर आक्रमण किया पर जरासंध के भय से कृष्ण द्वारका चले गए। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय कृष्ण, अर्जुन, भीम तथा युधिष्ठिर आदि जरासंध की राजधानी गिरिव्रज में गये। वहाँ भीम से इससे द्वंद्व युद्ध हुआ और भीम ने कृष्ण के इसारे पर बीच से चीर कर इसे मार डाला।

जल-प्लावन—संसार का जल-मग्न हो जाना। सभी धर्मों में जल-प्लावन की बात किसी न किसी रूप में मिलती है। जल-प्लावन प्रलय के समय होता है। हिंदू पुराणों के अनुसार जल-प्लावन में सब कुछ डूब गया था। मत्स्यावतार के सहारे मनु केवल एक नाव पर बैठे रहे। दे० 'मनु' 'मत्स्य'। मुसलमानों और ईसाइयों के अनुसार जल-प्लावन के समय हजरत नूह एक नाव में सब जीवों का एक-एक जोड़ा लेकर बचे रहे। दे० 'नूह'। आधुनिक हिंदी काव्य के गौरव ग्रंथ कामायनी में जल-प्लावन का सुन्दर चित्र है।

जह्नु—एक राजर्षि। इनके पिता का नाम सुहोत्र तथा माता का नाम केशिनी था। जिस समय ये सर्वमेध यज्ञ कर रहे थे, गङ्गा इनके पास गईं तथा इनसे अपना पति बनने की प्रार्थना करने लगीं, परंतु इन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर गङ्गा ने इनके यज्ञस्थल को ही डुबाने की सोची यह देख जह्नु ने गङ्गा को पी लिया। भगीरथ के बहुत कहने पर जह्नु ने इन्हें अपने जानु से निकाला और तब गङ्गा आगे

बढ़ीं। तभी गङ्गा का एक नाम 'जाह्नवी' भी पड़ गया। एक अन्य मत से गङ्गा को लेकर भगीरथ जब गङ्गा सागर की ओर बढ़े जहाँ सगर के पुत्र जले थे तो रास्ते में जह्नु मुनि यज्ञ कर रहे थे। गङ्गा के पानी से उनके यज्ञ में विघ्न पड़ा अतः वे गङ्गा को पी गए फिर जैसा कि ऊपर कहा गया है, भगीरथ की प्रार्थना पर गङ्गा को उन्होंने अपने जानु से निकाल दिया।

जांबवती—कृष्ण की एक पत्नी। सत्राजित के पास स्यमंतक नाम की एक मणि थी। उनके छोटे भाई प्रसेन को मार कर एक सिंह ने और सिंह को मार कर जांबवान ने वह मणि ले ली। सत्राजित ने कृष्ण पर संदेह किया कि इन्होंने ही मणि के लिए प्रसेन को मार डाला है। कृष्ण अपना कलंक छुड़ाने के लिए प्रसेन को खोजने निकले और गुहा में जाकर देखा कि सिंह तथा प्रसेन मरे हैं और जांबवान की पुत्री जाम्बवती उस मणि से खेल रही है। वहाँ कृष्ण और जाम्बवान का युद्ध हुआ परंतु जाम्बवान हार गया और उसने जाम्बवती तथा स्यमंतक मणि कृष्ण के चरणों में अर्पित कर दी।

जाम्बवंत—ऋक्षराज जाम्बवान् ब्रह्मा के पुत्र और ऋक्षों के राजा थे। त्रेता में राम की बानरी सेना के ये एक प्रधान वीर तथा सुग्रीव के सेनापति थे। द्वापर में स्यमंतक मणि के लिए कृष्ण ने इनसे युद्ध किया था अंत में पराजित होकर इन्होंने मणि के साथ अपनी कन्या जांबवंती भी कृष्ण को समर्पित कर दी। दे० 'जांबवंती', 'स्यमंतक'।

जाबालि—एक प्रसिद्ध दार्शनिक ऋषि तथा महाराज दशरथ के मन्त्री और पुरोहित। नैय्यायिक होने के कारण अनीश्वरवाद सम्बन्धी कुछ विचार भी इन्होंने व्यक्त किये थे, किन्तु राम इस मत के विरोधी थे। नाभादास जी ने इन्हें प्रमुख हरिभक्तों में स्थान दिया है।

जिब्रील—स्वर्ग के एक दूत। ये खुदा की ओर से हर एक पैगम्बर के पास हुक्म लेकर जाया करते थे।

जुलेखा—मिश्र की राजकुमारी जो यूसुफ़ से प्रेम करती थी। दे० 'युसुफ़'।

जालंधर—शिव के तृतीय नेत्र से उत्पन्न एक राक्षस। इन्द्र एक बार शिव के दर्शन करने कैलाश गये। वहाँ उन्होंने एक भयंकर पुरुष को देखकर उसका परिचय पूछा। उत्तर न मिलने पर इन्द्र ने उस पर वज्र-प्रहार किया। ऐसा करते ही उसके भाल का तृतीय नेत्र खुल गया और भयानक अग्नि की ज्वाला निकलकर इन्द्र को जलाने लगी। वास्तव में यही शिव थे। इन्द्र के क्षमा याचना करने पर शङ्कर ने उस अग्नि को समुद्र में फेंक दिया जिससे एक बालक की उत्पत्ति हुई। इसी का नाम ब्रह्मा ने जालंधर रखा और इसे वर दिया कि शिव को छोड़कर कोई भी न मार सके। एक अन्य मतानुसार इसकी उत्पत्ति गङ्गा नदी तथा समुद्र के संयोग से हुई। इसकी पत्नी का नाम वृन्दा था। एक बार इसे पार्वती से सहवास करने की इच्छा उत्पन्न हुई। युद्ध में शंकर पर विजय प्राप्त करने में असफल होकर यह शिव का रूप धारण कर पार्वती के पास गया, किन्तु पार्वती ने इसे पहचान लिया और वे अदृश होकर विष्णु के पास पहुँचीं। जालंधर को वर था कि जब तक उसकी स्त्री का पतिव्रत धर्म नष्ट नहीं होगा उसकी मृत्यु नहीं हो सकती। विष्णु ने जालंधर का रूप धारण कर उसकी स्त्री वृन्दा का सतीत्व नष्ट किया। वृन्दा को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने विष्णु को शाप दिया कि त्रेता में उनकी स्त्री चुराई जाएगी और वे वन-वन भटकते फिरेंगे। पति को प्राप्त करने के लिए जिस स्थान पर वृन्दा ने तपस्या की थी उसी का नाम बृन्दावन पड़ा। अंत में विष्णु के चक्र से जालंधर की मृत्यु हुई।

ज्योतिर्लिङ्ग—शिव पुराण के अनुसार, प्रकृति और पुरुषजन सृष्टि बनाने के लिए उपक्रम करने लगे तो क्रम से उनका नाम नारायणी और नारायण पड़ा। नारायण-रूप पुरुष विष्णु की नाभि से एक कमल उत्पन्न हुआ और उस कमल से ब्रह्मा पैदा हुए। जन्म के कुछ ही देर

बाद वे किंकर्तव्य विमूढ़ होकर कमल नाल पर इधर-उधर घूमने लगे। विष्णु को ब्रह्मा का इस प्रकार व्यर्थ घूमना बुरा लगा और उन्होंने ब्रह्मा से कहा कि तुम संसार की रचना करने के लिए मेरे शरीर से उत्पन्न हुए हो। इस पर ब्रह्मा बिगड़े और उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा कि तुम कौन हो, और तुम्हारा भी तो कोई कर्त्ता है। बात ही बात में दोनों में घोर युद्ध होने लगा। झगड़ा निपटाने के लिए कालाग्नि की तरह का एक ज्योतिर्लिङ्ग उत्पन्न हुआ। यह लिंग असंख्य अग्नि-ज्वालाओं से वेष्टित तथा अत्यन्त भयंकर था। यह अनादि और अनंत था। ब्रह्मा और विष्णु दोनों आश्चर्य में पड़े और उसके चारों ओर घूमने लगे। बहुत प्रयास करने पर भी उन लोगों को लिंग का ओर-छोर न मिला, और अंततः वे ऊपर स्वर्ग और नीचे पाताल तक जाकर लौट आए।

ज्वर—एक विचित्र दैत्य। शिव ने दैत्यराज बाण की सहायता के लिए इसको भेजा था। जब कृष्ण अनिरुद्ध की सहायतार्थ बाण के पास गए थे तो ज्वर ने उनको पीड़ित कर दिया था। क्रोध में कृष्ण ने एक नए ज्वर का निर्माण किया जिससे यह लज्जित हो गया। कृष्ण ने बाद में इसे छोड़ दिया और वर दे दिया कि संसार में तुम्हें छोड़ दूसरा ज्वर न रहेगा। तब से यह संसार में है। एक दूसरी कथा के अनुसार दक्ष प्रजापति ने जब यज्ञ में शिव को न निमंत्रित कर उनका अपमान किया तो क्रुद्ध होकर शिव ने अपने श्वास से यज्ञ-विध्वं-सनार्थ इस ज्वर को उत्पन्न किया था।

तक्षक—पातालपुरी के श्रेष्ठ आठ नागों में एक, जो कश्यप और कद्रू का पुत्र था। ऋषि का शाप पूरा करने के लिए इसी ने राजा परि-क्षित को काटा था। जब परिक्षित का पुत्र जनमेजय अपने पिता का बदला लेने के लिये सर्प यज्ञ करने लगा तो यह डर कर इन्द्र के पास चला गया। यह सुन कर जनमेजय ने अपने पुरोहितों को आज्ञा

दी कि ऐसा मन्त्र पढ़ो कि इंद्र के साथ ही तक्षक आकर कुण्ड में गिरे और भस्म हो जाय। पुरोहितों ने ऐसा ही किया तो इन्द्र डरे और उन्होंने तक्षक को छोड़ दिया। अब तक्षक कुण्ड की ओर खिंचने लगा। बासुकि ने कोई उपाय न देख अपने भान्जे आस्तीक को जनमेजय के पास यज्ञ रोकने के लिए भेजा। आस्तीक इसमें सफल हुआ और इस प्रकार तक्षक के प्राण बचे। दे० 'आस्तीक', 'परीक्षित'।

ताड़का—सुकेतु नामक एक वीर यक्ष की पुत्री। ब्रह्मा के आशीर्वाद से इसका जन्म हुआ था। इसका पति अगस्त्य के शाप से मारा गया था। ताड़का अपने पुत्र मारीच के साथ अगस्त्य को मारने गई, परन्तु ऋषि ने इसे राक्षस बना दिया। तब से इनका काम ब्राह्मणों का विनाश करना हो गया। जब ताड़का के कारण जङ्गल में ऋषियों का रहना दुर्लभ हो गया तो इसके बध के लिए विश्वामित्र राम तथा लक्ष्मण को दशरथ से माँग कर ले आए। पहले तो राम स्त्री जान कर इसे मारने में संकोच कर रहे थे पर विश्वामित्र के कहने पर उन्होंने इसका बध किया।

तारकासुर—देवताओं का शत्रु एक असुर जो बज्रांक का पुत्र था। तप द्वारा ब्रह्मा से इसने वर प्राप्त किया था कि संसार में इसकी बराबरी का बलवान कोई दूसरा न हो और इसकी मृत्यु केवल शिव के पुत्र द्वारा हो। इसने देवताओं को बड़ा परेशान किया। देवता लोग ब्रह्मा के पास गए परन्तु वे अपने वरदान से हार चुके थे। अतः शिव के पुत्र-लाभ की बात सोची जाने लगी। देवता लोगों के कहने से कामदेव शिव के सामने उन्हें उत्तेजित करने गए परन्तु शिव के ध्यान टूटते ही उनका त्रिनेत्र खुला और कामदेव जल गए। पार्वती से विवाह होने पर भी जब बहुत दिन तक कोई पुत्र न हुआ तो देवता लोग बड़े चिंतित हुए। अंत में वे लोग अग्नि के पास गए और अग्नि ने कपोत रूप

धारण कर शिव के वीर्य को धारण किया जिससे शिव के पुत्र कार्तिकेय हुए। इन्हीं कार्तिकेय द्वारा तारकासुर मारा गया। दे० 'कार्तिकेय'।

तारा—१. बालि की पत्नी तथा अंगद की माता। जब राम ने बालि का वध कर दिया तो इसने अपना ब्याह सुग्रीव से किया। यह पंच देव-कन्याओं में है। २. बृहस्पति की स्त्री जिसे उसकी इच्छानुसार चन्द्रमा ने रख लिया था। बृहस्पति ने इसे चन्द्रमा से माँगा तो उन्होंने देना अस्वीकार कर दिया। दोनों में इस पर युद्ध होने लगा और ब्रह्मा छुड़ाने आए। अंत में तारा ने प्रसव किया और चन्द्रमा ने अपने पुत्र को लेकर तारा को लौटा दिया यही पुत्र 'बुध' कहा गया।

तालकेतु—(१) एक राक्षस जिसकी मृत्यु कृष्ण के हाथों हुई।

(२) भीष्म का एक नाम। इनकी ध्वजा पर ताल का चिह्न अंकित था, इसीलिए यह नाम पड़ा था।

तिमिध्वज—महाराज दशरथ के समकालीन एक पराक्रमी राजा। इनका एक नाम शंकर भी है। एक बार देवासुर संग्राम में इन्होंने असुरों का साथ दिया था। इन्द्र की सहायता करने के लिए दशरथ ने भी इस युद्ध में भाग लिया। इनसे लड़ते समय दशरथ मूर्च्छित होकर गिर पड़े। इसी अवसर पर कैकेयी ने उनकी सेवा की, जिसके फलस्वरूप दशरथ ने उसे वरदान देने के वचन दिए थे।

तिलोत्तमा—तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्मा ने सुन्द तथा उपसुन्द को वर दे रखा था कि तुम लोगों से बलवान पृथ्वी पर दूसरा न होगा और तुम लोगों की मृत्यु केवल आपसी युद्ध से होगी। वर के अभिमान में दोनों ने पृथ्वी पर बड़ा अत्याचार किया। अंत में देवता लोग ब्रह्मा के पास गए और त्राण के लिए याचना करने लगे। ब्रह्मा ने उन दोनों को मार पृथ्वी का कल्याण करने के लिए विश्वकर्मा से एक अद्वितीय अप्सरा निर्मित करने का आदेश दिया। विश्वकर्मा ने विश्व की सभी सुन्दर वस्तुओं से तिल-तिल भर सौंदर्य लेकर तिलोत्तमा नाम्नी अप्सरा

का निर्माण किया (इसी से यह तिलोत्तमा कहलाई)। इसको सुन्द तथा उपसुन्द के पास भेजा गया। देखते ही दोनों इस पर मोहित हो गए और इसे लेने के लिए आपस में लड़ने लगे। इसी आपसी युद्ध में दोनों ने एक दूसरे को मार डाला।

तुम्बुरु—ब्रह्मा की सभा के एक संगीतज्ञ ऋषि। ये कश्यप के पुत्र थे। रंभा नामक अप्सरा पर मोहित हो जाने के कारण कुबेर ने इन्हें राक्षस योनि में जन्म लेने का शाप दिया था। विराध नामक राक्षस के रूप में इनकी मृत्यु राम के द्वारा हुई और ये अपने पूर्व रूप को प्राप्त हुए। तंबूरा नामक वाद्य यंत्र के आविष्कारक यही माने जाते हैं।

तुबा—मुसलमानी धर्म के अनुसार स्वर्ग का एक पेड़। यह बड़ा पवित्र है।

तुर्वसु—राजा ययाति और उनकी रानी देवयानी के पुत्र। जराग्रस्त होने पर इनके पिता ने इनसे यौवन माँगा, और इनके नकारात्मक उत्तर देने पर उन्होंने शाप दे दिया, जिसके कारण ये मलेच्छों के अधिपति हुए। इनके वंशजों ने दक्षिण में पांड्य तथा चोल आदि राज्यों की स्थापना की। पुराणों के अनुसार इनका राज्य तुरस्क (वर्तमान तुर्किस्तान) तक फैला हुआ था।

तुलसी—अत्यन्त पवित्र वृक्ष जो वैष्णवों द्वारा पूजा जाता है। इसकी उत्पत्ति के विषय में कहा जाता है कि यह एक स्त्री थी जो राधा की सखी थी। एक दिन राधा ने इसे कृष्ण के साथ विहार करते देख शाप दिया कि तू मनुष्य हो जा। शापानुसार तुलसी धर्मध्वज राजा की कन्या हुई। उसके असीम सौंदर्य की तुलना किसी से नहीं हो सकती थी अतः उसका नाम 'तुलसी' पड़ा। उसने घोर तप किया और वर माँगा कि 'मैं कृष्ण के साथ संभोग करने से अभी तृप्त नहीं हूँ अतः उनकी पत्नी होना चाहती हूँ।' ब्रह्मा के कहने पर तुलसी ने शंखचूड़ नाम के राक्षस से शादी। शंखचूड़ को वर मिला था कि बिना उसकी

स्त्री का सतीत्व भंग हुए उसकी मृत्यु न होगी। जब शंखचूड़ से देवता लोग परेशान हो गए तो विष्णु ने शंखचूड़ का रूप धारण कर तुलसी के साथ भोग किया। इस प्रकार शंखचूड़ मर गया पर तुलसी बहुत रुष्ट हुई और उसने विष्णु को पत्थर हो जाने का शाप दिया। तभी से विष्णु शालिग्राम की पिंडी बने और उनके वरदान से तुलसी, तुलसी वृक्ष बनीं जिसका पत्ता शालिग्राम (विष्णु) के मस्तक पर चढ़ने लगा।

तुलसीदास—एक प्रसिद्ध भक्त कवि। इनका जन्म १५८९ वि० के आस-पास हुआ था। तुलसी अपनी स्त्री रत्नावली पर बहुत अनुरक्त रहते थे। एक बार वह इनसे पूछे बिना अपने नैहर चली गई। शाम को जब तुलसी को पता चला तो ये भी चल दिए। कहा जाता है कि इन्होंने एक मुर्दे पर चढ़कर नदी पार की तथा साँप को रस्सी समझ उसके सहारे रत्नावली के कोठे पर चढ़ गए। इन्हें देख रत्नावली बहुत लज्जित और क्रोधित हुई। उसने आवेश में इनसे कहा—

लाज न लागत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ॥
अस्थि चर्म मय देह मम, तामें जैसी प्रीति।
ऐसी जो श्रीराम महँ, होत न तो भवभीति॥

यह बात तुलसी के हृदय में लगी और वे तुरन्त लौट गए तथा साधु हो गए। तुलसी के सम्बन्ध में भाँति-भाँति की किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। ये रोज सवेरे एक पेड़ में पानी देते थे जिससे उस पेड़ के भूत ने प्रसन्न हो इनकी हनुमान से भेंट करा दी और हनुमान की कृपा से चित्रकूट में इन्होंने राम-लक्ष्मण के दर्शन किए—

चित्रकूट के घाट पर, भइ संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसत, तिलक देत रघुबीर॥

तुलसी के विषय में यह भी प्रसिद्ध है कि इन्होंने एक विधवा के

मरे पति को जिला दिया था तथा अपने मित्र टोडर की मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारियों के लिए उनसे पंचनामा लिखा दिया। कहा जाता है कि इनकी कुटिया की चोर आदि से स्वयं राम-लक्ष्मण रक्षा करते थे। इनके सम्बन्ध में यह भी किंवदंती है कि एक बार ये किसी कृष्ण मंदिर में गए पर 'तुलसी मस्तक तब नवे जब धनुष बाण लो हाथ' कहते हुए इन्होंने मूर्ति को प्रणाम नहीं किया। इनके मुँह से यह निकलना था कि मूर्ति राम में परिवर्तित हो गई।

तृणावर्त—एक राक्षस जिसे कंस ने कृष्ण का वध करने के लिए गोकुल भेजा था। एक बार यशोदा कृष्ण को गोद में लेकर खिला रही थी। तृणावर्त एक तीव्र आँधी के रूप में वहाँ आया। कृष्ण उसे पहचान कर यशोदा की गोद से उतर गये जिससे कि उन्हें (यशोदा को) किसी प्रकार का कष्ट न हो। क्रोध में भरा हुआ तृणावर्त कृष्ण को आकाश में उड़ा ले गया। यशोदा यह देखकर बहुत घबराईं। सब गोकुलवासी कृष्ण के लिए रोने-चिल्लाने लगे। कृष्ण ने तीनों लोकों का भार अपने पेट में धारण कर लिया जिससे राक्षस को ऐसा लगने लगा मानो उसने भूल से किसी पर्वत को उठा लिया है। अंत में उसने कृष्ण को पृथ्वी पर गिराने का प्रयास किया किन्तु कृष्ण ने गला दबाकर मार डाला। उसका शव व्रज के बाहर एक बड़ी चट्टान पर गिर पड़ा जिस पर कृष्ण बालक रूप में क्रीड़ा करने लगे।

त्रिकूट——१. एक पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हैं, और जिस पर लंका बसी मानी गई है। देवी भागवत के अनुसार यह एक तांत्रिक पीठ स्थान है जहाँ देवी रुद्रसुन्दरी के रूप में निवास करती हैं।

२. वामन पुराण के अनुसार क्षीर सागर में एक पर्वत है जो सुमेरु पर्वत का पुत्र है। इस पर देवर्षि, किन्नर, विद्याधर, अप्सरा, गंधर्व तथा सिद्ध आदि निवास करते हैं। इसकी तीन चोटियाँ क्रम से सोने, चाँदी और बर्फ की हैं जिनमें प्रथम दो पर सूर्य और चंद्र निवास करते हैं।

तीसरी चोटी मणियों की तरह चमकती है। यह सबसे ऊँची चोटी है तथा नास्तिकों एवं पापियों को दिखाई नहीं पड़ती। सुवेल, चित्रकूट, त्रिशृङ्ग, चित्रकूटक आदि भी इसके नाम हैं।

त्रिजटा—रावण के अंतःपुर की एक राक्षसी जो एक मत से विभीषण की बहन थी। अशोक वाटिका में यह सीता की देख-रेख करती थी। इसने स्वप्न में देखा कि रावण विनाश को प्राप्त होगा। सीता के प्रति इसका व्यवहार बहुत अच्छा था। इसका एक नाम धर्मज्ञा भी था।

त्रिपुर—(१) तारकासुर के तीन पुत्रों तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली के लिए मय नामक दानव ने तीन नगर सोने, चाँदी और लोहे के बनवाए थे। इन्हें त्रिपुर कहते हैं। इनकी घोर तपस्या के उपरांत इन तीनों भाइयों को ब्रह्मा ने यह वर दिया कि इनकी मृत्यु जल्द नहीं होगी। जो एक ही बाण से तीनों पुरों को नष्ट कर देगा केवल वही उनका वध कर सकेगा। इस वरदान को पाकर ये निर्भय होकर मनमाने ढङ्ग से अत्याचार करने लगे। अंत में इनके अत्याचारों से पीड़ित सब देवताओं ने मिलकर शिव से प्रार्थना की और उन्होंने एक ही बाण से इन तीनों पुरों को नष्ट करके इनका संहार किया। तभी से शिव 'त्रिपुरारि' कहलाने लगे।

(२) एक मत से त्रिपुर नाम का एक राक्षस भी था।

त्रिलोचन या त्रिलोचन देव—वैश्याकुलोत्पन्न एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। स्वयं व्यवसाय में लगे होने के कारण घर आए भक्तों की सेवा करने के लिए ये एक नौकर रखना चाहते थे। कहा जाता है कि इनको उचित व्यक्ति न मिलते देख स्वयं भगवान् इस शर्त पर इनके यहाँ नौकर हो गये कि वे उन्हें भर पेट खाने को दिया करेंगे। भगवान् की खुराक बढ़ते-बढ़ते ५-७ सेर तक पहुँच गई। इसकी चर्चा इनकी पत्नी ने एक बार अपनी पड़ोसिन से कर दी। उसी दिन भगवान अंतर्ध्यान

हो गए। एक आकाशवाणी द्वारा जब इन्हें यह मालूम हुआ कि स्वयं भगवान् इनके यहाँ नौकर थे, तो ये बहुत ही दुखी हुए।

त्रिविक्रम—विष्णु का एक नामांतर। यह नाम विष्णु के वामन अवतार के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिन्होंने तीन पग में स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक नाप लिए थे। एक मत के अनुसार वामन के ये तीन पग सूर्य उदय, मध्य और अस्त काल के प्रतीक हैं। इस प्रकार त्रिविक्रम सूर्य का ही एक नाम है।

त्रिशंकु—एक सूर्यवंशी राजा। ये महाराज हरिश्चंद्र के पिता थे। इनका यथार्थ नाम सत्यव्रत था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ये बड़े धर्मात्मा राजा थे। एक बार इनकी इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा हुई। इन्होंने अपनी इच्छा अपने कुलगुरु वशिष्ठ को सुनाई पर उन्होंने इसे असम्भव कहकर टाल दिया। पर राजा की लगन कम न हुई। उन्होंने वशिष्ठ के पुत्रों से यह बात कही। वे यह सुनकर बहुत रुष्ट हुए कि जिस कार्य को पिता ने करने से इन्कार किया ये पुत्रों से कराना चाहते हैं। और उन्होंने त्रिशंकु को चांडाल होने का शाप दिया। एक मतानुसार वशिष्ट से कार्य होते न देख कर दूसरा गुरु चुनने की इच्छा प्रकट की थी, जिससे रुष्ट हो वशिष्ट के पुत्रों ने इन्हें चांडाल हो जाने का शाप दिया था। चांडाल होने पर भी उनकी इच्छा बनी रही और वे विश्वामित्र के पास गए। विश्वामित्र ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वे इसके लिए यज्ञ करवाने लगे। विश्वामित्र के डर से सब ऋषियों ने तो यज्ञ में भाग लिया पर अपना अंश लेने के लिए देवता न आए। इस पर विश्वामित्र बहुत रुष्ट हुए और उन्होंने अपने तपो बल से चांडाल रूप त्रिशंकु को स्वर्ग भेज दिया। स्वर्ग में इन्द्र तथा अन्य देवताओं ने इसका विरोध किया और स्वर्ग के दरवाजे से इन्हें नीचे ढकेल दिया। इस पर विश्वामित्र और बिगड़े तथा उन्होंने कहा कि मैं या तो दूसरा इन्द्र बनाऊँगा या फिर एक भी इंद्र न रहेंगे। एक

मत से उन्होंने दूसरा स्वर्ग बनाने की धमकी दी। इस पर देवता लोग बहुत घबराये। अंत में दोनों ओर का समझौता इस बात पर हुआ कि त्रिशंकु स्वर्ग और पृथ्वी के बीच ही लटके रहें तथा तारे की तरह चमका करें एवं सप्तर्षि तथा अन्य नक्षत्र उनके चारों ओर रहें। यही हुआ और तभी से वे अधोमस्तक हो (सर नीचे और पैर ऊपर) कर बीच में लटके माने जाते हैं। सप्तर्षियों के पास के एक तारे के विषय में आज भी प्रसिद्ध है कि वही त्रिशंकु है।

हरिवंश पुराण के अनुसार महाराज त्र्य्यारुण के पुत्र का नाम सत्यव्रत था। इसने एक दूसरे की स्त्री अपने घर में रख ली, इस पर पिता ने चांडाल हो जाने का शाप दे दिया। सत्यव्रत चांडाल होकर चांडालों के साथ रहने लगा। उसके पास ही विश्वामित्र का आश्रम था। एक बार वहाँ १२ वर्ष का अकाल पड़ा। सत्यव्रत ने विश्वामित्र के छोटे लड़के को पालना आरंभ किया तथा वसिष्ठ की एक गाय मार कर उस लड़के को भी खिलाया और खुद भी खाया। इस पर वशिष्ठ ने उस पर तीन दोष लगाया। १. अपने पिता को रुष्ट करने का, २. गुरु की गाय मारने का, तथा ३. उसका माँस स्वयं तथा ऋषि पुत्र को खिलाने का। तीन दोषों के कारण ही उसका नाम त्रिशंकु पड़ा। इसने विश्वामित्र के पुत्र तथा स्त्री आदि की रक्षा की थी अतः उनसे सशरीर स्वर्ग जाने का वर माँगा। और उसके बाद उपर्युक्त घटना घटित हुई।

विष्णु पुराण के अनुसार कथा कुछ और है। सत्यव्रत ने चांडाल होने के बाद विश्वामित्र के परिवार की रक्षा के लिए हिरन का माँस पेड़ पर टाँग दिया था। उन्हें भय था कि ये स्वयं देंगे तो ऋषि-परिवार चांडाल का भोजन ग्रहण न करेगा। जब विश्वामित्र को इसका पता चला तो वे बड़े प्रसन्न हुए तथा इनसे वर माँगने के लिए कहा, और फिर उपर्युक्त घटनाएँ घटीं।

सत्यव्रत ने अपना विवाह केकय वंशीय कन्या सदारथा से किया था जिससे सत्यवादी हरिश्चंद्र पैदा हुए। इन्हें 'वेधस्' भी कहा गया है।

त्रिशिर—(१) वेदों में त्वष्ट्रि या त्वष्ट्रा प्रजापति के पुत्र। इनका नाम विश्वरूप भी था। इंद्र ने इन्हें मारा था।

(२) हरिवंश पुराण के अनुसार ज्वर पुरुष जिसे शंकर से रावण या बाण की सहायता के लिए उत्पन्न किया था और जिसके ३ सर, ३ पैर, ६ हाथ और ६ आँखें थीं।

(३) महाभारत कालीन एक राक्षस।

(४) रामकालीन एक राक्षस जो रावण का मित्र, सौतेला भाई या बेटा था। इसके तीन सिर थे। यह दूषण के ४ मंत्रियों में से एक था, तथा खरदूषण के साथ राम से लड़ने गया था। राम द्वारा १४ हजार राक्षसों के बध के बाद भी यह खर के साथ बँचा था, किन्तु बाद में खर के साथ ही इसे राम ने मार डाला। किसी मत से इस नाम के दो राक्षस थे। एक तो रावण का भाई था जिसका बर्णन तुलसी ने अरण्यकांड में खरदूषण के साथ किया हैं, दूसरा रावण का पुत्र था जो राम रावण युद्ध में वीरता से लड़ा, और हनुमान द्वारा मारा गया था। त्रिशिरा, तिसिरा, त्रिशीर्ण इसी के नाम हैं। इन्हें भी त्वष्ट्रा का पुत्र कहा गया है। दे० 'त्वष्ट्रा'।

त्वष्ट्रा—देवताओं के प्रधान शिल्पी जो उनके अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करते थे। इन्हें सभी प्राणियों का निर्माता और अग्नि के उत्पन्न करने वाला कहा गया है। इनके पुत्र का नाम त्रिशिर था जिसके तीन सिर, छः आँखें और तीन मुख थे। कुछ पुराणों में त्वष्ट्रा और विश्वकर्मा, एक ही व्यक्ति माने गये हैं।

दंडक—एक जंगल जो गोदावरी और नर्मदा नदी के बीच में था। वाल्मीकि रामायण के कुछ श्लोकों से ऐसा लगता है कि उत्तर में यह यमुना के दक्षिण तक फैला हुआ था।

इक्ष्वाकु के १०० पुत्रों में एक का नाम दंड या दंडक था। वही इस क्षेत्र में पहले राज्य करता था। दंडक के गुरु शुक्राचार्य थे। एक बार दंडक ने शुक्राचार्य की कन्या के साथ बलात्कार किया। इस पर रुष्ट होकर शुक्र ने इन्हें इनके सम्पूर्ण राज्य के साथ भस्म कर डाला। तभी से इनका देश दंडक, दंडकवन या दंडकारण्य कहा जाने लगा और इसका सारा सौंदर्य समाप्त हो गया। इस जंगल में पेड़ तो थे पर किसी में पत्ते या फल-फूल नहीं थे। रामावतार में जब राम, जानकी एवं लक्ष्मण के साथ यहाँ आए तो यह वन शाप मुक्त होकर पुनः हरा-भरा हो गया। सूर्पणखा की नाक यहीं कटी थी तथा यहीं मारीच-बध और सीता-हरण भी हुआ था।

दंडपाणि—काशी में स्थित भैरव की एक मूर्ति। काशी खंड के अनुसार एक हरीकेश नामक भक्त था। इसके पिता का नाम पूर्णभद्र था। इसके घोर तप से प्रसन्न होकर शिव और पार्वती इसके पास गए और इसे अपनी नगरी काशी का धर्मराज बनाया था। हरीकेश दुष्टों को मारने और साधुओं के पालन करने का काम दिया गया। काशी की यह भैरव की मूर्ति उन्हीं की है। इनकी सहायता के लिए शिव ने संभ्रम और उद्भ्रम नामक अपने दो गण भी इनके साथ कर दिए। कहा जाता है कि बिना इनकी पूजा किए कानून में कोई मुक्त नहीं हो सकता। इन्हें हरिकेश भी कहते हैं। तुलसी ने कवितावली में लिखा है :

लोक वेदहू विदित बारानसी की बड़ाई,
बासी नर-नारि ईस अंबिका-स्वरूप हैं।
कालनाथ कोतवाल, दंडकारि दंडपानि,
सभासद गनप से अमित अनूप है।

दक्षप्रजापति—महाभारत के अनुसार दक्ष की उत्पत्ति ब्रह्मा के दाएँ अंगूठे से हुई थी। उनके बाएँ अँगूठे से एक स्त्री उत्पन्न हुई

जो दक्ष की स्त्री हुई। एक अन्य मत से मनु की पौत्री और प्रियव्रत की पुत्री प्रसूति दक्ष की स्त्री थी। प्रसूति से दक्ष की एक मत से २४, एक मत से ५० और एक मत से ६० पुत्रियाँ हुईं। इनमें १० का विवाह धर्म से तथा १३ का कश्यप ऋषि से हुआ था। कश्यप की पत्नियों से देव, दैत्य, सर्प, पक्षी आदि अनेक योनियों के लोग पैदा हुए। एक मत से दक्ष की २७ पुत्रियों का विवाह चन्द्रमा से हुआ था और यही २७ नक्षत्र हैं। दक्ष प्रजापति की एक पुत्री सती थीं जिनका विवाह शिव से हुआ था। एक बार दक्ष ने यज्ञ किया पर शिव या सती को नहीं बुलाया, फिर भी पिता का घर जान सती चली आईं। यहाँ आकर उन्होंने देखा कि यज्ञ में सब देवताओं का भाग तो है पर शिव का नहीं। यह उन्हें बहुत बुरा लगा और यज्ञ कुण्ड में कूदकर उन्होंने अपने प्राण दे दिए। यह देख शिव के गणों ने यज्ञ का नाश कर दिया। कुछ मतों से इसी समय शिव ने अपने श्वास से ज्वर उत्पन्न किया जिसने यज्ञ-भङ्ग करने में गणों की सहायता की। दे० 'महादेव' 'सती' 'पार्वती' 'ज्वर 'वीरभद्र'। अन्य स्थानों पर दक्ष का जीवन और प्रकार से भी चित्रित मिलता है।

दत्तात्रेय--एक प्राचीन ऋषि जो पुराणों के अनुसार विष्णु में २४ अवतारों में माने जाते हैं। कहा जाता है कि विष्णु ने ही अनसूया के गर्भ से इनके रूप में जन्म लिया था। अनसूया ने देवताओं से यह वर प्राप्त किया था कि ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश मेरे गर्भ में क्रमशः सोम, दत्तात्रेय और दुर्वासा होकर आवें। इनके पिता का नाम अत्रि था। जब दत्तात्रेय गर्भ में थे तो एक बार हैहयराज अत्रि को बहुत परेशान करने लगे। क्रोधित होकर ७वें दिन ही वे गर्भ से निकल आए। ये बड़े विद्वान और योगी थे। इन्होंने अपने बहुत से गुरु बना रक्खे थे। भागवत के अनुसार पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, कबूतर अजगर, सागर, पतङ्ग, मधुकर, हाथी, मधुहारी, हरिण, मछली, पिंगला,

वेश्या, गिद्ध, बालक, कुमारी कन्या, बाण बनानेवाला, साँप, मकड़ी और तितली—ये २४ गुरु थे।

दधीचि—एक वैदिक ऋषि। वेद में इनका नाम दध्यंच मिलता है। बाद में ये दधीचि के नाम से प्रसिद्ध हुए। यास्क के निरुक्त के अनुसार ये अथर्वन् के पुत्र हैं। इसीलिए इनका कहीं-कहीं नाम आथर्वण मिलता है। ऋग्वेद भी इन्हें अथर्वन् का पुत्र कहता है। ब्रह्मांड पुराण के अनुसार ये शुक्राचार्य के पुत्र थे। कुछ पुराणों के अनुसार इनकी माता कर्दम ऋषि की कन्या शांति थीं। इनके विषय में पुराणों तथा ग्रन्थों में अनेक कथाएँ मिलती हैं। कहीं-कहीं तो एक ही कथा के कई रूप भी मिलते हैं। इसी कारण इनके विषय में निश्चितः कुछ नहीं कहा जा सकता। यहाँ कुछ प्रधान कथाएँ दी जा रही हैं—

महाभारत के अनुसार जब दक्ष शिव के बिना यज्ञ कर रहे थे तो दधीचि ने ऐसा करने के लिये उनको बहुत समझाया पर उन्होंने दधीचि की एक न सुनी। इस पर शिव भक्त दधीचि वहां से रुष्ट होकर चले गये और बाद में यज्ञ-विध्वंस करने में उन्होंने सहायता दी। एक बार दधीचि बड़ी कठिन तपस्या करने लगे। इंद्र इंद्रासन छिन जाने के भय से बहुत डरे और उन्होंने अलंबुषा नाम की अप्सरा को उनको विचलित करने के लिये भेजा। उस समय दधीचि सरस्वती नदी के किनारे तर्पण कर रहे थे। अलंबुषा वहाँ अपनी काम-चेष्टाएँ करने लगी। ऋषि अपने को रोक न सके और उनका वीर्य स्खलित हो गया। उसी वीर्य से उन्हें सारस्वत नामक पुत्र हुआ। ब्रह्मांडपुराण के अनुसार उनकी किसी सरस्वती नाम की पत्नी से सारस्वत का जन्म हुआ था। इस कृत्य के द्वारा इंद्र ने दधीचि से वैर मोल ले लिया। कुछ दिन बाद गर्व के कारण एक बार इंद्र ने देवगुरु बृहस्पति का अपमान किया और देवलोक से चले आए। असुरों को इसका पता चला तो उन्होंने देवताओं पर चढ़ाई की। ब्रह्मा की राय एवं सहायता से त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप

गुरु बनाए गए और नारायण कवच की प्राप्ति कर इंद्र विजयी हुए। विजय की खुशी में यज्ञ होने लगा। विश्वरूप ने चुपके असुरों के नाम पर भी आहुति दे दी। इस पर इंद्र ने उनका सर काट डाला। इसका पता पा विश्वरूप के पिता त्वष्टा ने वृत्रासुर नामक राक्षस पैदा किया जो इंद्र को मारने के लिये देवलोक गया। इंद्र फिर ब्रह्मा से राय लेने गए। ब्रह्मा ने दधीचि की हड्डी के वज्र से वृत्र की मृत्यु बतलायी। इंद्र दधीचि के यहाँ गए। यद्यपि दधीचि को अंक्तबुश्रा वाली घटना भूली न थी पर उन्होंने शत्रु भाव भूल कर हड्डी देनी स्वीकार की। हड्डी लेने के लिए दधीचि को मारना पड़ता पर इस कठिनाई से इंद्र को न जाने के लिए दधीचि ने योग की अग्नि से अपना शरीर जला डाला और इंद्र शेष हड्डियों को ले आए। उन हड्डियों से विश्वकर्मा ने वज्र बनाया जिससे वृत्रासुर मारा गया। अग्नि पुराण के अनुसार वज्र के अतिरिक्त कुछ और अस्त्र भी उनकी हड्डी के बनाए गए थे।

रावण द्वारा उद्धृत कथा के अनुसार इंद्र ने दधीचि ऋषि को प्रवर्ग्य विद्या तथा मधुविद्या की शिक्षा दी और कहा कि इन विद्या को किसी से बतलाओगे तो तुम्हारा सर काट लिया जायगा। अश्विनीकुमारों ने दधीचि का सिर काट उसके स्थान पर घोड़े का सर जोड़ दिया तथा उनसे दोनों विद्याएँ प्राप्त कीं। इंद्र ने सुना तो तुरंत इनका सर काट डाला बाद में अश्विनीकुमारों ने इनका पुराना सर जोड़ दिया और ये ठीक हो गए।

शाख्यायन के मत से जो घोड़े का सर जोड़ा गया था और जिसे इंद्र ने काट डाला था उसी की हड्डी का वज्र बनाया गया था।

ऋग्वेद में ही एक स्थल पर कहा गया है कि इंद्र ने दधीचि की हड्डी से ९ वृत्रों को ९० बार मारा था।

दनु— दक्ष प्रजापति तथा आसक्ति की पुत्री तथा कश्यप की पत्नी। इसके गर्भ से ४० पुत्र उत्पन्न हुए जो (इसके नाम के कारण ही)

'दानव' कहलाए। प्रसिद्ध दैत्य वृत्रासुर भी इन्हीं का पुत्र था जिसकी मृत्यु दधीचि की हड्डियों से निर्मित इंद्र के वज्र से हुई थी।

दमयन्ती—विदर्भराज भीम की पुत्री। राजा ने इसकी शादी के लिए एक स्वयंवर की रचना की। देवता तथा अन्य राजाओं को छोड़कर इसने निषादराज नल के गले में जयमाला डाल दी क्योंकि नल के गुणों को इसने एक हंस से पहले से ही सुन रखा था। इस कार्य से शनि तथा कलि बड़े अप्रसन्न हुए और दमयन्ती को कष्ट देने की सोचने लगे। अंत में विवाह के ११ वें वर्ष कलि ने नल को राज्यच्युत करा दिया और नल-दमयन्ती वन-वन फिरने लगे। शेष के लिए देखिए 'नल'।

दशरथ—अयोध्या के प्रसिद्ध इक्ष्वाकुवंशी राजा तथा भगवान राम के पिता। इनकी तीन रानियाँ—कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी थीं, परंतु इन्हें एक भी संतान न थी। राजा ने ऋष्यशृङ्ग को बुलाकर पुत्रेष्ठि यज्ञ किया और उसका प्रसाद खाने से तीनों रानियों को गर्भ रहा। कालान्तर राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। एक बार इन्होंने मृग के भ्रम में अंधमुनि के पुत्र श्रवणकुमार को मार दिया था जिससे कुपित हो मुनि ने शाप दिया था कि तुम्हें भी मेरी भाँति पुत्र-शोक से मरना होगा। वही हुआ। कैकेयी ने देवासुर संग्राम में इनके रथ की रक्षा की थी जिससे प्रसन्न हो इन्होंने दो वर देने का प्रण किया था। राम के राज्यारोहण के समय मंथरा के कहने में आकर कैकेयी ने दोनों वर माँगे। एक के अनुसार भरत को राज्य देना था तथा दूसरे के अनुसार राम को १४ वर्ष का वनवास। इसके अनुसार राम, लक्ष्मण और सीता के साथ वन चले गए और उनके वियोग में दशरथ का प्राणांत हो गया। दे० 'अंध', 'राम', 'कैकेयी', 'रोमपाद'।

दानव—प्रयोगतः प्रायः दानव, राक्षस, दैत्य आदि शब्द एक समझे जाते हैं पर मूलतः इनमें अंतर है। दक्ष प्रजापति की कन्या दनु और कश्यप ऋषि के पुत्र दानव कहलाए। दानवों में शंबर, नमुचि, पुलोमा

तथा केशी आदि प्रसिद्ध हैं। महाभारत के अनुसार दनु से उत्पन्न मूल दानवों की संख्या ४० थी पर भागवत के अनुसार यह संख्या ६० है। इन्हें राक्षस भी कहते हैं। दे० 'दैत्य'।

दिकपाल—(सं०) पुराणों के अनुसार पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण अग्निकोण नैऋत कोण, वायुकोण, ईशान कोण, उर्द्ध तथा अधो—इन दसों दिशाओं की पालन या रक्षा के लिए दस देवता नियुक्त हैं, जिन्हें दिकपाल कहते हैं। इनके नाम निम्न हैं—

	दिशा...	...		दिकपाल या रक्षक देवता
१.	पूर्व	...	...	इंद्र
२.	पश्चिम	...	...	वरुण
३.	उत्तर	...	...	कुबेर
४.	दक्षिण	...	...	यम
५.	अग्निकोण	...	...	वह्नि
६.	नैऋत कोण	...	...	नैऋत
७.	वायुकोण	...	...	मरुत
८.	ईशान कोण	...	...	ईश
९.	ऊर्द्धदिशा	...	...	ब्रह्मा
१०.	अधोदिशा	...	...	अनंत या शेषनाग।

दिग्गज—पुराणों के अनुसार दस दिशाओं में से ऊपर नीचे छोड़कर ८ में ८ हाथियाँ नियुक्त हैं जो रक्षा के साथ-साथ पृथ्वी को दबाए रहते हैं। इनके नाम निम्न हैं—

	दिशा			दिग्गज
१.	पूर्व	......	......	ऐरावत
२.	पश्चिम	......	......	अंजन
३.	उत्तर	......	......	सार्वभौम

४.	दक्षिण	....	....	वामन
५.	अग्निकोण (पूर्व और दक्षिण का)			पुंडरीक
६.	नैऋतकोण (पश्चिम और दक्षिण का)...			कुमुद
७.	वायुकोण (उत्तर और पश्चिम का) ...			पुष्पदंत
८.	ईशानकोण (पूर्व और उत्तर का) ...			सप्रतीक

दिति—वाल्मीकि रामायण के अनुसार दक्ष प्रजापति की पुत्री और कश्यप ऋषि की पत्नी। ये दैत्यों की माँ थीं और दैत्यों का 'दैत्य' नाम भी इन्हीं के कारण पड़ा था। विष्णु पुराण के अनुसार एक बार दिति के सभी पुत्रों को इंद्र ने मार डाला जिससे ये बहुत दुखी हुईं और इन्होंने कश्यप से एक ऐसे पुत्र के लिए प्रार्थना की जो इंद्र को मार सके। कश्यप ने इनकी प्रार्थना स्वीकार की किंतु साथ में यह शर्त रक्खी की गर्भ को १०० वर्ष तक धारण करना पड़ेगा, तथा इस बीच में बहुत ही पवित्रता से रहना पड़ेगा। दिति ने उनकी बात मान ली और गर्भाधान संस्कार सम्पन्न हुआ। धीरे-धीरे ९९ वर्ष बीता। इंद्र बहुत डरे। वे दिन-रात इसी खोज में रहने लगे कि कब दिति को अशुद्ध पाऊँ और गर्भ को नष्ट कर दूँ। १०० वें वर्ष के आरम्भ में एक दिन भूल से दिति बिना पैर धोये रात को सो गई। इंद्र ने उचित अवसर देख गर्भ में प्रवेश किया और अपने वज्र से उसके ७ टुकड़े कर डाले। इस पर वे सातों टुकड़े बड़े जोर से चिल्लाए। इंद्र ने क्रोधित होकर मा रोदिः कह सातों टुकड़ों के सात-सात भाग फिर किए जिससे ४९ टुकड़े हो गए। इस प्रकार गर्भ नष्ट हो गया और दिति की असावधानी से इंद्र को मारने योग्य पुत्र न हो सका। कहा जाता है कि गर्भ के ४९ टुकड़े ही ४९ पवन या मरुत् हुए। इनका नाम मरुत् इसलिए पड़ा कि इंद्र ने दूसरी बार मारते समय मारोदिः (मत रोओ) (म,रुत) कहा था।

यूरोपीय विद्वानों के अनुसार देवमाता अदिति के नाम पर दिति की कल्पना की गई है और दिति का नाम वेदों में भी आता है।

दिलीप—एक इक्ष्वाकुवंशीय प्रसिद्ध राजा। एक बार स्वर्ग से आते समय इन्होंने कामधेनु को प्रणाम नहीं किया। इस पर उसने शाप दे दिया कि जाओ मेरी पुत्री नन्दिनी की सेवा किए बिना तुम्हें पुत्र न होगा। दिलीप को बहुत दिनों तक सन्तान न हुई। अन्त में उन्होंने गुरु विशिष्ठ के परामर्श से नन्दिनी की सेवा की और इनकी रानी सुदक्षिणा के गर्भ से रघु की उत्पत्ति हुई। दिलीप नन्दिनी के सेवा में इतने तत्पर थे कि एक बार नन्दिनी की रक्षा के लिए ये अपने को शेर का भोज्य बनाने को तैयार हो गए थे।

दिवोदास—धन्वंतरि के अवतार एक काशी के राजा जो भीमरथ के पुत्र थे। महाभारत इन्हें सुदेव का पुत्र मानता है। इनके एक पुत्र का नाम प्रतर्दन था जिसकी उत्पत्ति यज्ञ करने से हुई थी।। इनके और भी बहुत से पुत्र थे जिनको वीतहव्य राजा ने मार डाला था। इसके प्रतिशोध के लिए प्रतर्दन ने वीतहव्य के पुत्रों को मार डाला। देवताओं ने इन्हें आकाश से पुष्प तथा रत्नादि दिए थे। इसी कारण इनका नाम दिवोदास था। दे० 'शंबर'।

दिव्या—राजा दिवोदास की कन्या का नाम। इसका विवाह जिस राजा से स्थिर होता लग्न आते ही उसकी मृत्यु हो जाती। अंत में राजा ने स्वयंवर की विधि के इसका विवाह करने का निश्चय किया। पर स्वयंबर में आए राजा भी परस्पर लड़कर मरने लगे। दिव्या को इससे बड़ा दुख हुआ। वे क्षुब्ध होकर वन में चली गईं। वहाँ चार वर्ष तक लगातार व्रत रखने पर इन्हें विष्णु के दर्शन हुए और ये विष्णु-लोक चली गईं।

दुन्दुभि—(१) भैंसे की आकृति का एक असुर। यह मयासुर और हेमा नामक अप्सरा का पुत्र था। बालि ने इसका बध करके, इसके मृत शरीर को ऋष्यमूक पर्वत पर फेंक दिया था, जिससे क्रुद्ध होकर मतङ्ग ऋषि ने बालि को शाप दिया कि इस स्थान पर आते ही तेरी

मृत्यु हो जायगी। सुग्रीव बालि के भय के इसी स्थान पर रहता था। यहीं बनवासी राम और सुग्रीव की मैत्री हुई। दुंदुभि को दुंदुभी भी कहते हैं।

(२) दशरथ की रानी कैकेयी की एक दासी।

दुर्ग—एक असुर का नाम जो बड़ा अत्याचारी था। मार्कण्डेय पुराण, काशी खंड तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण आदि ग्रन्थों के अनुसार इसी दुर्ग नामक महा दैत्य को मारने के कारण ही देवी का नाम दुर्गा पड़ा। देवी भागवत में इसके विरुद्ध यह लिखा है कि देवों को दुर्गम शत्रु सङ्कट से मुक्त करने के कारण इनका नाम दुर्गा पड़ा। संभव है दुर्ग बुराइयों और विपत्तियों का प्रतीक हो और उससे रक्षा करने के कारण देवी दुर्गा कही गई हो।

दुर्गा—आदि शक्ति। इन्हें शिव की स्त्री सती या पार्वती का एक रूप कहा जाता है। इसी कारण इनका नाम शिवा भी है। इनके दूसरे नाम भवानी, देवी, कालिका तथा चण्डी आदि है। इन्होंने दुर्ग राक्षस का वध किया था अतः इनका नाम दुर्गा पड़ा था। दुर्गा के दो रूप हैं एक तो शांत कोमल (पार्वती, गौरी, उमा आदि नाम इसके द्योतक हैं) और दूसरा भयानक और क्रूर (चण्डी, कपालिका, काली तथा भैरवी आदि नाम इसके द्योतक हैं)। दुर्गा का दूसरा रूप ही प्रायः पूजा जाता है। इनके मानने वाले शाक्त कहलाते हैं। तांत्रिकों की ये प्रधान देवी हैं। इनके १० हाथ हैं जिनमें करवाल आदि तरह तरह के अस्त्र-शस्त्र एवं खप्पर है। गले में मुण्डों की माला है। इनकी सवारी सिंह है। दुर्गा ने बहुत से राक्षसों को मारा जिनमें प्रधान दुर्ग, महिषासुर, रक्तबीज, तथा शुंभ आदि हैं। दे० 'पार्वती' 'चण्डी' 'शुंभ' निशुंभ' 'महिषासुर'।

दुर्मुख—(१) महिषासुर का एक सेनापति जो बड़ा अत्याचारी था। (२) रामचंद्र का एक गुप्तचर। सीता के लोकापवाद के संबंध में

इसी ने राम को सूचना दी थी जिसके फलस्वरूप सीता को फिर बन में जाना पड़ा। उत्तर रामचरित में इसका उल्लेख मिलता है।

(३) भगवान राम की सेना का एक बंदर।

(४) रावण की सेना का एक बड़ा बली राक्षस जो लंका-युद्ध में मारा गया। मानस में आया है :

दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी।
भट अतिकाय अकंपन भारी।

(५.) राधिका के एक देवर जिनका विवाह राधिका की बहन अनंगमंजरी से हुआ था।

(६.) दुर्योधन का छोटा भाई। जब कर्ण को भीम ने मार कर असहाय बना दिया तो यह उसकी सहायतार्थ भेजा गया था परन्तु इसका भी वध शीघ्र ही हो गया।

दुर्योधन— धृतराष्ट्र और गांधारी के १०० पुत्रों में सबसे बड़ा और कौरवों का स्वामी। गांधारी ने व्यास से १०० पुत्रों का वरदान माँगा था जिसे व्यास ने स्वीकार किया था। गांधारी गर्भवती हुई और उनकी गर्भावस्था २ वर्ष तक चलती रही अंत में मांस का एक लोथड़ा पैदा हुआ। व्यास ने इसे १०१ टुकड़ों में बाँटा और अलग-अलग घड़ों में रख दिया। सबसे पहले दुर्योधन पैदा हुआ, उसके बाद ९९ पुत्र तथा एक दुःशाला नाम की पुत्री। पांडु के मरने बाद धृतराष्ट्र ने पांडवों और कौरवों को साथ-साथ शिक्षा दी। वहीं दोनों में शत्रुता का विकास हुआ। दुर्योधन सबसे अधिक भीम से डरता था क्योंकि वह गदे का विशेषज्ञ था और भीम इसमें उससे आगे था। दुर्योधन ने बलराम से गदा चलाना सीखा था। एक बार इसने भीम को विष देकर गङ्गा में फेंक दिया था पर संयोग से नागलोक में जाकर भीम ठीक हो गए। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को राजा बनाना चाहा पर दुर्योधन ने ऐसा न होने दिया और पांडवों को वन में भेज दिया। वहाँ उन्हें लाक्षागृह में जलाने

की भी इसने कोशिश की पर सफल न हुआ । अंत में पाडवों के घर लौटने पर युधिष्ठिर को इसने जुआ खेलने के लिए बुलाया और शकुनि की सहायता से उन्हें हरा दिया । इसने द्रौपदी को भी जीता और दुःशासन को उसे नंगा कर अपने जंघे पर रखने की आज्ञा दी । धृतराष्ट्र के कहने तथा कृष्ण की कृपा से ऐसा न हो सका । उसी समय भीम ने गदा से दुर्योधन की जाँघ तोड़ने का प्रण किया । पांडवों को १२ वर्ष बनवास तथा १ वर्ष अज्ञातवास बिताना पड़ा । उसके बाद आने पर इन लोगों ने केवल पाँच गाँव माँगे पर दुर्योधन तैयार न हुआ और अंत में युद्ध हुआ, जिसमें कौरवों की ओर के दुर्योधन तथा अश्वत्थामा आदि कुछ को छोड़ सभी मारे गए । अंत में हार कर दुर्योधन एक जलाशय में घुस गया । पानी में देर तक रहने की उसके पास विशेष शक्ति थी । भीम खोजते हुए वहाँ पहुँचे और दोनों में गदा-युद्ध हुआ । भीम ने गदे से उसकी जाँघ तोड़ कर अपना प्रण पूरा किया और उसे वहीं छोड़ चले गए । अन्त में अश्वत्थामा आया तो दुर्योधन ने उससे भीम का सर लाने को कहा । अश्वत्थामा रात में पांडवों के खेमे में गया । पांडवों को मारने की हिम्मत तो न पड़ी पर द्रौपदी से उत्पन्न उनके पाँचों पुत्रों का सर काटकर ले आया और दुर्योधन से कहा कि ये पाँचों पांडवों के सर हैं । दुर्योधन ने भीम का सर अपने हाथ में रखने को कहा । अश्वत्थामा ने दिया तो उसने उसे ज़ोर से दबाया पर जब सर चूर-चूर हो गया तो दुर्योधन को विश्वास न हुआ कि यह भीम का सर है । उसने कहा 'मेरी शत्रुता पांडवों से थी उनके लड़कों से नहीं' । इसके बाद ही उसका देहान्त हो गया । दे० 'भीम' ।

दुर्वासा—एक मुनि । न तो ये किसी वेदमंत्र के ऋषि हैं, और न तो कहीं वैदिक ग्रंथों में इनका नाम आता है । इससे स्पष्ट है वेदों के बाद से इनकी कथा चली है । इनके दुर्वासा नाम के विषय में दो मत हैं । महाभारत के अनुसार (निगूढ़ निश्चयं धर्मं यं तं दुर्वाससं विदुः)

जिसका धर्म में दृढ़ निश्चय हो उसे दुर्वासा कहते हैं। अन्य के अनुसार बुरे या गन्दे कपड़े पहनने के कारण ही ये दुर्वासस् या दुर्वासा हैं।

दुर्वासा के जन्म के विषय में भी कई मत हैं। अधिक प्रचलित मत तो यह है कि ये अत्रि और अनुसूया के पुत्र थे। कुछ के अनुसार ये शिव के पुत्र थे। तीसरे मत के अनुसार शिव से ये उनके अंश रूप प्रकट हुए थे और किसी के भी पुत्र नहीं थे।

दुर्वासा सभी ऋषियों में अधिक क्रोधी तथा चिड़चिड़े थे। एकाध घटनाओं को छोड़कर प्रायः इनका पूरा जीवन लोगों को शाप देने में ही बीता है। यहाँ इनके कुछ अधिक प्रसिद्ध शाप दिए जा रहे हैं।

एक बार दुर्वासा इंद्र की सभा में बैठे थे वहाँ वादन और नृत्य हो रहा था। मस्त होकर इनका सर हिलाना देखकर एक गंधर्व और एक अप्सरा को हँसी आ गई, इस पर रुष्ट होकर दुर्वासा ने उन्हें राक्षस हो जाने का शाप दिया। फिर बहुत अनुनय-विनय पर इन्होंने हनुमान द्वारा शापमुक्त होने का वर दिया। अट्ठाइसवें त्रेता युग में रामावतार में जब हनुमान संजीवनी जड़ी लाने जा रहे थे तो ये ही दोनों कालनेमि और मकरी के रूप में मिले थे। जिन्हें मारकर हनुमान ने ऋषि के वरानुसार शापमुक्त किया। तुलसी-रामायण में मकरी हनुमान से कहती है—

कपि तव दरस भयउँ निःपापा। मिटा तात मुनिवर का सापा॥

एक बार शकुन्तला पर आश्रम में उचित आदर न पाने से रुष्ट होकर दुर्वासा ने शाप दिया था कि तुम्हारा पति तुम्हें भूल जायगा। इसी के फलस्वरूप जब कण्व के आश्रम से गर्भावस्था में शकुन्तला दुष्यंत के यहाँ पहुँची तो वे भूल गए और शकुन्तला को वहाँ उस समय शरण न मिल सकी।

विष्णु पुराण के अनुसार एक बार दुर्वासा ने एक फूल की माला जिसे इन्होंने किसी अप्सरा से ली थी, इंद्र को भेंट की। (एक मत से

ऐरावत के मस्तक पर डाल दिया था) जिसका इंद्र ने कुछ तिरस्कार किया। इस पर इन्होंने सब देवों के साथ उन्हें निर्बल तथा श्रीविहीन हो जाने का शाप दिया, जिसके फलस्वरूप असुरों ने इन लोगों को जीत लिया तथा बहुत अपमानित किया।

विष्णु पुराण और महाभारत दोनों ही के अनुसार एक बार कृष्ण ने बड़े आदर सत्कार से दुर्वासा को भोजन कराया पर अंत में वे ऋषि के पैर में लगी जूठन को धोना भूल गए, इस पर रुष्ट हो दुर्वासा ने उन्हें विशेष स्थिति में तथा विशेष अस्त्र से मरने का शाप दिया जो सच निकला। ब्रह्मवैवर्त तथा भागवत आदि में लिखा है कि एक दिन दुर्वासा ने उत्तप्त पायस भोजन करते समय कृष्ण से उस पायस को अपने सर्वांग में लगाने को कहा। कृष्ण ने पूरे अंग में लगाया पर अपने पैर के तलुवे में उनके आदरवश न लगाया। इस पर रुष्ट होकर दुर्वासा ने कहा कि पायस जहाँ लगा वह तो आपके अंग वज्र हो गए पर पैर का तालु नहीं। इसी कारण पैर के तलुवे में ही चोट लगने पर उनकी मृत्यु हुई।

दुर्वासा ने और्व मुनि की कन्या कंदली से विवाह किया। पहले की प्रतिज्ञानुसार उसके १०० अपराध तो इन्होंने क्षमा कर दिये, पर उसके बाद उसे भस्म होने का शाप दिया, और वह भस्म हो गई। मरते समय कंदली ने भी इन्हें शाप दिया कि तुम्हारा दर्प चूर्ण होगा। (एक अन्य मत से कंदली के पिता और्व मुनि ने यह शाप दिया था।) इसी के फलस्वरूप अम्बरीष के यहाँ इन्हें बहुत अपमानित होना पड़ा। दे० 'और्व', 'कंदली' तथा 'अम्बरीष'।

एक बार दुर्योधन के कहने से दुर्वासा काम्यवन में द्रौपदी के पास पहुँचे और भोजन माँगा। उस समय भोजन समाप्त था। वे शाप देना ही चाहते थे कि कृष्ण ने उन्हें शांत कर दिया। देखिए 'द्रौपदी'।

दुर्वासा के ही बताए मंत्र के सहारे कुंती ने सूर्य का आह्वान किया जिससे कर्ण का जन्म हुआ। दे० 'कर्ण' तथा 'कुंती'।

दुष्यंत—पुरुवंशी राजा एति के पुत्र। एक बार शिकार खेलते-खेलते ये कण्व ऋषि के आश्रम में पहुँचे। वहाँ कण्व ऋषि की पाली लड़की शकुन्तला पर ये मुग्ध हो गए और अंत में गांधर्व विवाह कर वहाँ से अपनी राजधानी में चले आए। आते समय स्मरण के लिए अपने नाम की अंगूठी इन्होंने शकुन्तला को दे दी थी। शकुन्तला का गर्भ पूरा हुआ और इन्हें सर्वदमन नामका पुत्र हुआ। शकुन्तला की अँगूठी खो गई और वह अपने पुत्र के साथ दरबार में गई। राजा को सारी बातें भूल गईं थीं (एक मत से शापवश ये बातें भूल गईं थीं और दूसरे मत से उन्हें याद थीं पर लोकलाज से उन्होंने भूल जाने का बहाना किया) अतः उन्होंने डाँट-फटकार कर रानी को भगा दिया। बाद में एक मछुए के यहाँ से जब अँगूठी मिली तो उन्हें याद आई और तब खोजकर वे शकुन्तला तथा उसके पुत्र को लाए। पुत्र का नाम भरत रखा गया। कहा जाता है इसी के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष या भारत पड़ा। यह भरत इतना वीर था कि बचपन में शेर के बच्चों के साथ खेला करता था। दुष्यंत और शकुन्तला की कहानी विभिन्न ग्रंथों में विभिन्न प्रकार से चित्रित है। दे० 'शकुन्तला'।

दुःशला—गांधारी और धृतराष्ट्र की पुत्री। इसका ब्याह सिंधुराज जयद्रथ से हुआ था। इसके पुत्र का नाम सुरथ था। जयद्रथ के मरने के पश्चात् इसने अपने पुत्र सुरथ के सहारे बहुत दिनों तक राजकाज चलाया। पांडवों के अश्वमेध के समय जब अर्जुन यज्ञ के अश्व को लेकर सुरथ के राज्य में पहुँचे और सुरथ ने सुना कि इसके पिता को मारने वाले आए हैं तो मारे भय के इसका प्राणांत हो गया। अर्जुन ने इसके पुत्र का राज्याभिषेक कराया और वहाँ से विदा हुए। दे० 'दुर्योधन'।

दुःशासन—इस नाम का अर्थ है जिसका शासन करना कठिन हो, या जो दूसरे का दबाव न माने। धृतराष्ट्र और गांधारी के १०० पुत्रों में एक दुःशासन थे। दुर्योधन के बाद १०० भाइयों में ये ही अधिक प्रसिद्ध हैं। ये बड़े क्रूर, अन्यायी तथा दुर्योधन के प्रिय थे। इनकी सभी बातों को दुर्योधन मानता था। इन्हीं के कारण कौरव और पांडव युद्ध हुआ। पांडव जब द्रौपदी को जुए में हार गए और दुर्योधन के दो बार बुलाने पर भी द्रौपदी सभा में नहीं आई तो रजस्वला द्रौपदी को दुःशासन ही सभा में बाल पकड़कर घसीट लाया और कपड़े खींचने लगा। उस समय वहाँ से जंगल की ओर जाते समय प्रत्येक पांडव ने एक-एक प्रण किया। भीम का प्रण यह था कि जब तक मैं दुःशासन के वक्ष का रक्तपान न करूँगा और जब तक उसके वक्ष के रक्त से द्रौपदी अपने बालों को न रँगेगी वह बाल खुला रक्खेगी। महाभारत युद्ध में भीम ने अपनी यह प्रतिज्ञा पूरी की और तब द्रौपदी ने बाल बाँधे। इस प्रकार दुःशासन की मृत्यु भीम के हाथ से हुई।

दूषण—यह एक राक्षस था जिसे कहीं-कहीं रावण का भाई माना गया है, यद्यपि बात यह थी नहीं। दूषण रावण के भाई खर का सेनापति था और उसी के साथ पंचवटी में रहता था। इसके दो और भाई वज्रवेग तथा प्रमाथि थे। पंचवटी युद्ध में अपने चार मंत्रियों के साथ यह राम के हाथ से मारा गया।

देवक—कृष्ण की माता देवकी के पिता तथा उग्रसेन के भाई एक यदुवंशी राजा। इनकी सात कन्याएँ थीं। सातों का विवाह इन्होंने वसुदेव के साथ किया था।

देवकी—देवक की पुत्री, वसुदेव की पत्नी तथा कृष्ण की माता। कंस की यह चचेरी बहिन थी। इसको अदिति का अवतार कहते हैं। दे० 'कृष्ण'

देवता—स्वर्ग लोक में रहने वाली एक दिव्य जाति जो अमर

कही जाती है। इंद्र देवताओं के राजा हैं। देव या देवता प्रमुखतः ३ माने गए हैं—ब्रह्मा, विष्णु, महेश—जो त्रिदेव कहलाते हैं। आजकल ५ देवता मुख्य माने जाते हैं—विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा। ऋग्वेद में मुख्य देवता ३३ हैं—८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, इंद्र और प्रजापति। शतपथ ब्राह्मण आदि में देवताओं की संख्या ३३३९ दी गई है। देवता सर्वदा युवक रहने वाले, अमर तथा वर आदि देने वाले समझे जाते हैं। दैत्यों से देवताओं का वैर है। ये लोग दैत्यों के छोटे भाई कहे गए हैं।

देवयानी—शुक्राचार्य की पुत्री और ययाति की स्त्री। देवताओं के लाभ के लिए बृहस्पति का पुत्र कच एक बार शुक्राचार्य का मृत संजीवनी विद्या सीखने के लिये शिष्य हुआ और उनके यहाँ रहने लगा। शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी जो उस समय युवती हो चली थी उसे देखकर मोहित हो गई। इसी बीच असुरों को पता चल गया कि सुरों के लिए कच मृत संजीवनी विद्या सीखने आया है अतः उन्होंने उसका वध कर डाला, इस पर देवरानी रोने लगी तो शुक्राचार्य ने मृतसंजीवनी से इसे जिला दिया। इसी प्रकार कई बार वह मारा गया और जिलाया गया। एक बार असुरों ने कच को पीसकर शुक्राचार्य को पिला दिया। यह सुनकर देवयानी फिर रोने लगी और शुक्राचार्य घबराए। अन्त में मृतसंजीवनी के सहारे वह फिर बाहर निकल आया। इस बार देवयानी ने विवाह करने को कहा पर गुरुपुत्री कहकर कच ने अस्वीकार कर दिया। इस पर देवयानी ने शाप दिया कि तुम्हारी विद्या निष्फल होगी। इस पर कच ने उसे शाप दिया कि तुम्हारा विवाह ब्राह्मण से नहीं होगा। एक बार देवयानी की सखी वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा ने एक छोटे से आपसी झगड़े में नाराज होकर देवयानी को कुएँ में ढकेल दिया। नहुष के पुत्र ययाति ने जो शिकार खेलने आया था उसे निकाला और वहीं छोड़ अपने घर चला गया। शुक्राचार्य ने सुना तो अपनी

पुत्री के पास आए पर उनके बहुत कहने पर भी देवयानी घर चलने को तैयार न हुई। वह कहती थी कि शर्मिष्ठा ने उसका तिरस्कार किया है अतः वह उसकी नगरी में नहीं जा सकती। इस पर शुक्राचार्य भी वह नगरी छोड़ने को तैयार हुए। यह सुन वृषपर्वा बड़ा घबराया। अन्त में शुक्र इस बात पर रुके की देवयानी की जहाँ शादी हो शर्मिष्टा दासी बनकर जाय। वृषपर्वा ने बात मान ली। देवयानी का विवाह ययाति से हुआ और शर्मिष्टा दासी बनकर वहाँ गई। शुक्राचार्य ने ययाति से शर्मिष्ठा के साथ भोग न करने की आज्ञा दी थी पर उन्होंने दोनों के साथ भोग किया और उन्हें देवयानी से दो तथा शर्मिष्ठा से तीन पुत्र हुए। आगे दे० 'ययाति'।

देवहूति—स्वायंभुव मनु और शतरूपा की तीन कन्याओं में से एक, जो कर्दम मुनि को ब्याही गई थी। प्रसिद्ध राजा उत्तानपाद जो ध्रुव के पिता थे इनके भाई थे। इनके छोटे भाई का नाम प्रियव्रत था। कर्दम मुनि ने इनसे प्रसन्न होकर इन्हें दिव्यज्ञान दिया। इनकेगर्भ से एक पुत्र तथा नव कन्याओं का जन्म हुआ। प्रसिद्ध सांख्यकार कपिल मुनि भागवत के अनुसार इन्हीं के पुत्र थे। कपिल ने एक बार इनको सांख्य शास्त्र की शिक्षा दी जिसके बाद ये देवहूति नदी हो गईं, ऐसा प्रसिद्ध है। दे० 'कपिल' तथा 'कर्दम'।

दैत्य—दैत्य और दानवों को प्रायः एक समझा जाता है और प्रयोगतः भी प्राचीन काल से अब तक इन दोनों में कोई भेद नहीं। मूलतः कश्यप ऋषि और दक्ष पुत्री दिति से उत्पन्न पुत्र दैत्य कहलाए। दे० 'दानव'। दैत्य और दानव देवताओं के शत्रु थे। इन्हें राक्षस भी कहते हैं।

द्यु—अष्ट वसुओं में से एक। एक बार सब वसु वसिष्ठ मुनि के आश्रम में गये। ये वहाँ से उनकी गाय कामधेनु चुरा लाये। ऋषि ने क्रुद्ध होकर सब वसुओं को मनुष्य की योनि में जन्म लेने का शाप दिया।

इसी के फलस्वरूप द्यु गङ्गा की कोख में भीष्म के रूप में उत्पन्न हुए।

द्रुपद—चंद्र वंश में पृषत नामक एक प्रतापी राजा थे। भरद्वाज ऋषि इनके घनिष्ठ मित्र थे। दोनों मित्रों को साथ-साथ संतानें हुईं। पृषत के पुत्र का नाम द्रुपद तथा भरद्वाज के पुत्र का नाम द्रोण था। पिता की तरह पुत्रों में भी मैत्री थी। पृषत की मृत्यु के उपरांत जब द्रुपद राजा हुए तो द्रोण मैत्री के नाते एक बार उनके पास गए, पर द्रुपद ने यह कहकर फटकारा कि तुम गरीब ब्राह्मण के लड़के हो और मैं राजा हूँ, हम दोनों में कैसे मैत्री संभव है? इस पर द्रोण लौट आए पर यह बात उनके दिल से उतरी नहीं। कौरव-पांडव जब शिक्षित होकर अपने घर लौटने लगे तो द्रोण ने गुरु-दक्षिणा के स्थान पर यह आज्ञा दी कि द्रुपद को बाँधकर मेरे सामने लाओ। पहले कौरवों ने प्रयास किया पर वे असफल रहे। अंत में पांडव उन्हें पकड़ लाए। द्रुपद के सामने आने पर द्रोण ने उनसे कहा कि आज भी मैंने आपको मैत्री के लिए ही बुलाया है पर मैं गरीब ब्राह्मण हूँ, अतः आपका आधा राज्य लेता हूँ। इस प्रकार उनका आधा राज्य लेकर द्रोण ने द्रुपद को छोड़ दिया। इस बात से द्रुपद बहुत दुखी हुए और इसका बदला लेने के लिए किसी तेजस्वी ब्राह्मण को खोजने लगे। खोजते-खोजते वे गङ्गा के किनारे याज और उपयाज नाम के दो ब्राह्मणों के पास पहुँचे। एक वर्ष तपस्या करने के उपरांत उपयाज इनकी सहायता को तैयार हुए और अंत में याज ने भी सहायता देनी स्वीकार की। दोनों की सहायता से इन्होंने द्रोणविनाशक पुत्र की प्राप्ति के लिए श्रौताग्निसाध्य यज्ञ आरम्भ किया। यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ-कुंड से बड़ा तेजस्वी पुत्र धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुआ। साथ ही कृष्णा नाम की पुत्री भी उत्पन्न हुई। पुत्र जन्म के समय ही बड़ा ढीठ ज्ञात हुआ तथा सहजात रूप से कवच कुंडल आदि धारण किए था अतः धृष्टद्युम्न नाम पड़ा। पुत्री काली थी अतः कृष्णा कही गई। यही आगे द्रौपदी के नाम से प्रसिद्ध हुई। इन दो संतानों के

अतिरिक्त द्रुपद को दो और संतानें थीं। पुत्र का नाम शिखंडी तथा पुत्री का शिखडिनी था।

द्रौपदी का विवाह पांडवों से हुआ अतः पुराना वैर भूलकर महाभारत युद्ध में द्रुपद पांडवों की ओर से लड़ रहे थे। १४ वें दिन द्रोण के हाथ से इनकी मृत्यु हुई।

द्रोणाचल—एक पर्वत जो रामायण के अनुसार क्षीरोद समुद्र के किनारे है। संजीवनी इसी पर्वत पर होती है। हनुमान यहीं से लक्ष्मण को लगी शक्ति के समय पर्वत के एक खण्ड के साथ संजीवनी ले आए थे। इसे द्रोण, द्रोन; द्रोनागिरि, द्रोणगिरि आदि भी कहा गया है।

द्रोणाचार्य—महाभारत कालीन प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो कौरवों और पांडवों के गुरु थे। इनके जन्म की कथा बड़ी विचित्र है। भरद्वाज ऋषि ने नदी के किनारे एक बार घृताची अप्सरा को नग्न देखा और कामार्त हो गए। जो वीर्य स्खलित होकर गिरा उसे उन्होंने एक द्रोण नामक पात्र में रख दिया और उसी से द्रोण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। द्रोण ने धनुर्विद्या का अध्ययन अग्निवेश्य मुनि से किया था। लड़कपन में द्रोण तथा द्रुपद की मित्रता थी परन्तु बाद में द्रुपद राजा होने पर इसको भूल गए (दे० द्रुपद')। इनकी पत्नी कृपी शरद्वान ऋषि की पुत्री थी। इनके पुत्र का नाम अश्वत्थामा था। इनको यह बरदान था कि अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार सुनने पर ये मरेंगे। महाभारत के युद्ध में जब पांडव इनसे परेशान हो गए तो कृष्ण ने एक चाल चली। अश्वत्थामा नाम का एक हाथी मरा था। उसी आधार पर उन्होंने द्रोण के आगे युधिष्ठिर से कहलवाया—'अश्वत्थामा मरो नरो वा कुन्जरो वा' कृष्ण ने बीच में शंख-ध्वनि कर दी जिससे द्रोण केवल यह सुन सके कि 'अश्वत्थामा मरो' सुनते ही अस्त्र-शस्त्र फेंक वे चिन्ता में पड़े और तब तक धृष्टद्युम्न ने उनका सिर काट लिया। दे० 'अश्वत्थामा'।

द्रौपदी—महाराज द्रुपद की पुत्री। इसका यथार्थ नाम कृष्णा था जो इसके वर्ण के कारण रक्खा गया था। स्वयंवर में नाचते चक्र के बीच से मछली की आँख को भेद कर अर्जुन ने इसे प्राप्त किया था। घर आने पर अर्जुन ने अपनी माँ से कहा कि हम लोग एक नई भीख लाए हैं। इस पर कुन्ती ने कहा कि सभी लोग आपस में बाँट कर उपभोग करो। इसी को मानकर पाँचों पांडवों ने द्रौपदी से विवाह किया और पाँचों पांडवों से इसे एक एक सन्तानें हुई जो युद्ध समाप्त होने पर अश्वत्थामा द्वारा मारी गईं। [दे० 'दुर्योधन तथा 'अश्वत्थामा'।] जुआ में द्रौपदी को जीतकर दुर्योधन ने दुःशासन से उसे नङ्गा करने की आज्ञा दी तथा उसे अपने जंघे पर रखने को कहा, पर कृष्ण की कृपा से वह नङ्गा न कर सका। कहा जाता है कि कृष्ण की कृपा से द्रौपदी की साड़ी इतनी बढ़ गई कि उसे खींचते-खींचते दुःशासन का सहस्र हाथियों का बल समाप्त हो गया पर द्रौपदी का कोई अंग न खुला। अंत में हारकर लज्जा से वह बैठ गया। उसी समय भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि दुर्योधन के जंघे को तोड़ूँगा तथा दुःशासन के कलेजे का रक्तपान करूँगा। युद्धोपरांत उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। अज्ञात बनवास के समय कीचक द्रौपदी के साथ भोग करना चाहता था पर भीम ने उसको मार डाला। जीवन के अंत में द्रौपदी अपने पतियों के साथ हिमालय में गलने चली गई और यही सबसे पहले गली। द्रौपदी की गणना पंचदेव कन्याओं में होती है।

द्रौपदी पाँचों पांडवों की स्त्री थी। इसके लिए हर एक पांडव का दिन निश्चित था और यह भी तय था कि एक आदमी के रहते यदि कोई दूसरा द्रौपदी के कमरे में चला जायगा तो उसे १२ वर्ष का वनवास सहना पड़ेगा। अर्जुन से एक बार यह गलती हो गई और फलस्वरूप अर्जुन को वनवास लेना पड़ा। दे० 'कीचक' जटासुर' सैरंध्री'।

द्विविद—(१) बाल्मीकि रामायण के अनुसार एक बन्दर जो बड़ा वीर था तथा राम के प्रधान सेनापतियों में था। कहा जाता है कि इनके नाम का कीर्तन करने से एकाह्निक ज्वर जाता रहता है।

(२) विष्णुपुराण के अनुसार एक बन्दर जो नरकासुर का मित्र था। इसे बलदेव ने मारा था।

धन्ना—एक मध्ययुगीन भक्त। इन्हें धन्ना-भगत या धनादास भी कहते हैं। इनका समय १६ वीं सदी के आसपास है। धन्ना एक साधारण किसान थे। ये साधु-सन्तों की सेवा में तन-मन-धन से लगे रहते थे। एक बार इनके यहाँ कुछ साधु आए। घर में कुछ नहीं था, केवल बोने के लिए कुछ अन्न बीज रूप में रक्खा था। घर वालों के विरोध करने पर भी इन्होंने बीज रूप में रक्खे अन्न को साधुओं के खिलाने में खर्च कर डाला। जब बोने का समय आया तो उनके घर के लोग बहुत घबराए। धन्ना ने अपने खेत में केवल हल चला दिया और चुपचाप बैठ गये। लोगों को यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ कि बिना बोए ही अन्य लोगों के साथ धन्ना के भी खेत में अन्न उग आया। कहा जाता है कि स्वयं भगवान ने उनका खेत बो दिया था।

धन्वंतरि—देवताओं के वैद्य जो समुद्र-मंथन से निकले १४ रत्नों में थे। इनके पैदा होते ही चारों दिशाएँ जगमगा उठीं। अमृत का कलश इनके ही हाथ में था। दे० 'दिवोदास'।

धर्म—एक प्राचीन ऋषि तथा प्रजापति जिनका जन्म ब्रह्मा के दाहिने अङ्ग से हुआ था। धर्म के चार पैर—गुण, द्रव्य, क्रिया तथा जाति कहे जाते हैं। सत्ययुग में चार पैर से, त्रेता में तीन पैर से, द्वापर में दो पैर से और कलियुग में एक पैर से धर्म शासन करते हैं। धर्म के चार पुत्र सनत्कुमार, सनातन, सनक तथा सनन्दन हैं। इनके अतिरिक्त युधिष्ठिर भी धर्म के पुत्र हैं। धर्म के बहुत से विवाह हुए थे। महाभारत के अनुसार दक्ष की १० (एकमत से १३) पुत्रियों का

विवाह धर्म से हुआ था। इनकी एक स्त्री का नाम अहिंसा था। कुछ मतों से धर्म, धर्मराज तथा यमराज एक ही हैं। दे० 'मांडव्य'।

धूमकेतु—रावण की सेना का एक राक्षस जो बड़ा वीर था। अकंपन तथा अतिकाय आदि के साथ इसका भी नाम आता है।

धूम्रलोचन—शुंभ दैत्य का सेनापति। जब शुंभ-निशुंभ के संहार के लिए देवी ने परम सुन्दरी का रूप धारण किया था तो शुंभ ने उन्हें पकड़ लाने के लिए धूम्रलोचन को ही भेजा था।

धृतराष्ट्र—विचित्रवीर्य के बड़े पुत्र। इनकी माता का नाम अम्बिका था। विचित्रवीर्य की मृत्यु निःसन्तान ही हुई थी। इसलिए उनकी माता ने वंशनाश के डर से अपने कुमारावस्था के पुत्र व्यास को बुलाया। इन्हीं के नियोग या सम्भोग से धृतराष्ट्र का जन्म हुआ था। अम्बिका ने सम्भोग के समय लज्जा से आँखें बन्दकर ली थीं इसलिए धृतराष्ट्र जन्मांध पैदा हुए। इनका विवाह गंधारराज की कन्या गांधारी से हुआ था। व्यास के ही आशीर्वाद से इनको दुर्योधन आदि सौ पुत्र तथा दुःशाला नाम की एक पुत्री हुई थी। अपने पिता के पश्चात् ये ही राजा हुए थे। ये बड़े न्यायप्रिय थे, पर दुर्योधन के आगे इनकी एक न चली। महाभारत युद्ध के बाद गांधारी तथा कुन्ती के साथ ये वन में गए जहाँ तीनों आग में जल गए। दे० 'अम्बिका' 'दुर्योधन'।

धृष्टद्युम्न—राजा द्रुपद के पुत्र। इनकी उत्पत्ति यज्ञ करने से द्रोण से बदला लेने के लिए हुई थी। पिता के अपमान का बदला चुकाने के लिए इन्होंने द्रोणाचार्य को उस समय मारा जब अस्त्र छोड़कर पुत्र शोक में वे चिंताग्रस्त थे। धृष्टद्युम्न द्रोण पुत्र अश्वत्थामा के हाथ से मारे गए। दे० 'द्रोणाचार्य' 'द्रुपद'।

धेनुक—गधे की आकृति का एक राक्षस। एक बार गोकुल के समीप वन में कृष्ण और बलराम फल तोड़ कर खा रहे थे। इसने अचानक पिछले पैरों से बलराम पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने इसे

पिछले पैरों से ही पकड़ कर जोर से पृथ्वी पर पटक दिया जिससे इसकी मृत्यु हो गई।

ध्रुव—(सं०) स्वयंभू मनु के प्रियव्रत और उत्तानपाद नाम के दो पुत्र थे। उत्तानपाद की दो स्त्रियाँ थीं। एक का नाम सुरुचि था जिससे उन्हें उत्तम नाम का पुत्र था। दूसरी का नाम सुनीति था। इसे सुनीता भी कहा जाता था। सुनीति को ध्रुव नाम का एक पुत्र था, जो बड़ा सीधा और शांत स्वभाव का था। उत्तानपाद का सुरुचि और उत्तम पर विशेष स्नेह था। एक दिन उत्तम उत्तानपाद की गोद में बैठा था। कहीं से ध्रुव भी खेलकर आया और पिता की गोद में बैठ गया। सुरुचि ने तुरंत उसे उत्तानपाद की गोद से उतार दिया। यह बात ध्रुव को बहुत बुरी लगी और अपनी माँ सुनीति से आज्ञा ले वे जंगल में तप करने चले गए। वहाँ इंद्र ने तप में बड़ी बाधाएँ उपस्थित की पर अंततः उनका तप पूरा हुआ और विष्णु ने प्रसन्न होकर उन्हें वर दिया—"तुम सब लोकों और ग्रहों नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार स्वरूप होकर अचल भाव से स्थित रहोगे, और जिस स्थान पर तुम रहो, वह ध्रुव-लोक कहलाएगा।" वहाँ से लौटकर ध्रुव ने अपनी माता को यह समाचार दिया और फिर उन्हें भी भगवान् का दर्शन कराया। पिता से राज्य प्राप्त कर उन्होंने ३६००० वर्ष तक राज्य किया और अंत में भगवान् द्वारा प्रदत्त ध्रुवलोक में चले गए। ध्रुव ने शिशुमार की कन्या भ्रमि से विवाह किया। भ्रमि के अतिरिक्त इन्हें एक इला नाम की और भी स्त्री थी। इला के गर्भ से उत्कल तथा भ्रमि के गर्भ से कल्प और वत्सर नाम के इन्हें तीन पुत्र हुए थे। ध्रुव के सौतेले भाई उत्तम को एक बार यक्षों ने मार डाला इसलिए उन्हें यक्षों से युद्ध करना पड़ा, जिसे इनके पितामह मनु ने शांत किया। इन्हें औत्तानपादि या ग्रहाधार भी कहते हैं।

नन्द—श्रीकृष्ण के पालने वाले, गोपों के प्रधान। कंस के भय से

वसुदेव ने कृष्ण को नंद के यहाँ पहुँचा दिया था और उनकी पुत्री महामाया को कृष्ण के स्थान पर ले आए थे। कृष्ण का बाल्यकाल इनके यहाँ बीता। इनकी स्त्री यशोदा ने कृष्ण का पुत्र के समान पालन-पोषण किया। कृष्ण भी नंद और यशोदा को अपना यथार्थ माँ-बाप समझते थे। इनके पूर्व-जन्म के विषय में कहा जाता है कि ये दक्ष प्रजापति थे। इनकी स्त्री का नाम प्रसूति था। इनकी कन्याओं में एक का नाम सती था जिसका विवाह शिव के साथ हुआ। एक बार दक्ष ने एक यज्ञ किया, जिसमें सती को छोड़कर सभी कन्याओं को आमंत्रित किया। सती को निमंत्रित न करने का कारण यह था कि वह निर्धन थी। सती बिना बुलाए ही यज्ञ में पहुँची और वहाँ शिव की निंदा सुनकर कुंड में कूदकर भस्म हो गई।

दक्ष यह देख बहुत दुखी हुए और पत्नी सहित तपस्या करने चले गए। अपनी गलती का अनुभव करने एवं तपस्या पूर्ण होने के कारण सती कृष्ण के जन्म के समय इनकी पुत्री रूप में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई।

नन्दन—इंद्र का उपवन। यह स्वर्ग में है। कल्पवृक्ष इसी में है। पुराणों के अनुसार संसार के सभी स्थानों से यह अधिक सुन्दर है तथा जब मनुष्यों का भोगकाल पूरा हो जाता है तो इसी वन में सुखपूर्वक विहार करने के लिए भेज दिए जाते हैं।

नंदन वन के वृक्ष सर्वदा हरे रहते हैं। इसमें पतझर कभी नहीं आता और सर्वदा वसंत ही बसंत रहता है। कहा जाता है कि इसमें सर्वदा शीतल, मंद और सुगंधित पवन बहा करता है। नंदन कानन की स्थिति कुछ पुराणों के अनुसार मेरु-पर्वत के उत्तर में है।

नन्दिनी—वसिष्ठ की कामधेनु का नाम। दिलीप इसको वन में चराने ले गए थे जहाँ सिंह के आक्रमण करने पर उन्होंने इसकी प्राणपण से रक्षा की। नंदिनी की ही पूजा से उन्हें रघु नामक पुत्र हुआ। महा-

भारत के अनुसार द्यो नामक वसु अपनी पत्नी के कहने से इसे वसिष्ठ के आश्रम से चुरा ले गया। इस पर वसिष्ठ ने उसे शाप दिया और वह भीष्म बनकर पैदा हुआ। एक बार विश्वामित्र बहुत से लोगों के साथ वसिष्ठ के आश्रम पर पहुँचे। वसिष्ठ ने नंदिनी से सामग्री प्राप्त कर सबका उचित सत्कार किया। इस पर विश्वामित्र के मन में लालच का उदय हुआ और वे उसे जबरदस्ती ले चले। कहा जाता है कि वसिष्ठ के कहने से या नंदिनी के चिल्लाने से एक बड़ी सेना निकली जिसने विश्वामित्र को परास्त किया। एक मत से नन्दिनी कामधेनु का ही नाम है और दूसरे मत से यह कामधेनु की पुत्री है। दे० 'वसिष्ठ', 'विश्वामित्र'।

नन्दी—शिव का बैल जो श्वेत रंग का माना जाता है। इसे शिव का वाहन, द्वारपाल, गणों का स्वामी आदि बहुत कुछ कहा गया है। संसार के चार पैर वाले जानवरों का यह अधिपति भी है। वायु-पुराण के अनुसार यह कश्यप और सुरभि का पुत्र है। कुछ मतों से नन्दी पूर्व जन्म में शालंकायण मुनि का पुत्र था।

कहा जाता है कि शङ्कर जब तांडव नृत्य करने लगते हैं तो उनका साथ नन्दी भी ताल तथा सङ्गीत द्वारा देता है। इसी कारण उसे तांडव-तालिका कहा गया है। इसके अन्य पर्याय शालंकायण, तथा नादि-देह आदि हैं।

नकुल—चौथे पांडव जो माद्री के गर्भ से पांडु के क्षेत्रज तथा अश्विनीकुमारों के औरस पुत्र थे। जब शापयुक्त होकर पांडु अपनी दोनों पत्नियों (कुन्ती, माद्री) को लेकर जङ्गल में रह रहे थे तो एक बार माद्री ने पुत्र की इच्छा प्रकट की। पांडु शाप-वश असमर्थ थे अतः कुंती के कहने पर माद्री ने अश्विनीकुमारों का स्मरण किया जिनसे उसे दो पुत्र नकुल तथा सहदेव हुए। अज्ञात बनवास के समय नकुल विराट के यहाँ तंत्रीपाल नाम से गाय चराते थे। इनका विवाह चेदिराज की कन्या

करेणुमती से हुआ था। ये अत्यन्त सुंदर, युद्ध एवं नीति विशारद तथा पशु चिकित्सा में दक्ष थे। इनके प्रधान पुत्र का नाम निरमित्र था।

नमरूद—ईश्वर का विरोधी एक बादशाह। यह खुदाई का दावा करता था। इसने इस बात का विरोध करने पर इब्राहिम को आग में फेंक दिया पर वे बच गए। एक बार नमरूद की नाक में एक मच्छड़ घुस गया जिससे इनकी मृत्यु हो गई।

नमुचि—एक दानव। एक बार यह इंद्र से भयभीत होकर सूर्य की किरणों में छिप गया। इंद्र ने जब प्रण किया कि वे किसी सूखी या भीगी वस्तु से उसे न मारेंगे, तब वह सामने आया। इंद्र ने उसे सामने देख समुद्रफेन (जो न तो पूर्णतः सूखा है न पूर्णतः भीगा) से उसका सिर काट डाला। यह विश्वासघात देख, नमुचि बड़ा रुष्ट हुआ और उसके कटे हुए सिर ने इंद्र का पीछा किया। ब्रह्मा के कहने से जब इन्द्र ने विधिवत् यज्ञ कर अरुणा नदी में स्नान किया तो उनके प्राण बचे। एक अन्य मत से नमुचि ने पहले इन्द्र को बंदी बना लिया था, किंतु जब उन्होंने उपर्युक्त प्रण किया तो उन्हें उसने छोड़ दिया।

नर—दक्ष की एक कन्या और धर्मराज से उत्पन्न एक ऋषि जो विष्णु के अवतार कहे जाते हैं। इनके एक बड़े भाई भी थे जिनका नाम नारायण था। इन दोनों के नाम प्रायः साथ नर-नारायण लिए जाते हैं। आश्चर्य है कि छोटे भाई का नाम पहले तथा बड़े भाई का नाम बाद में लिया जाता है।

विभिन्न पुराणों तथा धर्म ग्रंथों में 'नर-नारायण' के संबंध में विभिन्न कहानियाँ मिलती हैं। यहाँ कुछ प्रमुख कहानियाँ दी जा रही हैं।

एक सहस्रकवची राक्षस था। सूर्य को प्रसन्न कर इसने वर प्राप्त किया था कि 'इसके शरीर पर हजार कवच हों। जब कोई इससे युद्ध करे तो हजार वर्ष युद्ध करने पर एक कवच टूटे और कवच के टूटते ही वह शत्रु मर जाय।' जब इनके अत्याचारों से हाहाकार मचा तो सत्य

युग में नर-नारायण का अवतार हुआ। दोनों भाइयों ने मिलकर युद्ध शुरू किया। नर १००० वर्ष लड़ के एक कवच तोड़ कर मर जाते थे पर तुरंत मंत्र द्वारा उन्हें नारायण जिला कर स्वयं युद्ध करने लगते थे। सहस्र वर्ष बाद जब दूसरा कवच तोड़कर वे मरते थे तो नर उन्हें जिलाकर स्वयं लड़ने लगते थे। इस प्रकार दोनों भाइयों ने बड़े मेल से ९९९००० वर्षों तक युद्ध जारी रक्खा और सहस्रकवची के ९९९ कवच टूट गए। जब एक ही कवच शेष रहा तो वह डर कर अपने आराध्यसूर्य में विलीन हो गया। बाद में नर-नारायण बद्रीनाथ में तप करने लगे। द्वापर में यही सहस्रकवची अपने शेष एक कवच के साथ कर्ण होकर पैदा हुआ। नर भी अर्जुन और नारायण कृष्ण बन कर अवतरित हुए और इस प्रकार एक युग बाद वह नर के हाथ से मारा गया।

महाभारत के अनुसार नर नारायण एक बार गंधमादन पर्वत पर तप कर रहे थे। उसी समय दक्ष-यज्ञ में अपना भाग न देख रुद्र ने यज्ञ भङ्ग करने के लिए अपना शूल फेंका। शूल यज्ञ भङ्ग कर नारायण के वक्ष पर गिरा पर फिर नारायण के गर्जन से वह रुद्र के हाथ में आया। इसी पर दोनों में युद्ध होने लगा। नारायण ने रुद्र का गला पकड़ लिया और नर ने उन्हें मारने के लिए एक तिनका उठाया जो पशु बन गया। इससे चारों ओर हाहाकार मचा और अंत में ब्रह्मा ने दोनों पक्षों का परिचय कराकर शांत किया। तबसे नर नारायण और रुद्र में मैत्री हो गई।

देवी भागवत् के अनुसार ब्रह्मा के पुत्र धर्म ने दक्ष की १० कन्याओं से विवाह किया जिनके गर्भ से हरि, कृष्ण, नर और नारायण नाम के चार पुत्र पैदा हुए। इनमें हरि और कृष्ण तो योगाभ्यास करते थे किन्तु नर नारायण हिमालय पर तप करते थे। इंद्र ने डर कर इनका तप भङ्ग करने के लिए तरह-तरह की बाधाएँ उपस्थित कीं। अंत में उनकी प्रेरणा से कामदेव अपने साथ रंभा, तिलोत्तमा आदि अप्सराओं को

लेकर उन लोगों के पास पहुँचे। इस पर इंद्र को लज्जित करने के लिए नर नारायण ने अपनी जांघ से उर्वशी को पैदा किया। इंद्र की भेजी अप्सराएँ उनकी स्तुति करने लगी और उन्हें अपना पति बनाने की इच्छा प्रकट की। नर नारायण ने उन्हें द्वापर में पत्नी बनाना स्वीकार किया। इसी कारण द्वापर में नारायण कृष्ण हुए और अप्सराएँ गोपियाँ।

कालिका पुराण के अनुसार महादेव ने जब शरभ पक्षी का रूप धारण कर नृसिंह के दो टुकड़े कर दिए तब नरसिंह के नर रूप से नर और सिंह रूप से नारायण की उत्पत्ति हुई।

महाभारत के नारायणी उपाख्यान के अनुसार परब्रह्म के अवतार नर और नारायण दो ऋषियों ने नारायणी धर्म का प्रचार किया और उनके कहने से जब नारद श्वेत द्वीप गए तो स्वयं भगवान ने उन्हें इस धर्म का उपदेश दिया था।

भागवत के अनुसार नर चौथे अवतार थे। धर्म की पत्नी मूर्ति के गर्भ से उनका जन्म हुआ था। नर और नारायण दो होने पर भी देखने में एक से लगते थे।

देवी भागवत के ही एक अन्य उपाख्यान के आधार पर नर और नारायण मुनि भृगु के शाप के कारण पृथ्वी का भार हरने के लिए अर्जुन और कृष्ण होकर अवतीर्ण हुए थे।

नरक—स्वर्ग का उलटा वह लोक जहाँ पापी लोग मरकर जाते हैं। यहाँ उन्हें तरह-तरह का कष्ट यम के दूतों द्वारा दिया जाता है। मनुस्मृति के अनुसार २१ नरक हैं, पर भागवत में दिए गए २१ नरकों से मनुस्मृति के नरक कुछ भिन्न हैं। प्रसिद्ध नरकों में अंधतामिस्र, रौरव, कुम्भीपाक, शूकरमुख, कृमिभोजन, तथा सूचीमुख का नाम लिया जाता है। नरकलोक स्वर्ग के विरुद्ध पाताल में है। यमराज नरक के स्वामी हैं।

नरकासुर—एक असुर। विष्णु ने जब वाराह अवतार लिया तो उन्होंने पृथ्वी के साथ संभोग किया जिससे पृथ्वी को गर्भ रह गया। सुरों को जब यह पता चला कि पृथ्वी के गर्भ में एक बड़ा असुर है तो उन्होंने उस लड़के को गर्भ से बाहर आने से रोका। उस पर पृथ्वी ने भगवान से प्रार्थना की। भगवान ने कहा कि त्रेता तक तुम्हें कोई कष्ट न होगा और राम के हाथ से रावण के मारे जाने के बाद तुम्हें पुत्र होगा। यही हुआ और उचित समय पर जहाँ सीता पैदा हुई थीं पृथ्वी को नरक नामक पुत्र पैदा हुआ। इसे जनक ने शिक्षा दी और फिर पृथ्वी ने इसके जन्म की पूरी कथा इससे कह सुनाई। इसी बीच विष्णु नरक को अपने साथ ले गए और प्राग्ज्योतिषपुर का राजा बना दिया। इसका विवाह विदर्भ कुमारी माया से हुआ था, जिससे सुमाली आदि चार पुत्र हुए। संयोग से बाणासुर इसके राज्य में पहुँचा और धीरे-धीरे उसके साथ में नरकासुर में भी बुराई आ गई और यह देवों को कष्ट देने लगा। वसिष्ठ एक बार कामाख्या देवी के दर्शनार्थ गए पर उन्हें इसने अपने राज्य में घुसने तक नहीं दिया। इस पर रुष्ट होकर ऋषि ने शाप दिया कि शीघ्र ही तुम्हारे पिता के हाथ से तुम्हारी मृत्यु होगी। नरक ने तप करके ब्रह्मा से अमर होने का वर प्राप्त किया और असुरों की सहायता से इंद्र को जीत लिया। अत्याचार जब बहुत बढ़ा तो कृष्ण ने इस पर चढ़ाई की और चक्र से इसका सिर काट लिया।

नरसी-मेहता—एक गुजराती भक्त। ये अपने दान के लिए प्रसिद्ध थे। एक बार कुछ साधु इनके पास आए। वे द्वारिका जाना चाहते थे। इनके पास संयोग से कुछ नहीं था। इनके लाख कहने पर भी साधुओं ने अपनी कुछ लेने की टेक न छोड़ी तो इन्होंने एक हुँडी (चेक) द्वारिका के भगवान को 'साँवल साह' के नाम से लिख दी। भगवान ने साधुओं के वहाँ पहुँचने पर साँवल साह का रूप धर हुन्डी भुना दी। एक बार

इनकी बड़ी लड़की को बच्चा पैदा हुआ पर छट्ठी के दिन इनके पास खर्च करने के लिए कुछ भी न था। कहा जाता है कि भगवान ने स्वयं आकर उस दिन इनका काम चलाया।

नल—१. निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र। नल एक बार विदर्भ देश की राजकुमारी दमयंती की प्रशंसा सुन उस पर मुग्ध हो गए थे। इसी बीच उन्होंने एक हँस को पकड़ लिया। हंस ने उनसे छोड़ देने की प्रार्थना की तथा कहा कि यदि आप छोड़ देंगे तो मैं दमयंती से आपकी प्रशंसा करूँगा। राजा ने उसे छोड़ दिया और हंस विदर्भ देश गया। वहाँ जब दमयंती ने हंस से नल की प्रशंसा सुनी तो वह भी इनसे विवाह करने को इच्छुक हुई। अंत में दमयंती के पिता ने स्वयंवर रचा जिसमें दूर-दूर से बहुत से राजा आए। इंद्र, यम, अग्नि तथा वरुण आदि देवता भी इस स्वयंवर में आए। ये लोग जब आ रहे थे तो नल भी आते हुए मिले। देवताओं ने नल से अपना परिचय दिया और दमयंती से जाकर अपने सम्बन्ध में कहने को कहा। नल ने सचमुच जाकर दमयंती को बहुत समझाया पर दमयंती ने नहीं माना और तब सच्चाई के साथ नल ने देवताओं से आकर जो बात हुई थी बतला दी। सीधे काम न बनते देख देवताओं ने एक चाल चली। वे सभी नल का स्वरूप धारण कर स्वयंवर में उसके पास बैठ गए। दमयंती जब सामने आई तो उसके लिए नल को पहचानना एक समस्या हो गई, पर फिर उसने दो बातों से देवताओं को पहचान लिया १. देवताओं की छाया नहीं होती, २. देवताओं का पैर जमीन से कुछ ऊपर रहता है। पहचाने के बाद दमयंती ने नल के गले में जयमाल डाल दी और विवाह हो गया। कलि भी स्वयंवर में आए थे वे नल और दमयंती पर बहुत रुष्ट हुए और ११ वर्ष तक नल के शरीर में घुसने का अवसर देखते रहे पर उन्हें कोई अवसर न मिला। इसी बीच नल को इंद्रसेन और इन्द्रसेना नाम की दो संतानें हुई। १२वें वर्ष कलि ने नल के शरीर

में प्रवेश किया और फलस्वरूप नल अपने भाई पुष्कर के साथ जूआ खेलकर अपना पूरा राज्य हार गए और अपने पुत्र और पुत्री को ननिहाल भेज दमयंती के साथ जंगल की शरण ली। उनका मस्तिष्क यहाँ तक खराब हुआ कि एक दिन जङ्गल में दमयंती को सोती छोड़ वे आगे बढ़ गए। दमयन्ती सोकर उठी तो बहुत रोयी और अंत में परेशान होकर अपने माता के घर चली गई। इधर नल को कर्कोटक नाम के एक सर्प ने काटकर विरूप कर दिया तथा उसके विष के प्रभाव से कलि का प्रभाव नष्ट होने लगा। अंत में नल ने अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ नौकरी कर ली। ये अश्व-विद्या में बड़े पटु थे। वहाँ नल ने ऋतुपर्ण को अश्वविद्या सिखाई तथा स्वयं उनसे द्यूत सीखा। कुछ दिन बाद दमयंती को पता चला कि ऋतुपर्ण के यहाँ कोई अश्वविद्या विशारद आया है। उसे विश्वास हो गया नल के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता। दमयन्ती के पिता ने धोखे से नल को बुलाने के लिए ऋतुपर्ण के यहाँ कहलवाया कि मेरी लड़की का स्वयंवर है। ऋतुपर्ण नल को सारथी बना वहाँ तुरन्त आ पहुँचे और इस प्रकार नल-दमयन्ती मिलन हुआ। नल ने जो द्यूत में दक्ष हो गया था पुष्कर को फिर जुआ खेलने को बुलाया और अपना राज्य जीत लिया। दे० 'कर्कोटक'। २. रामकी सेना का एक बन्दर जो नील का साथी था। दे० 'नील'।

नलकुबर—कुबेर का पुत्र। इसका एक भाई मणिग्रीव था। एक बार नारद ने इन दोनों को शराब पीकर तपोवन में स्त्री-क्रीड़ा करते देख शाप दिया कि तुम लोग अर्जुन वृक्ष हो जाओ। फलस्वरूप नलकुबर और मणिग्रीव दोनों वृन्दावन में यमलार्जुन हो गए। कृष्ण ने इन दोनों को उखाड़ कर द्वापर में इनका उद्धार किया। दे० 'यमलार्जुन' 'रंभा'।

नहुष—अयोध्या का एक प्रसिद्ध राजा जो आयु या अम्बरीष का पिता था। वृत्रासुर ब्राह्मण था। अतः उसे मारने से इन्द्र को जब ब्रह्म-

हत्या लगी तो नहुष को उनकी अनुपस्थिति काल में इन्द्र बनाया गया। एक अन्य मत से नहुष ने तपस्या के बल से इन्द्रत्व प्राप्त किया था। इन्द्र होने के बाद नहुष ने इन्द्राणी शची को अपनी स्त्री बनाना चाहा। यह सुन बृहस्पति की राय से इन्द्राणी ने इनसे सप्तर्षियों द्वारा ढोई गई पालकी पर बैठ कर आने को कहा। नहुष ने ऐसा ही किया और सप्तर्षियों को शीघ्रता से चलने के लिए सर्पः सर्पः कहा। इस पर अगस्त्य मुनि ने शाप दिया कि तुम सर्प हो जाओ। नहुष सर्प हो गए। एक अन्य मत से पालकी पर बैठे राजा नहुष का पैर अगस्त्य से छू गया और इसी कारण उन्हें यह शाप मिला। अगस्त्य ने प्रार्थना करने पर यह भी कहा कि तुम्हारी गति तुम्हारे वंश के एक युधिष्ठिर नामक राजा से होगी। बनवास के समय इसी सर्प (नहुष) ने भीम को पकड़ लिया और जब युधिष्ठिर आए तो उन्होंने भीम को छुड़ाकर नहुष को शापमुक्त किया।

नाग—कश्यप के पुत्र आठ प्रमुख सर्प नाग कहलाते हैं। इनके नाम हैं—अनन्त, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शङ्ख तथा कुलिक। तीनों लोकों में इनके उपद्रव करने पर ब्रह्मा ने इन्हें शाप दिया कि जनमेजय के नाग में वे सपरिवार विनाश को प्राप्त होंगे। किन्तु इनकी प्रार्थना से द्रवित हो ब्रह्मा ने शाप का परिहार कर दिया। जिस दिन ये ब्रह्मा से प्रार्थना करने गये थे श्रावण शुक्ला पंचमी था, जिसे आजकल लोग नागपंचमी कहते हैं।

नाभाग—वैवस्वत मनु के पुत्र नभग इनके पिता थे। इनके पुत्र का नाम अम्बरीष था। एक मत के अनुसार ये भगीरथ के पुत्र थे। इनके नाभागारिष्ट, नाभा, नेदिष्ट तथा नाभागदिष्ट आदि अन्य नाम भी मिलते हैं।

नामदेव—दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। ये जाति के छीपी थे। कबीर की भाँति इनका भी जन्म विधवा कन्या से हुआ था। इनकी माता बड़ी पवित्र और भक्त थीं। किसी के आशीर्वाद के फल-

स्वरूप ही इनसे नामदेव का जन्म हुआ था। नामदेव के सम्बन्ध में भी बहुत-सी विचित्र कथाएँ प्रसिद्ध हैं।

एक बार नामदेव की माता ने उन्हें पूजा का काम सौंपा। नामदेव ने भोग लगाने को कटोरे में दूध रक्खा। उनका विश्वास था कि मूर्ति सचमुच दूध पीती होगी। भोग की घंटी बजाने पर जब मूर्ति ने दुग्धपान न किया तो नामदेव ने समझा कि भगवान् अप्रसन्न हैं। वे तीन दिन तक उसी प्रकार प्रतीक्षा करते रहे और अन्त में मूर्ति ने थोड़ा दूध पी लिया और शेष उन्हें प्रसाद-रूप दे दिया।

नामदेव एक बार किसी मेले में गए। वहाँ किसी मन्दिर में भगवान के दर्शन के लिए घुसे तो चोरी के डर से इन्होंने अपना जूता कमर में खोंस लिया। ज्यों ही मन्दिर में पहुँचे किसी ने जूता देख लिया और इन्हें बाहर कर दिया। ये मन्दिर के पीछे जाकर पश्चात्ताप करने लगे। कहते हैं कि मन्दिर जड़ से घूम गया और उसका दरवाजा नामदेव के सामने हो गया।

एक बार एक राजा ने नामदेव को बुलाया और कहा कि तुम अपने को बहुत सिद्ध समझते हो, हमारी एक गाय मर गई है उसे जिला दो नहीं तो मार डाले जाओगे। नामदेव ने बड़ी विनती की कि वे यह सब बिल्कुल नहीं जानते, पर राजा ने एक न सुनी और अंत में नामदेव ने भगवान से प्रार्थना कर गाय को जिला दिया।

एक बार नामदेव के घर में आग लगी और घर जलने लगा। कहा जाता है कि जो चीजें घर के बाहर थीं उन्हें भी भगवान की आज्ञा समझ नामदेव जलते घर में जलने के लिए डालने लगे। उनका यह भाव देख भगवान् ने अपने हाथों उनके लिए दूसरा घर बना दिया।

नारद—प्रसिद्ध देवर्षि जो चारों ओर विचरने तथा चुगली करने के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी गणना प्रजापतियों में भी होती है। इनके

जन्म के विषय में कई मत मिलते हैं। अधिक प्रचलित मत यह है कि ये ब्रह्मा के मानसपुत्र थे। ब्रह्मा के कार्य में उत्पन्न होते ही नारद ने कुछ बाधा उपस्थित की। अतः उन्होंने इन्हें एक स्थान पर स्थिर न रह कर घूमते रहने का शाप दिया। नारद ने इस शाप के कारण घूम-घूमकर कितनों का घर बिगाड़ा यह गणना से परे है। नारद झगड़ा लगाने में इतने तेज हैं कि दोनों पक्षों को उलझाना ही इनका प्रधान कार्य रहा है। भोजपुरी कहावत 'चोर से कहें चोरी कर, साहु से कहें जाग' इन पर पूर्ण चरितार्थ होती है। कृष्ण जब पैदा हुए तो नारद कंस को तुरंत सूचना दे आए और बाद में कृष्ण के भी मित्र हो गये। नारद के कृत्यों से पौराणिक कथाएँ भरी पड़ी हैं। ये संगीत विद्या के बहुत बड़े विशारद थे तथा एक जन्म में गंधर्व भी हुए थे। इन्हें १२ वर्ष तक स्त्री भी बनना पड़ा था।

एक बार नारद विष्णु के यहाँ गए और बात ही बात में कहने लगे कि मैंने काम को जीत लिया है। उन्होंने अपनी एक घटना भी सुनाई जिसमें उन्होंने काम पर विजय पाई थी। यह सुन कर विष्णु ने सोचा कि नारद के हृदय में अभिमान आ गया है अतः उसे दूर करना चाहिए। जब नारद विष्णु के यहाँ से चले तो विष्णु की माया से उन्हें रास्ते में एक नगर मिला जहाँ के राजा ने उन्हें अपनी लड़की दिखाई और उसका भविष्य पूछा। राजा ने यह भी कहा कि कल उसका स्वयंवर है। नारद लड़की के सौंदर्य पर मोहित हो गए और स्वयंवर में उसे जीतने की सोचने लगे। अंत में बहुत सोच विचार कर वे विष्णु के यहाँ गए और उन्हें पूरी कथा सुनाकर उनका रूप माँगा। विष्णु ने कहा कि ठीक है आप जाइए मैं वही करूँगा जिसमें आपका हित हो। नारद दूसरे दिन स्वयंवर में पहुँचे। विष्णु ने उन्हें बन्दर का रूप दे दिया था। सारा मंडप उनके रूप को देखकर मुस्करा रहा था और वे अपने को सब से सुन्दर समझ तन कर यह सोचे बैठे थे कि लड़की उन्हें

ही वरेगी। विष्णु भी वेष बदल कर वहाँ पहुँचे थे। इधर उधर घूम-घामकर राजकुमारी ने विष्णु के गले में जयमाला डाल दी। नारद बड़े विकल हुए। उनकी दशा और भी विचित्र हो गई और यह देख शिव के गणों ने मुस्कराते हुए उन्हें अपने कमंडल में अपना मुँह देखने को कहा। जब नारद ने अपना मुँह देखा तो विष्णु पर बहुत रुष्ट हुए। गणों को तो उसी क्षण राक्षस हो जाने का शाप दिया और विष्णु के यहाँ जाकर उन्हें भी शाप दिया—'स्त्री के बिना मैं दुखी हुआ हूँ तो तुम भी कभी स्त्री के वियोग में (रामावतार) दुखी होगे। और मुझे बंदर बनाया है तो बंदरों से ही तुम्हें सहायता (हनुमान आदि) लेनी होगी।' शाप स्वीकार कर विष्णु ने अपने बल से नारद का अज्ञान दूर कर दिया तब नारद उनके चरणों पर गिर पड़े।

नारद की और भी बहुत सी कथाएँ हैं।

नारायण—नर के बड़े भाई एक ऋषि। देवी भागवत के अनुसार नर और नारायण धर्म तथा दक्ष की कन्या के पुत्र थे। जब दक्ष प्रजापति अपना यज्ञ कर रहे थे, तो नर और नारायण दोनों गंधमादन पर्वत पर तपस्या कर रहे थे। सती जब यज्ञ कुण्ड में कूदीं तो महादेव ने अपना त्रिशूल यज्ञ विध्वंस करने के लिए फेंका। शूल यज्ञ विध्वंस कर बड़े जोर से नारायण की छाती पर गिरा पर नारायण इतने जोर से गरजे कि भयभीत होकर शूल लौट गया। इस पर महादेव बहुत बिगड़े और नारायण के पास आ उनसे युद्ध करने लगे। अन्त में ब्रह्मा ने महादेव को आकर बतलाया कि नारायण भगवान ही हैं इनसे न लड़ो। तब महादेव ने क्षमा माँगी और नारायण को प्रसन्न किया। एक बार इंद्र ने इन लोगों की तपस्या से डर कर स्वर्ग की सुन्दरतम अप्सराओं को इनके पास भेजा। नारायण ने अप्सराओं तथा इंद्र को लज्जित करने के लिए अपने उरु से उर्वशी नाम की एक अप्सरा उत्पन्न की तथा उसके साथ ही इंद्र की अप्सराओं की सेवा के लिए उनसे भी सुन्दर सहस्रों अप्स-

राएँ उत्पन्न कीं। इस पर वे अप्सराएँ बहुत लज्जित हुईं और अन्त में सभी अप्सराओं ने मिल कर वर माँगा कि 'हे नारायण ! आप मेरे पति हों'। नारायण ने स्वीकार किया। द्वापर में नर अर्जुन हुए और नारायण कृष्ण तथा ये अप्सराएँ गोपियाँ हुईं। दे० 'नर'।

निकुंभ—(१) कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण के प्रधान मंत्रियों में था। लंका के महायुद्ध में वह हनुमान के साथ मारा गया।

(२) एक राक्षस जिसे ब्रह्मा ने वरदान दिया था कि तुम्हारी मृत्यु केवल विष्णु के हाथ से होगी। यह बड़ा ही मायावी था और मनमाना रूप धारण कर सकता था। एक बार कृष्ण के एक मित्र ब्रह्मदत्त की पुत्रियों का इसने हरण कर लिया, जिससे रुष्ट होकर कृष्ण ने इसे मार डाला। यह कथा हरिवंश पुराण में मिलती है। यही सुन्द और उपसुन्द का पिता था।

(३) प्रह्लाद के पुत्र का नाम।

निमि—राजा जनक के एक पूर्वज। एक बार एक यज्ञ के करने लिए इन्होंने वसिष्ठ से कहा पर इंद्र के यहाँ यज्ञ कराने का वचन दे चुकने के कारण वशिष्ठ ने बाद में इनके यहाँ यज्ञ कराने का वादा किया। उनके जाने के बाद और ऋषियों की सहायता से निमि ने यज्ञ आरम्भ करा दिया। इंद्र का यज्ञ समाप्त कर जब वशिष्ठ लौटे तो उन्हें पता चला कि निमि के यहाँ यज्ञ हो रहा है। इस पर वसिष्ठ ने उन्हें शाप दिया कि तुम्हारा यह शरीर न रहेगा। राजा ने भी वसिष्ठ को यही शाप दिया और दोनों का शरीर छूट गया। वसिष्ठ तो मित्रावरुण के वीर्य से पुनः उत्पन्न हुए। इधर यज्ञ करने वाले ऋषियों ने निमि के उसी शरीर को पुनः जीवित करने की कोशिश की पर निमि ने स्वीकार न किया। देवताओं ने तब से उन्हें आदमियों की पलक पर स्थान दे दिया। आज भी कहा जाता है कि पलकों पर राजा निमि हैं। तुलसी ने मानस में लिखा है—मनहु सकुचि निमि तजेउ दृगंचल।

निशुंभ—शुम्भ और निशुम्भ की कथा का उल्लेख पद्म-पुराण, मारकंडेय-पुराण तथा महाभारत आदि में मिलता है। यह एक प्रसिद्ध राक्षस था। इसके पिता का नाम महर्षि कश्यप तथा माता का नाम दनु था। शुम्भ तथा निमूचि (नमुचि) इसके भाई थे। शुम्भ और निशुम्भ शिव भक्त थे। अमर होने के लिए इन्होंने ५००० वर्ष तक कठिन तपस्या की। शिव के प्रसन्न न होने पर ये फिर ८०० वर्ष तक तप करते रहे और अंत में इनके तप से इंद्र का इंद्रासन काँप उठा। देवता लोग डरे कि ये इंद्र का पद ले लेंगे। इस कठिन समस्या पर विचार करने के के लिए देवताओं की सभा हुई और सबके आदेशानुसार इनको तपच्युत करने के लिए रंभा और तिलोत्तमा नाम की दो अप्सराओं को लेकर कामदेव इनके पास पहुँचे। शुम्भ और निशुम्भ अप्सराओं के चंगुल में आ गए और पाँच हजार वर्ष तक भोग करते रहे। उसके बाद उन्हें अपनी गलती ज्ञात हुई तो वे पुनः तप में लगे। एक हजार वर्ष तप कर लेने के बाद शिव प्रसन्न हुए और उन्हें आशीर्वाद दिया कि धन और बल में वे देवताओं से भी आगे रहेंगे। अब क्या था? मदांध होकर इन्होंने इंद्रासन जीत लिया और स्वर्ग के अधीश्वर बन बैठे। देवता लोग आतुर होकर क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पास गए और अंततः महेश ने दुर्गा के समक्ष यह समस्या रखने का परामर्श दिया। देवताओं ने ऐसा ही किया और दुर्गा उनके संहार के लिए तैयार हो गईं।

पहले दुर्गा ने महिषासुर को मार डाला। इसका पता रक्त बीज ने शुम्भ और निशुम्भ को दिया। इन दोनों ने दुर्गा से विवाह का प्रस्ताव किया। दुर्गा ने कहलाया कि जो उन्हें युद्ध में पराजित करेगा उसी से वे विवाह करेंगी। इस पर दोनों ही युद्ध के लिए टूट पड़े धूम्रलोचन, चंड, मुंड तथा रक्त-बीज आदि ने भी शुम्भ-निशुम्भ का साथ दिया। दुर्गा ने पहले तो इनके सहायकों का नाश किया और फिर क्रम

से निशुम्भ और शुम्भ को मार डाला। इंद्र को उनका खोया राज मिल गया।

नील—राम की सेना का एक बन्दर। यह विश्वकर्मा का अंशावतार माना जाता है। नील नल का साथी था और गोदावरी के किनारे रहता था। जब मुनि लोग वहाँ आँख बंद कर पूजा करते थे तो नल नील उनकी शालिग्राम की मूर्तियों को नदी में फेंक दिया करते थे जिससे मुनियों को बड़ी परेशानी होती थी। तङ्ग आकर मुनियों ने शाप दिया कि नल नील के द्वारा पानी में डाले गए पत्थर तैरने लगेंगे। इसी शाप के कारण नल और नील राम की सेना को उतरने के लिए समुद्र पर पुल बना सके। नील वीर भी थे और राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा के लिए ये भी नियुक्त किए गए थे।

नूपुर—इक्ष्वाकु वंश का एक प्राचीन राजा।

नूह—ये आदम सानी या दूसरे आदम भी कहे जाते हैं। जल-प्लावन या सैलाब के समय इन्होंने अपनी नाव पर हर एक जीव का एक-एक जोड़ा रख लिया था। इनकी नाव जूदी नाम के पर्वत की चोटी पर टिकी थी। जल-प्लावन समाप्त होने पर उन्हीं जोड़ों से फिर सृष्टि चली। नूह की उम्र सब से बड़ी कही जाती है। कुछ मतों से ये १४०० वर्ष, १०२० वर्ष या ६५० वर्ष तक जीवित रहे थे।

नृग—एक दानी राजा। एक बार इनकी गायों के समूह में किसी अन्य ब्राह्मण की एक गाय मिल गई और जिसे इन्होंने भूल से एक अन्य ब्राह्मण को हजार गाएँ दान देते समय दे डाला। संयोग से ब्राह्मण ने खोजते-खोजते अपनी गाय उस दूसरे ब्राह्मण की गायों में पहचान ली और दोनों लड़ते हुए नृग के पास आए। नृग ने दोनों को बहुत समझाया और अंत में उस एक गाय के लिए हजार गाएँ देने को तैयार हुए पर दोनों में से किसी ब्राह्मण ने उनकी बात न मानी। इस पर राजा चिंतित हुए और घबरा कर काँपने लगे।

ब्राह्मणों ने रुष्ट होकर कहा—तू ब्राह्मणों को लड़ाकर गिरगिट की तरह सर हिलाता है तो जा एक हजार वर्ष के लिए गिरगिट होगा। मरने के बाद राजा से धर्मराज ने बताया कि आपको पुण्यों के साथ एक शाप भी भोगना है। वे शाप भोगने को पहले तैयार हो गए और एक कुएँ में गिरगिट बन कर रहने लगे। अवधि पूरी होने पर कुछ लड़कों ने इन्हें देखा और कृष्ण से कहा। कृष्ण ने इन्हें कुएँ में से निकाला और इनका उद्धार कर दिव्य विमान पर चढ़ा स्वर्ग भेजा।

नृसिंह—दानव राज हिरण्यकश्यप ब्रह्मा से प्राप्त वर के कारण अभिमानी तथा अत्याचारी हो गया था। साथ ही वह पशु, मनुष्य और देवता तीनों ही से अवध्य था। इससे देवता परेशान होकर विष्णु के यहाँ पहुँचे। उनकी प्रार्थना से हिरण्यकश्यप के वध के लिए विष्णु ने स्वयं उत्पन्न होने की सोची और नृसिंह रूप में एक स्तम्भ से उत्पन्न हुए। हिरण्यकश्यप पहले स्वयं उनको मारना चाहता था परन्तु उन्होंने अपने पंजों से उसको फाड़ डाला। दे० 'हिरण्यकश्यप'।

नैमिषारण्य—गोमती के तट पर प्राचीन काल में यह एक अरण्य (जंगल) था। इसके नाम के सम्बन्ध में दो मत मिलते हैं। देवी भागवत के अनुसार कलि युग के भय से जब ऋषि लोग ब्रह्मा के पास गये और उनसे अपने त्राण की प्रार्थना की तो ब्रह्मा ने एक मनोमय चक्र देकर उन लोगों को उसका अनुसरण करने को कहा। ब्रह्मा ने बतलाया कि चक्र का घेरा (नेमि) जहाँ समाप्त (विशीर्ण) हो वह स्थल ऐसा होगा जहाँ कलि का प्रभाव न होगा। अतः वहाँ तुम लोग वास कर सकते हो। दूसरा मत वाराह पुराण में मिलता है जिसके अनुसार किसी गौरमुख नाम के मुनि ने निमिष मात्र में असुरों की एक बहुत बड़ी सेना को भस्म कर दिया था अतः यह नैमिषारण्य कहलाया। डाउसन ने लिखा है कि सौति मुनि ने इस स्थान पर ऋषियों को एकत्र कर महाभारत की कथा कही थी। आजकल यह स्थान उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में है और

'नीमखार' के नाम से प्रसिद्ध है। यह हिन्दुओं का तीर्थस्थान माना जाता है। विष्णु पुराण में लिखा भी है कि इस क्षेत्र में गोमती में स्नान करने से सारे पापों का नाश हो जाता है।

पंचवटी—एक स्थान है जो नासिक के पास गोदावरी नदी के किनारे है। यहाँ बेल, पीपल, आँवला, वट तथा अशोक—ये पाँच प्रकार के वृक्ष थे अतः इसका नाम पंचवटी पड़ा। एक अन्य मत से यहाँ पाकड़, जामुन, आम, तमाल और वट के वृक्ष थे। रामायण के अनुसार दंडक वन में यह स्थान था। वनवास के समय यहाँ राम ठहरे थे। यहीं सूर्पणखा की नाक कटी थी और सीता का हरण हुआ था।

परशुराम—विष्णु के छठे अवतार। इनका नाम राम था, परशु या फरसा लिए रहने के कारण इन्हें 'परशुराम' कहा गया। ये जाति के ब्राह्मण थे। भृगुवंशी जमदग्नि को उनकी स्त्री रेणुका से ५ पुत्र थे। परशुराम इनमें सबसे छोटे थे। कहते हैं भगवान का अवतार, जब बहुत उत्पात होता है तो उसे शांत करने के लिए होता है। त्रेतायुग के आरम्भ में क्षत्रियों का अत्याचार बहुत बढ़ गया था अतः उसी के लिए परशुराम का अवतार हुआ। (परशुराम के जन्म के सम्बन्ध में देखिए 'जमदग्नि) परशुराम ने अर्जुन को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी थी तथा भीष्म से इनका गदायुद्ध हुआ था।

परशुराम शिव के भक्त थे। जब उन्होंने सुना कि राम ने शिव का धनुष जनकपुर में तोड़ डाला है तो उन्हें बड़ा क्रोध आया और राम से लड़ने को उद्यत हुए। राम को उन्होंने अपना धनुष चढ़ाने को दिया और कहा कि यदि न चढ़ा सकोगे तो युद्ध करूँगा। राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया और परशुराम के लोकों का हरण कर लिया। परशुराम को हारना पड़ा।

एक दिन इनकी माता रेणुका नहाने गई थी। वहाँ चित्ररथ को अपनी स्त्री के साथ क्रीड़ा करते देख उसमें भी वासना का उदय हुआ

और उसी दशा में वह घर आई। जमदग्नि योग से यह बात जान गए और क्रोधित होकर अपने पाँचों पुत्रों से बारी-बारी से उसका सर काटने की आज्ञा दी। और तो किसी ने स्नेह-वश यह नहीं किया, पर परशुराम ने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी माता का सर काट डाला। इस पर जमदग्नि ने प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा। परशुराम ने माता को पुनर्जीवित करने, इस घटना की याद किसी को न रहने, अपने को परमायु वाला बनाने तथा युद्ध में अद्वितीय होने का वर माँगा। उनके पिता ने उन्हें चारों वर दे दिए।

एक बार कार्तवीर्य नामक एक राजा ने परशुरामादि की अनुपस्थिति में उनके आश्रम को उजाड़ डाला जिसके प्रतिशोध के लिए बाद में परशुराम ने उनकी सहस्र भुजाओं (इनका नाम सहस्रार्जुन भी था) को काट डाला। इस पर कार्तिवीर्य के कुटुम्बियों ने एक दिन जमदग्नि को मार डाला। इस बार परशुराम का क्रोध इतना भड़का कि उन्होंने सारे क्षत्रियों को मार डालने का प्रण किया, और केवल एक बार नहीं वरन् २१ बार भूमंडल के क्षत्रियों को मार डाला और अंत में सारी पृथ्वी कश्यप को दान दे दी।

कहा जाता है कि परशुराम आज भी कहीं तप कर रहे हैं और कलियुगांत में अवतरित होने वाले कल्कि को ये ही शिक्षा देंगे।

पराशर—एक ऋषि। इनके पिता का नाम वसिष्ठ था। पर अन्य मत से ये वसिष्ठ के पौत्र और शक्ति के पुत्र थे। इनके जन्म के पूर्व ही शक्ति का देहांत हो गया था अतः वसिष्ठ ने इन्हें पाला-पोसा। पराशर के समागम से सत्यवती को कृष्ण द्वैपायन या व्यास नाम का प्रसिद्ध पुत्र हुआ था।

परीक्षित—उत्तरा का पुत्र और अर्जुन का पौत्र जो अपने पिता अभिमन्यु के मर जाने के बाद पैदा हुआ था। अश्वत्थामा ने पांडु वंश का नाश करने के लिए ऐषीक नाम के अस्त्र से परीक्षित को गर्भ में ही

मार डाला था और इस प्रकार इनका मृत शव पैदा हुआ, पर कृष्ण के आशीर्वाद से ये जी उठे। पांडव जब गलने चले गए तो परीक्षित राजा हुए। इनके ही राज्यकाल में द्वापर का अंत और कलियुग का प्रारम्भ हुआ। जब परीक्षित ने सुना कि उनके राज्य में कलियुग आ गया है तो उसे भगाने के लिए खोजने लगे। अंत में उन्हें कलियुग मिल गया और उसे उन्होंने बहुत डाँटा और फिर जुआ, स्त्री, शराब, हिंसा और स्वर्ण केवल इन ५ स्थानों पर उसे रहने की आज्ञा दी। कलि को यह बुरा लगा और वह परीक्षित को समाप्त करने को सोचने लगा। एक दिन राजा के मुकुट के सोने में कलि घुस गया। वे शिकार खेलने गए और वहाँ एक मुनि से शिकार के बारे में पूछा। मुनि मौन होने से कुछ न बोल सके। इस पर क्रोधित हो सर पर कलि के सवार होने के कारण राजा ने मुनि के गले में एक मरा सर्प डाल दिया। इस पर मुनि के पुत्र शृङ्गी ने शाप दिया कि सर्प डालने वाले को ७ दिन के भीतर तक्षक सर्प काटेगा। राजा ने भी शाप सुना और अपने पुत्र जनमेजय को गद्दी पर बिठा, मरने के लिए तैयार हो शुकदेव से भागवत की कथा सुनने लगे। अंत में तक्षक के काटने से उसकी मृत्यु हुई। कहा जाता है कि परीक्षित के मरने के बाद कलि को रोकने वाला कोई न रहा और उसने स्वतन्त्रता-पूर्वक अपना जाल फैला लिया। दे० 'तक्षक'।

पांडु—अंबालिका के गर्भ से उत्पन्न पांडवों के प्रसिद्ध पिता। इनके पिता का नाम विचित्रवीर्य था। थोड़ी अवस्था में ही क्षय रोग से पीड़ित होकर विचित्रवीर्य मर गए। उन्हें कोई संतान न थी अतः राज्य को चलाने के लिए अंबालिका की सास सत्यवती ने व्यास को अंबालिका के साथ नियोग कर पुत्र उत्पन्न करने की आज्ञा दी। नियोग के समय शर्म या भय से अंबालिका पीली पड़ गई थी अतः पांडु पीले रङ्ग के पैदा हुए और इसी कारण उनका नाम पांडु पड़ा। इनका विवाह कुन्तिभोज की गोद ली गई पुत्री कुन्ती तथा मद्रकन्या माद्री से

हुआ था। एक बार ये शिकार खेलने गए और वहाँ मैथुन करते हुए एक हिरन को मार डाला। हिरन-हिरनी किमिंदय ऋषि और उनकी पत्नी थे। उन्होंने राजा को शाप दिया कि तुम जब भी किसी के साथ भोग करोगे मर जाओगे और जिसके साथ भोग करोगे तुम्हारे साथ सती होगी। इस शाप के कारण वे अपनी स्त्रियों से मैथुन न कर सकते थे। फल यह हुआ कि निःसंतान रहने की नौबत आ गई। कुन्ती देवों को बुलाने का मन्त्र जानती थी अतः उसने पांडु की आज्ञा से क्रम से धर्म, वायु और इन्द्र को बुलाया और युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को पैदा किया। उसी के बुलाने से अश्विनीकुमार भी आए जिनसे माद्री को नकुल सहदेव पैदा हुए। एक बार बसंत का दिन था। पांडु अत्यन्त कामातुर हो गए और माद्री के मना करने पर भी न माने तथा संभोग किया। शाप के फलस्वरूप तुरन्त उनका देहांत हो गया और माद्री भी उनके साथ सती हो गई। दे० 'कुन्ती' 'माद्री' 'अंबालिका'।

पाताल—पुराणों के अनुसार पृथ्वी के नीचे के ७ लोक। सात पातालों में अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल का नाम लिया जाता है। पाताल को प्रायः लोग बुरा समझते हैं पर इन सभी में स्वर्ग से भी अधिक सुख एवं वैभव है। सात पातालों में क्रम से बल, शंकर, बलि, मय, तक्षक, पाणि तथा वासुकि का आधिपत्य है। सातवें पाताल 'पाताल' के ३०,००० योजना नीचे शेष भगवान रहते हैं।

पारिजात—इंद्र के उपवन नन्दन कानन का प्रधान वृक्ष। यह समुद्र-मंथन के समय निकला था और इंद्र को दिया गया था। इसके पुष्पों की विशेषता यह है कि जो जैसी भी गंध चाहे इससे पा सकता है। एक बार कृष्ण अपनी स्त्री सत्यभामा के साथ नन्दन कानन देखने गए। सत्यभामा ने इस वृक्ष को लेना चाहा, इस पर कृष्ण और इंद्र में युद्ध हुआ और अंत में इंद्र को हराकर कृष्ण इसे द्वारका ले गए।

कृष्ण के मरने के बाद यह फिर नन्दन कानन में लाया गया। कई बार दानवों और राक्षसों ने इस वृक्ष को ले जाने का प्रयास किया था।

पार्वती—शंकर की स्त्री तथा गणेश की माता। सती जब दक्ष प्रजापति के यज्ञकुण्ड में जल गईं (दे० 'सती') तो उनका दूसरा जन्म हिमवान या हिमालय पर्वत की स्त्री मेनका या मेना (मैना) के गर्भ से हुआ। पर्वत की पुत्री होने से इनका नाम पार्वती पड़ा। इन्होंने पुनः शंकर को पतिरूप में पाने के लिए बड़ी साधना की। अन्न-जल छोड़ कुछ दिन पत्ते खाकर रहीं और फिर पत्ता भी छोड़ यों ही रहने लगीं जिसके कारण उनका नाम अपर्णा पड़ा। इनकी अप्रतिम प्रतिज्ञा देख लोग दङ्ग रह गए। सप्तर्षि लोग शङ्कर के प्रति इनके अटल प्रेम की परीक्षा लेने आए जिसमें ये पूर्ण उतरीं और अंत में शङ्कर से इनका विवाह हुआ। पार्वती ही दुर्गा तथा देवी आदि भी कही जाती हैं। [इस सम्बन्ध में 'महादेव' 'कामदेव' 'गणेश' 'कार्तिकेय' 'सती' तथा 'दुर्गा' भी द्रष्टव्य हैं।

पिंगल – छन्द शास्त्र के रचयिता एक ऋषि। एक मत के अनुसार ये पाणिनि के छोटे भाई थे। किंतु छंदशास्त्र में प्राकृत का वर्णन भी है, जिसका विकास पाणिनि के बहुत बाद हुआ, अतएव इनका काल पाणिनि के बाद होना चाहिए।

पिंगला—एक पौराणिक वेश्या। यह भागवतानुसार विदेह नगर में रहती थी। एक दिन इसने एक सुन्दर धनिक को जाते देखा और उसके लिए अधीर हो उठी। बड़ी रात तक उसकी प्रतीक्षा करती रही पर अंत में जब वह न आया तो उसे ज्ञान हुआ कि आशा ही सब दुःखों का मूल है। यदि वह आशा न करती तो उसे उतनी रात तक न जागना पड़ता। तभी से उसने भगवान में चित्त लगाया और सुखी हो गई। दे० 'गणिका'।

पीपा—एक मध्ययुगीन भक्त और राजा। पीपा राजस्थान के

गागरौनगढ़ के राजा थे। इनका समय १५ वीं सदी पूर्वार्द्ध के आस-पास है। एक बार पीपा से किसी साधु की सेवा में कुछ भूल हो गई जिससे भगवती ने उन्हें राज्य छोड़ भक्त हो जाने का स्वप्न दिखाया और तदनुसार पीपा राज्य छोड़ काशी में रामानन्द से दीक्षा लेकर रहने लगे। बाद में रामानन्द के ही आदेश से वे पुनः गागरौनगढ़ लौट आए। पीपा की प्रार्थना पर एक बार रामानन्द उनके राज्य में आए और वहाँ से पीपा अपनी स्त्री सीता को ले रामानन्द के साथ द्वारका गए। रामानन्द के लौट आने पर भी पीपा अपनी स्त्री के साथ वहीं रहने लगे। कहा जाता है कि एक दिन पीपा अपनी स्त्री के साथ समुद्र में कूद पड़े और दिव्य द्वारावती जा भगवान का दर्शन किया और फिर सात दिन बाद लौटे। वे वहाँ एक गाँव में रहते थे। एक बार पीपा ने बहुत सी स्वर्ण मुद्राएँ एक पिटारी में देखीं पर अलोभ के कारण उन्होंने उन्हें लिया नहीं। रात में चोरों ने उस पिटारी को साँप की पिटारी समझ उठाया और इनके घर फेंक आए। इस प्रकार न चाहते पर भी वह ईश्वर की कृपा से इनके पास चला आया। पीपा ने वह सारा रुपया साधुओं की आवभगत में व्यय कर दिया।

पुरु—राजा नहुष के पौत्र और ययाति के पुत्र। ययाति की दो पत्नियाँ थीं—देवयानी और शर्मिष्ठा। देवयानी से उन्हें दो पुत्र थे और शर्मिष्ठा से तीन। शर्मिष्ठा के सबसे छोटे पुत्र का नाम पुरु था। (दे० 'ययाति' और 'देवयानी') देवयानी के पिता शुक्राचार्य ने जब शर्मिष्ठा से मैथुन करने के कारण (शर्मिष्ठा ययाति की यथार्थतः स्त्री न होकर उनकी स्त्री देवयानी की दासी थी) पुरु को वृद्ध हो जाने का शाप दिया तो अपने पुत्र पुरु से ही यौवन प्राप्त कर बहुत दिनों तक ययाति सुख भोगते रहे। ययाति के वन में चले जाने पर पुरु राजा हुए। दे० 'ययाति'।

पुरुरवा—एक प्राचीन राजा। कुछ दिनों के लिए चंद्रमा ने

बृहस्पति की स्त्री तारा को अपने घर रख लिया था जहाँ तारा के गर्भ से चंद्रमा को बुध नामक पुत्र पैदा हुआ। बुध का विवाह इला से हुआ था। पुरुरवा, बुध और इला के पुत्र थे। एक बार उर्वशी अप्सरा पृथ्वी पर आई और पुरुरवा उसे देखकर मोहित गया। एक अन्य मत से इंद्र की सभा में नाचते समय उर्वशी पुरुरवा पर मोहित हो गई जिससे रुष्ट हो इंद्र ने उर्वशी को पृथ्वी पर आने का शाप दिया। उर्वशी ने ३ शर्तों पर पुरुरवा के साथ विवाह किया। १. यदि उर्वशी काम से उत्तेजित न हो तो उसके साथ संभोग न किया जाय। २. वह पुरुरवा को कभी भी पूर्ण नग्न न देखे। ३. उसकी चारपाई के पास दो मेढ़े सर्वदा बँधे रहें। बहुत दिन बाद जब गंधर्वों को उर्वशी के बिना कष्ट होने लगा तो उन्होंने विश्वावसु नामक गंधर्व को उर्वशी को शाप-मुक्त कर लाने के लिए पृथ्वी पर भेजा। इसने चुपके से जाकर उर्वशी के मेढ़ों को चुरा लिया और भागा। पुरुरवा उस समय नंगे थे पर मेढ़ों को जाते देख अपने को रोक न सके और उसी दशा में दौड़े। उन्हें नङ्गा देखते तथा मेढ़ों को चारपाई से अलग होते ही उर्वशी गंधर्वलोक चली गई। उस समय उर्वशी गर्भवती थी। गंधर्वलोक पहुँचने पर उसने प्रसव किया और लड़कों को लेकर राजा के पास एक रात के लिए फिर आई थी। इन लड़कों के नाम आयु, अमावसु, विश्वायु, श्रुतायु, दृढ़ायु, बनायु तथा शतायु थे। एक अन्य मत से लड़कों की संख्या ६ थी। दे० 'उर्वशी'।

पुरोचन—दुर्योधन का एक दुष्ट कर्मचारी तथा मित्र। इसी ने दुर्योधन की आज्ञा से वारणावत नगर में लाक्षागृह बनवाया था और पांडवों को उसमें शरण दी थी। विदुर के संकेत से भीम को सब ज्ञात हो गया। उन्होंने लाक्षागृह तथा पुरोचन के घर में आग लगा दी और अपनी माता तथा भाइयों को लेकर सुरङ्ग के रास्ते से निकल आए। पुरोचन अपने घर में जल गया।

पुलस्त्य—एक प्रजापति जो ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इनकी गणना सप्तर्षियों में भी होती है। इनके द्वारा ही बहुत से पुराण मनुष्यों तक आए। ब्रह्मा से लेकर इन्होंने विष्णु पुराण पराशर को दिया जिनसे मनुष्यों ने पाया। विश्रवा मुनि इनके पुत्र थे जिनकी कुबेर; रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण तथा सूर्पणखा आदि सन्तानें प्रसिद्ध हैं।

पुलोम—इंद्र की स्त्री शची का पिता जो एक दानव था। पहले इसे पता नहीं था कि इंद्र इसकी पुत्री के पति हो चुके हैं। जब सुना कि इंद्र ने इसकी पुत्री के साथ संभोग किया है, तो यह बड़ा रुष्ट हुआ। इंद्र को शाप देने चला, इसी बीच इंद्र ने इसे मार डाला।

पुष्कर—(१) निषादराज नल के छोटे भाई। कलि की सहायता से इन्होंने नल का राज्य जुए में जीत लिया था। अंत में नल ने फिर जुए में इन्हें परास्त किया।

(२) राम के पुत्र कुश के वंशज। इनके पुत्र का नाम अंतरिक्ष था।

(३) अजमेर के निकट स्थित एक तीर्थस्थान। महाभारत में भी पुष्कर का उल्लेख मिलता है। पुराणों के अनुसार एक बार ब्रह्मा यज्ञ करने के लिए उपयुक्त स्थान खोज रहे थे। इस रमणीय स्थान में आकर उनके हाथ का कमल गिर पड़ा। देवगण कमल के गिरने के शब्द को सुनकर बहुत भयभीत हुए। वास्तव में ब्रह्मा ने उस कमल के बज्रनाम नामक राक्षस का वध किया था जो तपस्या के बल पर देवताओं का संहार करना चाहता था। जिस स्थान पर यह कमल गिरा था उसीका नाम पुष्कर हुआ।

(४) कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

पुष्कल—भरत और मांडवी के दो पुत्रों में से एक। राम के अश्वमेघ यज्ञ में ये भी अश्व की रक्षा के लिए सेना के साथ गये थे। लव ने इन्हें पराजित किया। इनकी पत्नी का नाम कांतिमती था।

पुष्पक—कुबेर का आकाशगामी रथ। इसे पुष्पक रथ या पुष्पक

विमान भी कहते हैं। रावण ने इसे कुबेर से छीन लिया था। रावण का वध करने के बाद राम इसी पर चढ़कर अयोध्या गए। वहाँ जाकर उन्होंने इसे फिर कुबेर को लौटा दिया। इस विमान की विशेषता यह थी कि इस पर स्थान की कमी न होती थी। जितने भी आदमी चाहें बैठ सकते थे। यह स्फटिक मणि का बड़ा सुन्दर बना था। एक मत से मय दानव ने इसे बनाया था।

पुष्पमित्र—इनकी उत्पत्ति यज्ञ से मानी जाती है। कहा जाता है कि जन्म के समय ये सोलह वर्ष के नवयुवक से लगते थे।

पूतना—द्वापर की एक प्रसिद्ध राक्षसी। कंस ने इसे बाल कृष्ण का संहार करने के लिए भेजा था। यह अपने स्तनों को विषाक्त कर कृष्ण को दूध पिलाने गई पर कृष्ण पर विष का प्रभाव बिल्कुल न हुआ। दूध के बहाने उन्होंने इसका सारा रक्त चूस लिया और यह मर गई। मरते समय इसने अपना आकार बहुत बढ़ा लिया था और मरकर जहाँ यह गिरी जमीन धँस गई थी। दे० 'अघासुर'।

पृथा—पांडवों की जननी कुन्ती का ही एक अन्य नाम। महाराजा कुन्तीभोज ने राजा शूरसेन से इस कन्या को गोद लिया था।

पृथु—प्राचीन काल में वेन नाम का एक बड़ा अत्याचारी राजा था। उसने अपने राज्य में सारे धर्म-कर्म बन्द करा दिए। ब्राह्मणों ने उसे इस पर शाप दिया और वह मर गया। मरने के बाद लोगों को शासन की चिन्ता हुई। वेन को कोई सन्तान न थी। ऋषियों ने वेन के मृत शरीर को हिलाना आरम्भ किया। सर्वप्रथम उसकी जाँघ से एक बौने और काले व्यक्ति की उत्पत्ति हुई जो भीलों का राजा हुआ। उसके बाद वेन के हाथ से 'पृथु' नामक धर्मात्मा राजा और उनकी स्त्री की उत्पत्ति हुई। पृथु पृथ्वी भर के स्वामी हुए। पृथ्वी उस समय कुपित होकर लोगों को अन्नादि नहीं देती थी। पृथु ने पृथ्वी को मारने के लिए धनुष उठाया। इस पर पृथ्वी गाय का रूप धर उनकी शरण में आई और

पृथु ने मनु को बछड़ा बनाकर पृथ्वी से औषधियाँ आदि दुहीं। ऋषियों ने वेदमय दूध इसी के थन से निकाला और फिर विभिन्न योनियों ने अपनी-अपनी इच्छानुसार विभिन्न वस्तुएँ पृथ्वी से लीं। इसके राज्य में पृथ्वी फिर से सबका भरण-पोषण करने लगी।

पृथु ने ९९ यज्ञ करने के बाद १००वाँ यज्ञ जब किया तो इन्द्रासन छिन जाने के भय से इन्द्र यज्ञ का घोड़ा लेकर भागा पर पृथु ने अपना घोड़ा छीन लिया और इन्द्र को जलाना चाहा। संयोग से ब्रह्मा ने दोनों में सन्धि करा दी। अन्त में पृथु अपनी स्त्री के साथ तप करने चले गए।

पृथु की गणना भगवान् के २४ अवतारों में होती है।

पृथ्वी—भूमण्डल। एक मत से इसकी उत्पत्ति मधुकैटभ के मेद से मानी जाती है जिससे इसका नाम मेदिनी पड़ा। मतांतर से इसकी उत्पत्ति विराट पुरुष के मल से हुई। महाराज पृथु द्वारा प्रतिष्ठित होने के कारण इसका नाम पृथ्वी पड़ा।

प्रतर्दन—काशी के राजा दिवोदास के पुत्र। वीतहव्य नामक एक राजा ने जब दिवोदास के पूरे वंश का नाश कर दिया तो भृगुमुनि से दिवोदास ने एक पुत्रेष्टि-यज्ञ करवाया और यज्ञ के फलस्वरूप प्रतर्दन पैदा हुए। प्रतर्दन अपने वंश के शत्रु वीतहव्य से बदला लेने गए तो वीतहव्य ने डर कर भृगुमुनि की शरण ली। मुनि ने उसे ब्रह्मर्षि बना दिया।

प्रतर्दन का नाम ऋतध्वज भी है। मारकंडेय पुराण में इनके विषय में एक लम्बी कथा मिलती है। इस पुराण के अनुसार इनके पिता का नाम शत्रुजित था। उनकी आज्ञा से प्रतर्दन गालव के यज्ञ की रक्षा करते थे। एक दिन वज्रकेतु के पुत्र पातालकेतु नामक असुर शूकर रूप धर कर यज्ञ विध्वंस करने आया। प्रतर्दन ने पीछा किया और पीछा करते पाताल में पहुँचा तो वहाँ प्रसिद्ध गंधर्व विश्वासु की कन्या मदालसा

मिली, जिसे पातालकेतु उठा लाया था। पातालकेतु को मारकर प्रतर्दन मदालसा को ले आए और उससे विवाह किया। कुछ दिन बाद पिता की आज्ञा से प्रतर्दन पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने गया। रास्ते में पातालकेतु का भाई तालकेतु अपने भाई का बदला लेने आया। उसने मुनि का रूप धारण कर प्रतर्दन से यज्ञार्थ धन के लिए उसका हार माँगा। प्रतर्दन ने दे दिया। तालकेतु हार लेकर प्रतर्दन के पिता के पास पहुँचा और हार दिखला कर बोला कि प्रतर्दन को असुरों ने मार डाला। मदालसा को भी यह समाचार मिला और उसने प्राण त्याग दिए। तालध्वज ने लौटकर प्रतर्दन को धन्यवाद दिया और कहा कि मेरा काम पूरा हो गया। बाद में जब प्रतर्दन को मदालसा के मरने का समाचार मिला तो वह बहुत चिंतित हुआ। उसकी चिंता देख उसके मित्र नागराज अश्वतर के दो पुत्रों ने अपने पिता से प्रार्थना की और इस पर अश्वतर ने शिव की आराधना कर मदालसा की तरह एक पुत्री प्राप्त की और प्रतर्दन को दिया। यह मदालसा बड़ी योग्य तथा विदुषी हुई। प्रतर्दन को मदालसा से ४ पुत्र हुए। चौथे पुत्र अलर्क को गद्दी दे वृद्धावस्था में मदालसा के साथ प्रतर्दन तपस्या करने चले गए।

ऐसा लगता है कि आरम्भ में शत्रुजित के पुत्र ऋतध्वज (या ऋतु-ध्वज) तथा काशिराज दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन की कथाएँ भिन्न थीं। तथा ये दो व्यक्ति थे। बाद में दोनों एक में मिल गई। अब सभी लोग प्रतर्दन और ऋतध्वज को एक मानते हैं।

प्रद्युम्न—कृष्ण के एक पुत्र। इनकी माता रुक्मिणी थीं। ये पूर्व जन्म के कामदेव थे। शिव के शाप से काम भस्म हो गया तो रति की प्रार्थना पर शिव के ही वरदान से वह प्रद्युम्न रूप में पैदा हुआ। जन्म के छठें दिन प्रसिद्ध असुर शंबर ने प्रद्युम्न को समुद्र में फेंक दिया। वहाँ उसे एक मछली निगल गई। संयोग से बाद में वही मछली शंबर के घर खाने के लिए लाई गई। उसे काटने पर उसके भीतर से प्रद्युम्न

निकले। प्रद्युम्न कामदेव के अवतार तो थे ही, उनका सौंदर्य अभूतपूर्व था। उन्हें देखते ही शंबर की पुत्री मायावती जो पूर्व जन्म की रति थी इन पर मोहित हो गई और इनका पालन-पोषण करने लगी, क्योंकि अभी ये बच्चे ही थे। जब धीरे-धीरे प्रद्युम्न बड़ा हुआ तो मायावती ने उसे कामदेव-रति की पूरी कथा सुना दी। परिणाम यह हुआ कि दोनों में प्रेम हो गया, किन्तु शंबर यह नहीं चाहता था। अन्त में प्रद्युम्न ने वैष्णवास्त्र से शंबर को मार डाला और मायावती को पत्नी रूप में ग्रहण कर अपने घर (कृष्ण के यहाँ) पहुँचे। रुक्मिणी अपने पुत्र और पुत्रवधू को देख बहुत प्रसन्न हुई। बाद में प्रद्युम्न ने ककुद्मती (रुक्मी की पुत्री) से भी विवाह किया, जिससे इन्हें अनिरुद्ध नामक पुत्र पैदा हुआ।

प्रलंब---एक दैत्य जो कंस की आज्ञा से कृष्ण को मारने के लिए गोकुल गया था। एक बार कृष्ण और बलराम गोपबालों के साथ खेल रहे थे। यह भी एक बालक का वेश धारण कर उनमें जा मिला। खेल में यह शर्त थी कि हारने वाला, विजयी को अपनी पीठ पर चढ़ाकर घुमाए। बलराम से यह पराजित होकर यह उन्हें अपनी पीठ पर चढ़ा कर ले भागा। यह देखकर बलराम ने अपना भार इतना बढ़ाया कि यह चल भी न सका। अन्त में बलराम समझ गए कि यह राक्षस है, और उन्होंने इसे मार डाला।

प्रह्लाद---दैत्यराज हिरण्यकशिपु का पुत्र। इनके पिता हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा की घोर तपस्या करके यह वर प्राप्त किया कि उसकी मृत्यु, देवता, मानव तथा पशु पक्षी आदि किसी से भी न हो। यह वर पाकर उसने देवताओं पर अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिये। सम्भवतः इसी की प्रतिक्रिया-स्वरूप प्रह्लाद के हृदय में ईश्वर के प्रति भक्ति-भावना का उदय हुआ। हिरण्यकशिपु ने अनेक प्रकार से प्रह्लाद को मारने का प्रयत्न किया। एक बार उसकी आज्ञा से इन्हें अपने पिता की बहन होलिका के साथ आग में बैठना पड़ा किन्तु ईश्वर के अनन्य भक्त होने

के कारण इनके प्राण बच गये और होलिका जल मरी। यहीं से हिंदुओं के प्रसिद्ध त्यौहार होली का प्रारम्भ माना जाता है। नृसिंह द्वारा हिरण्य-कशिपु की मृत्यु के पश्चात् इन्होंने अपने पिता के सिंहासन पर बैठकर बहुत समय तक राज्य किया। इनके पुत्र का नाम विरोचन था। दे० 'हिरण्यकशिपु'।

प्राप्ति—जरासंध की लड़की और अस्ति की छोटी बहन जिसका पाणिग्रहण कंस से हुआ था।

प्रसेनजित्—सत्राजित का एक भाई जो निघ्न का पुत्र था। इसके पास एक स्यमंतक मणि थी जिसे पहन कर एक दिन यह शिकार खेलने गया जहाँ एक सिंह ने इसे मार डाला और मणि छीन ली। दे० 'स्यमंतक।

फ़रहाद—फारस का एक संगतराश। वहाँ की राजकुमारी शीरीं से इससे प्रेम हो गया था। राजा को जब यह बात मालूम हुई तो उसने शीरीं का विवाह ख़ुसरो परवेज से कर दिया। शीरीं को दूध बहुत पसंद था। ख़ुसरो परवेज ने फ़रहाद से कहा कि कोहे बेसुतून से शीरीं के महल तक दूध आने के लिए पहाड़ खोदकर तुम नहर बना दो तो तुम्हें शीरीं मिल जायगी। फरहाद संगतराश था ही। उसने काम शुरू किया और पूरा कर डाला। जब शीरीं के पति ने देखा कि काम पूरा हो गया तो उसने फ़रहाद से झूठ कह दिया कि शीरीं मर गई। यह सुनते ही फ़रहाद ने पत्थर काटने वाले हथियार से आत्म-हत्या कर ली। शीरीं को जब पूरी बात ज्ञात हुई तो कोठे पर से कूदकर उसने भी प्राण दे दिए। पहाड़ खोदने के कारण फ़रहाद को 'कोहकन' भी कहते हैं।

बक—एक राक्षस जो अघासुर तथा पूतना का भाई था। यह बगले के आकार का था। कंस ने इसे कृष्ण का बध करने के लिए गोकुल भेजा। यह कृष्ण को निगल गया, किन्तु बाद में इनके तेज को न सह

सकने के कारण उसने उगल दिया। कृष्ण ने अन्त में इसकी चोंच के दोनों भागों को पकड़ कर चीर डाला जिससे इसकी मृत्यु हो गई।

बत्सासुर—एक असुर। कंस की आज्ञा से यह कृष्ण का वध करने के लिए वृन्दावन गया था। वहाँ कृष्ण के हाथ से इसकी मृत्यु हुई। यह बछड़े की तरह का था।

बद्रीपति (नर-नारायण)—विष्णु के अवतार। बद्रिकाश्रम में घोर तप करने के कारण इनका नाम बद्रीपति पड़ा। द्वापर में ये कृष्ण और अर्जुन के रूप में प्रकट हुए। कहा जाता है कि शिव ने नरसिंह के दो टुकड़े कर दिये थे उन्हीं टुकड़ों से नर और नारायण का जन्म हुआ। एक अन्य मत से इनका जन्म धर्म की स्त्री मुक्ति से हुआ था। दे० 'नर' 'नारायण'।

बभ्रु—कृष्ण के समकालीन एक यादव। जब यदुवंशियों का आपस में लड़ने से नाश हो गया तो कृष्ण के आदेश से बभ्रु यादव-स्त्रियों को कहीं सुरक्षित स्थान पर ले जा रहे थे। रास्ते में डाकुओं ने इन्हें मार डाला।

बभ्रुवाहन—मनीपुर की राजकुमारी चित्रांगदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र। अपने नाना की मृत्यु के बाद यह मनीपुर का राजा हुआ। महाभारत युद्ध के बाद अश्वमेध के घोड़े के साथ जब अर्जुन मनीपुर पहुँचे तो बभ्रुवाहन से उनसे युद्ध हुआ। अर्जुन को एक शाप से मुक्त करने के लिए उलूपी के उत्साहित करने पर बभ्रुवाहन ने अर्जुन को मार डाला। यह देख बभ्रुवाहन की माता चित्रांगदा बहुत दुखी हुई और लज्जित होकर बभ्रुवाहन भी आत्म-हत्या करने को तैयार हुआ, पर उलूपी ने संजीवनी मणि से अर्जुन को जीवित कर दिया। बाद में उलूपी, चित्रांगदा तथा बभ्रुवाहन अर्जुन के साथ हस्तिनापुर आए।

बलराम—रोहिणी के पुत्र जो कृष्ण के बड़े भाई थे। ये विष्णु के सातवें अवतार भी कहे जाते हैं। विष्णु के सफेद बाल से भी इनकी उत्पत्ति

मानी जाती है। कृष्ण की भाँति ही अपने जन्म के बाद बलराम भी हटाए गए थे और गोकुल में नन्द के यहाँ रखे गए थे। इन्होंने अपने बाल्यकाल में ही कंस द्वारा भेजे गए दो राक्षसों प्रलंब तथा धेनुकासुर का वध कर डाला था। कृष्ण के साथ ये भी मथुरा गये थे वहाँ इन्होंने कंस के मल्ल चाणूर का वध किया था। भीम और दुर्योधन को इन्होंने गदा-युद्ध की शिक्षा दी थी। ये मद्यप भी थे। एक वार मद्य के नशे में इन्होंने यमुना को अपने नहाने के लिए बुलाया। यमुना नहीं आई इस पर ये बहुत रुष्ट हुए और यमुना को अपने हल से जोतने चले। अंत में यमुना ने इनसे क्षमा माँगी। इनके अस्त्रों में हल अथवा मूसल का नाम लिया जाता है। संकर्षण, हलधर आदि इनके अन्य नाम भी मिलते हैं। रैवत की पुत्री रेवती से बलराम का विवाह हुआ था, जिससे इन्हें दो पुत्र थे।

बलि—दैत्य जाति का एक प्रसिद्ध दानी राजा जो विरोचन का पुत्र और प्रह्लाद का पौत्र था। दानशीलता में अपने को बलिदान कर देने के कारण इसका नाम बलि है। धर्मात्मा और दानी होने के कारण बलि देवताओं पर भी शासन करता था। देवों की माता अदिति को यह बात खली कि उसकी बहन दिति का वंशज उसके पुत्रों पर राज्य करे। उसने अपने पति कश्यप से कह कर एक अनुष्ठान किया जिससे भगवान विष्णु वामन रूप में उसके गर्भ से पैदा हुए। माता के कहने से ये ब्राह्मण रूप में बलि के पास गए। बलि के पूछने पर उन्होंने तीन पग भूमि की याचना की। पहले तो बलि ने कुछ और भी माँगने को कहा पर जब बामन ने कुछ और न माँगा तो बलि ने केवल ३ पग भूमि का संकल्प कर दिया। संकल्प के पूर्व उनके गुरु शुक्र ने मना किया क्योंकि वे भेद समझ गए थे, पर बलि ने बात नहीं मानी। जब भूमि देने का प्रश्न आया तो वामन ने अपना विराट रूप धारण किया और दो पग में सारी पृथ्वी नाप ली। यह देख तीसरे पग के लिए बलि ने

अपना शरीर अर्पित कर दिया। इस पर वामन उनसे बहुत प्रसन्न हुए। उनका सारा राज्य तो उन्होंने अदिति के संतोष के लिए इंद्र को दे दिया पर बलि को इंद्रलोक से भी अधिक सुख का स्थान पाताल या सुतल लोक दे दिया। तब से बलि वहीं हैं। यह भी कहा जाता है कि वहाँ स्वयं विष्णु उनके द्वारपाल हैं। अगले कल्प में बलि ही इंद्र होंगे। लोग कहते हैं कि इंद्र बलि को मारना चाहते हैं ताकि अगले कल्प में भी इन्द्रासन उनके हाथ से न जाय और इसीलिए वे वर्षा के दिनों में आकाश से पाताल की ओर बिजली गिराते हैं जो दुर्भाग्य से पृथ्वी तक ही आकर रह जाती है। दे० 'वामन'।

बालि—एक बन्दर राजा जो किष्किंधा में था। इसकी स्त्री का नाम तारा, भाई का नाम सुग्रीव तथा पुत्र का नाम अङ्गद था। एक बार एक स्त्री पर सूर्य तथा इन्द्र मोहित हुए और उन लोगों का वीर्य क्रम से स्त्री के मस्तक और गर्दन पर गिरा। मस्तक से बालि पैदा हुआ और गर्दन से सुग्रीव। इस प्रकार बालि सूर्य का पुत्र था। बालि ने सुग्रीव की स्त्री रूमा को छीन लिया था और उसे मार भगाया था। बालि बड़ा वीर था। रावण को इसने अपनी काँख में दबा रक्खा थ। 'दे० रावण'। सुग्रीव ने सीता को खोजने में सहायता की और उसके बदले में राम ने बालि को मार डाला। बालि के बाद अङ्गद राजा बना। दे० 'दुन्दुभी'।

बाल्मीकि—संस्कृत के आदि कवि तथा रामायण के रचियता। पहले ये डाकू थे किंतु सप्तर्षियों ने ज्ञान का उपदेश देकर इनका उद्धार किया एक बार एक व्याध ने कामकेलि करते हुए क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक का वध कर दिया। इस करुण दृश्य को देखकर इनका हृदय स्थित वेदना कविता के रूप में बह निकली।

मानिषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समा
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम्

राम के वनवास देने पर सीता इन्हीं के आश्रम में रहीं थी। इन्होंने लव और कुश को शिक्षा दी। कहा जाता है कि एक बार लव के खो जाने पर इन्होंने कुश को अपने कुश से पैदा किया था। दे० 'बाल्मीकि'। शुद्ध नाम 'बाल्मीकि' या 'बाल्मीक' है।

बल्वमङ्गल--एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। आरम्भ में ये चिंतामणि नामक वेश्या पर आसक्त थे। कहा जाता है कि एक रात एक शव पर यमुना पारकर ये चिंतामणि के घर पहुँचे! उस समय उसने इन्हें बहुत धिक्कारा और कहा कि इतना प्रेम यदि कृष्ण से होता तो तुम्हारा उद्धार हो जाता। उन्हें उसी क्षण इन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया और इन्होंने अपनी आँखें फोड़ डाली। तब से ये हरि की भक्ति में लीन रहने लगे।

बुद्ध—बौद्ध धर्म के प्रवर्तक और हिंदुओं के ६वें अवतार। ईसा से प्रायः साढ़े पाँच सौ वर्ष पूर्व इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोदन तथा माता का नाम महामाया था। माता के मर जाने पर इनकी विमाता ने इनका पालन-पोषण किया। इनका यथार्थ नाम सिद्धार्थ या गौतम था। शैशवावस्था से ही ये शांत और विचारशील थे। एक दुर्बल वृद्ध, एक रोगी तथा एक शव को देख इन्हें विश्व से और भी विराग हो गया। यह देख इनके पिता ने यशोधरा से इनका विवाह कर दिया और उससे राहुल नाम का इन्हें पुत्र भी हुआ पर ये अंततः रुक न सके और एक रात घर से निकल गए। इधर-उधर बहुत भटकने के बाद गया में इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और ये बुद्ध कहलाए। धीरे-धीरे बहुत से लोग इनके शिष्य बने और बौद्ध धर्म भारत और भारत के बाहर भी फैला। इनका देहांत कुशीनगर में हुआ।

बुध—बृहस्पति की स्त्री तारा के गर्भ से चंद्रमा के औरस पुत्र। इन्हें नपुंसक तथा दूब की तरह कालिमा लिए हरे वर्ण वाला माना जाता है। रवि और शुक्र इनके मित्र तथा चंद्रमा शत्रु हैं। एक मत से बुध नपुंसक नहीं थे और मनु की कन्या इला से इन्होंने विवाह किया था जिससे पुरूरवा नाम का एक पुत्र पैदा हुआ था। 'दे० 'तारा' चंद्रमा'।

बृहस्पति—देवताओं के गुरु तथा पुरोहित एक ऋषि। इस नाम के बहुत से ऋषि मिलते हैं। देवगुरु बृहस्पति अंगिरा के पुत्र थे। इनकी स्त्री का नाम तारा था जिसे चन्द्रमा चुरा ले गए थे। वहाँ जब तारा को चन्द्रमा से गर्भ रह गया तो बृहस्पति को अपनी स्त्री के गायब होने का पता चला। वे तुरंत चन्द्रमा के पास गए पर चन्द्रमा ने देने से इनकार किया। बृहस्पति ने सभी देवताओं को बुलाया और अंत में ब्रह्मा के बहुत समझाने पर चंद्रमा ने तारा को वापिस किया। तारा अपना गर्भ निकाल कर अपने यथार्थ पति के पास चली गई। उस निकाले गर्भ से चंद्रमा पुत्र बुध पैदा हुए। बृहस्पति ने एक बार उतथ्य की स्त्री ममता के साथ संभोग किया था, जिससे भरद्वाज पैदा हुए थे। बृहस्पति के लिखे कई ग्रन्थ कहे जाते हैं। कहा जाता है कि असुरों की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए बृहस्पति ने चार्वाक दर्शन का प्रचार किया था।

ब्रह्मा—त्रिदेवों में से एक। एक मत के अनुसार स्वयंभू भगवान के वीर्य से एक ज्योतिर्मय अंड उत्पन्न हुआ, जिससे इनका जन्म हुआ। विष्णु की नाभि से जिस कमल की उत्पत्ति हुई थी उससे भी इनका जन्म माना जाता है। ब्रह्मा चतुर्मुख कहे जाते हैं। कहा जाता है कि इनके शरीर से एक सुन्दर कन्या की उत्पत्ति हुई जिस पर ये मोहित हो गये और इससे इन्होंने विवाह कर लिया। यही कन्या सरस्वती थी। ब्रह्मा सृष्टि के निर्माता माने जाते हैं। इनके दस मानस पुत्र हैं जिनके नाम मरीचि अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वसिष्ठ, भृगु तथा नारद हैं।

नारद के शाप के कारण हिंदू समाज में इनकी अन्य देवताओं की तरह पूजा नहीं होती।

भगीरथ—एक सूर्यवंशी राजा जो अंशुमान के पौत्र तथा दिलीप के पुत्र थे। सगर के ६० हजार पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गए थे, जिनके अवशेष का पता अंशुमान ने लगाया। पूर्वजों को तारने के लिए सबसे पहले सगर ने गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए तपस्या की। उनकी मृत्यु के पश्चात् अंशुमान और फिर दिलीप ने। अंत में भगीरथ ने ब्रह्मा और शिव की घोर तपस्या की। जिसके फलस्वरूप वे गङ्गा को पृथ्वी पर लाने में सफल हुए। गङ्गा इनके रथ के पीछे-पीछे चली थी इसीलिए उनका एक नाम 'भागीरथी' भी हुआ। दे० 'गङ्गा'।

भरत—१. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न दशरथ के पुत्र। इनका विवाह मांडवी से हुआ था। भरत उधर अपने मामा के यहाँ थे और इधर उनकी माँ कैकेयी ने राम को १४ वर्ष का बनवास और भरत को राज्याभिषेक ये दो वर माँग लिए थे। राम वन में गए और उनके जाते ही दशरथ का देहांत हो गया। इसके बाद भरत बुलाए गए। उन्होंने दशरथ की अंत्येष्टि क्रिया की और अपनी माता कैकेयी तथा उसकी दासी मंथरा को बहुत बुरा-भला कहा। अंत में इन्होंने राज्य ठुकरा दिया और राम को लौटाने चित्रकूट गए पर राम न लौटे और भरत उनकी 'खड़ाऊँ' लेते आए। खड़ाऊँ को ही गद्दी पर रखकर भरत ने १४ वर्ष शासन चलाया तथा राम के लौटने पर उन्हें राज्य वापस दे दिया। इनके तक्ष और पुष्कर दो पुत्र हुए जिनको साथ लेकर भरत ने गंधर्व देश जीता और दोनों पुत्रों को वह देश बाँट दिया। दे० 'मांडवी'।

२. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र। दे० 'शकुन्तला' 'दुश्यंत'।

इनका विवाह विदर्भराज की तीन कन्याओं से हुआ था। ये बड़े

प्रतापी राजा थे। इनके ही नाम पर इस देश का नाम 'भारत' या 'भारतवर्ष' पड़ा।

भर्तृहरि—उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई। ये अपनी स्त्री को बहुत प्यार करते थे। एक बार किसी ब्राह्मण ने इनको एक फल दिया जो अमर करने वाला था। इन्होंने स्वयं न खाकर प्रेमवश वह फल अपनी स्त्री को दिया। स्त्री किसी दरबारी से फँसी थी, उसने यह फल उसे दिया और दरबारी से यह फल एक वेश्या को मिला। अंत में इसी प्रकार चक्कर काटते फल एक अहिरिन के पास पहुँचा और उसने इसका उचित उपभोगी भर्तृहरि को जान उन्हें दिया। (फल का यह घूमना विभिन्न पुस्तकों में विभिन्न प्रकार से मिलता है।) इससे भर्तृहरि को यथार्थता का पता चला और वे विरक्त हो गए। भर्तृहरि की बनाई नीति शतक, शृङ्गार शतक, तथा वैराग्य शतक आदि पुस्तकें प्रसिद्ध हैं।

भरद्वाज—एक प्रसिद्ध ऋषि जिनकी गणना सप्तर्षियों में होती है। एक बार उतथ्य ऋषि कहीं चले गए थे और उनके भाई बृहस्पति ने उतथ्य की स्त्री ममता से सम्भोग किया जिससे भरद्वाज का जन्म हुआ। अपना कुकृत्य छिपाने के लिए ममता ने भरद्वाज को मारना चाहा पर बृहस्पति ने रोक दिया। अंत में दोनों इन्हें छोड़ कर चले गए। उसी समय भरत ने पुत्र-कामना से मरुत्स्तोम नाम का यज्ञ किया जिससे प्रसन्न हो मरुतों ने इसी नवजात पुत्र को उन्हें प्रदान किया। भरद्वाज बड़े तेजस्वी ऋषि थे। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार ये बहुत अधिक दिन तक जीवित रहे और अन्त में सूर्य-लोक में चले गए। प्रयाग में इनका आश्रम है जहाँ राम, लक्ष्मण तथा सीता बनवास के समय इनसे मिले थे।

एक बार भरद्वाज गंगा स्नान कर रहे थे। उधर आकाश-मार्ग से घृताची नाम की अप्सरा जा रही थी। उसे देख भरद्वाज मोहित हो

गए और उनका वीर्यपात हो गया। उन्होंने अपना स्खलित वीर्य एक बर्तन (द्रोण) में रख दिया, जिससे द्रोणाचार्य का जन्म हुआ।

भवन—यह एक भक्त थे और जाति के राजपूत थे। किसी राजा के यहाँ ये किसी अच्छे पद पर थे। एक बार राजा के साथ ये शिकार खेलने गए। राजा ने एक हिरनी को तलवार से मारा और वह दो टुकड़े हो गई। हिरनी गर्भवती थी। उसका बच्चा भी दो टुकड़े हो गया। यह देख भवन को बड़ी करुणा आई और वे उसी दिन से लोहे की तलवार के स्थान पर काठ की तलवार रखने लगे। किसी ने राजा से इस बात की चुगुली कर दी और राजा बहुत बिगड़े। उन्होंने भवन को अपने पास बुलाया और उन्हें अपनी तलवार उसी वक्त दिखाने की आज्ञा दी। भवन ने अपनी तलवार निकाल कर राजा के हाथ में दे दी जो भगवान की दया से उस समय बढ़िया इस्पात की हो गई थी। इस प्रकार उनकी इज्जत ईश्वर की कृपा से रह गई।

भस्मासुर—पुराणों के अनुसार एक प्रसिद्ध दैत्य जिसका यथार्थ नाम वृकासुर था। यह शिव का भक्त था। शिव ने उसे वर दिया कि तुम जिसकी पीठ पर हाथ रक्खोगे वह भस्म हो जायगा। वर के बाद यह पार्वती पर मोहित हुआ अतः शिव को जलाने के लिए उनके सर पर हाथ रखने चला। वर मिल चुका था अतः शिव लाचार होकर भगे। 'मियाँ की जूती मियाँ के सिर'। अन्त में विष्णु ने शिव का संकट देख मोहनी रूप धारण किया जिस पर आकर्षित होकर भस्मासुर के नाचने की मुद्रा में एक हाथ कमर पर और एक अपने सर पर रक्खा और इस प्रकार वह स्वयं जल गया। एक अन्य मत से कृष्ण ने बटु का रूप धर कर छल से उसका हाथ उसके सर पर रखवाया जिससे वह भस्म हो गया। स्कन्द पुराण के अनुसार यह कश्यप और दिति का पुत्र था।

भानुप्रताप—कैकय देश के राजा सत्यकेतु का पुत्र। इसने एक

राजा का राज छीन लिया था। राज्य खोकर वह राजा एक जंगल में तपस्वी बन कर रहता था। एक बार भानुप्रताप शिकार खेलता हुआ उस राजा के आश्रम में पहुँचा और उसने इसे पहचान लिया। भानु-प्रताप जब खा पीकर सो गया तो उसके शत्रु राजा ने जो तपस्वी बना था अपने मित्र कालकेतु राक्षस को बुलाया। कालकेतु ने राजा को एक क्षण में उसकी राजधानी में पहुँचा दिया तथा उसके पुरोहित को एक गुफा में छिपा कर उसी का रूप धारण कर स्वयं पुरोहित बन बैठा। दूसरे दिन राजा सोकर उठा तो तपस्वी का बड़ा कृतज्ञ हुआ और अपने पुरोहित से ब्रह्मभोज के लिए कहा। पुरोहित ने ब्राह्मणों को निमंत्रित किया तथा भोजन में मनुष्यादि के माँस पकवाए। ब्राह्मण जब खाने बैठे तो आकाशवाणी हुई कि भोजन में मनुष्य का माँस है। तुम लोग न खाओ। इस पर ब्राह्मण बहुत रुष्ट हुए और उन्होंने भानुप्रताप को परिवार के साथ राक्षस हो जाने का शाप दिया। यही भानुप्रताप दूसरे जन्म में रावण हुआ।

भीम—पांडु और कुन्ती के पुत्र जिनका जन्म वायु से माना जाता है। दे० 'पांडु'। शैशवावस्था में ही एक बार ये अपनी माता के गोद से गिर पड़े फलतः इनके नीचे का पत्थर चूर-चूर हो गया। भीम और दुर्योधन एक ही दिन पैदा हुए थे इसी कारण दोनों में प्रतिद्वंद्विता थी। इन दोनों ने गदायुद्ध बलराम से सीखा था। एक बार दुर्योधन ने भीम को विष देकर जल में फेंक दिया। भीम उसी अवस्था में नागलोक गए और वहाँ से ठीक होकर लौटे। भीम ने एक बार सात हाथियों को उठाकर आकाश में फेंक दिया था, कहा जाता है कि आज तक वे हाथी ऊपर ही हैं। भीम अपनी बलिष्ठता के लिए प्रसिद्ध हैं। दुर्योधन ने जब लाक्षागृह में पांडवों को जलाना चाहा था तो विदुर से इस बात का पता भीम को चल गया था और इसी कारण उन्होंने उसमें आग लगायी और सुरंग के रास्ते से भाइयों तथा माता के साथ निकल आए। एक

बार एक हिडिंबा नाम की राक्षसी इन पर मोहित हो गई थी। इन्होंने उसके पिता को मार उससे विवाह किया जिससे इन्हें घटोत्कच नाम का वीर पुत्र पैदा हुआ था। द्रौपदी को जब दुःशासन नंगा कर दुर्योधन के जंघे पर बैठाने जा रहा था तो भीम ने दुर्योधन का जंघा तोड़ने तथा दुःशासन के हृदय का रक्त पीने का प्रण किया था। अज्ञात वनवास के समय भीम वल्लव नाम से रसोई बनाने का काम विराट के यहाँ करते थे। वहाँ कीचक ने द्रौपदी के साथ कुछ छेड़-छाड़ की थी जिससे भीम ने उसका वध किया था। महाभारत युद्ध में भीम ने दुःशासन को मार उसके हृदय का रक्त पान किया तथा युद्धांत में दुर्योधन के साथ गदायुद्ध करते हुए उसकी जाँघ तोड़ी और इस प्रकार अपना प्रण पूरा किया। अन्त में अपने भाइयों के साथ ये भी हिमालय में गलने चले गए। दे० 'शकुनी' 'वकासुर' 'कीचक' 'जरासंध' 'जटासुर'।

भीष्म—कुरुदेश के राजा शांतनु के पुत्र। इनकी माता का नाम गङ्गा था। उन्होंने शांतनु से इस शर्त पर शादी की थी कि जो भी चाहूँगी करूँगी। शांतनु को उनसे सात पुत्र हुए और सातों को उन्होंने फेंक दिए। जब यह अन्तिम पुत्र देवव्रत या भीष्म उत्पन्न हुआ तो शांतनु ने गङ्गा को उसे फेंकने से रोका जिस पर रुष्ट होकर गङ्गा चली गई। इसके बाद शांतनु ने सत्यवती नाम की एक धीवर कन्या से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। विवाह इस शर्त पर हुआ कि सत्यवती का पुत्र ही राजा होगा। भीष्म ने राज्यगद्दी पर न बैठने की प्रतिज्ञा की साथ ही आजीवन ब्रह्मचारी रहने की भी प्रतिज्ञा की ताकि सत्यवती के पुत्र का कोई कभी भी विरोधी न हो। सत्यवती से शांतनु को चित्रांगद और विचित्रवीर्य दो पुत्र पैदा हुए। पहले तो चित्रांगद राजा हुआ पर उसके मरने पर विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठा। भीष्म काशिराज की अंबा, अंबिका और अंबालिका नाम की तीन कन्याओं को स्वयंवर से उठा लाए तथा अंबा और अंबालिका का विचित्रवीर्य से विवाह किया। संयोग से क्षय

रोग से पीड़ित होकर विचित्रवीर्य बिना संतान पैदा किए मर गए। भीष्म ने राज्य की रक्षा के लिए व्यास के द्वारा दोनों रानियों से धृतराष्ट्र और पांडव नाम के पुत्र पैदा करवाये। महाभारत के युद्ध में भीष्म कौरवों की ओर के सेनापति थे। १० दिन युद्ध करने के बाद स्वयं इन्होंने अपने को मारे जाने की युक्ति बतलाई और तब शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने इन्हें घायल किया। घायल होकर भी ये मरे नहीं और ५८ दिन तक बाणों की सेज पर पड़े रहे। अन्त में युधिष्ठिर को तरह-तरह से उपदेश देकर इन्होंने स्वेच्छया प्राण त्याग किया। दे० 'सत्यवती', 'अम्बा', शांतनु' 'शिखंडी'।

भूरिश्रवा—राजा सोमदत्त के पुत्र तथा महाभारत के एक प्रसिद्ध वीर। महाभारत युद्ध में इन्होंने कौरवों का साथ दिया था। युद्ध में अर्जुन ने इनके हाथ काट डाले थे। इनकी मृत्यु सात्यकी ही द्वारा हुई।

भृगु—एक प्रसिद्ध ऋषि। महाभारत के अनुसार रुद्र ने एक बार एक बड़ा यज्ञ किया। ब्रह्मा जब आहुति देने लगे तो आई हुई देवांगनाओं को देखकर उनका वीर्य स्खलित हो गया। सूर्य ने अपनी किरणों से वह वीर्य आग में डाल दिया और अग्नि शिखा से भृगु का जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार एक बार ऋषियों ने भृगु को इस बात की परीक्षा के लिए भेजा कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव में कौन सबसे बड़ा और पूज्य है। भृगु पहले शिव के पास गए। शिव पार्वती के साथ सो रहे थे अतः भृगु उनसे नहीं मिल सके और उन्होंने शिव को शाप दिया कि तुम भग-लिंग के प्रेमी हो अतः भग-लिंग रूप में ही तुम्हारी पूजा हो। फिर वे ब्रह्मा के पास पहुँचे, पर ब्रह्मा अपने कामों में इतने व्यस्त थे कि इनका उचित स्वागत न किया। इस पर उन्हें भृगु ने शाप दिया कि तुम्हारी पूजा कोई भी न करे। अन्त में वे विष्णु के पास पहुँचे। विष्णु उस समय सो रहे थे। भृगु को क्रोध आया और उनके

वक्ष पर इन्होंने एक लात मारी। विष्णु उठे पर क्रोधित न होकर उलटे भृगु का पैर सहलाते हुए कहने लगे कि आपको चोट तो नहीं लगी। इस पर भृगु विष्णु से बहुत खुश हुए और उन्हें सर्वश्रेष्ठ देव घोषित किया। परशुराम भृगु के ही वंशज थे।

भृगु के मारने से विष्णु के वक्ष पर जो चिह्न बन गया उसे भृगु-रेखा कहते हैं।

भौमासुर—एक असुर, जो नरकासुर के नाम से भी प्रसिद्ध है। वराह अवतार के समय विष्णु ने पृथ्वी के साथ संभोग किया। उसी से यह पृथ्वी के गर्भ में यह असुर आया। त्रेता में राम द्वारा रावण के वध के बाद पृथ्वी के उस स्थान से इसका जन्म हुआ जहाँ सीता उत्पन्न हुई थीं। सोलह वर्ष तक इसका पालन-पोषण महाराज जनक ने किया। अंत में विष्णु ने इसे नरक में ले जाकर प्रागज्योतिपपुर में प्रतिष्ठित किया। यह बाणासुर का मित्र था। इसका विवाह विदर्भराज की कन्या माया से हुआ था, जिससे भगदत्त, मदवान तथा सुमाली आदि पुत्र उत्पन्न हुए। एक बार वशिष्ठ ऋषि का अपमान करने पर इसे शाप मिला जिसके फलस्वरूप कृष्ण द्वारा इसकी मृत्यु हुई।

मंगल—एक तारा। कुछ लोग मंगल और कार्तिकेय को एक मानते हैं। मंगल के जन्म के विषय में भिन्न-भिन्न ग्रंथों में भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार एक बार पृथ्वी विष्णु पर मोहित हो गई और एक तरुणी का रूप धारण कर उनके पास गई। विष्णु उसका शृङ्गार करने लगे पर इतने में वह बेहोश हो गई। इसी मूर्च्छा की अवस्था में विष्णु ने उसके साथ संभोग किया, जिससे मंगल पैदा हुए। इसी कारण इन्हें महीसुत आदि कहते हैं।

मंथरा—महाराजा दशरथ की रानी कैकेयी की दासी। इसी के कहने पर कैकेयी ने अपने पति से दो वरदान माँगे थे। (१) भरत को

राज्य (२) राम को चौदह वर्ष का बनवास। भरत ने ननिहाल से लौटने पर इसे लात मारी थी।

मंदोदरी—रावण की प्रधान महिषी तथा इंद्रजीत की जननी। इसका पिता मयासुर, तथा माता अप्सरा रंभा थी। कटि की क्षीणता के कारण इसे यह नाम मिला था।

मंसूर—इनका यथार्थ नाम हुसेन और पूरा नाम 'हुसेन इब्न मन्सूर' था पर ये अपने बाप 'मंसूर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। एक बार एक धुनिए (हल्लाज) की रूई इन्होंने धुन दी और तब से इनके नाम के साथ 'हल्लाज' शब्द भी लग गया। ये सूफी भक्त थे और अपने को ईश्वर कहते थे। (अनलहक) यह बात इस्लामी शरह के विरुद्ध थी अतः बादशाह वक्त ने इन्हें फाँसी पर चढ़वा दिया।

मजनू—मजनू का यथार्थ नाम क़ैस था। यह अरब के एक स्थान नज्द के रहने वाले एक रईस का पुत्र था। प्रेम की प्रतिमूर्ति होने से इसे 'मजनू' कहते हैं। इसकी प्रेमिका लैला का भी घर इसके घर के ही पास था। एक बार मजनू की माँ ने मट्ठा लाने के लिए मजनू को लैला के घर भेजा। वहीं दोनों में प्रेम हो गया और बाद में दोनों के घर वालों ने इनकी आपस में बोल-चाल तक बंद कर दी। पर इनका प्रेम बढ़ता ही गया। अंत में मजनू 'लैला लैला' कहकर पागल होकर नंगा घूमने लगा। मजनू के पिता तथा अन्य सम्बंधियों को उसकी इस दशा पर बड़ी दया आई और उन्होंने लैला के पिता से मजनू के साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया। उसने न केवल प्रस्ताव अस्वीकार किया बल्कि लैला की एक दूसरे से शादी भी कर दी। मजनू ने जब यह सुना तो उसकी दशा और भी खराब हो गई। एक दिन उसने लैला के पति से मुलाकात की और उससे पूछा कि क्या लैला तुम्हारे साथ विहारादि करती है, और खुश रहती है ? लैला के पति ने हँकारात्मक उत्तर दिया। इसका मजनू के हृदय पर बड़ा सदमा लगा और वह जंगलों में

चला गया। वहाँ वह हरिनियों के साथ खेला करता था और उन्हें 'तस्वीर लैला' कहा करता था। लैला के पति के कहने पर भी मजनू को यह विश्वास नहीं हुआ था कि लैला उससे अलग रहकर भी खुश होगी। सचमुच बात भी यही थी। लैला दिन रात कुढ़ा करती थी। अन्त में वह कुढ़न में मर भी गई। बहुत दिन बाद मजनू जंगलों से निकलकर लैला के ससुराल गया। वहाँ उसने सुना कि लैला मर गई। वह कब्रिस्तान में पहुँचा और लोगों से लैला की कब्र पूछने लगा। लोगों ने इस डर से कि कहीं यह भी कब्र में न बैठ जाय उसे कब्र नहीं बतलाई। इस पर मजनू ने एक ओर से कब्रों की मिट्टी सूँघनी शुरू की और अंत में लैला की कब्र पहचान ली। कहते हैं मजनू उस कब्र से लिपट कर मर गया।

एक अन्य मत से मजनू कि मृत्यु किसी रेगिस्तान में ८० हिज्री में हुई थी।

मणिग्रीव—कुबेर का पुत्र। दे० 'नलकूबर'।

मतंग—एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे। एक बार एक नाई का एक ब्राह्मण की स्त्री से संसर्ग हुआ जिससे मतंग ऋषि पैदा हुए। इस बात का पता न तो मतंग ऋषि को था और न इनके पिता को। जब एक गदही से इन्हें इस बात का पता चला तो इन्होंने अपने पिता से कहा और फिर ब्राह्मण बनने के लिए घोर तप करने लगे। इन्द्र ने आकर इन्हें समझाया कि ब्राह्मण बनना सरल नहीं है, प्रयास मत करो। इस पर इन्होंने इंद्र से प्रार्थना की कि मुझे ऐसा पक्षी बना दीजिए जिसकी पूजा सभी लोग करें। इंद्र ने इनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

मत्स्य—विष्णु का पहला अवतार जो सतयुग में हुआ था। इसका आकार बड़ा विचित्र था। ऊपर का अंग मनुष्य का था और नीचे का अंग रोहू मछली का। इसके सिर पर सींग, चार हाथ, तथा छाती पर

लक्ष्मी-चिह्न आदि थे। इसका रङ्ग कृष्ण था। इसके सारे शरीर पर कमल बने थे। मनु से एक बार एक छोटी मछली ने अपनी रक्षा की प्रार्थना की। मनु ने उसे उठा लिया और उसकी बढ़ाई के अनुसार घड़ा, कुआँ तथा गङ्गा में रखते गए। अन्त में जब वह बहुत बड़ी हो गई तो उसे समुद्र में डाल दिया। उस समय उस मत्स्य ने मनु से बतलाया कि एक नाव बनवा लो प्रलय-काल आ रहा है। मनु ने सचमुच नाव बनवा ली और जलप्लावन के समय उसी नाव में बैठ गए तथा नाव को मछली की सींग से बाँध दिया। वह मछली नाव को हिमालय की उच्च चोटी पर ले गई और शिखर से बाँधने को कहा। मनु ने ऐसा ही किया और इस प्रकार जलप्लावन में मनु बच सके। इसके बाद मछली ने अपना प्रजापति तथा मत्स्य-अवतार रूप में परिचय दिया और अंतर्द्धान हो गई। मत्स्य अवतार ने समुद्र में घुसकर शंखासुर को मारकर वेद का उद्धार भी किया था। दे० 'शंखासुर'। और भी कई कथाएँ मत्स्यावतार से सम्बन्धित मिलती हैं। दे० 'मनु'।

मत्स्यगंधा—इसका अधिक प्रचलित नाम सत्यवती है। राजा उपरिचर, जिनका एक नाम वसुराज भी था, का वीर्य एक बार शिकार खेलते समय गिरा। वहाँ से एक श्येन पक्षी उसे लेकर उड़ा पर उससे भी वह गिरा और जमुना में आद्रिका नाम की एक अप्सरा ने जो उसमें मछली बनकर रहती थी उसे खा लिया। उसी से मत्स्यगन्धा का जन्म हुआ। कुमारावस्था में इससे पराशर ऋषि ने संभोग किया और व्यास पैदा हुए। बाद में इसका विवाह शांतनु से हुआ। दे० 'सत्यवती'।

मदालसा—एक विदुषी स्त्री जो विश्वावसु गन्धर्व की कन्या थी। मदालसा का विवाह ऋतुध्वज से हुआ था जिससे इसे विक्रांत, सुबाहु, शत्रुमर्दन तथा अलर्क नाम के चार पुत्र हुए। मदालसा स्वयं अपने पुत्रों को शिक्षा देती थी। प्रथम तीन तो विरक्त हो गए पर चौथा पुत्र अलर्क

ऋतुध्वज के बाद गद्दी पर बैठा। मदालसा को कुमार्यावस्था में पाताल-केतु दानव पाताल में उठा ले गया था। जब उसका अत्याचार बहुत बढ़ गया तो ऋतुध्वज ने उसे मार कर मदालसा का उद्धार किया था और इसको अपनी पत्नी बनाया था। मदालसा ने अपने पुत्रों को शिक्षा देते समय जो धर्मनीति तथा राजनीति की बातें कहीं थीं बड़ी सुन्दर तथा उपयोगी हैं।

मधु—कैटभ का बड़ा भाई। इसे विष्णु ने मारा था। मधु के जन्म के लिए देखिए 'कैटभ'। कृष्ण विष्णु के अवतार होने के कारण 'मधु-सूदन कहे जाते हैं।

मनु—मनु का नाम वेदों, ब्राह्मणों और पुराणों में कई रूप में आता है पर उनका प्रधान रूप जल प्लावन के बाद सृष्टि की वृद्धि करने वाला है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार मनु एक बार एक पोखरे में हाथ धो रहे थे। उनके हाथ में एक छोटी सी मछली आई और उसने अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की। मनु ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। बाद में जब जल-प्लावन हुआ तो इसी मछली ने जो उस समय बड़ी हो गई थी मनु के नाव की रक्षा की। उसी मछली ने इनकी नाव हिमालय पर्वत की चोटी पर पहुँचा दी। जल-प्लावन की समाप्ति के बाद इन्हीं मनु से मनुष्य सृष्टि चली। प्रसाद जी ने 'कामायनी' पुस्तक में श्रद्धा को मनु की पत्नी माना है, (दे० 'श्रद्धा') पर विष्णु पुराण के अनुसार शतरूपा इनकी पत्नी थी (दे० 'शतरूपा') और मनु-शतरूपा से ही सृष्टि चली। यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों में यही स्थान आदम और हौवा का है। दे० 'मत्स्य' 'आदम'।

पुराणों के अनुसार एक कल्प में १४ मनु होते हैं। आजकल ७ वें मनु 'मनु, वैवस्वत' का अधिकार है। इक्ष्वाकु, नाभाग या नृग; प्रांशु तथा करुष आदि इनके कई पुत्र कहे जाते हैं।

मय—शिल्पकला में कुशल एक महा पराक्रमी दानव। त्रिपुर के

तीन मायामय नगरों का निर्माण इसी ने किया था। यह रावण की स्त्री मन्दोदरी का पिता था। इसके दुन्दुभि तथा मायायी नामक दो पुत्र थे। कुछ आधुनिक विद्वान 'मय' का संबंध अमरीका की मय-सभ्यता से मानते हैं। कुछ लोग इन्हें असुर या असीरियन भी मानते हैं।

मयूरध्वज—इनका मोरध्वज नाम भी मिलता है। ये एक पौराणिक राजा थे जिनकी भक्ति बड़ी प्रसिद्ध है। एक बार कृष्ण अर्जुन को इनकी लीला दिखाने के लिए ले गए। कृष्ण एक वृद्ध बने थे और अर्जुन उनके पुत्र। कृष्ण ने मयूरध्वज से कहा कि रास्ते में एक सिंह ने मेरे इस लड़के को पकड़ लिया था और उसने इसे इस शर्त पर छोड़ा कि राजा मयूरध्वज का दाया अङ्ग उसके भोजन के लिए हम लोग उसे देंगे। राजा ने प्रसन्नता से कहा कि मुझे इस परोपकार में अपने शरीर को लगाने में बड़ी प्रसन्नता होगी। उन्होंने तुरन्त अपनी रानी तथा राजकुमार को अपने शरीर के दो भाग करने की आज्ञा दी। रानी और राजकुमार आरे से राजा के शरीर के दो भाग करने लगे। इसी बीच राजा की बाईं आँख से आँसू की एक बूँद टपक पड़ी। यह देख ब्राह्मण ने कहा कि तुमने तो रोकर अपने शरीर को अशुद्ध कर दिया, दुःखी होकर दिया गया दान हमें स्वीकार नहीं। इस पर राजा ने उत्तर दिया कि मैं दुखी नहीं हूँ। मेरी बाईं आँख अपने इस अभाग्य पर रो रही है कि बाईं ओर होने के कारण उसे परोपकार करने का अवसर नहीं मिला। इस पर प्रसन्न होकर कृष्ण ने अपना दर्शन दिया और उनकी प्रशंसा करते हुए दोनों व्यक्ति विदा हुए।

मारयन—ईसा की माँ। इनका विवाह नहीं हुआ था। ईश्वर के हुक्म से इन्हें गर्भ रह गया जिससे ईसा का जन्म हुआ।

महादेव—इन्हें शङ्कर या शिव आदि भी कहते हैं। भृगु के शाप से ये लिंगाकार हो गए और तबसे इनके उसी रूप की पूजा होती है। (दे० 'भृगु') महादेव भगवान के एक रूप हैं और प्रलयंकर शङ्कर बन

ये सृष्टि का संहार करते हैं। इनका तांडव नृत्य प्रसिद्ध है। समुद्रमंथन से निकले चन्द्रमा को इन्होंने अपने मस्तक पर रक्खा तथा विष को पी गए। विष गले के नीचे नहीं उतारा इसी से इनका गला नीला है। हाथ में डमरू तथा त्रिशूल, शरीर में राख और व्याघ्र-चर्म, मुंडों और सर्पों की माला, जटाजूट, दोनों आँखों के बीच में एक तीसरा नेत्र, पाँच मुख तथा सिर पर गङ्गा—ये इनकी विशेषताएँ हैं। इनके धनुष का नाम पिनाक या अजगव, वाहन का नाम नंदी (जो बैल है) तथा पाश का नाम पाशुपत है। इनकी स्त्री का नाम पार्वती तथा पुत्रों के नाम गणेश तथा कार्तिकेय हैं। महादेव का स्थान कैलाश है। एक मत से कुबेर इनके ही भंडारी हैं। दक्ष प्रजापति के यज्ञ का नाश इन्होंने वीर भद्र नाम का गण अपने अपने मुख से पैदा करके किया था। कामदेव को भी इन्होंने जलाया था। इन्होंने बहुत से राक्षसों को मारा था। (दे० 'शत्रुघ्न' 'त्रिपुर' 'कामदेव' 'गणेश' 'कार्तियेय' 'नारायण' 'ज्वर' 'तारकासुर' 'भस्मासुर') महादेव को 'त्रिपुरारि' भी कहते हैं। तारकासुर के तीन पुत्र तारकाक्ष, कमलाक्ष तथा विद्युन्माली ने ब्रह्मा के आशीर्वाद से तीन नगरी अपने-अपने लिए मय से बनवायी और यह वर प्राप्त कर लिया कि एक हजार वर्ष के बाद वे तीनों नगर मिलेंगे और उस समय यदि कोई बाण से उसका विनाश कर सकेगा तो वही उन तीनों असुरों को मारने में सफल होगा। तीनों ने निश्चिंत होकर देवताओं पर अत्याचार करना प्रारम्भ किया। देवता बेचारे ब्रह्मा के पास गए परन्तु उन्होंने महादेव के पास भेज दिया। शिव रथ पर आए और मिलने पर तीनों पुरियों को एक बाण से नष्ट कर दिया। तीनों के स्वामी तारकाक्ष, कमलाक्ष तथा विद्युमाली भी शिव से ही मारे गए और शिव का इस प्रकार एक नाम त्रिपुरारि पड़ा। एक अन्य मत से प्रलय के समय तांडव नृत्य कर शंकर ही तीनों लोकों को नाश करते हैं अतः उनका नाम त्रिपुरारि है। दे० 'अजगव'।

महिरावण—रावण का लड़का एक राक्षस जो पाताल में रहता था। एक रात यह युद्ध-शिविर से राम और लक्ष्मण को पातालपुरी में उठा ले गया। हनुमान को जब पता चला तो वे खोजते-खोजते पातालपुरी पहुँचे और महिरावण को मार कर राम लक्ष्मण को ले आए।

महिषासुर—एक असुर जिसका आकार भैंसे का था। यह रंभ राक्षस का पुत्र था। महिषासुर दुर्गा के हाथ से मारा गया। इसी नाम का एक अन्य असुर भी था जिसे स्कंद ने महाभारत काल में मारा था।

मांडवी—राजा जनक के भाई कुशध्वज जनक की कन्या। इसका विवाह भरत से हुआ था। मांडवी को तक्ष और पुष्कर नाम के दो पुत्र पैदा हुए थे।

मांडव्य—एक प्रसिद्ध ऋषि। इनसे कुछ अपराध हो गया था जिसके कारण धर्मराज (यमराज) ने इन्हें सूली पर चढ़ा दिया। इस पर कुपित हो मांडव्य ने धर्मराज को शूद्र हो जाने का शाप दिया जिसके फलस्वरूप वे अंबालिका की दासी के गर्भ से व्यास के नियोग के कारण 'विदुर' रूप में पैदा हुए। दे० 'विदुर'।

मांधाता—अयोध्या का एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। महाराज युवानाश्व को कोई पुत्र न था अतः मुनियों के आदेश से उन्होंने एक यज्ञ किया। यज्ञ वेदी पर मुनियों ने महारानी के लिए अभिमंत्रित जल रख छोड़ा था। भूल से रात में राजा को प्यास लगी और उन्होंने वह जल पी लिया। फल यह हुआ कि उन्हें गर्भ रह गया। यथावसर राजा की दाहिनी कोख फटी और मांधाता नाम का पुत्र पैदा हुआ। लड़के के पैदा होने पर उसको दूध पिलाने का प्रश्न आया। इस समस्या के समाधान के लिए इन्द्र ने एक अमृतस्रावी अँगुली दी जिसका पान कर एक दिन में बालक बड़ा हो गया। मांधाता बड़ा भारी चक्रवर्ती राजा हुआ।

इसका विवाह विदुमती से हुआ था जिससे पुरुकुत्स, अंबरीष और मुचु-तीन पुत्र और ५० कन्याएँ हुईं।

माद्री—मद्रदेश की राजकुमारी। इसका विवाह पांडु से हुआ था। पांडु को एक हिरनी ने शाप दिया था कि यदि किसी से मैथुन करोगे तो तुरन्त तुम्हारी मृत्यु हो जायगी अतः कुन्ती के बताए मन्त्र द्वारा माद्री को पुत्र की इच्छा से अश्विनीकुमारों को बुलाना पड़ा जिससे नकुल और सहदेव की उत्पत्ति हुई। एक बार बसंत ऋतु में पांडु अपने को न रोक सके और माद्री के साथ संभोग करने लगे जिसके फलस्वरूप उनकी मृत्यु होगई। माद्री अपने पुत्रों को कुन्ती को सौंप पांडु से साथ सती हो गई। दे० 'पांडु'।

माधवदास—जगन्नाथ जी के एक प्रेमी पुजारी। एक बार जब ये बीमार पड़े तो और पुजारियों ने इन्हें मन्दिर से बाहर किया और समुद्र के किनारे रख आए। रात में जब इन्हें जाड़ा लगा तो जगन्नाथ जी ने अपना पीतांबर इन्हें ओढ़ा दिया। प्रातः पुजारियों ने देखा कि जगन्नाथ जी का पीतांबर गायब है तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और वे इधर-उधर खोजने लगे। इतने में किसी ने आकर कहा कि पीतांबर तो समुद्र के किनारे बैठे माधवदास के शरीर पर है। पुजारियों ने जाकर देखा तो सचमुच बात ठीक निकली। वे रहस्य समझ गए और भगवान का यथार्थ भक्त जानकर माधवदास को फिर मंदिर में उठा ले आए।

मारीच—ताड़का और सुन्द राक्षस का पुत्र। ताड़का मारीच के साथ अगस्त्य के शाप से राक्षस हो विश्वामित्र के आश्रम के पास रहती थी और यज्ञ में विघ्न डाला करती थी। राम ने जब विश्वामित्र की आज्ञा से ताड़का को मार डाला तो मारीच रावण का नौकर हो गया। यह बड़ा मायावी था। रावण के कहने से यह स्वर्ण-मृग बना जिसे मारने के लिए राम को अपनी कुटिया छोड़नी पड़ी। राम जब दूर निकल गए तो मारीच ने राम के स्वर में 'हा! लक्ष्मण' कहा। इधर

कुटी में सीता और लक्ष्मण ने सुना। लक्ष्मण तो इसका रहस्य ताड़ गए पर सीता ने समझा कि राम ही कराह रहे हैं। उन्होंने लक्ष्मण को राम के पास जाने की आज्ञा दी। लक्ष्मण के जाते ही रावण ब्राह्मण के वेश में आया और सीता को उठा ले गया। इस प्रकार मारीच के कारण ही सीताहरण हुआ। राम ने इसे बाण से मारा तो इसने माया छोड़ दी और अपने असली रूप में आ शरीर छोड़ा।

मीराँबाई—एक प्रसिद्ध भक्त कवयित्री। यों इनका जन्म और मृत्युकाल विवादास्पद है, किन्तु अधिकांश विद्वानों के अनुसार उन्हें सन् १५६२ और १६०७ माना जा सकता है। किंवदन्तियों में इनके संबंध में कई सामान्य और असामान्य घटनाएँ हैं। कुछ प्रमुख यहाँ दी जा रही हैं (क) ये राधा की सखी ललिता की अवतार थीं। (ख) बचपन में एक बार इनके यहाँ एक साधु आया, जिसके पास कृष्ण की एक मूर्ति थी। ये वह मूर्ति माँगने लगीं, किन्तु साधु ने यह कहकर मूर्ति नहीं दी कि वह रोज उसको पूजा करता है। उनके यहाँ से जाने के दो-तीन दिन बाद वह साधु फिर इनके पास आया और मूर्ति उन्हें दे गया। कहा जाता है कि उससे स्वप्न में भगवान ने कहा था कि मेरी मूर्ति मीराँ को दे दो। उसके यहाँ मैं अपने को अधिक सुखी अनुभव करूँगा। (ग) तबसे मीराँ उस मूर्ति की पूजा करने लगीं। एक बार उनके पड़ोस में विवाह था। जब इनकी माँ वहाँ से लौटी तो मीराँ ने पूछा कि माँ मेरा विवाह किससे होगा। माँ ने विनोद में उस मूर्ति की ओर संकेत किया। तबसे कृष्ण को मीराँ अपना पति मानने लगीं। (घ) विवाह के बाद ससुराल पहुँचने पर मीराँ से कुलदेवी का पूजन करने को कहा गया। उन्होंने यह कहकर देवी का पूजन अस्वीकार कर दिया कि वे केवल कृष्ण की पूजा करती हैं, और किसी की नहीं। (ङ) जब अपनी ससुराल में वे खुले आम साधु-संतों से मिलने-जुलने लगीं तो वहाँ के राणा (विक्रमादित्य) को बहुत बुरा लगने लगा। जब मीराँ मना करने

पर भी नहीं मानी तो राणा ने अपने दीवान बीजावर्गी से उन्हें विष दिलवाया किंतु उसका इस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। इसी प्रकार एक बार इनके पास पिटारी में एक साँप भेजा गया। इन्होंने जब पिटारी खोली तो उसमें एक हार (एक मत से शालिग्राम की बटिया) था।

(च) मीराँ जब ससुराल में बहुत परेशान हुईं तो कहा जाता है कि इन्होंने तुलसीदास को एक पत्र लिखा (काल पर विचार करने पर यह असंभव लगता है। (जिसके उत्तर में तुलसीदास) 'जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिए ताहिकोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही' लिखा और मीराँ घर छोड़कर बाहर निकल गईं। (छ) जब वे वृन्दावन पहुँची तो वहाँ जीवगोस्वामी के दर्शनार्थ उनके स्थान पर गईं। गोस्वामी जी ने कहला दिया कि वे किसी भी स्त्री के सामने नहीं जाते। इसके उत्तर में मीराँ ने कहलाया मैं तो समझती थी कि संसार में कृष्ण ही एक मात्र पुरुष हैं, और सभी आत्माएँ स्त्री-स्वरूप हैं किन्तु आज पता चला कि उनका एक प्रतिद्वन्द्वी भी संसार में है। यह सुनते ही जीवगोस्वामीब हुत लज्जित हुए और उन्होंने स्वयं मीराँ का दर्शन किया और उनसे क्षमा माँगी। (ज) मीराँ वहाँ से द्वारिका गईं, जहाँ वे रणछोड़ जी के मन्दिर में रहने लगीं। इधर इनके मायके और ससुराल से नाई और ब्राह्मण उन्हें बुलाने के लिए गए। पहले तो मीराँ ने जाने से इनकार किया किंतु जब वे लोग बहुत ज़िद करने लगे तो मीराँ ने कहाकि मैं रणछोड़ जी से आज्ञा लेती आऊँ तो चलूँ। यह कहकर वे मूर्ति के पास गईं और कहा जाता है कि मूर्ति में ही समा गईं।

मीराँ दूदा जी के पुत्र रत्नसिंह की एकलौती बेटी थी। इनका जन्म कुड़कीर नामक गाँव में हुआ था। मां के मरने पर दूदा जी ने इन्हें अपने पास रखा। दूदा जी भक्त थे। उनका मीराँ पर बहुत प्रभाव पड़ा। इनका विवाह राणा सागा के पुज भोजराज से हुआ था, किंतु विवाह के ५-६ वर्ष बाद ही ये विधवा हो गईं थी।

मुंड—(सं०) एक भयानक राक्षस दे० 'चंड'।

मुचुकुंद—एक सूर्यवंशी राजा जो मांधाता के पुत्र थे। इन्होंने देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता की और विजयी होने पर एक विचित्र वरदान माँगा। वरदान था—मैं विना जगे बहुत दिन तक सोता रहूँ और इस बीच यदि मुझे कोई किसी प्रकार से उठा दे तो वह भस्म हो जाय। वरदान स्वीकृत हो गया और मुचुकुंद एक कंदरा में सो रहे। बहुत दिन बाद एक बार कालयवन ने मथुरा पर चढ़ाई की। कृष्ण उसे मुचुकुंद की कंदरा में ले जाने के लिए उसके सामने से भगे और भगते भगते उसी कंदरा में जा छिपे। कालयवन इनका पीछा करता पहुँचा तो सामने मुचुकुंद सोया दिखाई पड़ा। कालयवन ने मुचुकुंद को कृष्ण समझ जोर से लात मारी और उनके उठते ही भस्म हो गया। मुचुकुंद वहाँ से उठ कर गंधमादन पर्वत पर तपस्या करने चले गये।

मुर—एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था। इसी कारण उनका एक नाम मुरारी है।

मुष्टिक—कंस का एक असुर मल्ल जिसे कृष्ण ने मल्लयुद्ध में मारा था। यह मुक्के की लड़ाई में बड़ा पटु था।

मुहम्मद—इसलाम धर्म के पैग़म्बर जो अब्दुल्ला के लड़के थे। इनकी माता का नाम अमेना या अमीना था। इनका जन्म सन् ५७० ई० में मक्का में हुआ तथा मृत्यु ६३२ ई० में मदीने में हुई थी। इन्होंने इसलाम नाम का एक नया धर्म चलाया जिसके लिए इनका बड़ा विरोध हुआ। यहाँ तक कि अबूजेहल तथा अबूलहब ने भी जो इनके चचा लगते थे इनके साथ लड़ाई की। तंग आकर खुदा के हुक्म से ये मक्का छोड़कर मदीना चले गए। इनकी कुल लगभग १० बीबियाँ थीं जिनमें आयशा (अबूबक्र की पुत्री) तथा हफ़सा (उमर फ़ारुक की पुत्री) अधिक प्रसिद्ध थीं। अबूबक्र, उमर फारुक, उसमानगनी तथा हजरत अली इनके मित्र थे जो चार खलीफे या चार सहाबे कहे जाते हैं।

इनमें प्रथम दो तो हजरत मुहम्मद के ससुर और शेष दो दामाद थे। कुरान हजरत मुहम्मद पर ही नाजिल हुई थी।

मूलदेव—एक पौराणिक या काल्पनिक व्यक्ति जिसे चौर-शास्त्र या स्तेयशास्त्र का प्रवर्तक कहा गया है। इनकी माता का नाम कर्णी था। एक मत से मूलदेव पाटलिपुत्र का एक राजकुमार था। यह उज्जयिनी की एक देवदत्ता या देवबाला नाम्नी वेश्या से प्रेम करने लगा। देवबाला की माता ने उसकी शादी किसी और से कर दी। इस पर मूलदेव को बड़ा दुःख हुआ और अंत में उसने सारा राज्य-पाट छोड़ अपने को चोरी करने की विद्या में दक्ष बनाया। दक्ष हो जाने पर इसी के सहारे उसने देवबाला को चुराया और अपनी इच्छापूर्ति की। मूलदेव के अतिरिक्त मडिक, कंकरीक, शर्विलक, चातुर आदि कुछ और भी चौर-शास्त्रज्ञों के नाम प्राचीन साहित्य में मिलते हैं। चौर-शास्त्र के अधिष्ठाता स्वामी कार्तिकेय कहे गए हैं। इसीलिए चोरों को स्कंद पुत्र कहते हैं। मूलदेव के अन्य नाम मूलभद्र, मूलश्री, तथा कर्णीसुत भी हैं।

मूसा—यहूदी, ईसाई और इसलाम धर्म के एक प्रसिद्ध पैगम्बर जो इम्रान के लड़के थे। इन्हें खुदा का नूर तूर पर्वत पर दिखाई पड़ा था जिससे ये बेहोश हो गए थे और पहाड़ जल गया था। ये खुदा से बातचीत करने के लिए भी मशहूर थे। मुसलमानों के लिए जो स्थान मुहम्मद का है यहूदियों के लिए वही मूसा का। तौरेत इन्हीं पर नाजिल हुई थी। प्रसिद्ध कंजूस कारून (कारूँ) इन्हीं के समय में था जो इनके शाप से अपने खजाने के साथ जमीन में धँस गया।

मेघनाद—रावण का पुत्र। यह अत्यंत वीर था। इसने युद्ध में इन्द्र को जीता था इसीलिए इसको इन्द्रजीत की उपाधि मिली थी। इसी के द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लगी थी। अन्त में यह लक्ष्मण के हाथ से ही मारा गया।

मेनका—स्वर्ग की एक अप्सरा। इंद्र की आज्ञा से यह विश्वामित्र को तपच्युत करने गई जहाँ इसे सफलता मिली और विश्वामित्र को इसके गर्भ से शकुंतला नाम की पुत्री हुई। यह नदी के किनारे शकुन्तला को छोड़कर चली गई और उनका पालन कण्व ऋषि ने किया। दे० 'कण्व' 'शकुन्तला'।

मेरु—पुराणों के अनुसार एक पर्वत जो स्वर्ण का माना जाता है। समुद्र मंथन के समय इसकी मथानी बनाई गई थी। इसे अधिकतर सुमेरु कहा जाता है।

मैत्रेयी—एक बड़ी पंडिता और ब्रह्मवादिनी स्त्री जिसका विवाह याज्ञवल्क्य से हुआ था। बृहदारण्यक उपनिषद् में इसका पांडित्य देखने योग्य है।

मैना—हिमालय या हिमवान पर्वत की स्त्री जो पितरों की मानसी कन्या थी। इसके गर्भ से गङ्गा और उमा (पार्वती) नाम की कन्याएँ तथा मैनाक नाम का पुत्र तीन सन्तानें पैदा हुई थीं। इसे मेनका भी कहते हैं।

मैनाक—हिमालय और मैना का पुत्र एक पर्वत। जब इन्द्र पर्वतों की पाँख काटने लगे तो यह डर कर समुद्र में जा छिपा और इसकी पाँख बच गई। समुद्र की आज्ञा से लंका जाते समय इसने हनुमान को आश्रय देना चाहा था।

मोरध्वज—एक प्रसिद्ध दानी राजा। एक बार कृष्ण और अर्जुन ब्राह्मण तथा सिंह का वेश धारण कर इनकी परीक्षा लेने गये। ब्राह्मण वेशधारी कृष्ण ने अपने सिंह के लिए इनके इकलौते पुत्र का आधा अंग मांगा। राजा और रानी ने एक ओर से चीर कर उसका आधा अंग कृष्ण को दे दिया। इससे प्रसन्न होकर कृष्ण ने इन्हें दर्शन दिया।

मोहिनी—विष्णु का एक अवतार। शुंभ तथा निशुंभ नामक दो राक्षसों का वध करने के लिए विष्णु मोहिनी के रूप में अवतरित हुए। इसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो दोनों राक्षस इसे प्राप्त करने की इच्छा से आपस में लड़ मरे।

(२) समुद्रमंथन के समय इसी रूप में भगवान ने देवताओं को अमृत तथा असुरों को सुरा पिलाई थी।

(३) एक बार शंकर को भी विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर मोहित किया था।

यक्ष—एक देवयोनि जिसके आदि पुरुष कुबेर कहे जाते हैं। यक्ष लोग कुबेर के सेवक हैं। ये कैलास पर्वत पर कुबेर पुरी में रहते हैं। यक्ष देवों से कुछ नीचे और राक्षसों से ऊपर समझे जाते हैं।

यदु—यदुवंशियों के प्रथम पुरुष। ये महाराज ययाति की पत्नी देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। शुक्राचार्य के शाप से इनके पिता को यौवन काल में ही जराग्रस्त होना पड़ा। उन्होंने यदु से कुछ समय के लिए उनका यौवन माँगा, इस विषय में नकारात्मक उत्तर पाकर इनके पिता ने इन्हें राज्य के अधिकार से वंचित कर दिया था। अंत में इंद्र की कृपा से राज्य का दक्षिणी भाग इन्हें मिल गया। इन्हीं के वंशज 'यादव' कहलाए। दे० 'ययाति', 'देवयानी'।

यम—मृत्यु के देवता। कुछ मतों से नरक के देवता। इनका स्थान यमलोक कहलाता है। मरने के बाद सबसे पहले मनुष्य इनके समक्ष जाता है जहाँ इनके लिपिक चित्रगुप्त उसके पाप-पुण्य का लेखा-जोखा सुनाता है और उसके अनुसार न्यायकर्ता यम उसे नरक या स्वर्ग में भेजते हैं। इसी कारण इन्हें धर्मराज भी कहते हैं। दे० 'धर्म'। यम संज्ञा के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र हैं। यमी (जो बाद में यमुना हुईं) इन्हीं की बहिन थीं। इसी कारण जमुना में नहाने वाले (विशेषतः यमद्वितीया को) नरक में नहीं जाते। हेमलता, सुशीला तथा

विजया आदि यम की कई स्त्रियाँ हैं। युधिष्ठिर इन्हीं के पुत्र थे तथा विदुर इनके अवतार थे। दे० 'मांडव्य' तथा 'विदुर'। यम का वाहन भैंसा है और इनका स्वरूप बड़ा भयावना है। इन्हें यमराज भी कहते हैं। आदमी जब मरता है तो उसके अंगुष्ठ शरीर को इन्हीं के दूत ले जाते हैं।

यमलार्जुन—गोकुल के दो वृक्ष जो पूर्व जन्म के कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव थे। ये एक बार मद्य पीकर मग्न हो स्त्रियों के साथ जल-क्रीड़ा कर रहे थे। इस पर रुष्ट हो नारद ने इन्हें पेड़ हो जाने का शाप दिया। यशोदा ने कुपित हो एक बार कृष्ण को ओखली से बाँध दिया। कृष्ण ओखली को खींचते इन्हीं दोनों वृक्षों के बीच पहुँचे और जोर से खींचा जिससे ये टूट गए और इस प्रकार दोनों मुक्त हो गए। दे० 'नलकूबर'।

यमुना—एक नदी जो पहले यमी थीं। ये यमराज की बहन तथा सूर्य और संज्ञा की पुत्री हैं। इनके उत्पन्न होने के पूर्व संज्ञा ने एक बार सूर्य की ओर चंचल दृष्टि से देखा था जिससे रुष्ट हो सूर्य ने शाप दिया कि तुम्हारी पुत्री चंचल होकर बहेगी। इसी कारण संज्ञा की पुत्री यमी यमुना होकर बही। यमुना को एक बार बलराम से क्षमा-याचना करनी पड़ी थी (दे० 'बलराम')। कलिंद पर्वत से निकलने के कारण यमुना को कलिंदजा भी कहते हैं पर साथ ही सूकलिंद का अर्थ यं भी है। यमुना में यमद्वितीया को नहा लेने से लोगों का विश्वास है कि यमराज नर्क में नहीं भेजते। दे० 'यम'।

ययाति—एक चंद्रवंशी राजा जो नहुष के पुत्र थे। इनकी दो स्त्रियाँ थीं। एक तो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी और दूसरी वृष-पर्वा की कन्या शर्मिष्ठा। शर्मिष्ठा यथार्थतः आरम्भ में उनकी स्त्री न थी। वह देवयानी की दासी बन कर आई थी। शुक्राचार्य ने ययाति

को उसके साथ संभोग न करने के लिए भी कहा था। पर शर्मिष्ठा ऋतुमती हुई तो उसने ययाति से भोगार्थ प्रार्थना की। प्रार्थना स्वीकार कर ययाति ने उसके साथ भोग किया तब से वह उनकी पत्नी हो गई। शुक्राचार्य ने जब यह सुना तो उन्हें वृद्ध हो जाने का शाप दिया पर जब ययाति ने भोग का कारण समझाया तो शुक्राचार्य ने इतना शोधन कर दिया कि यदि कोई ययाति का बुढ़ापा ले लेगा तो वे पुनः जवान हो जायँगे। ययाति को देवयानी से यदु और तुर्वसु तथा शर्मिष्ठा से द्रुह्यु, अणु और पुरु—इस प्रकार कुल पाँच पुत्र थे। इन्होंने अपने पुत्रों से अपनी जवानी देने का प्रस्ताव किया। और सभी ने तो इनकार कर दिया पर पुरु तैयार हुआ। फलस्वरूप पुरु वृद्ध हो गया और ययाति पुनः जवान हो गए। युवा होकर इन्होंने अपनी स्त्रियों को लेकर सहस्र वर्षों तक सुख भोगा और अन्त में पुरु को राज्य देकर तप करने चले गए। तप के बाद स्वर्ग में जाने पर तप में अपने को इंद्र से श्रेष्ठ बताने पर इंद्र के शाप से इन्हें च्युत होना पड़ा, पर अष्टक ऋषियों ने इन्हें बीच में रोक लिया और फिर स्वर्ग भेज दिया। कहा जाता है कि एक सहस्र वर्ष सुख भोगने के बाद इन्होंने देखा कि विषयों के भोगने से किसी को संतोष नहीं मिलता। यह विचार कर इन्होंने पुरु को उसकी जवानी लौटा दी थी तथा अपना बुढ़ापा लेकर तप के लिए निकल गए थे। दे० 'देवयानी' 'शर्मिष्ठा'।

यशोदा—कृष्ण को पालने वाली माता तथा नन्द की स्त्री। जिस देवी को कंस ने कृष्ण समझ कर पटकना चाहा था यशोदा के ही गर्भ से उत्पन्न हुई थीं। एक मत से ये देवी पूर्व जन्म में सती थीं और यशोदा उनकी माता प्रसूति थीं। दक्ष-यज्ञ में जब सती जल मरीं तो उन्हें पाने के लिए उनकी माता प्रसूति तप करने लगीं। तप से प्रसन्न हो थोड़ी देर के लिए सती उनकी पुत्री होना स्वीकार किया था और उसी को पूर्ण करने के लिए प्रसूति को यशोदा बनना पड़ा और सती

क्षण भर के लिए उनकी पुत्री बनकर आई थीं। दे० 'कृष्ण' 'नन्द'।

याज्ञवल्क्य--बाशकल और वैशंपायन के प्रसिद्ध शिष्य एक ऋषि। मैत्रेयी और कात्यायनी इनकी दो स्त्रियाँ थीं जो बड़ी विदुषी थीं। विशेषतः मैत्रेयी तो बड़ी तार्किक और दर्शन शास्त्र की पंडित थी। कुछ स्थानों पर याज्ञवल्क्य की एक स्त्री का नाम कात्यायनी के स्थान पर गार्गी मिलता है। एक बार याज्ञवल्क्य से उनके गुरु वैशंपायन रुष्ट हो गए और उन्होंने सारी विद्या लौटाने को कहा। याज्ञवल्क्य ने गुरु से मिला सारा ज्ञान उगल दिया जिसे वैशंपायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर चुग लिया। इसी लिए उनकी शाखाओं का नाम तैत्तिरीय हुआ। इनका जनक के दरबार में भी रहने का उल्लेख मिलता है। कुछ मतों से जनक के दरबार के याज्ञवल्क्य दूसरे थे। याज्ञवल्क्य की बनाई एक स्मृति भी मिलती है।

युधिष्ठिर—पांडु और कुंती के सबसे बड़े पुत्र जो धर्मराज के औरस पुत्र कहे जाते हैं। इनके विषय में प्रसिद्ध है कि ये कभी झूठ नहीं बोलते थे तथा बड़े न्यायप्रिय एवं शांतप्रकृति के थे। इन्हें शिक्षा द्रोणाचार्य से मिली थी। धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को ही राजा बनाना चाहते थे पर दुर्योधन ने नहीं बनने दिया। बाद में उसी के कारण पांडवों को वनवास मिला और पाँचों भाई कुन्ती के साथ वन में चले गए। दुर्योधन ने एक बार लाक्षागृह में पांडवों को जलाने का प्रबन्ध किया पर विदुर के संकेत द्वारा ये लोग बच गए थे। अर्जुन ने द्रौपदी को जीता पर माता की आज्ञा से (दे० 'अर्जुन' तथा 'द्रौपदी') पाँचों पांडवों के साथ द्रौपदी का विवाह हुआ। युधिष्ठिर जो जुए का शौक जिसके कारण उन्हें अपना राज्य द्रौपदी को ही नहीं हारना पड़ा अपितु १२ वर्ष के वनवास एवं एक वर्ष के गुप्त वनवास की नौबत आ गई। गुप्त वनवास में पांडव विराट के यहाँ नौकर रूप में थे। वहाँ युधिष्ठिर राजा के साथ जुआ खेलते थे। वहाँ से लौटने पर महाभारत का युद्ध

हुआ जिसमें युधिष्ठिर के द्वारा 'अश्वत्थामा मारा गया न जाने हाथी या मनुष्य' कहलाकर द्रोणाचार्य को समाप्त कराया गया। बुढ़ौती में अन्य पांडवों को लेकर युधिष्ठिर हिमालय पर्वत पर गलने चले गए और सब के मर जाने पर इसका देहान्त हुआ। द्रौपदी के अतिरिक्त युधिष्ठिर एक स्त्री देविका भी थी जिससे इन्हें यौधेय नाम का पुत्र हुआ था।

यूनुस—एक पैगम्बर। ये लोगों को खुदा की शिक्षा देते थे। इन्हें एक मछली खा गई थी पर बाद में ये निकले और एक पेड़ की छाया में इन्होंने अपनी खाल ठीक की।

यूसुफ़—एक प्रेमी जो अपनी शुद्धता के लिए प्रसिद्ध है। इनके पिता का नाम याकूब और माता का राफील था। यूसूफ़ बहुत सुन्दर थे। इनके भाई इनसे जलते थे। एक बार उन्होंने इन्हें एक सौदागर के हाथ बेच दिया। सौदागर के साथ ये मिस्र पहुँचे। वहाँ के राजा (या मंत्री) ने इन्हें खरीद लिया और ये दरोगा बने। इनका रूप देख वहाँ की शाहजादी जुलेखा (एक मत से यह राजा या मंत्री की स्त्री थी) इन पर मोहित हो गई और सहवास की प्रार्थना की पर इन्होंने प्रार्थना अस्वीकार कर दी। इस पर उसने इन पर छेड़छाड़ करने का अपराध लगाया और ये जेल भेज दिए गए। बाद में वहाँ के राजा के एक स्वप्न का फल ठीक बतलाने पर इन्हें जेल से छोड़ा गया। एक मत से ये बाद में वहाँ के राजा हुए तथा जुलेखा का इनसे विवाह भी हो गया। ११० वर्ष राज्य करने के बाद ये मरे।

योगकन्या—यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होने वाली देवी जो सती थीं और जो कृष्ण के स्थान पर कारागृह में रक्खी गई थीं। कंस ने इन्हें दोनों हाथ से उठाकर पटकना चाहा पर ऊपर से ही ये उड़ गईं। दे० 'यशोदा' 'देवकी' 'कृष्ण' 'कंस'।

रंतिदेव—महाराज संस्कृति के पुत्र एक दानी राजा। इन्होंने

अपना सारा राज्य तथा धन-वैभव आदि दान कर दिया और अंत में इनके पास खाने को भी कुछ नहीं रह गया। एक बार ४८ दिन भूखे रहने के बाद इन्हें थोड़ी सी खाद्य-सामग्री मिली और उसे ये खाने ही जा रहे थे कि एक ब्राह्मण आ पहुँचा। उसे थोड़ा खिलाकर ज्योंही विदा किया एक शूद्र आ गया। राजा ने उसे भी कुछ देकर तृप्त किया। शेष बचा खाने बैठे तब तक एक चांडाल आ गया और उसने शेष भोजन माँग लिया। अब राजा के पास केवल पानी शेष था। उसे वे पीना ही चाहते थे तब तक एक कसाई ने आकर पानी माँगा। राजा ने प्रसन्नतापूर्वक पानी भी दे दिया। उसी समय भगवान विष्णु ने प्रसन्न हो उन्हें दर्शन दिया और स्वर्ग चले गए।

रंभा—एक अप्सरा जो स्त्री-सौंदर्य की चरम सीमा समझी जाती है। यह समुद्र-मंथन के समय निकली थी। इसे एक बार इन्द्र ने विश्वामित्र को तपच्युत करने को भेजा। विश्वामित्र ने रुष्ट हो सहस्र वर्ष तक पत्थर हो जाने के लिए श्राप दिया और श्राप स्वीकार कर यह सहस्र वर्ष तक पत्थर रहा। एक बार रंभा शृङ्गार कर कुबेर के पुत्र नलकूबर के यहाँ जा रही थी। रास्ते में रावण ने उसे देख लिया और उसके सौंदर्य पर इतना मोहित हुआ कि बलात्कार करने से अपने को न रोक सका। रंभा ने रुष्ट होकर उसे शाप दिया कि आज से यदि किसी के साथ बलात्कार करोगे तो तुम्हारे सिर कट जायँगे। इसी शाप के भय से रावण सीता के साथ लंका में बलात् कुछ न कर सका था।

रघु—प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। इनकी माता का नाम सुदक्षिणा तथा पिता का नाम दिलीप था। इनके पुत्र का नाम अज तथा अज के पुत्र का नाम दशरथ था। इस प्रकार रघु राम के परदादा थे। इन्हीं के नाम के आधार पर राम को राघव या रघुपति आदि कहा जाता है। दिलीप ने वसिष्ठ की आज्ञा से कामधेनु की पुत्री नंदिनी को प्रसन्न कर 'रघु' की प्राप्ति की थी। दिलीप ने एक बार अश्वमेध यज्ञ किया।

उस समय रघु छोटी अवस्था के थे फिर भी उन्होंने घोड़े का भार इन्हें सौंपा। संयोगवश इन्द्र ने घोड़े को पकड़ लिया और इस प्रकार छोटी अवस्था में ही रघु को इंद्र से युद्ध करना पड़ा। युद्ध में इन्होंने इंद्र को हरा दिया। सिंहासन पर बैठने के उपरान्त रघु ने चारों दिशाओं को जीतकर विश्वजित् यज्ञ किया। इस यज्ञ में इन्होंने अपना सब कुछ ब्राह्मणों को दे दिया था।

रणछोड़—श्री कृष्ण का नाम। द्वारिका की कृष्ण मूर्ति इस नाम से पुकारी जाती है। मीराबाई इसी मूर्ति में विलीन हो गई थीं। कहते हैं कि जरासंध की चढ़ाई के समय कृष्ण समरांगण छोड़ द्वारिका भाग गए थे, इसी आधार पर उनका नाम 'रणछोड़' पड़ा था।

रति—दक्ष प्रजापति की कन्या और कामदेव की पत्नी। इसकी उत्पत्ति बिना माता के हुई थी। कहते हैं कि दक्ष ने अपने पसीने से इसे उत्पन्न किया था। इसका रूप इतना अप्रतिम और आकर्षक था कि जो भी देखता इससे प्रेम करने लगता, इसी कारण इसका नाम 'रति' पड़ा। शिव ने जब इसके पति कामदेव को भस्म कर डाला तो इसी ने रोकर शिव से यह वर प्राप्त किया कि बिना अङ्ग के भी कामदेव सर्वदा जीवित रहेंगे। बाद में रति ने प्रद्युम्न की स्त्री मायावती के रूप में जन्म ग्रहण किया था। दे० 'कामदेव'।

राधा—(१) कृष्ण की प्रेमिका। श्रीमद्भागवत में इनका नाम नहीं मिलता। इनके सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं। एक मत से कृष्ण ने एक बार वन में रमण करने की इच्छा की और तुरत उनके बाएँ अँग से राधा पैदा हो गईं। एक मत से राधा सुदामा के शाप से गोकुल में पैदा हुई थीं। इनके पिता का नाम वृष-भानु था। इनका विवाह अमनघोष नामक गोप से हुआ था। पर, बाद में कृष्ण से इनका प्रेम हो गया। एक मत से ये कृष्ण की विवाहिता

स्त्री थीं। राधा को लक्ष्मी का अवतार भी मानते हैं। कहा जाता है कि पैदा होते ही ये १६ वर्ष की युवती हो गई थीं। दे० 'कृष्ण'।

(२) धृतराष्ट्र के सारथी अधिरथ की पत्नी। इसने कर्ण को पाला था इसी कारण उनका नाम राधेय भी है। दे० 'कर्ण'।

रहूगण—एक प्रतापी राजा। एक बार इन्हें पालकी पर बैठकर कपिल मुनि से ज्ञान का उपदेश सुनने के लिए उनके आश्रम में जाना था। इन्होंने 'जड़भरत' को अपनी पालकी में लगाया और उनके न चलने पर उन्हें बहुत पीटा। अंत में इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

राम—यों तो रामतीन हैं— बलराम, परशुराम, रामचंद्र, पर राम से सघारणतः रामचंद्र का ही अर्थ लिया जाता है। सूर्यवंशी कुल में दशरथ तथा कौशल्या के पुत्र के रूप में इनका जन्म हुआ था। ये विष्णु के सातवें अवतार थे। (जन्म के लिए दे० दशरथ) इनका समय त्रेता का अन्तिम चरण था। राम के लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न तीन भाई थे जिनमें लक्ष्मण से ही इनका विशेष प्रेम था। बाल्यावस्था में ही विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को यज्ञरक्षार्थ अपने आश्रम में ले गए। वहाँ राम ने बहुत से राक्षसों और राक्षसियों का बध किया जिनमें ताड़का का नाम अधिक प्रसिद्ध है। वहाँ से विश्वामित्र के साथ ये लोग जनकपुर चले। रास्ते में राम ने अहल्या (दे० 'अहल्या') का उद्धार किया। जनकपुर में राम ने शिव के धनुष को तोड़कर सीता का वरण किया। वहाँ से अयोध्या आने पर दशरथ इन्हें राजा बनाना चाहते थे पर मंथरा और कैकेयी (दे० 'कैकेयी,' 'मंथरा') के षड्यंत्र से ये १४ वर्ष के लिए वन भेज दिए गए। वन में सीता और लक्ष्मण भी इनके साथ गए। बाद में भरत (दे० 'भरत') इन्हें लौटाने गए पर ये नहीं लौटे। उसके बाद राम, लक्ष्मण और सीता के साथ ये दक्षिण की ओर बढ़े। अगस्त्य ने इन लोगों को पंचवटी जाने की सलाह दी। यह स्थान राक्षसों से भरा था। यहाँ रावण की बहन शूर्पणखा राम से प्रेम करने लगी। यह एक

दिन विवाह का प्रस्ताव लेकर आई पर राम ने उसे लक्ष्मण के पास भेजा और लक्ष्मण ने उसके नाक कान काटकर उसे विरूप कर दिया। उसके कहने पर खर और दूषण अपनी सेना के साथ राम से युद्ध करने आए पर वे सभी मारे गए। इसके बाद शूर्पणखा अपने भाई रावण के पास गई और उसने उसे बहकाया। (दे० रावण) रावण ने मारीच (दे० मारीच) की सहायता से सीता-हरण किया और उन्हें लंका ले गया। राम और लक्ष्मण सीता के लिए इधर-उधर भटकने लगे। उन्होंने 'कबंध' का बध किया जिसने मरते समय सुग्रीव से सहायता लेने की सलाह दी। आगे बढ़कर ये लोग सुग्रीव तथा हनुमान आदि के संपर्क में आए। राम ने सुग्रीव के भाई बालि को मारकर सुग्रीव को राज्य दिलाया। हनुमान ने सीता का पता लगाया (दे० हनुमान) और फिर राम ने बंदरों और नलनील की सहायता से पुल बाँध कर समुद्र पार किया और लंका में रावण को उसकी सेना सहित मार कर सीता का उद्धार किया।। दे० 'रावण' 'शबरी' 'अहल्या' 'खर' 'सीता' 'मारीच' 'ताड़का'।

अग्नि—परीक्षा के बाद सीता को अर्द्धांगिनी रूप में स्वीकार कर ये अयोध्या लौटे। राज्याभिषेक के बाद इन्होंने राज-काज संभाला। इसी बीच लोकापवाद के भय से इन्हें गर्भवती फिर सीता का परित्याग करना पड़ा। वन में बाल्मीकि ऋषि के आश्रम में सीता के लव और कुश नामक पुत्र उत्पन्न हुए। राम के अश्वमेध यज्ञ के समय लव कुश ने अश्व रक्षक सेना को पराजित किया। अंत में राम स्वयं गये और सीता को पहचान कर उन्हें अयोध्या चलने को कहा किंतु सीता उसी समय भूमि में लीन हो गई। लव और कुश को राजकार्य सौंप कर अंतमें राम स्वर्ग चले गये।

उपर्युक्त प्रसिद्ध कथा के अतिरिक्त शास्त्र और लोक में रामविषयक छोटी-मोटी कई कथाओं का उल्लेख मिलता है। उनमें शक्ति के उपासक

राम की कथा का विशेष स्थान है। भागवत के देवी नवरात्र खंड, कृतिवास रामायण तथा शिव महिमस्तोत आदि ग्रन्थों का आधार लेकर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने इस कथा का उपयोग 'राम की शक्ति पूजा' नायक लघुवीर काव्य में किया है। संक्षेप में कथा इस प्रकार है। राम-रावण युद्ध में आसुरी सेना विजयी होने लगी। क्योंकि शक्ति रावण की सहायता करती थीं। यह देखकर राम ने जांबवंत के कहने पर देवी की पूजा प्रारम्भ की। वे प्रत्येक दिन एक कमल देवी की प्रतिमा पर चढ़ाते। उपासना के अंतिम दिन राम की ध्यानमग्न अवस्था में देवी ने पूजा का कमल चुरा लिया। कमल के स्थान पर राम को अपना नेत्र अर्पित करते देख, देवी प्रसन्न होकर शक्तिरूप में इनके शरीर में लीन हो गईं। इसी के फलस्वरूप राम ने रावण को पराजित किया।

रामानंद—रामानुजाचार्य के शिष्य तथा रामानंदी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक। इनका जन्मकाल १५ वीं सदी (विक्रमी) माना जाता है। अपनी उदार प्रकृति के कारण इन्होंने नीच जाति के लोगों के लिए भी आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खोला। भक्ति के लिए ये ऊँच-नीच सबको समान समझते थे। संस्कृत के अतिरिक्त हिंदी में भी इनकी रचनायें मिलती हैं तुलसी और कबीर रामानंद के ही शिष्य कहे जाते हैं।

रावण—विश्रवा मुनि का पुत्र, एक महान पंडित पर अत्याचारी राक्षस जिसका राज्य लंका में था। एक बार लंका में राक्षसों और विष्णु में युद्ध हुआ और राक्षस हारकर पाताल में चले गए। राक्षसों के प्रधान सुमाली ने प्रण किया कि इस हार का बदला वह कभी न कभी विष्णु से लेगा। इसके लिए उसने अपनी पुत्री कैकसी (कुछ लोगों ने इसका नाम 'निकशा' दिया है) को पुलस्त्य मुनि के पुत्र विश्रवा ऋषि को दी। विश्रवा और कैकसी से रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण और शूर्पणखा, ये चार संतानें हुईं। इनमें रावण सबसे बड़ा, विकराल और दस सिरों वाला था। विश्रवा की एक और पत्नी 'इडा-विडा' थी जिससे कुबेर का

जन्म हुआ था। उस समय कुबेर लंका में राज्य कर रहा था। उसके वैभव को देखकर रावण को भी वैभवशाली बनने का शौक हुआ और अपने भाइयों के साथ तप करने लगा। अंत में अपने दसों सिरों को काटकर उसने चढ़ा दिया। इस पर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर उसे वर माँगने की आज्ञा दी। रावण ने दो वर प्राप्त किए। पहिला दानवों, यक्षों तथा देवों से अवध्य होने का था। और दूसरा अपनी इच्छानुसार कोई भी रूप धारण करने का।

इसके बाद रावण लंका आया। विश्रवा के कहने से कुबेर ने लंका छोड़ दी और कुबेरपुरी चले गए। रावण लंका में राज्य करने लगा। इसने तीनों लोक जीत लिए और इंद्रादि देवों को भी परास्त किया। बरुण उसका बाग सींचने लगे, सूर्यचन्द्र उसके घर में प्रकाश करने लगे और इसी प्रकार अन्य देवताओं को भी उसका दास बनना पड़ा। रावण ने मय की पुत्री देवकन्या मन्दोदरी से विवाह किया जिससे उसे वीर पुत्र मेघनाद की प्राप्ति हुई। अक्षयकुमार भी इसका एक प्रसिद्ध पुत्र था। यों इसकी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जिनसे इसे एक मत से एक लाख पुत्र थे। रावण बड़ा दंभी और अत्याचारी था। एक बार यह कैलाश को उठाकर ले जाने लगा पर शिव के दबाने पर यह रोने लगा और शिव से इसने बहुत अनुनय-विनय किया। शिव ने प्रसन्न होकर इसे चंद्रहास नाम की तलवार दी। एक बार रावण नदी में पूजा कर रहा था। पास ही उसी नदी में सहस्रार्जुन अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहा था। उसने अपने सहस्र हाथों से नदी का पानी रोक दिया इस पर रावण की पूजा में बाधा पड़ी वह उससे लड़ने गया। सहस्रार्जुन ने इसे पकड़ लिया और अपने रनिवास में बाँध दिया। उसकी स्त्रियाँ इसके दस सिरों पर दीपक रखती थीं और लड़के इसका तमाशा बनाते थे। पुलस्त्य मुनि के कहने पर वहाँ से इसकी मुक्ति हुई। एक बार यह बालि से लड़ने गया। बालि पूजा कर रहा था। उसने संकेत से इसे बैठने

को कहा पर इसने एक न सुनी और उससे लड़ गया। बालि ने इसे अपनी काँख में दबा लिया और पूजा (एक मत से ६ महीने तक) करता रहा। पूजा के उपरांत जब उसने सूर्य को अर्घ देने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया तो रावण वहाँ से भाग निकला। बालि को उस समय शायद यह भूल गया था कि उसके बगल में रावण है।

रावण के पापों का घड़ा भर गया तो वह सीता को चुरा लाया। सीता से वह विवाह करना चाहता था पर सीता ने स्वीकार नहीं किया। रावण इस पर सीता को मारने दौड़ा पर मंदोदरी के समझाने पर मान गया। दे० 'रंभा'। अंत में राम का उससे युद्ध हुआ। युद्ध में राम ज्योंही उसका सर काटते थे दूसरा सर वहाँ उग आता था। यहाँ तक कि यही करते-करते राम थक गए। विभीषण, से जो राम के पक्ष में था, पूछने पर पता चला कि रावण के हृदय में अमृत है इसी से वह नहीं मरता। अतः राम ने पहले अमृत को जलाया और तब इसे मारने में सफल हुए। इसीलिए कहते हैं कि विभीषण यदि न फूटता तो रावण न मरता। 'घर के फूटे लंका दाह' रावण के मरते समय राम ने लक्ष्मण को उससे नीति की बातें सीखने के लिए भेजा था। इसका अर्थ यह है कि राम भी उसे बहुत बड़ा विद्वान् मानते थे।

राहु—सिंहिका का पुत्र एक राक्षस। समुद्र-मंथन के बाद जब धन्वंतरि अपने हाथ में अमृत का कलश लिए निकले तो दैत्यों ने वह कलश छीन लिया और आपस में उसे पीने के लिए लड़ने लगे। विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर दैत्यों को मोहित किया और उनसे अपने को पंच स्वीकार कराया। जब दैत्यों ने उन्हें पंच मान लिया तो वे देवों को अमृत पिलाने लगे। सभी दैत्य उनकी छवि के आकर्षण में मंत्रमुग्ध पड़े थे। राहु ने यह धोखा ताड़ लिया और देवों का वेष धारण कर सूर्य और चन्द्रमा के बीच जा बैठा। मोहिनी ने ज्योंही उसे थोड़ा सा अमृत पिलाया सूर्य और चन्द्रमा को इस बात का पता चल गया

और उन्होंने बात खोल दी। तुरन्त ही विष्णु का सुदर्शन चक्र चला और राहु का सर धड़ से अलग हो गया। अमृत पी लेने से वह मरा नहीं और उसके दोनों भाग जीवित रहे। सर का नाम तो राहु रहा और धड़ का नाम केतु पड़ा। तभी से राहु चन्द्रमा और सूर्य से द्वेष रखने लगा। उसी कारण कभी-कभी उन दोनों को ग्रसता या ग्रहण करता है जिसे हम लोग सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण की संज्ञा देते हैं।

रुक्मी—विदर्भराज भीष्मक का पुत्र तथा रुक्मिणी का भाई। कंस का घनिष्ट मित्र होने के कारण यह अपनी बहन का विवाह कृष्ण के साथ नहीं करना चाहता था। जब कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया उस समय इसने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं कृष्ण का बध किये बिना घर नहीं लौटूँगा। किन्तु कृष्ण से युद्ध करते हुए यह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा था और रुक्मिणी ने इसके प्राण बचाए। अपने वचन के अनुसार घर न लौटकर, इसने एक दूसरा नगर बसाया था।

रुक्मिणी—विदर्भराज भीष्मक की कन्या, रुक्मी की बहिन और श्रीकृष्ण की स्त्री। कृष्ण और रुक्मिणी दोनों एक दूसरे की प्रशंसा सुन एक दूसरे पर मोहित थे पर भीष्मक और रुक्मी रुक्मिणी का विवाह कृष्ण से न कर जरासंध के कहने से शिशुपाल से करना चाहते थे। अंत में शिशुपाल से विवाह करने की तैयारी होने लगी। विवाह के पूर्व पूजा करके आते समय कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर लिया। रुक्मी, भीष्मक, जरासंध तथा शिशुपाल आदि ने उनका पीछा किया पर सभी हार गए। रुक्मी ने प्रतिज्ञा की थी कि बिना कृष्ण को मारे और रुक्मिणी को मुक्त किए वह घर न लौटेगा। कृष्ण के बाण से मूर्च्छित होकर गिर गया और कृष्ण उसका बध करने जा रहे थे पर रुक्मिणी के कहने से केवल बाल काट कर छोड़ दिया। रुक्मी प्रण पूरा न कर सकने के कारण घर न जा सका और अपने राज्य में एक नगरी बना कर रहने लगा। श्री कृष्ण ने द्वारका पहुँच कर रुक्मिणी से विधिवत

शादी की। कृष्ण को रुक्मिणी से प्रद्युम्न आदि दस पुत्र तथा एक पुत्री—कुल ११ सन्तानें पैदा हुईं। रुक्मिणी कृष्ण की पटरानी थीं। इन्हें लक्ष्मी का अवतार कहा गया है।

रुद्र—एक वैदिक देवता। महादेव शंकर का यह विध्वंसात्मक रूप या पक्ष है। वेद में उनका यही रूप मिलता है। पैदा होते ही रोने के कारण इनका नाम रुद्र पड़ा। रुद्रों की संख्या ११ कही गई है और ये कश्यप और सुरभि के पुत्र कहे गए हैं। एक मत से रुद्र या रुद्रों की उत्पत्ति ब्रह्मा के भ्रूमध्य से हुई है। दे० 'महादेव'।

रेणुका—प्रसेनजित की पुत्री और जमदग्नि की पत्नी। परशुराम इन्हीं के पुत्र थे। विशेष के लिये देखिए 'जमदग्नि' और 'परशुराम'।

रेवती— कुशस्थली के राजा रैवत की कन्या और बलराम की स्त्री। रेवती इतनी सुन्दर थी कि उसके पिता ने ब्रह्मा से उसके लिए एक सुन्दर पति बनाने या बतलाने की प्रार्थना की। ब्रह्मा ने प्रार्थना स्वीकार कर उसके योग्य बलराम को बतलाया। रेवती को निशठ और उल्मूक नाम के दो पुत्र हुए थे। बलराम की मृत्यु के बाद उनके साथ रेवती सती हो गई। दे० 'बलराम'।

रैदास—रामानन्द की शिष्य परंपरा के एक प्रसिद्ध सन्त कवि। इन्हें मीराँ का गुरु भी कहा जाता है। यद्यपि ऐसा मानना अशुद्ध है। वस्तुतः ये मीराँ की सास के सास रानी झाली के गुरु थे। इनकी माता का नाम घुरबिनिया तथा पिता का नाम रग्घू था। ये जाति के चमार थे। इन्हीं के आधार पर चमार जाति के लोग अपने को रैदास कहते हैं। इन्होंने अपना एक सम्प्रदाय भी चलाया था, जिसे रैदासी सम्प्रदाय कहते हैं।

रोमपाद—अंग देश के एक राजा। एक बार इन्होंने ब्राह्मणों का अपमान किया जिससे राज्य भर के ब्राह्मण चले गए और पूरे राज्य में सूखा पड़ा। राजा ने पंडितों को बुला कर सूखा दूर करने की युक्ति

पूछी। सब लोगों ने ऋष्यश्रृङ्ग मुनि को बुला कर यज्ञ करने की राय दी। (दे० 'ऋष्यश्रृङ्ग') राजा ने वेश्याओं को भेजकर पहले ऋष्यश्रृङ्ग मुनि को आकर्षित किया, जब वे आकर्षित हो गए तो वेश्याएँ उन्हें अपने साथ अंग देश में ले आईं। उनके आते ही वर्षा होने लगी। ऋष्यश्रृङ्ग मुनि के पिता ने योग से यह सब जान लिया और दौड़े उस राज्य में आए। रोमपाद ने सुना तो बहुत डरे और उन्होंने दशरथ की कन्या शांता का जिसे उन्होंने पोष्य पुत्री के रूप में अपने यहाँ रक्खा था, ऋष्यश्रृङ्ग से ब्याह कर दिया। यह देख कर ऋष्यश्रृङ्ग के पिता प्रसन्न हो लौट गए। रोमपाद महाराज दशरथ के मित्र थे। इन्हें लोमपाद भी कहते हैं।

रोहिणी--वसुदेव की स्त्री और बलराम की जननी। कंस के डर से रोहिणी अपने पुत्र बलराम के साथ गोकुल में नन्द के घर रहती थी। यदुवंश की समाप्ति के बाद वसुदेव के साथ रोहिणी सती हो गईं।

रोहित, रोहिताश्व—हरिश्चन्द्र और शैव्या का पुत्र। दे 'हरिश्चन्द्र'।

रौरव--एक भीषण नरक का नाम।

लंका—एक द्वीप का नाम। त्रिकूट पर्वत के एक शिखर पर बसी हुई यह पुरी रावण की राजधानी थी। इसे स्वर्णनिर्मित कहा गया है। इसे सिंहल भी कहा गया है। योगियों का इसे सिद्धि स्थल माना जाता रहा है। यह मुसलमानों का भी तीर्थ स्थान है।

कुछ आधुनिक विद्वानों के अनुसार यह लंका आधुनिक श्री लंका (सीलोन) नहीं है। वह कहीं मैडागास्कर के पास थी।

लक्ष्मण--दशरथ के पुत्र जो सुमित्रा के गर्भ से पैदा हुए थे। ये शत्रुघ्न के साथ ही पैदा हुए थे। इनका राम से विशेष स्नेह था। ये शेष के अवतार कहे जाते हैं। राम के साथ ये भी विश्वामित्र के आश्रम में गए थे। जनकपुर में इनका विवाह उर्मिला से हुआ। ये राम के

साथ वन में गए। पंचवटी में शूर्पणखा राम के यहाँ से लौट कर इनके पास गई और इन्होंने उसके कान तथा नाक काट कर उसे विरूप कर दिया। वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण ने शूर्पणखा को सीता पर आक्रमण करते देख ऐसा किया था। लंका में इन्हें शक्ति लगी थी जिसे ठीक करने के लिए हनुमान संजीवनी लाए। इन्द्रजीत का वध लक्ष्मण ने किया था। लक्ष्मण को उर्मिला से अंगद और चद्रकेतु नाम के दो पुत्र हुए। राम की मृत्यु के बाद इन्होंने सरयू में शरीर त्यागा। लक्ष्मण अपनी उग्रता के लिए प्रसिद्ध थे। दे० 'उर्मिला'।

लक्ष्मी—विष्णु की पत्नी तथा एक मत से काम की माता। समुद्र मंथन से निकले १४ रत्नों में से यह एक थीं। पौराणिक साहित्य में इनकी उत्पत्ति के विषय में अनेक कथायें मिलती हैं। एक मत से ये आदित्य की पत्नी तथा भृगु और ख्याति की कन्या हैं। ऋग्वेद में यह शब्द सौभाग्यवती के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। लक्ष्मी धन की अधिष्ठात्री देवी हैं तथा सर्वदा युवती रहने वाली कही जाती हैं।—इनका वाहन उल्लू है। लक्ष्मी और सरस्वती में वैर है। सीता और रुक्मिणी लक्ष्मी की ही अवतार मानी जाती हैं। दे० 'विष्णु'।

ललिता—एक गोप बाला तथा राधा की अंतरंगिनी सखी। मीराबाई को इनका अवतार कहा जाता है।

लव—राम और सीता के पुत्र। इनका जन्म वाल्मीकि के आश्रम में हुआ था। राम ने उत्तर कोशल के अंतर्गत श्रावस्ती नगरी में इनकी राजधानी बनाई थी। एक मत से ये कुश के जुड़वा भाई थे पर दूसरे मत से सीता के गर्भ से केवल इन्हीं का जन्म हुआ था। एक दिन सीता इन्हें लेकर नहाने चली गईं। रोज वे इन्हें नहीं ले जाती थीं अतः वाल्मीकि उस दिन लव को आश्रम में न देख चिंतित हुए। उन्होंने तुरन्त कुश से एक दूसरे लव की उत्पत्ति की। जब सीता लौटीं तो उनके साथ असली लव था अतः कुश से उत्पन्न लव का नाम कुश रख

कर ऋषि ने उसे सीता को दे दिया। इस प्रकार सीता के लव और कुश दो पुत्र हो गए।

लवणासुर—कुम्भीनसी के गर्भ से मधु का एक पुत्र जो मथुरा में रहता था। लवणासुर को अपने पिता से शङ्कर का दिया एक शूल मिला था जिसके कारण वह अबध्य हो गया था। शङ्कर का ऐसा वर-दान था कि वह शूल जब तक उसके हाथ में रहेगा उसे कोई नहीं मार सकेगा। जब लवणासुर का अत्याचार बहुत बढ़ गया तो राम ने शत्रुघ्न को इसे मारने को भेजा। शत्रुघ्न ने लवणासुर का बध उस समय किया जब उसके हाथ में शूल नहीं था।

लाक्षागृह—एक बार वारणावत नगर में महादेव का कोई मेला लगने वाला था। उस नगर तथा मेले की प्रशंसा सुन पांडव अपनी माता कुन्ती के साथ जाने को तैयार हुए। यह सुन दुर्योधन ने अपने एक दुष्ट मंत्री पुरोचन को वहाँ भेज एक लाक्षागृह तैयार कराया और उसमें पांडवों को जलाने के लिए पुरोचन इनकी प्रतीक्षा करने लगा। उचित समय पर पांडव वहाँ पहुँचे और कुछ दिन इधर-उधर बिताने के बाद उस लाक्षागृह में रहने लगे। घर को देखने से तथा विदुर के कुछ सन्देशों से पांडवों को घर का पूरा रहस्य ज्ञात हो गया। विदुर के भेजे एक व्यक्ति ने उस घर में एक ऐसी सुरङ्ग बनाई जिसके द्वारा ये लोग आग लग जाने पर भी बाहर निकल सकें। जिस दिन पुरोचन आग लगाने वाला था पांडवों ने नगर के ब्राह्मणों का भोज किया। बहुत से गरीब भी खाने आए। सब लोग तो खा-पीकर चले गए पर एक भीलनी अपने पाँच पुत्रों के साथ खाकर वहीं सो रही। रात में जब पुरोचन सो गया भीम ने पहले उसके कमरे में आग लगाई और फिर चारों ओर आग लगी वह माता तथा भाइयों के साथ सुरङ्ग से बाहर निकल गया। सबेरे भीलनी को अपने पाँच पुत्रों के साथ जला देख लोगों ने समझा कि पांडव अपनी माता कुन्ती के साथ जल मरे।

पुरोचन भी अपने पाप का फल, जल कर, पा गया। दुर्योधन के पास जब भीलनी और उसके पुत्रों के जलने की खबर पहुँची तब वह बहुत प्रसन्न हुआ पर बाद में जब यथार्थता का पता चला तो उसे अपने षड्यन्त्र को असफल हुआ देख बड़ा दुख हुआ।

लुकमान—एक बड़े विद्वान। ये बाऊर के बेटे थे और अफ्रीका के नूबा के स्थान पर पैदा हुए थे। इनकी पढ़ाई शाम में हुई थी। इन्होंने नीति की बहुत सी कहानियाँ और बातें लिखी हैं। यूनानी लोग इन्हीं को एसप कहते हैं। मरने के बाद ये फिलस्तीन में दफ़-नाए गए।

लैला—अरब के नज्द नामक स्थान के एक अमीर आमिर की पुत्री। लैला का रङ्ग रात जैसा काला था, इसलिए वह लैला कही जाती थी। इसका घर मजनू के घर के बगल में था। एक बार मजनू लैला के घर से मट्ठा लेने आया, उसी वक्त दोनों में प्रेम हो गया। जब दोनों के घर वालों को इसका पता चला तो उनका एक दूसरे के घर आना-जाना बन्द हो गया। पर प्रेम बढ़ता ही गया और अन्त में मजनू पागल होकर लैला के प्रेम में नङ्गा घूमने लगा। मजनू के पिता तथा सम्बन्धियों की यह दशा देख मजनू पर दया आई और उन्होंने लैला के पिता से मजनू के साथ शादी कर देने का प्रस्ताव किया पर उसने यह स्वीकार न किया और लैला की शादी एक दूसरे आदमी से कर दी। लैला अपने ससुराल में कुढ़-कुढ़ कर मर गई। दे० 'मजनू'।

लोपामुद्रा—एक लड़की जिसकी रचना अगस्त्य ने विभिन्न जीवों के सौन्दर्य को एकत्र कर की थी और चुपके से विदर्भराज के यहाँ दे आए थे। लोग इसी कारण लोपामुद्रा को विदर्भराज की सन्तान समझते थे। जब लोपामुद्रा युवती हुई तो अगस्त्य ने स्वयं उससे विवाह किया। आरम्भमें अगस्त्य बहुत दिन तक ब्रह्मचारी रहे थे। बाद में जब उन्हें पता चला कि उन्हें कोई सन्तान न होने के कारण उनके पूर्वज नरक में हैं

तो विवाह के लिए योग्य लड़की खोजने लगे और न मिलने पर उन्होंने लोपामुद्रा का निर्माण किया था।

बकासुर—एक चक्र ग्राम के समीप रहने वाला एक दानव। पास से गाँव के लोग इसके पास खाने के लिए प्रतिदिन एक आदमी तथा कुछ अन्न भेजते थे। एक बार कुन्ती अपने पुत्रों के साथ उसी गाँव में एक ब्राह्मण के यहाँ ठहरी थी। उस दिन संयोग से उस ब्राह्मणी के इकलौते पुत्र की बकासुर के यहाँ जाने की बारी थी जिसके कारण उसकी माता रो रही थी। कुन्ती को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने भीम को भेजा। भीम ने बकासुर को मार डाला और इस प्रकार उस गाँव का सङ्कट सर्वदा के लिए दूर हो गया।

वरुण—वरुण अपने प्राचीन रूप में सबसे बड़े देवों में एक थे। ये पूरे ब्रह्मांड के स्वामी समझे जाते थे। कहीं-कहीं इन्हें रात का स्वामी भी कहा गया है जैसे मित्र या सूर्य दिन के स्वामी हैं। बाद में वरुण केवल समुद्र और नदियों के स्वामी रह गए। इनकी सवारी मकर कही जाती है। वरुण की गणना कश्यप और अदिति के आठ पुत्रों में भी होती है। इस दृष्टि से वे आदित्यों में भी आते हैं। हरिश्चन्द्र ने अपने पुत्र रोहित की प्राप्ति वरुण की उपासना से की थी और प्रण किया था कि उसे वरुणयज्ञ में बलिदान करेंगे। दे० 'हरिश्चन्द्र'। ये पश्चिम दिशा के दिक्पाल तथा जल के देवता हैं।

वसिष्ठ—प्रसिद्ध ऋषि जो नारद आदि की भाँति सभी युगों में जीवित कहे गए हैं। ये सप्तर्षियों और प्रजापतियों में भी गिने जाते हैं। एक बार एक यज्ञ में उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण दोनों का वीर्य स्खलित हो गया। इसे एक यज्ञकुण्ड और कुम्भ में रक्खा गया इसी से वसिष्ठ और अगस्त्य का जन्म हुआ। पुराणों में इन्हें ब्रह्मा का मानस पुत्र कहा गया है। वसिष्ठ और राजा निमि से एक बार झगड़ा हुआ था और दोनों ने दोनों को मर जाने का शाप दिया। दे० 'निमि'।

वसिष्ठ के पास नन्दिनी थी जिसके लिए इनमें और विश्वामित्र में युद्ध हुआ था। नन्दिनी ने एक सेना देकर वसिष्ठ की सहायता की और विश्वामित्र हार गए। उनके सौ पुत्रों को वसिष्ठ ने जला दिया। वसिष्ठ की प्रधान पत्नी कर्दम की कन्या अरुंधती थी। इनके अतिरिक्त सर्जा तथा अक्षमाला आदि भी उनकी कई स्त्रियाँ थीं जिनसे इनको बहुत सी संतानें हुईं। दे० 'विश्वामित्र' 'नन्दिनी'।

वसु--देवताओं का एक समूह जिसमें ८ देवता हैं। विभिन्न ग्रंथों में इन आठ देवताओं के नाम के विषय में मतभेद है। महाभारत के अनुसार इसमें धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूक तथा प्रभास हैं। भागवत के अनुसार दक्ष प्रजापति की कन्या वसु का विवाह धर्म से हुआ था। उसी से आठों वसु उत्पन्न हुए। एक बार आठों वसुओं ने वसिष्ठ की गाय नन्दिनी की चोरी कर ली। इस पर रुष्ट हो वसिष्ठ ने आठों को मनुष्य हो जाने का शाप दिया और आठों वसु शांतनु और गङ्गा के आठ पुत्रों के रूप में उत्पन्न हुए। इनमें ७ को तो गङ्गा ने जनमते ही फेंक दिया पर ८वें भीष्म बच गए। दे० 'गङ्गा' तथा 'शांतनु'। एक मत से ८ वसु इंद्र के सेवक थे।

वसुदेव--प्रसिद्ध यदुवंशी जो कृष्ण के पिता थे। इनको कहीं देव-मीढ़ का और कहीं शूर का पुत्र होना लिखा है। इनकी माता का नाम मारिषा था। पांडवों की माता कुन्ती इनकी बहिन थी। एक मत से आहुक की सात पुत्रियों का विवाह इनसे हुआ था पर दूसरे मत से इनकी १२ स्त्रियाँ थीं जिनमें प्रधान देवकी और रोहिणी थी। देवकी से कृष्ण थे और रोहिणी से बलराम। कृष्ण और बलराम की मृत्यु के बाद वसुदेव मरे।

वामन--विष्णु का एक अवतार। ये १२ अंगुल के थे। दे० 'बलि' तथा 'अदिति'।

वाराह—विष्णु का तीसरा अवतार। एक बार हिरण्यकशिपु का भाई हिरण्याक्ष पृथ्वी को घसीट कर पाताल में ले गया। उसे मार कर पृथ्वी का उद्धार करने के लिए विष्णु ने वाराह अवतार धारण किया और अपने कार्य में सफल हुए।

बाल्मीकि—प्रसिद्ध ऋषि और भारत के आदि कवि। ये जन्म के ब्राह्मण थे पर कुसंगति में पड़कर दुष्ट हो गए थे और लूटपाट करते थे। एक बार इन्हें कुछ साधु या सप्तर्षि मिले। साधुओं का सामान ये छीनना ही चाहते थे कि उनमें से एक ने कहा—'पहले अपने घर जाकर पूछ आओ कि चोरी करके तुम सबका पेट भरते हो, क्या वे सब तुम्हारे पाप का भी हिस्सा लेंगे!' बाल्मीक घर जाकर पूछा तो सभी ने इनकार किया। यह सुनकर उसकी आँखें खुली और वे साधुओं की शरण में आए। उन्होंने राम-राम जपने को कहा पर जब उसके मुँह से यह न निकला तो साधुओं ने 'मरा-मरा' कहने को कहा और यही उलटा नाम मरा-मरा कहते-कहते बाल्मीकि 'राम-राम' कहने लगे और अंत में इतने लीन हुए की वर्षों तक एक स्थान पर पड़े रहे। दीमकों (वाल्मीकि) ने मिट्टी से इनको ढक दिया। फिर कुछ दिन बाद जब वे ही साधु आए तो वाल्मीक से ढका देख इनको बाल्मीकि नाम से पुकारा और तब ये उठे। वनवास में गर्भवती सीता इन्हीं के आश्रम में थीं। बाल्मीकि ने ही लव-कुश को बढ़ाया और बाल्मीकि रामायण की रचना की। 'दे० 'लव' 'कुश' 'सीता' 'बाल्मीक'।

वासुकि—कश्यप और कद्रू के पुत्र जो सर्पों में प्रधान है। इनकी बहिन का नाम मनसा था जिसका विवाह वासुकि ने अपने कुल के रक्षार्थ जरत्कारु मुनि से किया था जिनसे उसे आस्तीक नाम का पुत्र पैदा हुआ। आस्तीक ने ही जनमेजय से प्रार्थना कर नागयज्ञ बंद करवाया नहीं तो सारे सर्प कुण्ड में गिर कर जल गए होते। समुद्र-

मंथन के समय वासुकि नाग को रस्सी बनना पड़ा था। दे० 'समुद्र-मंथन'।

विंध्याचल—एक पर्वत। एक बार हिमालय को नीचा दिखाने के लिए विंध्याचल ने सूर्य से कहा कि सुमेरु पर्वत की भाँति मेरी भी प्रदक्षिणा किया करो पर सूर्य ने नहीं माना। इस पर विंध्याचल बढ़ने लगा और बढ़कर उसने सूर्य का मार्ग रोकना चाहा। यह देख देवताओं ने अगस्त्य ऋषि से प्रार्थना की और अगस्त्य विंध्याचल के पास गए। विन्ध्य ने उन्हें देखते ही लेटकर साष्टांग प्रणाम किया। ऋषि ने कहा कि जब तक मैं न लौटूँ इसी प्रकार पड़े रहना। यह कह ऋषि चले गए और फिर कभी न लौटे। फल यह हुआ कि पर्वत उसी प्रकार पड़ा रह गया। आज भी विज्ञान वेत्ताओं का कहना है कि हिमालय आदि की भाँति यह पर्वत बढ़ नहीं रहा है और शान्त पड़ा है।

विचित्रवीर्य—शांतनु और सत्यवती के छोटे पुत्र और चित्रांगद के अनुज। इसका विवाह अंबिका और अंबालिका से हुआ था जो काशिराज की कन्या थीं और भीष्म द्वारा हर कर लाई गई थीं। विचित्र-वीर्य क्षय रोग से पीड़ित हो मर गए और उन्हें संतान न थी। सत्यवती के कहने से भीष्म ने व्यास द्वारा नियोग कराकर अंबिका और अंबालिका से धृतराष्ट्र और पांडु की उत्पत्ति कराई।

विजय—विष्णु के जय और विजय दो पार्षद थे। दोनों ने सनकादि ऋषियों को एक बार विष्णु से मिलने से रोका और उनके शाप से इन्हें राक्षस बनना पड़ा। इनकी प्रार्थना पर ऋषि ने फिर यह भी वर दे दिया कि विष्णु से शत्रुता या मित्रता करने पर तुम लोगों की मुक्ति हो जायगी। दे० 'जय'। विजय क्रमशः हिरण्यकशिपु कुंभकर्ण और कंस हुआ और विष्णु के अवतारों के हाथों से मारा जाकर मुक्त हुआ।

बिडालाक्ष—महिषासुर का एक भयानक सेनापति जिसकी आँखें बिडाल की भाँति थी। यह पाँच सौ अयुत सेना लेकर महिषासुर की ओर से दुर्गा से लड़ने आया और उन्होंने तलवार से इसका सर काट डाला।

विदुर—अंबिका और अंबालिका को नियोग कराते देख उनकी एक दासी की भी इच्छा हुई और उसने भी व्यास से नियोग कराया जिससे विदुर की उत्पत्ति हुई थी। ये बड़े सज्जन थे। धृतराष्ट्र के मंत्री होने पर भी ये पांडवों की भलाई चाहते थे। इन्हीं के संकेत के कारण पांडव लाक्षागृह में जलने से बच सके। इन्हें पूर्वजन्म का धर्मराज कहा जाता है। महाभारत युद्ध रोकने की इन्होंने बड़ी कोशिश की पर कोई फल न निकला। प्रसिद्ध 'विदुरनीति' इन्हीं की लिखी है। युद्धोपरांत ये पांडवों के भी मंत्री हुए थे। बाद में ये वन में चले गए और वहीं इनका देहांत हुआ।

विदुला—सौवीर की महारानी और संजय की माता। महाराज की मृत्यु के बाद सिंधुराज ने इनके राज्य पर आक्रमण किया। पहले तो संजय बड़ा भयभीत हुआ पर विदुला के उत्साहित करने से इसे जोश आया और युद्ध में सफल रहा। विदुला द्वारा दिया गया 'विदुलोपाख्यान' लड़कों के लिए सुन्दर नीति-ग्रन्थ है।

विनता—प्रजापति दक्ष की कन्या और कश्यप की स्त्री। अरुण और गरुड़ इसके ही पुत्र थे। एक बार हार जाने के कारण विनता को अपनी सौत कद्रू की, ५० वर्ष तक गुलामी करनी पड़ी थी; पर गरुड़ ने स्वर्ग से अमृत लाकर अपनी माता को मुक्त किया। दे० 'गरुड़'। भागवत के अनुसार विनता गरुड़ की स्त्री थी।

विभीषण—विश्रवा मुनि का पुत्र और रावण का भाई। दे० 'रावण'। इसका स्वरूप बहुत डरावान था। इसी कारण इसका नाम विभीषण था। अपने भाइयों के साथ इसने भी घोर तप किया तथा

ब्रह्मा से धार्मिक होने का वर माँगा। राक्षसों में होते हुए भी यह राम का भक्त था। इसी ने राम से बतलाया कि रावण के हृदय में अमृत-कुण्ड है और बिना उसे जलाए वह नहीं मारा जा सकता। रावण की मृत्यु के बाद विभीषण ही लङ्का का राजा हुआ।

विरजा—एक गोपी। गोकोल में एक बार राधा को न पा कृष्ण विरजा के पास चले गए। राधा ने ज्योंही सुना वे उस स्थान पर जा पहुँचीं। कृष्ण तो अन्तर्द्धान हो गए पर विरजा ने राधा के भय से नदी का रूप धारण कर लिया। बाद में फिर यह पूर्ववत हो गई।

विराट—मत्स्यदेश के राजा जहाँ पांडव द्रौपदी के साथ अज्ञात वनवास के समय विभिन्न प्रकार के नौकर बनकर रहे थे।

विराट्—भगवान का एक रूप। वामन भगवान जब बलि से तीन पग भूमि माँग चुके और भूमि लेने की बात आई तो उन्होंने अपना ऐसा विराट् रूप धारण किया कि पूरी पृथ्वी केवल दो पग हुई। ऋग्वेद में तथा भगवद्गीता में भी विराट् रूप का बड़ा विराट वर्णन है। पुराणों में विराट् को ब्रह्मा का पुत्र कहा गया है। दे० 'अघासुर' 'कृष्ण'।

विराध—एक राक्षस जिसे दंडकवन में लक्ष्मण ने मारा था। इसके जन्म के विषय में कई प्रकार की बातें मिलती हैं। अधिक प्रसिद्ध कथा निम्न प्रकार से है। एक तुंबुरु नाम का गंधर्व रम्भा अप्सरा पर मोहित हो गया और इसी कारण कुबेर के यहाँ देर से पहुँचा। कुबेर ने उसे राक्षस हो जाने का शाप दिया और वह सुपर्यन्थ नाम के राक्षस के पुत्र के रूप में शतद्रुता के गर्भ से पैदा हुआ। कुबेर ने इसकी प्रार्थना पर शाप के साथ यह भी कहा कि रामावतार में तुम मुक्त होगे। राक्षस होने के बाद तुंबुरु का नाम विराध पड़ा। दंडकवन में वह सीता को लेकर भागने लगा। राम ने बाण चलाया तो यह और रुष्ट हुआ और राम तथा लक्ष्मण को लेकर भागा। यह देखकर राम

और लक्ष्मण ने उसके दोनों हाथ काट डाले तथा लक्ष्मण ने गड्ढा खोद कर उसे उसमें डाल दिया।

विरोचन—एक दैत्य-जो प्रह्लाद का पुत्र तथा बलि का पिता था। पृथ्वी-रूपी गाय को दुहते समय यह असुरों का बछड़ा बना था।

विश्वकर्मा—शिल्प-शास्त्र तथा कला के प्रसिद्ध आचार्य और एक देवता। ये आठवें वसु प्रभास के औरस पुत्र थे और लावण्य-मयी या योगसिद्धा के गर्भ से पैदा हुए थे। इनका कार्य देवताओं के लिए भवन या विमान आदि बनाना था। लंका इन्हीं द्वारा बनाई गई थी। विश्व-कर्मा अमर कहे जाते हैं। सृष्टि की रचना में इनका भी हाथ था इसी कारण इन्हें प्रजापति भी कहा गया है। एक मत से सूर्य की पत्नी संज्ञा इन्हीं की कन्या थी।

विश्वामित्र—एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो जन्म से आधे क्षत्रिय तथा आधे ब्राह्मण थे पर तप से ब्रह्मा को प्रसन्न कर ब्राह्मणत्व प्राप्त किया। इनके पिता का नाम राजा गाधि था। इनका यथार्थ नाम विश्वरथ था। ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर ये विश्वामित्र कहे गए। राजा गाधि को पहले कोई पुत्र न था। उन्हें सत्यवती नाम की एक कन्या थी जिसका विवाह ऋचीक ऋषि से हुआ था। ऋचीक ने सत्यवती तथा सत्यवती की माता के लिए दो चरु दिए। एक से क्षत्रिय गुण वाला पुत्र होता और दूसरे से ब्राह्मण। सत्यवती की माता अर्थात् गाधि की पत्नी ने ब्राह्मण वाला चरु खा लिया और इसी कारण उनसे विश्वामित्र पैदा हुए।

वसिष्ठ से इन्होंने उनकी नंदिनी गाय माँगी पर उन्होंने नहीं दी। इस पर दोनों में युद्ध हुआ जिसमें विश्वामित्र हार गए। इनके बहुत से लड़के भी उस लड़ाई में काम आए। एक बार वसिष्ठ तथा विश्वा-मित्र में सत्संग और तपस्या को लेकर विवाद छिड़ा। दोनों निर्णय के लिए शेष भगवान के पास पहुँचे। शेष की आज्ञा से दोनों ने शेष के सिर से पृथ्वी उठाकर एक क्षण अपने ऊपर लेने की कोशिश की।

विश्वामित्र हजार वर्ष की तपस्या के फल का संकल्प करके भी न उठा सके पर वसिष्ठ ने एक क्षण के सत्सङ्ग के फल पर पृथ्वी को धारण कर लिया और इस प्रकार विश्वामित्र हार गए। बाद में एक बार विश्वामित्र ने वसिष्ठ का अपनी स्त्री अरुंधती से विश्वामित्र की प्रशंसा करते सुनी तब से उनकी दुर्भावना दूर हो गई और दोनों मित्र हो गए। त्रिशंकु को विश्वामित्र ने ही सशरीर स्वर्ग भेजना चाहा था। दे० 'त्रिशंकु'। हरिश्चन्द्र के सत्य की परीक्षा भी विश्वामित्र ने ही ली थी। दे० 'हरिश्चन्द्र'। विश्वामित्र के वीर्य से मेनका को गर्भ रह गया था जिससे शकुन्तला का जन्म हुआ था। दे० 'शकुन्तला'।

विश्वामित्र राम तथा लक्ष्मण को अपने आश्रम में ले गए थे जहाँ से ये लोग जनकपुर गए।

विष्णु--हिन्दुओं के एक प्रधान देवता। ऋगवेद में विष्णु 'त्रिविक्रम' अर्थात् तीन डगों में सारे विश्व का अतिक्रमण करने वाले कहे गए हैं। इस प्रकार विष्णु का अर्थ सूर्य है। इसका ही विकसित रूप वामन अवतार में २ या ३ डगों में संसार को नापने का है। ऋगवेद के बहुत बाद विष्णु प्रधान देवता स्वीकृत हुए। पुराणों में इनके १० या २४ अवतारों का उल्लेख मिलता है जिनमें से निम्नलिखित १० को प्रधानता दी जाती है—मत्स्य कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि। समुद्र-मंथन में प्राप्त लक्ष्मी, को इन्होंने पत्नी रूप में स्वीकार किया। उनके साथ ये क्षीर सागर में शेषनाग की शैया पर शयन करते हैं। इसी अवस्था में इनकी नाभि से एक कमल की उत्पत्ति हुई जिससे ब्रह्मा का जन्म हुआ।

विष्णु ही भगवान हैं और ब्रह्मा, विष्णु, शिव का रूप धारण कर वे संसार का निर्माण, परिपालन और संहार करते हैं।

भृगु ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश को परीक्षा लेकर विष्णु को सबसे बड़ा घोषित किया था। भृगु ने ही इनके वक्ष पर लात मारी थी जिसका

निशान भृगु रेखा के नाम से प्रसिद्ध है। दे० 'भृगु' इन्होंने नारद का गर्व दूर किया था। दे० 'नारद'।

ये श्यामवर्ण हैं और सदैव युवा रहते हैं। इनके चार हाथों में शंख, चक्र, गदा, तथा पद्म कहे जाते हैं। इनके शंख का नाम पांचजन्य, चक्र का नाम सुदर्शन, गदा का नाम कौमोदकी तलवार का नाम नन्दक तथा धनुष का नाम शार्ङ्ग है। विष्णु के एक हाथ में स्यमंतक मणि बँधी रहती है तथा वैनतेय गरुड़ इनके वाहक माने जाते हैं। गंगा विष्णु के चरण से निकली कही जाती है इनके नाम के पर्याय सहस्रों हैं। एकमत से सरस्वती भी मूलतः इनकी पत्नी थीं। लक्ष्मी सरस्वती के झगड़े से परेशान होकर इन्होंने सरस्वती ब्रह्मा को दे दी थी। दे० 'तुलसी', 'लक्ष्मी', 'अवतार' तथा 'अंबरीष' आदि।

वीरभद्र—शिव का एक गण। दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जब यज्ञ कुण्ड में कूद कर सती ने प्राण त्याग दिया तो शिव ने वीरभद्र को यज्ञ नष्ट करने के लिए अपने मुँह से पैदा किया था।

वीरमणि—एक प्राचीन राजा, जिनकी राजधानी देवपुर थी। राम के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा इनके पुत्र रुकमांगद ने पकड़ लिया और दोनों ओर से युद्ध हुआ। वीरमणि की ओर से शिव भी लड़ने आए और उन्होंने शत्रुघ्न को अपने पाश में बाँध लिया। अंत में राम ने आकर शत्रुघ्न तथा घोड़े को छुड़ाया।

वृत्रासुर—एक दानव जो त्वष्टा का पुत्र था। इसी को मारने के लिए इन्द्र को दधीचि ऋषि की हड्डी का वज्र बनाना पड़ा। जब इंद्र ने वृत्रासुर के दोनों हाथ काट डाले तो यह इन्द्र को उनके ऐरावत के साथ निगल गया। इन्द्र इसका पेट फाड़ कर बाहर आए और इसका सर काट कर उसे मार डाला। यह सूखे या अकाल का दानव था। इन्द्र ने इसे मार कर पानी बरसाया था।

वृषभानु—राधा के पिता जो सुरभानु और पद्मावती के पुत्र थे।

इनकी स्त्री का नाम कीर्ति था। पहले ये रावल गाँव में रहते थे पर बाद में कंस के उपद्रव से बरसाने में चले आए।

वृषली—विचित्रवीर्य की रानियों अंबिका तथा अंबालिका की दासी। एक बार अम्बालिका ने स्वयं व्यास के पास न जाकर, गर्भ धारण करने के लिए दासी वृषली को ही अपने वस्त्र पहना कर भेज दिया जिससे विदुर का जन्म हुआ।

वेनु—उत्तानपाद के कुल में ध्रुव के बहुत बाद एक अंग नाम का राजा हुआ। इन्हें कोई सन्तान न थी। पुत्रोत्पत्ति यज्ञ करने पर वेन नाम के पुत्र की उत्पत्ति हुई जो माता के प्रभाव से बड़ा अत्याचारी राजा हुआ। इसने अपने राज्य में सारे धर्म-कर्म बन्द करा दिए तथा ईश्वर के स्थान पर अपनी पूजा प्रतिष्ठित की। इस पर क्रुद्ध होकर ब्राह्मणों ने उसे शाप दिया और वह मर गया। वेन को कोई सन्तान न थी अतः मृत्यु के बाद हाहाकार मचा। ब्राह्मणों ने इसके शव के हाथ को हिलाया तो उससे 'पृथु' नाम के प्रतापी और धार्मिक राजा की उत्पत्ति हुई। दे० 'पृथु'।

व्यास—इन्हें कृष्ण द्वैपायन या वेदव्यास भी कहते हैं। शांतनु की पत्नी सत्यवती ने कुमारावस्था में पराशर मुनि से संभोग किया था जिसके फलस्वरूप व्यास का जन्म हुआ। इनका जन्म अँधेरे में एक द्वीप पर हुआ और ये काले थे अतः ये कृष्णद्वैपायन कहे गए। वेदों का संग्रह एवं विभाग करने के कारण इन्हें व्यास या वेदव्यास भी कहते हैं। ये बड़े विद्वान तथा ज्ञानी थे। वेदों के पृथक्करण के अतिरिक्त महाभारत को व्यास का ही बनाया कहा जाता है। यह बनाकर बोलते गए थे और गणेश उसे लिपिबद्ध करते गए थे। बीच में कलम टूट जाने के कारण गणेश ने अपना एक दाँत तोड़कर लिखना प्रारंभ किया इसी से वे एकरदन हो गए।

व्यास की माँ सत्यवती की दोनों पुत्रवधुएँ विधवा थीं और उन्हें

कोई संतान भी न थी। सत्यवती के कहने से व्यास ने उन दोनों से नियोग द्वारा धृतराष्ट्र और पांडु दो पुत्रों को पैदा किया। इसके अतिरिक्त उनकी दासी से भी इन्होंने एक पुत्र पैदा किया जो विदुर कहलाया। दे० 'अंबिका', 'अंबालिका', 'सत्यवती'।

शंखासुर—एक दैत्य जिसने ब्रह्मा के पास से वेद चुरा लिया था और फिर समुद्र में छिप गया था। इसी के लिए भगवान विष्णु को मत्स्य अवतार धारण करना पड़ा था। उन्हीं ने इसे मारकर वेद का उद्धार किया।

शंबर--एक दैत्य जो दिवोदास का शत्रु था। इसे किसी पर्वत से नीचे गिराकर इंद्र ने मार डाला!

शकुंतला--यह विश्वामित्र की औरस पुत्री थी जो मेनका नाम की अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। इसके पैदा होते ही मेनका स्वर्ग चली गई और इसे मालिनी नदी के किनारे छोड़ दिया। कण्व ऋषि ने इसे पाला-पोसा और उन्हीं के आश्रम में यह बड़ी हुई। शकुन्तला का गंधर्व विवाह दुष्यंत से हुआ था जिससे इसे भरत नाम का वीर पुत्र पैदा हुआ। दे० 'दुष्यंत'।

शकुनि--सुबलराज का पुत्र, गांधारी का भाई और कौरवों का मामा। यह बड़ा दुष्ठ था। इसे दुर्योधन ने अपना मंत्री बना रखा था। पांडवों को इसने बड़ा कष्टित किया और अंततः अपने पुत्र सहित सहदेव के हाथ से मारा गया। कहा जाता है कि किसी का कुछ ऐसा शाप था कि भीम जो भी खायँगे उसका पाखाना शकुनि को होना पड़ेगा। इसके कारण भीम को इसे परेशान करने के बहुत से मौके मिलते थे और वे करते थे। इसी आधार पर हिन्दी में एक लोकोक्ति है--खायँ भीम पाखाना हो शकुनी।

शची--दानवराज पुलोम की पुत्री और इंद्र की स्त्री। इन्हें इन्द्राणी, पुलोमजा तथा माहेंद्री आदि भी कहते हैं। इन्द्र से इन्हें जयंत

और जयंती दो संतानें थीं। एक कथा के अनुसार इनकी संतानें एक गौ से उत्पन्न हुई थीं। नहुष ने इन्द्रासन के स्वामी होने पर इन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहा था पर किसी प्रकार ये बच गईं। दे० 'नहुष', 'इन्द्र'।

शतरूपा—यह संसार की प्रथम स्त्री है। इन्हें ब्रह्मा की मानस कन्या तथा स्त्री कहा गया है। प्रथम मनु 'स्वायंभुवमनु' की उत्पत्ति इन्हीं से हुई थी। पर विष्णु पुराण के अनुसार शतरूपा स्वायंभुव मनु की माता न होकर स्त्री थीं। एक अन्य मत के अनुसार ब्रह्मा ने अपने शरीर को दो भागों में बाँटा। बँटे भागों में दायाँ तो मनु और बायाँ शतरूपा हुआ फिर इन्हीं दोनों से सृष्टि चली। दे० 'मनु'।

शतानन्द—राजा जनक के एक पुरोहित। रामादि के ब्याह में जनक की ओर से ये ही पुरोहित थे।

शत्रुघ्न—सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न लक्ष्मण के छोटे भाई। राम के साथ जैसा प्रेम लक्ष्मण का था भरत के साथ वैसा ही प्रेम शत्रुघ्न का था। इनकी स्त्री का नाम श्रुतकीर्ति था जो सीता की बहन थीं। मथुरा के लवणासुर को शत्रुघ्न ही ने मारा था। शत्रुघ्न को एक बार शंकर ने अपने पाश में बाँध लिया था। दे० 'वीरमणि' 'लवणासुर'।

शनि—छाया के गर्भ से सूर्य के औरस पुत्र। अपनी स्त्री के शाप से इनकी दृष्टि क्रूर हो गई थी। गणेश को ज्योंही इन्होंने देखा उनका सर कट गया। एक अन्य मत से शनि बलराम और रेवती के भी पुत्र कहे जाते हैं। इनका प्रभाव बड़ा बुरा कहा गया है। जिनके पैर में शनि होते हैं वह कभी एक स्थान पर नहीं बैठता। नारद मुनि इसी श्रेणी के थे।

शमीक—एक प्रसिद्ध ऋषि जो शृङ्गी ऋषि के पिता थे। परीक्षित ने इन्हीं के गले में मरा साँप डाल दिया था जिसे देख इनके पुत्र शृंगी बहुत रुष्ट हुए और उन्हें तक्षक द्वारा काटे जाने का शाप दिया।

दे० 'परीक्षित'। शमीक ने शाप सुनकर बहुत पश्चात्ताप किया क्योंकि वे ऐसा नहीं चाहते थे।

शर्मिष्ठा—दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री जो दैत्यगुरु शुक्र की कन्या देवयानी की सखी थी। इसे देवयानी की दासी बनाकर नहुष के पुत्र राजा ययाति के यहाँ जाना पड़ा था। इसकी प्रार्थना पर ययाति ने इसके साथ संभोग किया जिसके लिए उन्हें शुक्र का शाप सहना पड़ा। दे० 'ययाति' 'देवयानी'।

शल्य—एक महाभारतकालीन कौरव-पक्षीय राजा जो मद्र देश के स्वामी थे। महाभारत के युद्ध में सोलहवें और सत्रहवें दिन ये कर्ण के सारथी बने थे। १८वें दिन कर्ण के मरने पर शल्य सेनापति बनाए गए और उसी दिन युधिष्ठिर के हाथ से इनकी मृत्यु हुई।

शबरी—पंपासर पर मतंग मुनि के आश्रम के पास रहनेवाली एक भीलनी जिसका नाम श्रमणी या श्रमणा था। यह भगवद्भक्त थी। मतंग मुनि के मरते समय इसने भी उनके साथ चलने की इच्छा प्रकट की। इस पर मुनि ने उससे कहा कि 'यहाँ भगवान राम आएंगे। उनके दर्शन के बाद आना'। तब से नित्य शबरी उठकर राम के आने का रास्ता साफ करती, उनके लिए फूल चुनती, आसन लगाती और बेर आदि खाते समय जो बहुत मीठा लगता उन्हें खिलाने के लिए रख लेती। अन्त में भगवान राम उसकी कुटी पर पधारे और उसके द्वारा प्रेम से रक्खे गए जूठे बेरों को खाया। इसके बाद शबरी ने राम की अनुमति से उनके सामने ही चिता में प्रवेश किया और स्वर्ग चली गई।

शांतनु—द्वापर के प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा। इनके पिता का नाम प्रतीप था। इनकी पहली स्त्री गंगा थीं जिनसे इन्हें भीष्म पैदा हुए थे। (दे० गङ्गा) इनका दूसरा विवाह सत्यवती नाम की एक

धीवरकन्या से हुआ जिससे इन्हें चित्रांगद और विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र हुए। दे० 'सत्यवती'।

शिखंडी--महाराज द्रुपद का एक नपुंसक पुत्र। काशिराज की अंबा, अंबिका और अंबालिका तीन कन्याएं थी। एक बार इन तीनों को स्वयंवर में से भीष्म उठा लाए। इनमें अंबिका और अंबालिका का तो विवाह इन्होंने विचित्रवीर्य से कर दिया। अंबा शाल्वराज से विवाह करना चाहती थी पर शाल्व ने यह कह कर इनकार कर दिया कि तुम्हें भीष्म हर लाए हैं अतः मैं नहीं स्वीकार कर सकता। इस पर अंबा ने भीष्म से स्वयं विवाह करने की प्रार्थना की पर प्रतिज्ञाबद्ध (दे० भीष्म) होने के कारण उन्होंने भी स्वीकार नहीं किया। अन्त में अंबा वन में जाकर भीष्म से बदला लेने के लिए तप करने लगी और तप पूर्ण होने पर द्रुपद के घर नपुंसक पुत्र शिखंडी के रूप में पैदा हुई। भीष्म ने प्रतिज्ञा की थी कि स्त्रियों पर अस्त्र न उठाएँगे। पांडव-सेना जब भीष्म के संहार से परेशान हो गई तो शिखंडी को आगे करके अर्जुन उनके सामने गए। शिखंडी को देखते ही भीष्म ने अस्त्र डाल दिये इतने में अर्जुन तथा शिखंडी ने उन्हें अस्त्रों से मार कर धराशायी कर दिया। युद्धोपरान्त रात में अश्वत्थामा ने पांडवों के शिविर में घुसकर शिखंडी का वध किया था।

शिवि--राजा उशीनर के पुत्र जिनका राज्य -उशीनर में था। ये अपनी उदारता तथा दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं। एक बार इन्द्र और अग्नि इनकी परीक्षा लेने आए। अग्नि कबूतर बनकर भग रहे थे और इन्द्र जो बाज बने थे कबूतर का पीछा कर रहे थे। कबूतर उड़ता-उड़ता महाराज शिवि की गोद में गिर पड़ा और बाज उसे खाने को माँगने लगा। शिवि ने कबूतर के बदले में और बहुत से खाद्य-पदार्थ देने को कहा पर उसने कहा कि या तो मैं इस कबूतर को खाऊँगा और या फिर इसके बराबर आपके शरीर से मांस लूँगा। राजा अपने शरीर

से कबूतर के बराबर मांस देने को तैयार हो गए। तराजू के एक पलड़े पर उन्होंने कबूतर रक्खा और अपने हाथ से अपना मांस काटकर दूसरे पलड़े पर रखने लगे। अग्निदेव धीरे-धीरे अपना वजन बढ़ाते गए और राजा ने अपना आधा से अधिक शरीर काटकर चढ़ा दिया पर कबूतर के बराबर मांस न हो सका। अन्त में स्वयं पलड़े पर बैठ गए। यह देख देवता लोग आकाश से पुष्प बरसाने लगे और इन्द्र तथा अग्नि ने अपना स्वरूप प्रकट कर उन्हें वरदान दिया। इसी प्रकार एक बार विष्णु ब्राह्मण बनकर शिबि के पास गए और खाने के लिए उनके पुत्र बृहद्गर्भ को माँगा। साथ ही यह भी कहा कि आप इस अपने लड़के को काटकर पकावें तब मैं खाऊँगा। शिवि ने उनकी आज्ञा का पालन किया जिससे विष्णु बहुत प्रसन्न हुए और उनके पुत्र को पुनः जिला दिया तथा उन्हें वरदान भी दिया।

शिशुपाल—चेदि देश का प्रसिद्ध राजा जो द्वापर में हुआ था। इसकी माता का नाम सुप्रभा तथा पिता का नाम दमघोष था। शिशुपाल को तीन आँखें और चार हाथ थे। पैदा होते ही शिशुपाल रेंकने लगा, जिससे डर इसके माता पिता उसे त्यागने का विचार करने लगे। पर फिर एक आकाशवाणी हुई कि शिशु बहुत बलवान है इसका पालन करो और तब यह पाला गया। इसी आकाशवाणी के आधार पर इसका नाम शिशुपाल हुआ। आकाशवाणी में यह भी कहा गया था कि इसको मारनेवाला भी पैदा हो चुका है। शिशुपाल की माँ उसके नाश करनेवाले का नाम जानने को उत्सुक हुई तो सुनाई पड़ा कि जिसकी गोद में जाते ही इसके अतिरिक्त अंग गायब हो जायँ वही इसे मारेगा। जानने के लिए यह कई व्यक्तियों की गोद में दिया गया पर कुछ न हुआ। अन्त में कृष्ण के गोद में जाते ही इसके दो हाथ तथा एक आँख गायब हो गई। इसकी माँ ने कृष्ण को इसका नाशक जान उनसे इसके सौ अपराध क्षमा करने की प्रार्थना स्वीकार भी कर ली।

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण को अपशब्द कहने लगा। १०० अपशब्द तक तो कृष्ण शान्त रहे और चुपचाप गिनते रहे पर ज्योंही उसने १०१वीं बार गाली दी कृष्ण ने उसका सिर काट डाला।

शीरीं—फ़ारस की राजकुमारी और फरहाद की प्रेमिका। इसका विवाह खुसरो परवेज से हुआ। दे० 'फ़रहाद'।

शुंभ—एक राक्षस जो निशुंभ का भाई था। यह दुर्गा के हाथ से मारा गया। दे० 'निशुंभ'।

शुकदेव—ये कृष्ण द्वैपायन महर्षि व्यास के पुत्र थे। ज्ञान और पांडित्य के अथाह भंडार के लिए इनका नाम प्रसिद्ध है। कहते हैं कि राजा परिक्षित को मरने के पूर्व इन्होंने उपदेश दिया था जो आज भागवतपुराण के नाम से प्रसिद्ध है। शुकदेव के जन्म की कथा बड़ी विचित्र है। एक बार महादेव पार्वती को ज्ञान की बातें बतला रहे थे। पास में एक पेड़ के खोड़र में बैठा सुग्गे का एक अंडा भी उसे सुन रहा था। धीरे-धीरे अंडा फूटा और बच्चा निकला, जो शुक-पुत्र होने से शुकदेव कहलाया। यह चुपचाप उसी प्रकार ज्ञान की बातें सुनता रहा। इसी बीच पार्वती सो गईं और उसके स्थान पर यह शुकपुत्र ही हुँकारी भरता रहा जिससे शङ्कर को पार्वती के सोने का पता न चला और वे ज्ञान की बातें कहते ही रहे। सारी बातें सुनकर इसे पूर्ण ज्ञान हो गया। वार्ता खतम कर जब शङ्कर ने पार्वती की ओर देखा तो वे सो रही थीं। शङ्कर को रहस्य का पता चल गया और उन्होंने शुक के पीछे अपना त्रिशूल छोड़ा। त्रिशूल ने इसका पीछा किया। अपने बचाव के लिए भागते-भागते शुक-पुत्र इधर-उधर बहुत दौड़ा पर कहीं शरण न मिली। इसी बीच इसने व्यास की स्त्री को सूर्य की पूजा मुँह खोलकर करते देखा और मुँह के रास्ते से उनके पेट में चला गया। वहाँ यह १२ वर्ष तक उनके पेट में पड़ा रहा और त्रिशूल चारों ओर घूमता रहता, क्योंकि उसे स्त्रीवध का अधिकार न था। व्यास ने शङ्कर

से बहुत प्रार्थना की तो उन्होंने अपना त्रिशूल लौटा लिया और व्यास की स्त्री के पेट से निकल कर शुक जंगल की ओर भागा। व्यास उसे अपना पुत्र मान लौटाने के लिए दौड़े पर उसने इन्हें उपदेश देकर लौटा दिया और स्वयं जंगल में चला गया।

शुक्राचार्य—महर्षि भृगु के पुत्र और दैत्यों के गुरु। इनके पुत्रों का नाम अर्मक तथा शंड तथा पुत्री का नाम देवयानी था। (दे० 'देवयानी') देवों के गुरु बृहस्पति के पुत्र कच इनसे मृतसंजीवनी विद्या सीखने गए थे। (दे० 'कच') जब अदिति के कहने से बलि को छलने के लिये वामन भगवान उसके यहाँ पहुँचे और ३ पग भूमि दान माँगी तो शुक्राचार्य ने रहस्य जान लिया और संकल्प न करने देने के लिए जलपात्र की टोंटी में सींक गड़ा दी जिससे इनकी एक आँख जाती रही और ये काने हो गए। ये बहुत अच्छे कवि भी कहे जाते हैं। शुक्राचार्य ने ययाति को वृद्ध हो जाने का शाप दिया था। दे० 'ययाति' 'बलि'।

शुनःशेप—एक मत से तो ये महर्षि ऋचीक के मझले बेटे थे और अंबरीष के यज्ञ के लिए लाये गए थे, पर विश्वामित्र ने एक मंत्र बतला दिया जिससे अग्निदेव इनसे प्रसन्न हो गए और इन्हें जलने से बचा लिया। विश्वामित्र ने इन्हें अपने पोष्य-पुत्र की भाँति रक्खा। एक अन्य मत से ये अजीगर्त नामक एक लोभी ब्राह्मण के मझले पुत्र थे और हरिश्चंद्र के यज्ञ में बलिदान के लिए अपने पिता द्वारा बेचे गए थे। दे० 'हरिश्चन्द्र'।

शूद्रक—शंबुक नाम का एक शूद्र। जिस समय राम राजा थे यह उनके राज्य में तपस्या कर रहा था। एक ब्राह्मण का पुत्र मर गया और उसने महाराज राम से प्रार्थना की। राम ने ऋषियों को बुलाकर पूछा तो उन्होंने बतलाया कि राज्य में कोई शूद्र तप कर रहा है इसी का

यह परिणाम है। राम ने पता लगवाया तो शंबुक पकड़ा गया। कहा जाता है कि राम की आज्ञा से इसका सिर काट लिया गया।

शूर्पणखा—त्रेता युग की प्रसिद्ध राक्षसी जो कुछ मतों से रावण की और कुछ से खर की सगी बहन थी। सूप की तरह नखवाली होने से इसका नाम शूर्पणखा पड़ा था। पंचवटी में यह कामातुर हो राम के पास गई थी पर राम ने इसे लक्ष्मण के पास भेज दिया और लक्ष्मण ने नाक कान काट इसका सौन्दर्य बिगाड़ दिया, जिसके लिए खर-दूषण आदि लड़ने आए और लड़ते हुए मारे गए। फिर इसने रावण को उकसाकर सीताहरण कराया। यह मायाविनी भी थी और मनमाना रूप धारण कर सकती थी।

शृङ्गी—प्रसिद्ध ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्होंने अपने पिता के गले में मृत सर्प डालने के अपराध में राजा परीक्षित को यह शाप दिया कि उसी सर्प के डसने से सातवें दिन उनकी मृत्यु होगी जो सत्य हुआ।

शेष—एक सर्पराज। ये कश्यप और कद्रु के पुत्र तथा तक्षक और वासुकि के भाई हैं। इनके सहस्र फन हैं। ये पाताल से भी नीचे हैं और इन्हीं के फनों पर पृथ्वी टिकी है। दे० 'पाताल' विष्णु क्षीर सागर में इन्हीं पर शयन करते हैं। लक्ष्मण और बलराम इनके अवतार कहे जाते हैं। एक बार विश्वामित्र और वसिष्ठ इनके यहाँ यह विवाद लेकर गए कि तप बड़ा है या सत्संग। बिना इनके कुछ कहे ही इसका निर्णय हो गया। दे० विश्वामित्र।

शेष ज्योतिष तथा छंदशास्त्र के आचार्य कहे जाते हैं।

शैव्या—सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की स्त्री और रोहिताश्व की माता। इसे अपने पुत्र के साथ एक ब्राह्मण के घर बिकना पड़ा था जहाँ एक साँप ने इसके पुत्र को काट लिया। यह उसका शव लेकर उसी श्मशान पर पहुँची जहाँ इसके पति हरिश्चन्द्र डोम का नौकर हो

डोम का काम करते थे। उन्होंने इससे कफन माँगा पर इसके पास नहीं था और इसने अपनी साड़ी फाड़कर दी। कुछ मतों से राजा इसे मारने जा रहे थे तब तक विश्वामित्र एवं इन्द्र आदि ने आकर पति और पुत्र के साथ इसे भी दुःख से मुक्त कर दिया।

शेष—एक सर्पराज जिसके सहस्र फणों पर पृथ्वी की स्थिति मानी जाती है। ये रुद्र के पुत्र तथा तक्षक और वासुकि के भाई कहे जाते हैं।

विष्णु भगवान लक्ष्मी के साथ क्षीर सागर में इन्हीं की शैय्या पर शयन करते हैं। बलराम और लक्ष्मण इनके अवतार कहे जाते हैं।

शैतान—इसाई तथा इस्लाम धर्म का राक्षस जो लोगों को गुमराह करता है। शैतान इसकी जाति का नाम है। इसका यथार्थ नाम इबलीस था। दे० 'इबलीस'।

श्रद्धा—(१) सायण के अनुसार श्रद्धा कामगोत्र की बालिका है। इसी आधार पर उसे कामायनी भी कहते हैं। शतपथ ब्राह्मण में मनु को श्राद्धदेव कहा गया है तथा भागवत में श्रद्धा और मनु से मानवीय सृष्टि का प्रारम्भ माना गया है। इन्हीं आधारों पर प्रसाद जी ने 'कामायनी' में मनु और श्रद्धा में पति-पत्नी का सम्बन्ध रक्खा है और उनसे 'मानव' नामक काल्पनिक पुत्र (जो संभवतः मानव जाति का प्रतीक है) के उत्पत्ति की भी बात लिखी है।

(२) दक्ष की कन्या और धर्म की स्त्री जिससे एक मत के अनुसार कामदेव का जन्म हुआ था।

श्रमण कुमार—ये अंधक मुनि के पुत्र थे। प्रसिद्ध है कि ये अपने माता-पिता को बहँगी पर बिठाकर ढोया करते थे। एक बार ये एक जंगल में अपने माता-पिता को बिठाकर पानी लेने गए। वहाँ महाराज दशरथ शिकार खेल रहे थे। श्रमणकुमार के घड़े भरने की आवाज सुनकर उन्होंने हिरन जान बाण छोड़ा जो श्रमण कुमार

को लगा। इन्होंने मरते समय दशरथ से अपना परिचय दिया तथा माता-पिता को पानी पिलाने की प्रार्थना की। दशरथ पानी लेकर गए और अपने अपराध की कथा कह सुनाई। अंधक मुनि तथा उनकी पत्नी ने पानी पीने से इनकार किया और राजा को शाप देकर दोनों मर गए। शाप यह था—जिस प्रकार हम लोग पुत्र के शोक में प्राण त्याग रहे हैं तुम्हें भी अपने पुत्र के शोक में प्राण त्यागना होगा। इसी शापवश राम के वन जाने पर दशरथ को उनके शोक में प्राण त्यागना पड़ा। दे० 'अंध'।

श्रुतकीर्ति—राम के भाई शत्रुघ्न की स्त्री। यह राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या थी। इसे सुबाहु और श्रुतघाती नाम के दो पुत्र थे।

श्वफल्क—वृष्णि के पुत्र एक प्रसिद्ध यादव जो रिश्ते में कृष्ण के पितामह लगते थे। पुराणों में लिखा है कि श्वफल्क बड़ा पुण्यात्मा था। ये जिस देश में रहते थे वहाँ किसी प्रकार का कष्ट न होता था। एक बार काशी में अकाल पड़ा। प्रजा मरने लगी। काशिराज ने श्वफल्क का नाम सुन रखा था। उन्होंने परीक्षा लेने के लिए इन्हें अपने यहाँ बुलाया। श्वफल्क के काशी में पहुँचते ही अकाल समाप्त हो गया और प्रजा सुखी हो गई। काशिराज ने प्रसन्न होकर अपनी कन्या गांदनी का विवाह श्वफल्क से कर दिया।

ये ही श्वफल्क और गांदनी प्रसिद्ध यादव अक्रूर के पिता और माता थे। दे० 'अक्रूर'।

संजय—धृतराष्ट्र के मन्त्री। इन्हें दिव्य-दृष्टि प्राप्त थी। जिसके सहारे हस्तिनापुर में बैठे-बैठे ही ये युद्ध देखते थे और धृतराष्ट्र से उसका वर्णन सुनाते रहते थे।

संपाति—अरुण का पुत्र और जटायु का बड़ा भाई। एक बार संपाति और जटायु सूर्य को जीतने के लिए उनके पास पहुँचे। जब

गर्मी बहुत बढ़ी तो जटायु को संपाति ने सूर्य की गर्मी से बचाने के लिए अपने नीचे छिपा लिया। इस प्रकार जटायु तो बच गया पर संपाति के पंख जल गए और वह विंध्य पर्वत पर गिर गया। सीता की खोज में जब बन्दर गए थे तो उनसे संपाति की भेंट हुई थी।

सगर—अयोध्या के प्रतापी सूर्यवंशी राजा। इनकी स्त्री विदर्भराज की कन्या केशिनी तथा कश्यप-कन्या सुमति थीं। इनके तप से प्रसन्न हो भृगु ने इन्हें साठ सहस्र और एक पुत्रों का पिता होने का वर दिया। यथासमय केशिनी से 'असमंजस' नाम का पुत्र हुआ जो बड़ा अत्याचारी निकला। दे० 'असमंजस'। दूसरी स्त्री सुमति से साठ सहस्र पुत्र हुए। एक बार सगर के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा चुराकर इन्द्र ने कपिल मुनि के समीप बाँध दिया। घोड़ा खोजते जब ६० हजार पुत्र वहाँ पहुँचे तो उन्होंने कपिल मुनि को चोर जान उनका अपमान किया जिससे रुष्ट हो ऋषि ने उन्हें भस्म कर दिया। बहुत दिन बीत जाने पर असमंजस के पुत्र अंशुमान ने खोजकर इनका पता लगाया और फिर गङ्गा को पृथ्वी पर लाकर उन सबको मुक्त करने का उपक्रम हुआ। दे० 'अंशुमान', 'गङ्गा' तथा 'भागीरथ'। सगर बहुत दिन तक राज्य करने के बाद पर-लोक गये। गङ्गा को पृथ्वी पर लाने के लिये उन्होंने भी तप किया था पर सफल नहीं हुए।

सती—दक्ष प्रजापति की पुत्री और शङ्कर की स्त्री। एक बार दक्ष के यहाँ यज्ञ होने वाला था पर उन्होंने शङ्कर तथा पार्वती को नहीं बुल-वाया। इसकी खबर इन्हें नारद से चली। सती अपने को न रोक सकीं और शङ्कर को छोड़, बिना बुलाए ही अपने पिता के घर चली गईं। वहाँ इन्होंने जब देखा कि यज्ञ में सभी देवताओं का अंश रक्खा गया है पर शङ्कर का नहीं तो उन्हें बड़ा बुरा लगा और यज्ञकुंड में गिरकर इन्होंने प्राण त्याग दिया। यह देख शङ्कर के गणों ने यज्ञ न होने दिया और सब नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। दे० 'नारायण', 'महादेव', 'पार्वती',

'दुर्गा' । आग में सती हो जाने के कारण इनका नाम सती है। अगले जन्म में ये पार्वती हुईं ।

सत्यवती—एक धीवरकन्या जिसे मत्स्यगन्धा भी कहते हैं। यह जब कुमारी थी तो एक द्वीप पर (एक मत) से नाव पर पराशर ने इसके साथ संभोग किया जिससे व्यास की उत्पत्ति हुई थी (दे० व्यास)। बाद में इस पर शांतनु मोहित हुए । सत्यवती के पालक पिता धीवर ने विवाह करना स्वीकार किया पर साथ ही एक शर्त रक्खी कि सिंहासन का स्वामी सत्यवती का ही पुत्र हो। शांतनु की प्रथम स्त्री गङ्गा से भीष्म नाम का एक पुत्र था। पिता की इच्छा पूर्ण करने के लिये भीष्म ने प्रण कर लिया कि मैं गद्दी पर न बैठूँगा। सत्यवती के पिता ने इस पर कहा कि आप न भी लें तो आपका पुत्र राज्य ले सकता है। इस पर भीष्म ने प्रतिज्ञा की कि मैं विवाह न करूँगा और आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा। अब सत्यवती के पुत्र को किसी भी प्रकार के विरोध की आशंका नहीं थी अतः सत्यवती का विवाह शांतनु से हो गया। कालांतर सत्यवती को शांतनु से दो पुत्र हुए जिनका नाम चित्रांगद और विचित्रवीर्य रक्खा गया। दे० 'मत्स्यगन्धा'।

सत्यवान—शाल्व देश के अंधे राजा द्युमत्सेन के पुत्र। इन्हें अपनी पत्नी सावित्री के कारण पुनर्जीवन मिला था। दे० 'सावित्री'।

सदना—एक भक्त जो जाति के कसाई थे। ये पशुओं को स्वयं न मार कर दूसरों के द्वारा मारे गए पशुओं का माँस बेचा करते थे। इनके मास तौलने के बाँटों में संयोग से एक शालिग्राम की बटिया भी थी। एक बार एक साधु ने उसे देखा तो वह बड़ा दुःखी हुआ और इनसे माँग कर अपने पास पूजा करने के लिए ले गया। कहा जाता है कि शालिग्राम ने उस साधु से स्वप्न में कहा कि 'मैं सदना के बाँटों में रहना अधिक पसंद करता हूँ मुझे वहीं पहुँचा दो।' साधु ने शालिग्राम की आज्ञा का पालन किया और सदना से पूरी बात सुना उसे यह

बछिया लौटा दी। यह घटना सदना को भी प्रभावित किए बिना न रह सकी। वह अपना काम छोड़ कर जगन्नाथजी चला गया और वहीं साधु हो गया।

सनन्दन—ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। दे० 'सनकादि' और 'सनत्कुमार'।

सनकादि—ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत्कुमार के लिए 'सनकादि' का प्रयोग होता है। इन चारों भाइयों की आयु एक समान है और ये सदैव साथ रहते हैं। दे० सन-त्कुमार'।

सनत्कुमार—ब्रह्मा के चार मानस पुत्र सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार थे। इनमें सनत्कुमार अधिक प्रसिद्ध हैं। कुछ मतों से इन कुमारों की संख्या ५ थी और ५वें का नाम ऋभु था। कुछ अन्य मतों से संख्या ७ थी। इन सभी कुमारों ने संतानोत्पत्ति करने से इनकार किया और सर्वदा बालक, शुद्ध और निरीह रहे।

समुद्र—पृथ्वी पर स्थित जल भाग के देवता। रामायण में इनके सम्बन्ध में एक कथा आती है। राम ने लंका जाने के लिए इनसे मार्ग देने की प्रार्थना की। इनके ध्यान न देने पर उन्होंने धनुष पर तीर चढ़ाया जिससे भयभीत होकर यह उनके सामने प्रकट हुए। और सेतु बाँधने में सहायता दी।

समुद्रों की संख्या सात मानी जाती है। इनकी उत्पत्ति के विषय में कहा जाता है कि एक दिन कृष्ण अपनी स्त्री विरजा के साथ बैठे थे। उसी समय अपने एक रोते पुत्र को चुप कराने के लिए विरजा को उसके पास जाना पड़ा। पीछे से कृष्ण उठकर राधिका के पास चले गये। यह मालूम होने पर विरजा ने अपने पुत्रों को अगले जन्म में खारे समुद्रों के रूप में जन्म लेने का शाप दिया जो कालांतर में यही सात समुद्रों के रूप में उत्पन्न हुए।

समुद्र-मंथन—देवता लोग जब असुरों से परेशान हो गए तो उन्होंने विष्णु से अमरत्व प्रदान करने की प्रार्थना की। विष्णु ने समुद्र-मंथन करने की राय दी और कहा कि समुद्र-मंथन से अमृत निकलेगा जिसके पीने से देव अमर हो सकेंगे। विष्णु के बहकाने से असुर भी अमृत की लालच में आ गए। मंदर पर्वत की मथानी बनी जिसे विष्णु ने कच्छप अवतार धारण कर अपनी पीठ पर रक्खा। वासुकि नाग की रस्सी बनी और देवता तथा दानव समुद्र को मथने लगे। मथने के पूर्व देवों दानवों ने मिल कर बहुत सी जड़ी-बूटियाँ समुद्र में डाली थीं। मंथन से हलाहल विष, (जिसे शंकर ने पान किया), धन्वंतरि, साठ सहस्र अप्सराएँ (यह मत वाल्मीकि रामायण का है। अन्य मत से रंभा उत्पन्न हुई) अपनी असंख्य दासियों के साथ, वारुणी, (सुरा, इसे देवों ने पान किया, जिससे वे सुर कहलाए), उच्चैःश्रवा घोड़ा (इंद्र को यह दिया गया), कौस्तुभ मणि (यह विष्णु को मिली), अमृत (इसे देवों ने पिया। दैत्यों में केवल राहु (दे० 'राहु' 'केतु' धोखे से थोड़ा अमृत पी सके), ऐरावत हाथी (यह इंद्र को मिला), कल्पवृक्ष (यह भी इंद्र को मिला) कामधेनु (डाउसन ने इसे वसिष्ठ को मिला माना है पर अन्य मतों से वसिष्ठ के पास नन्दिनी थी जो कामधेनु की पुत्री थी। भागवत के अनुसार यह गाय ऋषियों को दी गई), चन्द्रमा (शंकर को मिला), लक्ष्मी (विष्णु को मिली) धनुष तथा शंख (विष्णु को मिले)—ये १४ रत्न निकले। दे० 'अप्सरा'।

सम्मन—एक भक्त कवि। इनकी स्त्री का नाम नेकी और पुत्र का नाम सेऊ था। वे दोनों भी भक्त थे। एक बार कबीर फ़रीद (कबीर का एक शिष्य) और कमाल के साथ उनके घर आए। सम्मन के पास उनके सत्कार के लिए कुछ न था। कोई और रास्ता न देख नेकी के कहने से सम्मन और सेऊ चोरी करने गये। सम्मन बाहर खड़ा था और सेऊ सेंध मार कर एक बनिए के घर में घुसा। एक बार तो वह

सफलतापूर्वक कुछ अन्न लेकर चला आया पर बाहर आने पर जब सम्मन ने बतलाया कि इतना थोड़ा अन्न पर्याप्त न होगा तो वह पुनः घुसा। दुर्भाग्य से इस बार सेऊ पकड़ लिया गया। सेऊ ने बनियों से प्रार्थना कर अपने पिता से बात करने के लिए अपना सर सेंध से निकाला और अपने पिता से बोला—आप मेरा सर काट लीजिए नहीं तो सबेरे लोग मुझे पहचानेंगे तो घर भर पकड़ा जायगा और इस प्रकार साधुओं की सेवा में बाधा उपस्थित होगी। सम्मन को बात ठीक ज्ञात हुई और उसने अपने पुत्र का सर काट लिया और घर ले आया। पहली बार का मिला अन्न पका कर जब सम्मन और नेकी ने कबीर के आगे रक्खा तो उन्होंने सेऊ के बारे में पूछा। सम्मन और नेकी घटना बताने में हिचकिचाए पर कबीर स्वयं पूरी घटना जान गए और उन्होंने सेऊ का सिर ले उसे फिर जीवित कर दिया।

सरमा—विभीषण की पत्नी। यह भी अपने पति की भाँति भक्ति-परायण और धार्मिक थी। यह शैलूष नामक गंधर्व की पुत्री थी। सीता जब तक लंका में रहीं, यह उनका बहुत ध्यान रखती थी।

सरमा—देवताओं विशेषतः इन्द्र की कुतिया। इसके सार मेयस् नाम के दो पुत्र थे जिनमें प्रत्येक को चार चार आँखें थीं। ये यम के रखवाले थे।

सरस्वती—(१) विद्या या कला की देवी। ये ब्रह्मा की पुत्री थीं पर उन्होंने इनके सौंदर्य पर मुग्ध हो इन्हें अपनी पत्नी बनाया। सरस्वती का वाहन हंस है। इनके हाथ में वीणा रहती है। इनका लक्ष्मी से बैर प्रसिद्ध है। कहते हैं इसी कारण विद्वान प्रायः निर्धन और धनिक विद्या या कला हीन होते हैं।

(२) एक नदी जो पहले पंजाब में थी। कुरुक्षेत्र के पास इसकी एक क्षीणधारा अब भी वर्तमान है। वेदों में इस नदी का प्रायः उल्लेख हुआ है। पौराणिक काल के बाद इसके सम्बन्ध में कहा जाने लगा

कि भीतर ही भीतर आकर यह नदी गंगा जमुना के संगम पर मिली है। आज भी लोगों का यही विश्वास है और इसी कारण गंगा, जमुना और सरस्वती का साथ नाम लिया जाता है।

सहदेव—महाराज पांडु के सब से छोटे पुत्र। इनकी माता माद्री तथा पिता अश्विनीकुमार थे। द्रौपदी के गर्भ से इन्हें 'श्रुतसेन' नाम का पुत्र था। ये अपने सौन्दर्य तथा पांडित्य के लिए प्रसिद्ध थे। दे० 'माद्री'।

सहस्रार्जुन—एक हयहय वंशीय प्रसिद्ध राजा। इनके पिता का नाम कृतवीर्य था अतः इन्हें कार्तवीर्य भी कहते हैं। इनका यथार्थ नाम अर्जुन था। भगवान के अत्रिवंशीय अंशावतार दत्तात्रय की इन्होंने उपासना की अतः उन्होंने इन्हें सहस्र हाथ दिए। इसी कारण इनको सहस्रार्जुन या हजार हाथों का अर्जुन कहा गया। दत्तात्रय ने हजार हाथ के अतिरिक्त सर्वत्र गति वाला एक स्वर्ण रथ, संसार-विजय तथा संसार के अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति के हाथ मृत्यु आदि भी वरदान स्वरूप दिए। एक बार इन्होंने नर्बदा नदी में अपनी स्त्री के साथ विहार करते समय कौतुकवश हाथों से पानी रोक दिया और उल्टी धारा बहने लगी, जिसमें रावण के पूजा का सामान बह गया। दोनों में युद्ध हुआ और सहस्रार्जुन ने रावण को बाँध लिया। एक बार रावण सहस्रार्जुन की राजधानी महिष्मती पर चढ़ आया, जिसके बदले सहस्रार्जुन ने लंका पर चढ़ाई की और वहीं रावण को बन्दी बनाया।

एक बार सहस्रार्जुन जमदग्नि के आश्रम गए। लौटते समय एक गाय तथा बछड़ा लेते आए। इस पर रुष्ट हो जमदग्नि पुत्र परशुराम ने उनके हाथ काट उन्हें मार डाले। यह सुन सहस्रार्जुन के आदमी बहुत बिगड़े और उन्होंने जमदग्नि को मार डाला। इस पर परशुराम अत्यन्त क्रोधित हुए और क्षत्रियों का संसार से २१ बार नाश किया

और सारी भूमि ब्राह्मणों को बाँट दी। वायु पुराण के अनुसार सहस्त्रार्जुन ने ८५००० वर्ष तक राज्य किया।

सांदीपन—कृष्ण और सुदामा के गुरु। बलराम ने भी इन्हीं से शिक्षा प्राप्त की थी। एक बार सांदीपन की स्त्री ने कृष्ण और सुदामा को जंगल में लकड़ी तोड़ने के लिए भेजा। सुदामा को उन्होंने दोनों आदमियों के लिए थोड़ा चना दे दिया था। जंगल में बड़े जोर का तूफान आया। कृष्ण और सुदामा बचने के लिए पेड़ पर चढ़ गए। तूफान के कारण कुछ अँधेरा हो गया था। न दिखाई देते देख सुदामा अकेले चना खाने लगे। कृष्ण को उनके खाने की आवाज सुनाई पड़ी तो उन्होंने सुदामा से पूछा कि क्या तुम कुछ खा रहे हो। सुदामा ने उत्तर दिया कि मैं कुछ खा नहीं रहा हूँ बल्कि सरदी से दाँत बज रहे हैं। बाद में जब सुदामा को पता चला कि कृष्ण बात जान गए तो वे बहुत शर्मिन्दा हुए।

शिक्षा समाप्त कर आते समय कृष्ण ने सांदीपन को गुरु-दक्षिणा दी थी।

सांब—कृष्ण के एक पुत्र। इनकी माता का नाम जांबवती था। अत्यन्त बलिष्ठ होने के कारण ये दूसरे बलदेव भी कहे जाते हैं। बलदेव ने ही उन्हें अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दी थी। इन्हें अपने सौंदर्य का इतना गर्व था कि इन्होंने दुर्वासा का असुन्दर होने के कारण उपहास किया जिससे रुष्ट हो उन्होंने इन्हें कोढ़ी हो जाने का शाप दिया। इसी बीच इनके सौन्दर्य के कारण कृष्ण की रानियाँ इन पर मोहित हो गईं और इनका वीर्य स्खलित हो गया, जिसके कारण कृष्ण ने भी रुष्ट हो इन्हें कोढ़ी हो जाने का शाप दिया। दोनों शापों के कारण इन्हें कोढ़ी होना पड़ा फिर सूर्य की पूजा से ये स्वस्थ हो गए। महाभारत युद्ध में इन्होंने भी भाग लिया था। जादूगरी के आविष्कर्ता ये ही माने जाते हैं और इनके ही नाम पर इसे सांबरी विद्या कहते हैं। एक बार साम्ब ने दुर्योधन

की लड़की का हरण किया और कर्णादि द्वारा पकड़े गए। बलदेव ने युद्ध करके इन्हें छुड़ाया था।

सात्यकि--सत्यक का पुत्र एक यदुवंशीय वीर। इसने कृष्ण तथा अर्जुन से अस्त्रविद्या सीखी थी। कुरुक्षेत्र युद्ध में यह पांडवों की ओर था। भूरिश्रवा इसी के हाथ से मारा गया।

सावित्री--मद्र देश के राजा अश्वपति की पुत्री और सत्यवान की स्त्री। अश्वपति पहले निःसंतान थे। सावित्री मन्त्र का जाप करने से इन्हें एक पुत्री हुई अतः उसका नाम इन्होंने सावित्री रक्खा। जब यह लड़की बड़ी हुई तो राजा को इसके विवाह की चिन्ता हुई पर उन्हें कोई उचित वर न मिला। अंत में सावित्री ने स्वयं अपना पति खोजने का का निश्चय किया और राज्य के मन्त्रियों के साथ इस कार्य के लिए जंगल में चली। वहाँ शाल्व देश के अंधे राजा अपनी स्त्री तथा पुत्र सत्यवान के साथ रह रहे थे। शत्रुओं ने उनका राज्य छीन लिया था। सावित्री ने सत्यवान को अपना वर चुना। घर लौट कर उसने अपने पिता से यह बतलाया। दैवयोग से वहाँ नारद भी थे। उन्होंने कहा कि वर यों तो योग्य है पर उसकी आयु अधिक नहीं है। वह आज से ठीक एक वर्ष बाद मर जायगा। इतना सुन कर भी सावित्री अपने निश्चय पर अटल रही और विवाह सम्पन्न हो गया। धीरे-धीरे वर्ष पूरा हुआ। सत्यवान और सावित्री दोनों उस दिन जंगल में थे। वहीं सत्यवान का शरीरांत हुआ और यमराज उसका प्राण लेकर चला। सावित्री अप्रतिम पतिव्रता और सती थी। वह भी यमराज के पीछे पीछे चली और उनके लाख समझाने पर भी न लौटी। अन्त में यमराज को हार कर प्राण लौटाना पड़ा और सत्यवान जीवित हो उठा। सावित्री ने अपने श्वसुर द्युमत्सेन को सचक्षु होने का भी वर प्राप्त किया। उसे तथा उसके श्वसुर को सौ-सौ पुत्र हुए। यह सब उसके सत्याचरण के कारण हुआ। कहते हैं, जीवन भोग कर सावित्री पति के साथ ही वैकुण्ठ

गई। आज इसका नाम पतिव्रता तथा सधवा स्त्री के लिए सामान्य शब्द की भाँति भी प्रयुक्त होता है। इसके नाम पर एक 'सावित्री व्रत' भी है जो सधवा स्त्रियाँ अपने पति को दीर्घ आयु वाला बनाने के लिए जेष्ठ बदी १५ को करती हैं।

सीता—मिथिला के राजा जनक की कन्या। राजा जनक को कोई सन्तान न थी। उन्होंने संतत्यर्थ यज्ञ के नियमानुसार अपने हाथ से भूमि जोती और जोतते समय हर की कूँड़ में से एक घड़े से सीता का जन्म हुआ। इनके विवाह के लिए जनक ने प्रण किया कि जो एक धनुष विशेष को चढ़ावेगा उसी से सीता का विवाह होगा। इस शर्त को दाशरथि राम पूरा कर सके अतः उनसे सीता का विवाह हुआ। राम के वनवास में सीता भी साथ गईं। वहाँ मारीच को स्वर्णमृग (दे० 'मारीच') बना रावण उन्हें हर ले गया, पर अन्त में रावण को मार कर राम ने सीता को प्राप्त किया। सीता ने अग्नि में प्रवेश कर परीक्षा दी जिसमें वे सफल रहीं। अयोध्या आने पर वे गर्भवती हुईं पर इसी बीच एक धोबी द्वारा उनका घर में रख लेना, राम के लिए अनुचित कहा गया और प्रजारंजन राम ने उन्हें घर से निकाल दिया। बन में जाने पर बाल्मीकि ने उन्हें अपने आश्रम में रक्खा जहाँ लव और कुश का जन्म हुआ। अश्वमेध के अवसर पर बाल्मीकि के कहने से सीता राम के सामने आईं पर वहाँ फिर उन्होंने घोषणा की कि हे माता पृथ्वी यदि मैं आजीवन पतिव्रता रही हूँ तो आप अपने क्रोड़ में मुझे स्थान दें। इतना कहते ही पृथ्वी फट गई और सीता उसमें प्रवेश कर गईं। इस प्रकार सीता पृथ्वी से निकली थीं और फिर वहीं चली गईं। सीता को लक्ष्मी का अवतार कहा जाता है।

सुंद—सुंद और उपसुंद दो राक्षस थे। ये निसुंद या निकुम्भ के पुत्र थे। बल में ये दोनों विश्व में अद्वितीय थे। इसके संहार के लिए

स्वर्ग से तिलोत्तमा अप्सरा भेजी गई जिसके लिए दोनों में युद्ध हुआ और दोनों ने एक दूसरे को मार डाला। दे० 'उपसुंद'

सुग्रीव—ये सूर्य के पुत्र थे। इनके भाई बालि ने इनका राज्य छीन लिया था तथा इनकी स्त्री भी ले ली थी। राम सीता को खोजते मतङ्ग आश्रम में पहुँचे तो वहाँ इनसे तथा इनके प्रधान हनुमान से राम की भेंट हुई। राम ने बालि को मार इनका राज्य वापस किया पर इन्होंने राज्य अपने भतीजे अङ्गद को दे दिया। सुग्रीव तथा उनकी सेना की सहायता से राम ने रावण को जीता। ये राम के साथ अयोध्या आए और वहीं सरयू के किनारे शरीर छोड़ा। दे० 'बालि'।

सुदामा—कृष्ण के एक ब्राह्मण सखा। दोनों ने सांदीपन गुरु के यहाँ शिक्षा पाई थी। एक बार गुरु की स्त्री द्वारा दिए गए चने को सुदामा ने कृष्ण से छिपा कर खाया था। जब कृष्ण द्वारिका में राज्य कर रहे थे तो सुदामा की दशा बहुत खराब थी। अपनी स्त्री के कहने से वे तीन मुट्ठी साँवा का चावल ले कृष्ण से मिलने गए। वहाँ कृष्ण ने इनका बहुत सत्कार किया तथा वहाँ से लौटने पर इनको धन्यधान्य से सम्पन्न कर दिया। कृष्ण-सुदामा की मित्रता है। दे० 'सांदीपन'।

सुद्युम्न—मनु के पुत्र। पहले एक कन्या के रूप में इनका जन्म हुआ, किन्तु वशिष्ठ मुनि ने पुसंत्व प्रदान कर इन्हें सुद्युम्न नामक पुत्र बना दिया। एक बार सब देवता शिव का दर्शन करने कैलाश गए। उस समय पार्वती नग्नावस्था में थीं। उन्हें लज्जा की स्थिति से बचाने के लिए शिव ने यह वर दिया कि जो भी उस स्थान में आएगा वह स्त्री हो जाएगा। संयोग से सुद्युम्न वहाँ पहुँचे और स्त्री हो गए। स्त्री रूप में इनका विवाह चंद्रमा के साथ हुआ, जिससे महान पराक्रमी राजा पुरूरवा का जन्म हुआ।

सुनयना—राजा जनक की पत्नी।

सुनीति—उत्तानपाद की बड़ी रानी। ध्रुव का जन्म इन्हीं से हुआ

था। दूसरी रानी सुरुचि के आने पर राजा ने सुनीति की ओर से अपना प्रेम-भाव कम कर लिया जिससे सुनीति को जङ्गल की शरण लेनी पड़ी। ध्रुव ने इन्हें भी भगवान का दर्शन कराया। कुछ मतों से ध्रुवलोक के भी ऊपर एक लोक है, जहाँ सुनीति का स्थान है।

सुबाहु—(१) कृष्ण के एक मित्र।

(२) मथुरा के राजा शत्रुघ्न का एक नाम।

(३) महाराजा धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुभद्रा—इनके पिता का नाम वसुदेव तथा माता का रोहिणी था। इस प्रकार कृष्ण की ये वैमात्रेय बहिन थीं। कृष्ण की इच्छा से अर्जुन इन्हें हर ले गए और विवाह किया। अभिमन्यु इन्हीं के गर्भ से हुआ था। दे० 'अभिमन्यु'।

सुमंत्र—राजा दशरथ का एक मंत्री।

सुमति—राजा सगर की पत्नी जो पुराणों के अनुसार ६०,००० पुत्रों की माता थीं।

सुमाली—एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। इसकी कन्या का नाम कैकसी था जिसका विवाह विश्रवा से हुआ था और जिससे रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण पैदा हुए थे।

सुमित्रा—दशरथ की दूसरी रानी जिनसे लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म हुआ था।

सुमेरु--एक पौराणिक पर्वत जो सोने का कहा जाता है। इसकी तीन चोटियाँ हैं जिन पर २१ स्वर्ग हैं। देवता लोग यहीं रहते हैं।

सुरभि—कश्यप की स्त्री और दक्ष प्रजापति की कन्या। गाय-भैंस आदि पशुओं की उत्पत्ति इसी से है।

सुरसा—एक राक्षसी जो नागों की माता थी। यह रावण की भी कुछ सम्बन्धिनी लगती थी और समुद्र में रहती थी। हनुमान् जब सीता की खोज में लंका जा रहे थे तो समुद्र के बीच में इसने उन्हें रोका।

कोई रास्ता न देख हनुमान ने इसके मुँह में प्रवेश किया। यह कितना ही अपना मुँह बढ़ाती गई हनुमान भी अपना रूप बढ़ाते गए और अंत में बहुत छोटा रूप धारण कर निकल आए। कुछ मतों से कान के रास्ते से निकल आए। चलते समय इसने हनुमान को आशीर्वाद दिया था।

सुरुचि—उत्तानपाद की स्त्री और ध्रुव की विमाता। इसी के कारण ध्रुव तथा ध्रुव की माता सुनीति को उत्तानपाद ने तिरस्कृत किया था। एक बार सुरुचि का पुत्र उत्तम शिकार खेलने गया जहाँ किसी यक्ष ने उसे मार डाला। पुत्र के न लौटने पर सुरुचि उसे खोजने के लिए गई। यह भी वहीं मर गई।

सुलेमान—यहूदियों का एक प्राचीन बादशाह जो ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों का पैगम्बर माना जाता है। अंग्रेजी में इसका नाम सालेमान है। यह दाऊद (डेविड) का पुत्र था। कहते हैं कि खुदा ने इसे सभी जीवों की भाषा सिखाई थी। पशु-पक्षी, देव-दानव सभी इसके वश में थे। इसी ने पहले-पहल उड़नखटोला बनाया था।

सुषेण—एक बन्दर। यह वरुण का औरस पुत्र बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था। यह मरे व्यक्ति को जीवित कर देने की शक्ति रखता था। लक्ष्मण को शक्ति लगने पर इसी ने हनुमान से संजीवनी जड़ी मँगवाई और उन्हें स्वस्थ्य किया।

सूरदास—हिन्दी के प्रसिद्ध भक्त कवि और अष्टछाप के कवियों में प्रधान। इनका जन्म तथा मरण संवत् १५४० तथा १६४२ माना जाता है। इनके जीवन का बहुत निश्चित पता नहीं है। इनके वर्णनों को देख कर लगता है कि ये जन्मांध नहीं थे। कुछ लोगों का कहना है कि एक बार एक युवती को देखकर ये उस पर आसक्त हो गए पर बाद में इन्हें जब अपनी गलती का पता चला तो यह दोष आँखों का जान इन्होंने अपनी आँखें फोड़ लीं। एक अन्य किंवदंती के अनुसार

एक बार भगवान कृष्ण ने इनको दर्शन दिया। इन्होंने उनसे कहा कि मैंने जिन आँखों से आपको देखा, दूसरे को देखना नहीं चाहता अतः मुझे अंधा कर दीजिये। कृष्ण ने ऐसा ही किया। एक तीसरी किंवदंती यह भी है कि सूरदास एक बार कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक कुआँ था जिसमें ये गिर पड़े। छः दिन बाद कृष्ण ने आकर इन्हें निकाला और इन्हें आँखें प्रदान कीं। आँखें मिलने पर जब ये उनका दर्शन कर चुके तो उन आँखों से फिर किसी को न देखने की इच्छा प्रकट की और इनकी इच्छानुसार कृष्ण ने इन्हें पुनः अंधा कर दिया। एक अन्य किंवदंती के अनुसार छः दिन कुएँ में रहने के बाद किसी ने इन्हें कुएँ से निकाला और हाथ छुड़ा कर भाग गया। इन्होंने उसे कृष्ण जान कर कहा—

> बाँह छुड़ाए जात हो निबल जानि कै मोहि
> हिरदै से जब जाइ हौ मर्द बदौंगो तोहि।

सूर्य—अदिति और कश्यप के पुत्र। इनकी बहुत सी स्त्रियाँ रही हैं जिनमें संज्ञा प्रधान है। संज्ञा से यम, यमुना तथा एक मनु की उत्पत्ति हुई और अश्विनी नाम की अप्सरा से (कुछ मतों से संज्ञा ही अश्विनी है। दे० 'संज्ञा' 'छाया') अश्विनीकुमारों की। सुग्रीव तथा कर्ण भी इन्हीं के औरस पुत्र थे। गरुड़ के अग्रज अरुण जो लँगड़े हैं, इनके सारथी हैं। इनके रथ में सात घोड़े हैं। छाया नाम की पत्नी से इन्हें शनि नाम का पुत्र पैदा हुआ था। कुछ मतों से उषा भी इनकी प्रेयसी है पर कुछ मतों से वह इनकी माता है। दे० 'आदित्य' 'बालि'।

सेतुबंध—वह पुल जिसे राम की सेना को पार उतरने के लिए नल और नील की सहायता से बन्दरों ने तैयार किया था। 'रामेश्वर' धाम यहीं है।

सेन—एक भक्त जो जाति का नाई था। यह रीवाँ महाराज राजाराम का नौकर था। एक दिन साधुओं की सेवा में देर हो गई और यह

समय पर दरबार में न पहुँच सका। कहते हैं कि भगवान ने स्वयं इसका इसका रूप धारण कर दरबार में इसका काम कर दिया। जब यह आया तो इसे इस रहस्य का पता चला। उसी दिन से नौकरी छोड़ यह अपना सारा समय भगवद्भक्ति में लगाने लगा। राजा भी यह बात सुन कर भक्त हो गया। इसको 'सेना' भी कहते हैं।

सैरंध्री—द्रौपदी का एक नाम। जब पांडवों को विराट के यहाँ छिपे रूप से नौकरी करनी पड़ी थी तो उनके साथ द्रौपदी भी थी। यह वहाँ सैरंध्री (परिचारिका) का काम करती थी इसी कारण इसका एक नाम सैरंध्री भी हो गया। कीचक सैरंध्री पर ही मुग्ध हुआ था। दे० 'कीचक' 'द्रौपदी'।

स्यमंतक—एक प्रसिद्ध मणि। सत्राजित् नामक यादव ने यह मणि सूर्य से पाई थी। इससे प्रतिदिन सोना निकलता था तथा इसे पास रखने से दुःख-दैन्य पास नहीं फटकता था। कृष्ण ने यह मणि सत्राजित् से माँगी पर उसने नहीं दी। अंत में उससे माँग उसके भाई प्रसेन ने इसे धारण की और एक सिंह ने उसे मार यह मणि ले ली जिससे यह जाबवंत को मिल गई। उधर लोगों में यह प्रवाद फैला कि कृष्ण ने प्रसेन को मार कर मणि ले ली है। कृष्ण ने जांववंत को परास्त कर उससे मणि ले ली तथा पुनः सत्राजित् को लाकर दे दी। इससे सत्राजित् अत्यंत लज्जित हुआ और उसने प्रेम से अपनी पुत्री सत्यभामा तथा यह मणि कृष्ण को भेंट कर दी। कृष्ण ने मणि नहीं स्वीकार की और अंतः सत्राजित् को मार शतधन्वा ने ले ली जिसे मार कृष्ण ने मणि सत्यभामा को दी। कहा जाता है कि उस वर्ष कृष्ण ने भादों की चौथ का चाँद देखा था इसीलिए कलंक लगा तभी से लोग भादों की चौथ का चाँद नहीं देखते।

स्वर्ग—हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों के अनुसार एक लोक जहाँ देवता रहते हैं। धर्मी मुक्त आत्माएँ भी मरने पर यहीं जाती हैं।

इसकी स्थिति के विषय में बड़ा मतभेद है। कुछ मतों से तो यह सुमेरु या मेरु पर्वत पर है और कुछ मतों से भुवर्लोक और महर्लोक के बीच में सात लोकों में तीसरा है। स्वर्ग में देवों के अतिरिक्त अप्सराएँ आदि भी रहती हैं और यहाँ सुख ही सुख है इन्द्र इसके स्वामी हैं।

हनुमान—केसरी नाम के बन्दर की स्त्री अंजना के गर्भ से पवन के औरस पुत्र। ये सुग्रीव के प्रधान थे। इन्होंने ही राम और सुग्रीव की मित्रता कराई थी। इन्होंने लंका (अशोक वाटिका) में बंदिनी सीता का पता लगाया था। वहाँ रावण की आज्ञा से इसकी पूँछ में कपड़ा लपेट कर आग लगा दी गई थी। जिससे इन्होंने लंका-दहन किया। मेघनाद के शक्ति-प्रहार से लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर संजीवनी बूटी लाने भी ये ही गए थे। और बूटी न पहचान पाने पर पूरा पर्वत उठा लाए थे। आते समय रास्ते में इन्होंने भरत को राम का समाचार दिया था। राम-रावण युद्ध में इन्होंने बहुत से राक्षसों का संहार किया। लंका विजय के पश्चात् ये भी राम के साथ अयोध्या आए। राम के अश्वमेध यज्ञ के समय इन्हें भी लक्ष्मण के साथ लव कुश से पराजित होना पड़ा था। ये राम के परम भक्त थे। दे० 'कालनेमि तथा 'सुरसा'।

हयग्रीव—प्रलयकाल में महा समुद्र में सोए हुए ब्रह्मा के मुँह से चार वेदों की उत्पत्ति हुई। उन्हें हयग्रीव ने चुरा लिया। वेदों का उद्धार के लिए विष्णु ने मत्स्य रूप में अवतार लेकर इसका बध किया।

हरिदास—एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त। सङ्गीत का इन्हें विशेष ज्ञान था। प्रसिद्ध गायक तानसेन इनके शिष्य कहे जाते हैं। इस नाम के कई अन्य वैष्णव भक्तों के नाम भी मिलते हैं।

हरिश्चन्द्र—सूर्यवंश के २८वें राजा जो कुछ मत से त्रिशंकु के; कुछ मत से सत्यव्रत के और कुछ मत से वेधस के पुत्र थे। इनके संबंध

से विभिन्न ग्रन्थों में विभिन्न आख्यान मिलते हैं। यहाँ दो अधिक प्रसिद्ध आख्यान दिए जाते हैं।

हरिश्चन्द्र राज्य करते-करते वृद्ध हो गए पर उन्हें कोई सन्तान न हुई। अपने कुल गुरु वसिष्ठ से इन्होंने कोई युक्ति पूछी और फिर उन्हीं के आज्ञानुसार वरुण की आराधना की वरुण ने उन्हें पुत्र देना स्वीकार तो किया पर उनसे यह वादा करा लिया कि वे यज्ञ में उस पुत्र का पशु की भाँति बलिदान कर देंगे। दसवें महीने पुत्र पैदा हु आ। तुरन्त वरुणदेव उसको बलिदान कराने के लिए पहुँचे पर राजा ने कहा कि जन्म के समय बालक अशुद्ध रहता है अतः दस दिन बीत जाने पर आइए। वरुण ने ऐसा ही किया, पर इस बार फिर राजा ने यह कह कर टाल दिया कि बिना दाँतों का पशु पवित्र नहीं होता अतः दाँत निकलने पर आप आवें। दाँत निकलने के बाद राजा ने गर्भ के बाल काटने का बहाना किया, फिर उपनयन का और फिर समावर्तन का। इस बार जब वरुण आए तो उन्होंने कहा कि महाराज! यह रोज का टालना अच्छा नहीं है। अब तो आपको बलिदान करना ही होगा। राजा अन्त में तैयार हुए पर राजकुमार इस बात की गंध पाते ही जङ्गल में भाग गया। वरुण ने जब यह सुना तो राजा को शाप दिया कि 'तुम्हें जलोदर रोग हो जाय'। रोग से पीड़ित होने पर राजा ने वसिष्ठ से इसे दूर करने का उपाय पूछा। वसिष्ठ ने कोई बालक खरीद कर बलिदान करने की राय दी। खोजने पर एक अजीगर्त नाम का लोभी ब्राह्मण अपने मझले पुत्र 'शुनःशेप' को १०० गायों में बेचने को तैयार हो गया। लड़का लाया गया पर बलिदान करने वाला ही भग गया। वह मनुष्य का बलिदान करने को तैयार न था। यह देख उसका बाप अजीगर्त ही धन के लोभ में बलिदान करने को तैयार हो गया। इसी बीच विश्वामित्र ने शुनःशेप से एक मंत्र का जप करने को कहा जप करते ही वरुण वहाँ आ गए और उन्होंने प्रसन्न हो शुनःशेप

को मुक्त करा दिया। राजा का जलोदर रोग भी ठीक हो गया। 'शुनःशेप' को विश्वामित्र अपना पुत्र बनाकर अपने साथ ले गए। बाद में यह सब सुनकर राजकुमार भी जङ्गल से लौट आया।

हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम रोहित या रोहिताश्व और रानी का नाम शैव्या था। महाराज अपनी सत्यवादिता एवं प्रणपालिता के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थे। जब ये इतना धर्मादि कर चुके तो इन्द्र को शङ्का होने लगी कि कहीं इंद्रासन के अधिकारी न बन जायँ अतः इंद्र ने विश्वामित्र को इनकी परीक्षा के लिए भेजा। विश्वामित्र ने इनसे सारी पृथ्वी दान में ली और उपर से दक्षिणा माँगने लगे। राजा ने कोई रास्ता न देख अपने को काशी के एक डोम के यहाँ तथा पत्नी और पुत्र को किसी ब्राह्मण के यहाँ वेचकर दक्षिणा चुका दी। डोम के यहाँ राजा को श्मशान घाट पर पहरा देना पड़ता था तथा शव लेकर आने वाले से कर, कफ़न आदि लेना पड़ता था। एक दिन राजकुमार रोहित को साँप काटने के कारण देहान्त हो गया और उसका अंतिम संस्कार करने के लिए उसे लेकर शैव्या उसी घाट पर आई। उसके पास कर देने के लिए पैसे न थे तथा कफ़न के स्थान पर अपनी साड़ी का आँचल फाड़ कर उसने शव को आच्छादित किया था। राजा ने अपनी रानी तथा पुत्र को पहचाना पर कर्तव्य से च्युत न हुए और उसमें से आधा कफ़न फड़वाकर ले लिया। हरिश्चन्द्र की इस कर्तव्यपरायणता पर प्रसन्न हो उसी समय भगवान ने प्रकट होकर बच्चे को जिला दिया तथा उन्हें उनका सारा राज्य-वैभवादि लौटा दिया।

हलाहल—वह प्रचंड विष जो समुद्र-मंथन के समय निकलने वाले १४ रत्नों में से एक था। यह जब निकला तो इसकी गर्मी से सुरासुर सभी व्याकुल हो गए और अन्त में शङ्कर ने इसका पान किया। इसकी गर्मी बर्दाश्त करने की शक्ति देने के लिए शङ्कर को चंद्रमा दिए गए थे। हलाहल के पीने के कारण शङ्कर का कंठ नीला हो गया और वे

नीलकंठ कहलाए। शङ्कर जब हलाहल पी रहे थे तो कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिरीं और उन्हीं से साँप, बिच्छू आदि ज़हरीले जानवरों ने ज़हर पाया।

हसन—इन्हें इमाम हसन भी कहते हैं। ये अली के बड़े बेटे और मुहम्मद साहब के नाती थे। (दे० 'अली') खिलाफ़त के झगड़े में अपने छोटे भाई हुसेन के साथ ये भी थे। जादा बिन अशअस ने इन्हें ज़हर दे दिया और ४७ वर्ष की अवस्था में ये मर गए। दे० 'हुसेन'।

हाहा—एक गंधर्व का नाम। दे० 'हूहू'।

हिडिंब—एक भयंकर राक्षस जो हिडिंबा का भाई था। यह पांडवों को मारना चाहता था पर इसे भीम ने मार डाला। दे० 'हिडिंबा'। यह मानवभक्षी था।

हिडिंबा—'हिडिंब' राक्षस की परमसुन्दरी बहन। यह भीम पर मोहित हो गई, पर इसका भाई 'हिडिंब' भीम के साथ इसका विवाह करने पर राजी न था। भीम ने हिडिंब को मार इसकी माता की अनुमति से इसका वरण किया। भीम को घटोत्कच नामक वीर पुत्र इसी से पैदा हुआ। दे० 'घटोत्कच'।

हिमगिरि—भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर स्थित एक पर्वतश्रेणी और उसके राजा। इन्हें हिमवान भी कहा गया है। शिव की अर्द्धांगिनी पार्वती इनकी कन्या कही जाती हैं। गंगा भी इन्हीं की पुत्री के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी स्त्री का नाम मेनका था। दे० 'हिमालय'।

हिरण्यकशिपु—कश्यप और दिति का पुत्र और प्रह्लाद का पिता। यह शिव का भक्त था इसने दस हजार वर्ष तक तीनों लोकों का अधीश्वर होने का शिव से वर प्राप्त किया था। यह भगवान का विरोधी था। ब्रह्मा की उपासना कर उसने देवता, मनुष्य और पशुओं से अवध्य होने का वर प्राप्त किया था। इसे यह भी वर प्राप्त था कि न तो दिन में मरेगा न रात में। इस प्रकार अपने को अमर समझ यह तरह-तरह के अत्याचार करने लगा। इसका पुत्र प्रह्लाद जब इसके बहुत समझाने-बुझाने

पर भी ईश्वर की भक्ति से विमुख न हुआ तो इसने तरह-तरह से उसे मारने की युक्ति की, पर सफल न हुआ। अन्त में एक दिन स्वयं तलवार खींचकर उसे मारने दौड़ा और बोला—अब अपने भगवान् को बुला, वह तुम्हारी रक्षा करे! तू तो कहता है कि वह सर्वत्र है। तो क्या वह इस खंभे में भी है? इतना कहते ही खंभे से ही नृसिंह (आधा मनुष्य आधा सिंह—इस प्रकार वे न तो देव थे न मनुष्य और न पशु) भगवान निकले और इसे फाड़ डाला (उस समय न तो दिन था न रात, दोनों की सन्धि बेला थी)। हिरण्याक्ष इसी का भाई था।

हिरण्याक्ष—हिरण्यकशिपु का जोड़वा भाई। दे० 'हिरण्यकशिपु'। इसने पृथ्वी को उठाकर पाताल में रख दिया और तरह-तरह के अत्याचार करने लगा। अन्त में देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु ने वाराहरूप धारण कर इसका संहार और पृथ्वी का उद्धार किया। पद्मपुराण के अनुसार भगवान ने मत्स्य बनकर इसका संहार किया था।

हिमालय—पुराणों के अनुसार यह मेरुपर्वत के दक्षिण में है। मेरु या सुमेरु की भाँति यह भी पर्वतों का राजा कहा जाता है। इसकी पत्नी का नाम मेना या मेनका और पुत्री का नाम पार्वती है। गङ्गा भी इसकी बड़ी पुत्री कही गई हैं।

हुसेन—इन्हें इमाम हुसेन भी कहते हैं। ये अली के छोटे लड़के (दे० 'अली') तथा मुहम्मद साहब के नाती थे। खिलाफत के झगड़े में यजीद ने इन्हें ५७ वर्ष की उम्र में कर्बला में मरवा डाला। हुसेन वहीं दफनाए भी गए। मुहर्रम में हसन और हुसेन का मातम मनाया जाता है।

हूहू—यह एक गंधर्व था। इसी का समकालीन एक गंधर्व हाहा भी था। दोनों सङ्गीत में अद्वितीय थे। एक बार दोनों में झगड़ा हुआ। दोनों अपने-अपने को अच्छा कहने लगे, और अन्त में निर्णय के लिए देवल ऋषि के पास गए। ऋषि ने दोनों का सङ्गीत सुनकर हाहा को

अच्छा कहा। इस पर हूहू बहुत बिगड़ा और पूछने लगा कि यह कैसे अच्छा है। इसी को लेकर वह हुज्जत करने लगा। मुनि ने क्रुद्ध होकर कहा कि तुम ग्राह की भाँति जबान पकड़ (ग्रहण कर) रहे हो अतः 'ग्राह' हो जाओ। इस पर वह बहुत पछताने लगा और उसने ऋषि से क्षमा माँगी। ऋषि ने कहा कि शाप तो व्यर्थ जायगा नहीं, हाँ भगवान तुम्हारा उद्धार कर देंगे। प्रसिद्ध गज-ग्राह की कथा में यही हूहू 'ग्राह' था। दे० 'गज' तथा 'ग्राह'।

होलिका---हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष की बहिन और प्रह्लाद की बुआ। हिरण्यकशिपु के कहने से यह प्रह्लाद को लेकर चिता में बैठी। यह अग्नि में न जलनेवाली समझी जाती थी। पर भगवान की दया से यह जल गई और भक्त प्रह्लाद का बाल भी न बाँका हुआ।

हौवा---हजरत आदम की स्त्री। इनका जन्म आदम की बाईं पसली से हुआ था। दे० 'आदम'। इन्हें हिन्दुओं की 'शतरूपा' या 'श्रद्धा' कह सकते हैं।